रजिस्ट्री सं० डी० (डी०)-73

REGISTERED No. D.(D.)-73

CENTRAL GOVERNMENT LIBRARY

सत्यमेव जयते

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 3] नई दिल्ली, शनिवार, जनवरी 21, 1978/माघ 1, 1899
No. 3] NEW DELHI, SATURDAY, JANUARY 21, 1978/MAGHA 1, 1899

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके
Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्र प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारियों द्वारा जारी किये गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं

Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) by Central Authorities (Other than the Administrations of Union Territories)

भारत निर्वाचन आयोग

आदेश

नई दिल्ली, 20 दिसम्बर, 1977

का० आ० 105.—यतः निर्वाचन आयोग का समाधान हो गया है कि मार्च, 1977 में हुए केरल विधान सभा के लिए साधारण निर्वाचन के लिए 1-मंजेश्वर निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवार श्री एन० वेंकटेश राव, धर्मनगर, पो० वोरकाडे वाया मंजेश्वर जिला कन्नोर (केरल राज्य), लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 तथा तद्धीन बनाए गए नियमों द्वारा अपेक्षित समय के अंदर तथा रीति से अपने निर्वाचन व्ययों का लेखा दाखिल करने में असफल रहे हैं।

और, यतः, उक्त उम्मीदवार ने, उसे सम्यक सूचना दिये जाने पर भी अपनी इस असफलता के लिए कोई कारण अथवा स्पष्टीकरण नहीं दिया है, और, निर्वाचन आयोग का यह भी समाधान हो गया है कि उसके पास इस असफलता के लिए कोई पर्याप्त कारण या औचित्य नहीं है ;

अतः अब, उक्त अधिनियम की धारा 10क के अनुसरण में निर्वाचन आयोग एतद्द्वारा उक्त श्री एन० वेंकटेश राव को संसद के किसी भी सदन के या किसी राज्य की विधान सभा अथवा विधान परिषद् के सदस्य चुने जाने और होने के लिए इस आदेश की तारीख से तीन वर्ष की कालावधि के लिए निरर्हित घोषित करता है ।

[सं० केरल-वि० स०/1/77]

ELECTION COMMISSION OF INDIA

ORDER

New Delhi, the 20th December, 1977

S.O. 105.—Whereas the Election Commission is satisfied that Shri N. Venkatesh Rao, Dharmanagar, P.O. Vorkady, via Manjeshwar, District Cannanore (Kerala State), a contesting candidate for general election to the Kerala Legislative Assembly held in March, 1977 from 1-Manjeswar constituency, has failed to lodge the account of his election expenses within time and in the manner required by the Representation of the People Act, 1951, and the Rules made thereunder ;

And whereas the said candidate, even after due notices, has not given any reason or explanation for the failure and the Election Commission is satisfied that he has no good reason of justification for such failure ;

Now, therefore, in pursuance of section 10A of the said Act, the Election Commission hereby declares the said Shri N. Venkatesh Rao to be disqualified for being chosen as, and for being, a member of either House of Parliament or of the Legislative Assembly or Legislative Council of a State for a period of three years from the date of this order.

[No. KL-LA/1/77]

आदेश

का० आ० 106.—यतः, निर्वाचन आयोग का समाधान हो गया है कि मार्च, 1977 को हुए केरल विधान सभा के लिये साधारण निर्वाचन के लिये 71, नराकल (अ० जा०) निर्वाचन-क्षेत्र से चुनाव लड़ने वाले

उम्मीदवार श्री टी० ए० विनायन, थित्तायिल वीडु, पो० आ० एडावानक्कड़, एरनाकुलम, जिला, लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 तथा तद्धीन बनाये गये नियमों द्वारा अपेक्षित अपने निर्वाचन व्ययों का कोई भी लेखा दाखिल करने में असफल रहे हैं;

और, यतः, उक्त उम्मीदवार ने उसे सम्यक सूचनायें देने के पश्चात् भी इस असफलता के लिये कोई कारण या स्पष्टीकरण नहीं दिया है और निर्वाचन आयोग का यह भी समाधान हो गया है कि उसके पास इस असफलता के लिये कोई पर्याप्त कारण या न्यायौचित्य नहीं है,

अतः, अब, उक्त अधिनियम की धारा 10-क के अनुसरण में निर्वाचन आयोग एतद्द्वारा उक्त श्री टी० ए० विनायन को संसद के किसी भी सदन के या किसी राज्य की विधान सभा अथवा विधान परिषद के सदस्य चुने जाने और होने के लिये, इस आदेश की तारीख से तीन वर्ष की कालावधि के लिये निरर्हित घोषित करता है।

[संख्या केरल-वि० स०/71/77]

ORDER

S.O. 106.—Whereas the Election Commission is satisfied that Shri T. A. Vinayan, Thittayil Veedu, Edavanakkad P.O., Ernakulam District, a contesting candidate for general election to the Kerala Legislative Assembly from 71-Narakkal (SC) assembly constituency, held in March, 1977 has failed to lodge an account of his election expenses as required by the Representation of the People Act, 1951, and the Rules made thereunder;

And whereas the said candidate, even after due notices, has not given any reason or explanation for the failure and the Election Commission i sfurther satisfied that he has no good reason or justification for such failure;

Now, therefore, in pursuance of section 10A of the said Act, the Election Commission hereby declares the said Shri T. A. Vinayan to be disqualified for being chosen as, and for being, a member of either House of Parliament or of the Legislative Assembly or Legislative Council of a State for a period of three years from the date of this order.

[No. KL-LA/71/77]

आदेश

का० आ० 107:—यतः, निर्वाचन आयोग का समाधान हो गया है कि मार्च, 1977 में हुए केरल विधान सभा के लिये साधारण निर्वाचन के लिये 55 वाडाक्कानचेरी निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ने के वाले उम्मीदवार श्री वाकेपाडाथू वी० बी० कुन्हीमोहमद, वाकेपाडाथ हाउस, पो० वेल्लारक्काड, जिला त्रिचूर, केरल लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 तथा तद्धीन बनाये गये नियमों द्वारा अपेक्षित अपने निर्वाचन व्ययों का कोई भी लेखा दाखिल करने में असफल रहे हैं;

और, यतः, उक्त उम्मीदवार ने, उसे सम्यक सूचना दिये जाने पर भी, अपनी इस असफलता के लिये कोई कारण अथवा स्पष्टीकरण नहीं दिया है, और निर्वाचन आयोग का यह भी समाधान हो गया है कि उसके पास इस असफलता के लिये कोई पर्याप्त कारण या न्यायोचित्य नहीं है;

अतः, अब, उक्त अधिनियम की धारा 10क के अनुसरण में निर्वाचन आयोग एतद्द्वारा उक्त श्री वाकेपाडाथू वी० बी० कुन्हीमोहमद को संसद के किसी भी सदन के या किसी राज्य की विधान सभा अथवा विधान परिषद् के सदस्य चुने जाने और होने के लिये इस आदेश की तारीख से तीन वर्ष की कालावधि के लिये निरर्हित घोषित करता है।

[संख्या केरल-वि० स०/55/77]

ORDER

S.O. 107.—Whereas the Election Commission is satisfied that Shri Vakepadathu V. B. Kunhimohamad, Vakepadath House, P.O. Vellarakkad District, Trichur (Kerala), a contesting candidate for general election to the Kerala Legislative Assembly held in March, 1977 from 55-Wadakanchery constituency, has failed to lodge the account of his election expenses as required by the Representation of the People Act, 1951, and the Rules made thereunder.

And whereas the said candidate, even after due notices, has not given any reason or explanation for the failure and the Election Commission is satisfied that he has no good reason or justification for such failure;

Now, therefore, in pursuance of section 10A of the said Act, the Election Commission hereby declares the said Shri Vakepadathu V. B. Kunhimohamad to be disqualified for being chosen as, and for being, a member of either House of Parliament or of the Legislative Assembly or Legislative Council of a State for a period of three years from the date of this order.

[No. KL-LA/55/77]

आदेश

नई दिल्ली, 24 दिसम्बर, 1977

का० आ० 108:—यतः, निर्वाचन आयोग का समाधान हो गया है कि मार्च, 1977 को हुए लोक सभा के लिये साधारण निर्वाचन के लिये 17 नरसारा ओपेट निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवार श्री सब्बासानी मल्लारेड्डी, कांडुलापुरम पो० आ०, वाया कुम्बम गिद्दालुर तालुक जिला प्रकासम (आंध्र प्रदेश), लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 तथा तद्धीन बनाये गये नियमों द्वारा अपेक्षित रीति से अपने निर्वाचन व्ययों का लेखा दाखिल करने में असफल रहे हैं;

और, यतः, उक्त उम्मीदवार द्वारा दिये गये अभ्यावेदन पर विचार करने के पश्चात्, निर्वाचन आयोग का यह भी समाधान हो गया है कि उसके पास इस असफलता के लिये कोई पर्याप्त कारण या न्यायौचित्य नहीं है,

अतः, अब, उक्त अधिनियम की धारा 10क के अनुसरण में निर्वाचन आयोग एतद्द्वारा उक्त श्री सब्बासानी मल्लारेड्डी को संसद के किसी भी सदन के या किसी राज्य की विधान सभा अथवा विधान परिषद् के सदस्य चुने जाने और होने के लिये, इस आदेश की तारीख से तीन वर्ष की कालावधि के लिये निरर्हित घोषित करता है।

[संख्या आ० प्र०-वि० स०/17/77]

आई० के० के० मेनन, सचिव

ORDER

New Delhi, the 24th December, 1977

S.O. 108.—Whereas the Election Commission is satisfied that Shri Sabbasani Mallareddy, Kandulapuram P.O. via Cumbum Giddalur Taluk, Prakasam District (Andhra Pradesh), a contesting candidate for general election to the House of the People held in March, 1977 from 17-Narasaraopet constituency, has failed to lodge the account of his election expenses in the manner required by the Representation of the People Act, 1951, and the Rules made thereunder;

And whereas after considering the representation made by the said candidate, the Election Commission is further satisfied that he has no good reason or justification for the failure;

Now, therefore, in pursuance of section 10A of the said Act, the Election Commission hereby declares the said Shri Sabbasani Mallareddy to be disqualified for being chosen as, as for being, a member of either House of Parliament or of the Legislative Assembly or Legislative Council of a State for a period of three years from the date of this order.

[No. AP-HP/17/77]

New Delhi, the 29th December, 1977

S.O. 109.—In pursuance of Section 106 of the Representation of the People Act, 1951 (43 of 1951) the Election Commission hereby publishes the Order, dated 14th November, 1977 of the High Court of Gujarat at Ahmedabad in Election Petition No. 1 of 1977.

ELECTION PETITION NO. 1 OF 1977

The Hon'ble MR Justice D. P. DESAI

M/s. M. R. Barot and M. C. Barot, Advocates for the petitioner.

Mr. C. T. Daru, Advocate for respondent No. 1.

Mr. G. T. Nanavaty, Asstt. Government Pleader for respondent No. 3.

Respondent No. 2 though served, absent.

CORAM : D. P. DESAI, J.
(November 14, 1977)

ORAL JUDGMENT :

This is a petition under section 100(1)(d) of the Representation of the People Act, 1951 (the Act) for a judicial scrutiny and inspection of votes cast at the last Lok Sabha elections in Parliamentary constituency being 3. Jamnagar constituency. The election was held on March 19, 1977 with three candidates in the arena, the petitioner being one of them and the other two being respondent Nos. 1 and 2. The counting of votes took place on March 20, 1977 ; and when the result of the first count was announced in the evening of that day, respondent No. 1 secured 1,21,821 votes, petitioner secured 1,19,130 votes and respondent No. 2 secured 2,710 votes.

2. As a result of a difference of about 2700 votes and on account of certain other grounds, the petitioner gave an application for recount which was granted by the Returning Officer at 10.00 p.m. in the same night. The recount was held thereafter by the Returning Officer ; and the result of the recount was as under :

Respondent No. 1 secured	1,21,790 votes.
The petitioner secured	1,19,120 votes.
Respondent No. 2 secured	2,706 votes.

Thus the respondent No. 1 was finally declared elected. In the present petition, challenge to the election is based only on ground Nos. (iii) and (iv) of section 100(1)(d) of the Act, viz. that the result of the election in so far as it concerns respondent No. 1 has been materially affected by the improper reception, refusal or rejection of votes and reception of a votes which were void, or by non-compliance with the Rules made under the Act in connection with counting of votes.

3. The grounds alleged for judical scrutiny and inspection of votes in the present petition may shortly be stated as under. Even though the result of the first count was announced at about 6.30 p.m. and the petitioner had already given an application for recount, the Returning Officer i.e. respondent No. 3 hesitated in taking decision on that application and did not take decision for about 3-1/2 hours. Thus, uncertainty about the recount continued for such a long time. As a result of this, most of the counting agents of the petitioner who had assembled in the counting hall from early morning went out thinking that recounting was not to be given. When the recounting was ordered at about 10.00 p.m., good number of counting agents of the petitioner had gone out and, therefore, the petitioner requested respondent No. 3 to give time to get the counting agents who were out or to alow him to appoint new counting agents as the counting agents who were there from early morning had left. This request of the petitioner was rejected by respondent No. 3. There was no adequate water facility or facility for tea in the premises after 6.00 O'clock ; and in the said circumstances the counting agents were required to go out for water, tea or little refreshment as they were not sure whether recounting will be ordered or not. When the recounting was ordered at about 10.00 p.m., the counting agents of the petitioner were waiting outside the premises and they were not being allowed to enter the premises and join the work of recounting because of the instructions issued by respondent No. 3. It was on this account that the petitioner had made the request to respondent No. 3 to get the counting agents in ; and if some of them had left, to appoint new counting agents. As the said request was rejected, the recounting which took place in the absence of good number of counting agents of the petitioner on various tables, has been materially affected and the petitioner was put to a handicap during recounting. The result was that the petitioner could not get the necessary aid and assistance during recount which he had a right to as a candidate. As the counting was taking place on different floors and in different rooms it was very difficult for the petitioner to get proper recounting made and to have proper scrutiny of the votes polled at the election. The difference as a result of the recount is of 2670 votes which was less than the difference found in the first count. This difference justifies the petitioner's contention about improper reception of votes in favour of respondent No. 1 and improper rejection and/or refusal of votes validly secured by the petitioner as well as acceptance of void votes as valid votes in favour of respondent No. 1. The number of such votes was much higher than what was found at the first count. If the scrutiny takes place in compliance with the Rules as regards rejection or acceptance of votes, then the petitioner was likely to get more votes than the votes secured by respondent No. 1.

4. In paragraph 21 of the petition, about six grounds have been given, but during the trial, it became clear that the fate of this petition depends on the allegation that about 50 to 60 counting agents of the petitioner were prevented entry into the counting premises by police after the recount was ordered. Therefore, it is the case of the petitioner at the trial also that he could not get proper assistance of counting agents for the purpose of scrutiny of votes during recounting. This is the sole ground on which the relief of judicial scrutiny and inspection of votes is now claimed at the end of the trial.

5. The allegations made in the petition were all denied by respondent Nos. 1 and 3 by their written statements. Thus, the petitioner was put to strict proof of the allegations made by him in order to claim judicial scrutiny. The maintainability of the petition was also challenged by respondent No. 1 on account of certain defects pointed out in paragraphs 1 and 2 of the written statement Exh. 13.

6. Following issues were struck at Exh. 25.

(1) Is the petition not maintainable on the grounds stated in paragraphs 1 and 2 of the written statement Exh. 13 filed by respondent No. 1 ? If so, can the defects relied upon on behalf of respondent No. 1 be condoned ?

(2) Is it proved that in some ballot boxes less votes were found than what was reported to have been polled, whereas in other ballot boxes more votes were found ? If so, what is its effect on the recount ordered by the Returning Officer ?

(3) Is it proved that the Counting Agents of the petitioner went out of the hall, and the petitioner asked for time to get back the Counting Agents or to allow him to appoint new Counting Agents, and the same was refused ? If so, what is its effect ?

(4) Is it proved that the Counting Agents of the petitioner who were waiting outside the premises were not allowed to come in and to join the work of recounting as alleged in paragraph 16 of the petition ?

(5) Is it proved that at the start of the recount, sufficient number of Counting Agents of the petitioner were not present ; and, therefore, the petitioner was deprived of the necessary aid and assistance in respect of recount as alleged in paragraph 17 and the end of paragraph 18 of the petition ? If so, what is its effect ?

(6) Was there a delay of about 3-1/2 hours in deciding upon the petitioner's claim for recount ? If so, what is its effect on the claim for recount before the court ?

(7) Is it proved that in the recount, errors as alleged in paragraph 21(i) to (vi) were committed by the Returning Officer ?

(8) What order ?

7. After close of pleadings it was thought that this being a matter for judicial scrutiny and inspection, it can be disposed of on affidavits. Affidavits were filed on behalf of both the sides with their pleadings. The learned advocates had also agreed to the disposal of the matter on affidavits. Later on, however, in view of the provisions of section 87 of the Act it was decided to follow the procedure for the trial of a suit

which would, inter alia, include the right and opportunity of cross-examination. As the learned advocates for the parties wanted witnesses to be cross-examined, it was decided not to dispose of the matter on affidavits only. By agreement, it was decided that when a deponent of an affidavit is put in the box as a witness, the affidavit filed by him will be treated as chief-examination with liberty to the party calling him before cross-examination starts to put other questions as may be relevant with the permission of the Court; and on such chief-examination the cross-examination will follow. A note to this effect was made by this Court on September 12, 1977. Thereafter 5 witnesses in all were examined on behalf of the petitioner including the petitioner and 5 witnesses were examined on behalf of respondent No. 3, the returning officer including the said respondent. No witness was examined on behalf of the successful candidate, respondent No. 1. Having considered the evidence on record and having heard the arguments advanced on behalf of both the sides, my findings on issues are as under :

(1) First part-petition is maintainable ; later part does not survive.

(2) First part-not proved ; later part does not survive.

(3) First part in the affirmative ; later part no effect.

(4) Not proved.

(5) First part-not proved ; later part does not survive.

(6) First part-there was some delay, but not necessarily of 3-1/2 hours ; later part no effect.

(7) Not proved.

(8) The petition is liable to be dismissed with costs.

REASONS

8. Issue No. 1.—In paragraph 1 of the written statement Exh. 13 filed by respondent No. 1 it has been contended that the petition was not presented in compliance with the requirements of section 81 of the Act and that the petition was not accompanied by the true copies of the documents and the copies supplied were incomplete in material particulars. In paragraph 2, the contention taken was that the petition did not comply with the requirements of section 83 of the Act. The petition was not verified in the manner laid down in the Code of Civil procedure for the verification of pleadings ; and the annexures to the petition were not supplied and verified by the petitioner. In arguing this issue, Mr. Daru did not press the contention as regards verfication of the pleadings when he found that in the verification, affidavit below the petition, paragraph numbers remained to be stated, though the verification was split up into two parts viz. that was true to the knowledge of the petitioner and what was true according to his information and belief. The contention of Mr. Daru, however, was that 8 affidavits in Gujarati were annexed to the petition as annexures. They were collectively annexed as Annexure 'D' as the index to the petition shows. With Gujarati affidavits, their English translation was also annexed. Mr. Daru pointed out by producing a copy of the petition and the index given to him that the copies of these Gujarati affidavits were not supplied to respondent No. 1 at all. His contention was that these affidavits in Gujarati which were annexed to the petition were part and parcel of the petition, and, therefore, the copy of the petition supplied to him was incomplete. He relied on the first part of section 81(3) of the Act for this purpose which, inter alia, states that every election petition shall be accompanied by as many copies thereof as there are respondents mentioned in the petition. The contention was that the petition in the present case consists of the petition and the annexures and as the copies of the annexures viz. Gujarati affidavits were not supplied, what was supplied to respondent No. 1 was an incomplete petition. This defect, in the submission of Mr. Daru, was fatal. Mr. Daru made it clear that the copies of English translation were supplied along with the copy of the petition to respondent No. 1, but, in his submission, the translation is not a copy of the original affidavits. Secondly, it was contended that the copy of the application for recount which is produced in this case at Exh. 3 was supplied to respondent No. 1, but that copy did not contain the copy of the order passed below that application by the Returning Officer. The petitioner produced a true copy of this application for recount as Annexure 'B' ; and Mr. Daru pointed out that this Annexure 'B' contains the order of the Returning Officer, whereas the copy given to him which is produced by him along with the list does not contain any such order. Now, it is a fact that the copy of Exh. 3 i.e. the application for recount supplied to respondent No. 1 does not contain the order made thereon by the Returning Officer. The submission was that this document is also a part of the petition having been annexed to the petition ; and, therefore, the copy of the petition supplied to respondent No. 1 was incomplete. Thus, this defect also falls in the first part of section 81(3) of the Act. Thirdly it was urged that the translations in English were in themselves misleading in some parts. This contention is based on the contents of the Gujarati affidavits filed by the petitioner and their English translation. It is pointed out that in Gujarati affidavits there is an averment about the deponent having gone out for taking Cha Pani (which was literaly translated as tea and water by Mr. Daru). It was pointed out that in the English translation, there is reference to tea only and no reference to water. It was urged that this is material, because tea and water are quite separate. Section 86(1) of the Act was pointed out in order to show that the High Court was bound to dismiss an election petition which did not comply, inter alia, with the provisions of section 81 of the Act.

9. Now, it is true that copies of Gujarati affidavits were not supplied to respondent No. 1 and only English translations were supplied. It is equally true that in the copy of the application for recount at Exh. 3 supplied to respondent No. 1 the order passed by the Returning Officer is missing. The question, however, is whether these annexures can be treated to be part of the petition so as to arrive at a conclusion that the petition without these annexures or their true copies supplied to respondent No. 1 was incomplete. Fortunately for the petitioner there is a decision of the Supreme Court reported as Smt. Sahodrabai Rai Vs. Ram Singh Aharwar and others A.I.R. 1968 Supreme Court 1079 which is very close to the point involved in this petition out of all the decisions cited at the bar. In that case, the appellant before the Supreme Court was the petitioner before the High Court; and she challenged the election of the successful candidate, inter alia, on the ground of corrupt practice, inasmuch, as the successful candidate appealed to religion through a pamphlat marked Annexure 'A'. This pamphlet charged the Congress party with encouraging cow-slaughter and offending the Hindu Santiment. Details were given in the pamphlet about the number of animals slaughtered every day in Madhya Pradesh and elsewhere. In the body of the election petition, however, a translation in English of the Hindi pamphlet was incorporated. The original pamphlet was attached to the election petition and was marked Annexure 'A'. The election petitioner proceeded to say in her petition itself that the pamphlet "form part of the petition". The successful candidate after raising of the issues raised a special objection stating that the copy of the aforesaid pamphlet was not annexed to the copy of the election petition served upon him, and, therefore, the election petition was liable to be dismissed under section 86 of the Act. In this, an additional issue was framed as under :—

> "Whether the election petition is liable to be dismissed for contravention of S. 81(3) of the Representation of the People Act, 1951 as copy of Annexure A to the petition was not given along with the petition for being served on the respondents".

The High Court held that the copies of the election petition served upon the respondents were not accompanied by the pamphlet which was an Annexure to the election petition and further held that in view of the provisions of section 86 of the Act, the petition was liable to be dismissed. In view of this finding, other issues which were struck between the parties were not gone into. The petitioner appealed to the Supreme Court. The Supreme Court after referring to section 81 of the Act in paragraph 8 proceeded to observe as under :—

> "The dispute, therefore, is whether the pamphlet could be described in this case as a part of the election petition. The answering respondent says that it is so and was considered to be so by the election petitioner herself when she stated that it was to be read as a part of the election petition."

Their Lordships proceed further to state that the matter was not to be resolved on how the election petitioner viewed the matter but from the point of view of the requirement of the law on the subject. Then section 83 of the Act was reproduced. Their Lordships then looked into the relevant provisions of the Code of Civil Procedure including the provision for presentation of plaints and their verification as well as the provision as to annexing a list of documents, if any which the party produces alongwith the plaint. It was further pointed out that according to Rule 9 of Order 7 of the Code, after the plaint is admitted, the plaintiff has to present as many copies or plain paper of the plaint as there are defendants unless the Court by reason of the length of the plaint or the number of defendents, or for any other sufficient reason, permits him to present a like number of concise statements of the nature of the claims made etc. Their Lordships then observed :—

> "It will be noticed here that, what is required to be provided are copies of the plaint itself or the concise statement according to the number of defendants. There is no mention here of any other documents of which a copy is needed to be presented to the Court for service to the defendants."

Other provisions of the Code including the form for summons in a suit were also considered. Then Their Lordships examined provisions of Section 81 of the Act; and found that the words used in that provision were only "the election petition". There was no mention of any document accompanying the election petition. Then the following important observations were made in paragraph 12 which given a clear indication as to the approach to be made in respect of similar contentions;

> "If the matter stood with only this sub-section there would be no doubt that what was intended to be served is only a copy of the election petition proper. Assistance is however taken from the provisions of sub-section (2) of Sec. 83 which provides that any schedule or any annexure to the petition shall also be signed by the petitioner and verified in the same manner as the petition. It is contended that since the pamphlet was an annexure to the petition it was not only necessary to sign and verify it, but that it should have been treated as a part of the election petition itself and a copy served upon the respondents. In this way, non-compliance with the provisions of Section 86(1) is made out. In our opinion, this is too strict a reading of the provisions. We have already pointed out that section 81(3) speaks only of the election petition. Pausing here, we would say that since the election petition itself reproduced the whole of the pamphlet in a translation in English, it could be said that the averments with regard to the pamphlet were themselves a part of the petition and therefore the pamphlet was served upon the respondents although in a translation and not in original. **Even if this be not the case, we are quite clear that sub-section (2) of section 83 has reference not to a document which is produced as evidence of the averments of the election petition but to averments of the election petition which are put in not in the election petition but in the accompanying schedules of annexures.** We can give quite a number of examples from which it would be apparent that many of the avements of the election petition are capable of being put as schedules or annexures. For example, the details of the corrupt practice there in the former days used to be sent out separately in the schedules and which may, in some cases, be so done even after the amendment of the present law. Similarly, details of the averments too compendious for being included in the election petition may be set out in the schedules or annexures to the election petition. The law then requires that even though they are outside the election petition, they must be signed and verified, but such annexures or schedules are then treated as integrated with the election petition and copies of them must be served on the respondents if the requirement regarding service of the election petition is to be wholly complied with. **But what we have said here does not apply to documents which are merely evidence in the case but which for reasons of clarity and to lend force to the petition are not kept back but produced or filed with the election petitions. They are in no sense an integral part of the averments of the petition but are only evidence of those averments and in proof thereof .... would be streching the words of sub-section (2) of section 83 too far to think that every document produced as evidence in the election petition becomes a part of the election petition proper."**
> **(Emphasis supplied).**

In view of this decision which goes quite close to the facts of this case, it will not be necessary to refer to the other decisions cited by Mr. Daru at the bar. Mr. Daru also tried to argue this issue on the basis of this decision pointing out that the affidavits in Gujarati were integral part of the averments in the petition, and specifically drew my attention to paragraph 25 of the petition in this connection.

10. Now, so far as Gujarati affidavits are concerned as many as affidavits of eight different persons were annexed to the petition. These affidavits are drafted in identical terms. Only the names and other details pertaining to the deponents vary. The concerned deponent stated in his worked in the he was a counting agent of the petitioner and worked in the counting hall during the first count. Then he said that the work of counting was over at about 6.00 or 6.30 p.m. and delay was caused by the Returning Officer in passing the order on the application for recount. He then said that the period between the first counting and the order of recount being recess he had gone out with the permission of the concerned officer for tea etc. because there was no arrangement for water anywhere near the room where the counting was going on. Then it is said that the deponent tried to enter the counting hall after taking tea etc., but he was prevented by police; and, therefore, could not go inside. Then he went to the bungabow of the petitioner and contacted one Mr. Viramgami who was a worker of the petitioner and toly him about this. Viramgami contacted the petitioner on phone and informed him about what had happened. Even thereafter the deponent tried to enter the counting hall, but he was prevented from entering till recounting was over. Now as regards presence of counting agents during the first count there are averments made in paragraph 10 of the petition showing inter alia that the counting agents had brought to the notice of the petitioner certain irregularities during the first count. There is also a specific averment as regards the delay of about 3-1/2 hours in taking decision about the recount by the Returning Officer in paragraph 14 of the petition. There is also an averment in that paragraph that counting agents of the petitioner who were there from early morning had left, and the petitioner requested the Returning Officer to give time to get his counting agents who were out. There was also an averment in paragraph 16 in connection with absence of adequate water facility or facility for tea after 6-00 O'clock in the premises; and, therefore, the counting agents had to go out for water or tea or a little refreshment because it was hot season. In paragraph 16 also there is a specific averment that the counting agents were not being allowed to re-enter the premises because police were working under the instructions of the Returning Officer. In paragraph 17 there is an averment that good number of counting agents of the petitioner were absent on account of this and could not take part in the recounting. In paragraph 25 the petitioner made it clear that the police officers on duty did not allow the counting agents to go in the premises where the recounting was taking place and this deprived the petitioner of the assistance which was his right and which ought not to have been refused. Then the petitioner stated in paragraph 25 as under :

> 'The petitioner **seeks indulgence to append herewith** the affidavits of some of the persons who had worked as counting agents of the petitioner on the day of counting i.e. on 20th March, 1977."
>
> (Emphasis supplied).

Having named the deponents of the affidavits, the petitioner proceeded to say in paragraph 25 :

> "These were duly appointed counting agents of the petitioner and thus are some of the counting agents who had gone out after first counting and would desire to come back and who requested to be allowed to come back and were not allowed by the police to enter the premises where the counting and recounting was taking place and in their affidavits they have on oath stated the circumstances

in which they had gone out and how they were prevented from assisting the petitioner in the work of recounting by not allowing the entry in the premises. Annexed hereto and marked annexure 'D' collectively are the 8 affidavits of the persons referred to above."

Reading the aforesaid averments in the petition as a whole, it is quite clear that the petitioner annexed Gujarati affidavits by way of evidence in support of the averments made in the petition. This is not a case, therefore, in which Gujarati affidavits can be termed as part of the averments of the petition. In fact, the affidavits by their very nature were pieces of oral evidence in support of the averments made in the Petition. The averments made in the affidavits refer to the averments which are already there are in the petition. The words in paragraph 25 "The petitioner seeks indulgence to append herewith" clearly show that the petitioner wanted to produce these affidavits as evidence in support of the averments made in the petition. Mr. Daru for respondent No. 1 however, urged on the basis of paragraph 25 that the petitioner has also stated in that paragraph that the affidavits of the deponents show the circumstances in which they han gone out and how they were prevented from assisting the petitioner. In the submission of Mr. Daru, instead of reproducing the averments contained in each of the affidavits in this paragraph of the petition, the petitioner has annexed them as part of the averments in the petition. There is no substance whatsoever in this argument. Whatever has been stated in the affidavits was already stated by the petitioner in the earlier paragraphs of his petition. The petition is a detailed petition consisting of 17 typed pages. It is not a petition setting out relevant provisions of law and the grounds for challenging the election and then staing therein that on the basis of the averments contained in the affidavits annexed to the petition the petitioner claims that the election of the successful candidate be set aside. Gujarati affidavits in this case being in no sense an integral part of the averments of the petition but being only evidence of those averments, failure to supply copies of these Gujarati affidavits does not result in contravention of the provisions of section 81(3) of the Act. The principle laid down in Sahodaraba's case (supra) by the Supreme Court squarely applies to the facts of the present case.

11. So far as the second limb of the contention of Mr. Daru on issue No. 1 is concerned, it may be stated that the copy of the application for recount is also produced as part of the evidence. It does not become an integral part of the petition. Reference to the application for recount is already made in the petition; and it is also stated in paragraph 14 that recounting was ordered. For the same reasons as stated above, therefore, the second limb of the contention on issue No. 1 raised by Mr. Daru must also fail.

12. In view of the aforesaid finding, the next contention on issue No. 1 based on misleading translation of Gujarati affidavits must also fail. In fact, I do not find any thing misleading in this translation. There is no point in emphasising the distinction between Sha Pani in Gujarati and tea in English. But apart from that, the English translation does contain an averment about absence of arrangement in the counting hall for water. It is thus clear that there is no breach of the provisions of section 81 of the Act in the present case.

13. So far as the contenion in paragraph 2 of he written statement at Exh. 13 relating to verification is concerned, Mr. Daru has rightly not pressed the said contention. The findings on issue No. 1 will, therefore, be in the terms mentioned earlier.

14. As regards first part of issue No. 2, there is no evidence worth the name; and no submission was made on this issue on behalf of the petitioner. Therefore, the first part of the second issue will be found in the negative; and the second part will not survive.

15. So far as the third issue is concerned, looking the language in which it has been framed, it must be answered in the affirmative. There is hardly any dispute about the fact that some of the counting agents of the petitioner were outside the hall. As regards the petitioner asking for time to get them back or to allow him to appoint new counting agents and refusal of that request, there is unimpeachable evidence consisting of the application Exh. 4 which was rejected by the Returning Officer. Therefore first part of issue No. 3 in view of the language in which it is framed. will be answered in the affirmative. We have to proceed on the basis that some of the counting agents of the petitioner had gone out of the hall and after recount was ordered, the petitioner asked for time to get the counting agents back or to appoint new counting agents as stated in Exh. 4 and that request of his was rejected by the Returning Officer. However, in view of the failure of the petitioner to prove issue No. 4 it is quite clear that the order passed by the Returning Officer below Exh. 4 has no effect on the result of this election. The result of the election finally declared cannot be set aside on the basis of the application Exh. 4 and the order passed thereon. It was upto the petitioner to have kept his counting agents present for recounting and to have made arrangements to see that they remained present in good time before recount started. In this connection, the Returning Officer has stated in his evidence at Exh. 29 that the petitioner had orally requested him to postpone the recount till next morning and he rejected that request because he found it risky to preserve all the ballot papers in tact till next morning, (vide paragraph 93). It accept this part of his evidence. Thus, it is clear that the finding on the first part of issue No. 3 has no effect on the claim made in this petition.

16. Issue No. 4 is the centre of controversy in this petition; and in a way the fate of this petition hangs on the decision of that issue. Issue No. 5 is related to issue No. 4 in a manner and, therefore, it will be convenient to discuss both of them together. The evidence led on behalf of the petitioner as regards these issues consist of the petitioner himself at Exh. 27 and four witnesses. . . . who are deponents of the affidavits viz. Yogesh Bhatt (Exh. 5), Haribhai Rugnath (Exh. 6), Kantibhai Joshi (Exh. 7) and Vishnuprasad Trivedi (Exh. 8). The affidavits of these four witnesses are verbatim the same. In fact, Exhs. 6 and 7 appear to be carbon copies of Exh. 8. Only blank spaces relating to names and other particulars of the deponents have been filled in Exh. 5 though first copy of the typewriter, is verbatim the same as other three affidavits. This, to my mind, is one infirmity in the oral evidence adduced by the petitioner. It is quite clear that each of the deponents was only doing a mechanical act of swearing a prepared and typed affidavit and that does go to an extent towards his credibility. The same can be said about the affidavits of two of the four witnesses examined on behalf of respondent No. 3 viz, K. N. Raval, Exh. 20 and B. V. Gandhavi, Exh. 24. However the third deponent of affidavit on behalf of respondent No. 3 viz. M. M. Upadhyaya (Exh. 21) has added one paragraph in his affidavit. In other respects his affidavit is identical with the affidavits of M/s. Raval and Gandhavi mentioned above. The 4th witness P. P. Gandhavi at Exh. 15 has filed a separate and distinct affidavit with regard to water arrangement. The ground however that two witnesses of respondent No. 3 have filed identical affidavits does not jusify a different approach to the appreciation of the evidence led on behalf of the petitioner. At best, same result as to credibility would follow with regard to the aforesaid two deponents of identical affidavits filed on behalf of respondent No. 3 However, the burden being on the petitioner to make out his case with regard to issue Nos. 4 and 5 we have to examine the evidence led by the petitioner in support of these issues in the first instance.

17. The contents of the affidavits filed on behalf of the petitioner have broadly been set out earlier. They speak about the work of the first counting being over at about 6.00 or 6.30 p.m. and the subsequent delay in taking decision about recount. All the deponents of the said affidavits have then stated about going out for tea etc. and described the period between the first count and the decision about recount as recess. It is not understood what led them to style this period as recess. At the trial they gave up the story of this recess and different persons gave out different time of leaving the hall and different time of prevention. Thus. Haribhai Rughnath (Exh. 6) stated that he was prevented at 6.45 p.m. which would mean that he must have gone out much earlier. In fact, it is his case that he went out after the result of the total number of votes in his segment was announced which happened at about 5.30 to 5.45 p.m. Vishnprasad Trivedy (Exh. 8) stated that he went out at about 7.30 p.m. and was prevented at about 9.15 to 9.30 p.m. Kantilal Joshi (Exh. 7) stated that he went out after 6.30 p.m. and was prevented at about 9.00 p.m. Yogesh Bhatt (Exh. 5) stated that he had gone out at about 7.00 p.m. and was prevented at about 9.00 p.m. Thus, it is not as if

this to be a recess had gone out, of course for taking tea etc. Each of them has given the same reason for going out, viz. complete absence of arrangement for water round about the counting premises. Some of the deponents have said in their evidence that though initially arrangement for water was there, this arrangement failed by about 5.30 p.m. and they complained to the Assistant Returning Officer of the concerned segments who said that arrangement would be made. They waited for sometime, but no arrangement was made. This theory about stoppage of water supply has been completely belied by the evidence of P. P. Gadhavi (Exh. 15) examined on behalf of respondent No. 3. He was instructed to make necessary arrangements to provide tea, lunch packets and drinking water etc. to the staff engaged for counting of votes as well as for the counting agents of the candidates; and accordingly he had made arrangements . He said that P.W.D. authorities had made necessary arrangements for supply of drinking water by engaging coolies on daily wages and the Municipal authorities had also made arrangements for water tanker. He also said that no complaint was received from any of the counting agents as regards non-supply of tea, lunch packet or dringing water during the course of counting. He further said that no member of the staff as well as the counting agents were required to go about of the room for the said purpose. At the relevant time he was working as District Supply Officer, Jamnagar. He gave details in his evidence before the Court as regards the Water arrangement. He said that the Municipal Water Supply engineer was instructed o see that the overhead tanks of the college premises are filled to the full. Besides one water tanker and one fire fighter were kept ready there. The water tanker was kept present there so that in case of need, the waer of the tanker can also be used for drinking. Near each counting segment one earthen pot was provided with two attendents to see that water is filled in the pot and served in the segment. There were four over-head tanks over the college building; and their total capacity was about 25,000 litres. There was one under ground tank and a bore in the college compound. Water was filled in the over head tanks by the aid of an election pump from these two sources. On both the floors of the college building, there are big water rooms ; and there are taps for dringing water in these rooms. He also said that he used to move around and was verifying whether water was filled up in the earthen pot and whether the water arrangement was working properly. He added that in fact there was no need to take supply of water from the municipal tanker because the water supply from other sources was enough. Therefore, the tanker had to be sent back with water at 4.00 a.m. in the early morning of the next day. He also said that arrangement for lunch packets was made in the premises and they were available from 11.00 to 1.30 p.m. and later on at night from 9.00 p.m. to 11.00 p.m. Tea was served from 9.00 a.m. to 11.00 a.m. Then for the second time tea was served between 2.00 to 3.30 p.m. and for the third time between 9.00 and 11.00 p.m. This witness has stood the test of cross-examination quite well. As stated earlier, he has filed an independent affidavit which is not a stero typed affidavit like that of other two affidavits. He was a responsible officer who was assigned the particular duty of looking after arrangement for tea, lunch and water supply. There is no reason to disbelieve him; nor was any reason suggested at the time of argements. All that was urged on behalf of the petitioner was that the evidence given by the petitioners witnesses as regards shortage of water supply should be accepted. I do not think that I should give oredence to this evidence of the petitioner's witnesses in the face of the evidence of P. P. Gadhavi which discloses the details of the arrangements made. It may be that ice cold water was not available on the hot summer day of counting. But that is no reason for holding that water arrangement failed completely from 5.30 p.m. onwards. If that had happened, it would not have escaped the notice of this witness. It is thus clear that all the deponents of the affidavits on behalf of the petitioner have made a common cause on the point of water shortage as the reason prompting them to leave the hall. This fact has been disproved by the evidence of Gadhavi. This is another infirmity in the oral evidence led by the petitioner.

18. The third feature emerging from the affidavits filed on behalf of the petitioner is that according to these affidavits, entry at the door of the counting hall was prevented. In the evidence, however, all the witnesses except one stated that entry at the main gate of the compound was prevented. In the affidavits, there is no mention about the main gate of the compound.

19. It also transpires from the evidence led on behalf of the petitioner that counting agents were supplied with badges and they had put on these badges at the time of the alleged prevention of their re-entry. The petitioner also admitted that in earlier elections he had seen counting agents with badges coming out and going inside without any obstacle. In fact badges would serve as a sort of identity card for the counting agents. There is no reason, therefore, why the counting agents wearing badges should be prevented at the time of their re-entry. But the case of the petitioner was that in this election, the Returning Officer had given specific instructions not to allow persons with badges even to re-enter the premises because he had earlier instructed counting agents in the morning not to leave the premises till the whole of the counting was over. The Returning Officer in his evidence has denied having given any such instructions; and there is no reason to disbelieve him. It is true that he has admitted that instructions were that no unauthorised person should be allowed to enter the premises. This is quite legitimate. The counting agent wearing a badge would not be considered to be an unauthorised person. Thus, apart from the place where re-entry was prevented, viz. whether at the main gate of the compound or at the door of the counting hall, the story when put to the test or probability also looks improbable. One of the witnesses of the petitioner viz. Kantilal Joshi has stated that he was prevented at the entrance of the counting hall and thereafter he went out of the compound. Then he said that he was prevented from entering the hall at about 7.45 to 8.00 p.m. After going out of the compound he was prevented from re-entering inspite of showing the badge. The S.R.P. men who prevented him said that it was Collector's order that a person going out of the hall should not be allowed to re-enter. The Returning Officer in his evidence has made it clear that no, S.R.P, policement were employed as guard at the counting premises. According to him the S.R.P. men were kept ready as a striking force in case of emergency and the assistance of regular policemen was taken for guard duty. It is not upnderstood why S.R.P. men should prevent persons with badges from entering the compound or the hall saying that it was Collector's order when in point of fact no such order was given by the Collector. The case is that after contacting the petitioner on phone through Mr. Viramgami. 50 to 60 counting agents of the petitioner tried to enter the compound gate under the leadership of witness Vishnuprasad Trivedi, but the policemen prevented them at the main gate. If as many as 50 to 60 counting agents were prevented in this manner a great row would be created by them. They were all active workers of the petitioner and they would not sit silently. Thus, the story of preventing entry of 50 to 60 persons at the main gate also appears to be improbable. Everybody was interested in seeing that the counting is completed peacefully and without any untoward incident. In such circumstances, it is hardly likely that 50 to 60 counting agents of a candidate with their badges on would be prevented by police from entering the compound and thereby to give cause for a great row. The evidence of the petitioner also discloses that complaint about prevention of entry was made to one P. S. I. Shimpi. It is not understood why that P. S. I. was not examined on behalf of the petitioner. The fact that he belonged to police force is no reason not to examine him. After all, it was for the petitioner to make out the case about prevention of entry. It was stated that the P. S. I. also replied when the complaint was made to him that he was helpless as it was Collector's order. This P. S. I. would have thrown great light as to the nature of the order given to him by the Collector, if any.

20. All the witnesses examined on behalf of the petitioner are in a way interested in the success of this petition because they worked actively for the petitioner as counting agents. They were prepared to sweer the averments contained in stero typed affidavits They have stated about the reason for leaving the counting hall viz. absence of water supply which reason has been negatived by good and credible evidence led on behalf of respondent No. 3. In the nature of things, therefore, evidence of such type of witnesses cannot be acted upon without independent corroboration. But at the top of this all, there is one striking feature of the evidence led in there was a recess between 6.30 and 10.00 p.m. with respect to all the segments; and the counting agents treating

this case which goes a long way to create grave doubt about the veracity of the petitioner's case that his counting agents were prevented from reentering the compound by policemen; and, therefore, they did not go inside and remain present during recounting. It is petitioner's case in his chief-examination itself that during recounting he received a phone call from one Mr. Viramgami. It may be stated that according to the counting agent's after prevention of their entry they had contacted ihis Viramgami at petitioner's residence as Viramgami was the active worker of the petitioner. It is their case that Viramgami thereupon contacted the petitioner on phone bringing this fact to petitioner's notice. The petitioner stated that he received this phone form Viramgami and then he requested the Returning Officer to make arrangement for the entry of his counting agents who were outside and whom police were preventing from entering. But the Returning Officer refused to do so. In cross-examination he said that after this oral request and refusal he gave an aplication to the Returning Officer in this connection and that application was Exh. 4. He also stated that except Exh. 4 he had not given any other application to the Returning Officer in this connection. To Court's question also he stated that he had received phone call from Viramgami at about 9.30 p.m. before decision for recount was taken. Exh. 4 as it itself shows was given at 10.00 p.m. after the decision for recount was taken. Therefore, according to the case of the petitioner he had received the phone cal from Viramgami prior to giving of the application Exh. 4 communicating to him that policemen were preventing entry of his counting agents into the compound of the premises. It is really surprising to find that there is not a syllable about this prevention by police in the application Exh. 4 given by the petitioner. The application is in English. It is a short application; and its relevant portion may be reproduced. It is addressed to the Returning Officer; and reads :

> "We are obliged for your decision to give us a recount of votes. We request to give us time to get our election/counting agents or appointment new counting agents.
>
> Thanking you."

Then follows the signature; and the time as 10.00 p.m. and date. The Returning Officer passed the folowing order on it.

> "As no revocation order regarding counting agents is made, the request cannot be granted."

The application gives a clear impression that no grievance was made by the petitioner about preventing of entry by police of the counting agents who were waiting ready outside the premises. There was no mention of this fact whatsoever. We must not forget that the fact that this was an application given by a candidate who, at an election, had suceeded in getting a decsion for recount in his favour. Such a candidate would not fail to bring to the notice of the Returning Officer the attitude of police in preventing entry of his counting agents. This was a very vital factor for him. If at all, therefore, the counting agents were prevented by police as sought to be made out at the trial of this petition, the petitioner would not have failed to make mention about it in Exh. 4. On the contrary, Exh. 4 gives us an impression that the petitioner wanted sometime before recount began and the reason given out was to get the counting agents i.e. to collect them again. It may, at best show that some of the counting agents had gone away. But it would never show that they were willing to come back or that they had made any effort to come back and their entry was prevented. The petitioner was asked to explain the reason for not stating in this application about prevention of entry by police; and he stated in terms that he was unable to give any reason for it. The failure of the petitioner to state this fact in Exh. 4 shakes the very foundation of his case based on prevention of entry of his counting agents by police. Shall we thenaction the interested testimony of four witnesses examined on behalf of the petitioner in these circumstances? To my mind, no reasonable person would be prepared to act on this testimony in view of the features mentioned above. The evidence of the petitioner's witnesses does not appear to me to be credible on this point. In fact, there is every probability that having found that the petitioner was defeated by a margin of more than 2700 votes when the figures of the first count were announced, some of the counting agents of the petitioner may have lost interest and may have left the counting premises. In fact, it was suggested to the petitioner in the course of cross-examination that at about 9.30 p.m. an announcement was made from B.B.C. that Mrs. Indira Gandhi was lagging behind her rival candidate and that on receiving this news his counting agents had gone away. Of course, the petitioner denied this suggestion. All the same, the probability of the counting agents leaving the premises having found the petitioner defeated by about 2700 votes, cannot be ruled out in the present case. After that announcement perhaps they were more interested in hearing the news about the results from different States. Now, the fact that the petitioner wanted time to get the counting agents, would show that they were not readily available either inside or outside the premises; and it would also indicate that they were required to be contacted at their houses or some other places.

21. If on the question as regards prevention of entry the evidence led on behalf of the petitioner is not acceptable and convincing, there is no reason why I should accept the evidence that about 50 to 60 counting agents of the petitioner were kept back. Of course, the petitioner has stated in his evidence that during recount only about 30 to 35 of his counting agents were present. But there is no reliable evidence in support of this averment. Therefore, both issue No. 4 and first part of issue No. 5 have to be answered in the negative.

22. Assuming that some counting agents of the petitioner had gone out voluntarily on finding that the petitioner was defeated at the first counting and assuming that the petitioner could not get them during recount, the same will have no effect on the petition. The petitioner will have to thank himself for selecting such counting agents. Second part of issue No. 5 will, therefore, be answered accordingly.

23. As regards issue No. 6, it appears fairly clear from the evidence led before me that in the first counting figures of counting of all the segments except 25, Jamnagar segment had reached the Returning Officer by 6-30 p.m. The case of the Returning Officer is that figures of these segments came to him at about 9.00 p.m. I am not inclined to accept this part of the evidence of the Returning Officer. In fact, this part of the story of respondent No. 3 is sought to be supported by the evidence of M. M. Upadhyaya (Exh. 21) who was Assistant Returning Officer for that segment. The witness in his evidence tried to make up time in order to see that in his segment first counting was over at 8.30 p.m. He started by saying that in his segment the work of initial counting was over at 1-30 p.m. and thereafter lunch break of about an hour or an hour and a quarter was taken and the work of actual counting stated at 3.00 p.m. As against this we find from the evidence of other witnesses for respondent No. 3 that they took lunch break of about 45 minutes. The total number of valid and rejected votes in this constituency was 45640 whereas in another constituency viz. Kalawad constituency, the total number of these votes was 44346. The Assistant Returning Officer of Kalawad constituency K. N. Raval was examined at Exh. 20. He stated that after he initial work was over at 1-00 p.m. there was a lunch break of about 45 minutes and the actual work of counting started at 1-45 p.m. He also stated that before at 6.30 p.m. the work of counting of votes on the tables was over and the work on his table was over at about 7-00 to 7-15 p.m. The difference between total number of votes counted at the tables of these two segments was quite small; and if the work of counting could be over in this segment at about 7-00 p.m. there was no reason why the segment of Mr. Upadhyaya should have taken 1¼ hours more. He has not given details as to the reasons why the counting work was lagging so much behind in his segment Not being possessed of sufficient reasons he tried to make up time by enlarging the recess time by about 45 minutes. I am not much impressed by the evidence of this witness. It seems, therefore, that there was some delay in taking decision on the question of recount. But at the same time it is not possible to say that the delay was of 3¼ hours. It was urged on behalf of the petitioner on the basis of paragraph 11 of the written statement of respondent No. 1 that the first counting was over at about 6-15 p.m. It was submitted that his was an admission of a fact by a party and on this basis I should hold that here was delay of 3¼ hours. It is not possible to accept this submission. The time in taking decision was attributed to the Returning Officer and the admission as to the time when

the first counting was over made by respondent No. 1 cannot be used against respondent No. 3. Besides, respondent No. 1 has not entered the box. If he had entered, he would have been cross-examined on behalf of respondent No. 3 with a view to show that the estimate given by him in paragraph 11 of his written statement is not correct. Going by the estimate of time given by Raval as regards completion of counting work in Kalavad segment was can safely conclude that the counting in 25, Jamnagar segment must be over by about 7-30 p.m. Some time would be taken up at the table of the Returning Officer in compiling the figures and preparing the sheet in form No. 20. This sheet in original has been produced at Exh. 30. Therefore, it is safe to conclude that by about 8-15 or so the Returning Officer was in a position to announce the result of the first count and there was delay of about one hour and 45 minutes. This delay, however, has no bearing on the question at issue in this petition. Therefore, on the later part of issue No. 6 it would be held that this delay has no effect on the claim of recount.

24. So far as issue No. 7 is concerned, there is no evidence worth the name in support thereof; and the same has to be answered in the negative.

25. In view of the aforesaid findings, it is clear that the present petition must fail.

26. In the result, the petition fails and is dismissed. The petitioner will pay costs of respondent Nos. 1 and 3 in separate sets. The amount of costs will in the first instance, be deducted from the security deposit lodged by the petitioner in the Court. If the security deposit is not sufficient to cover the amount of costs of both these respondents, that amount shall be appropriated in the first instance towards satisfaction of the claim of costs of respondent No. 3. The balance, if any, will go towards the costs of respondent No. 1 i.e. the successful candidate. If the balance is not sufficient to cover the full costs of respondent No. 1, he will be at liberty to recover the same from the petitioner in accordance with law.

By order of the Court,

M. M. Shastri, Deputy Registrar.

Dated : 29th November, 1977.

[No. 82/GI/1/77]

I. K. K. MENON, Secy.

गृह मंत्रालय

(कार्मिक और प्रशासनिक सुधार विभाग)

नई दिल्ली, 4 जनवरी, 1978

का० आ० 110.—दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1973 (1974 का 2) की धारा 24 की उपधारा (6) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा दिल्ली के एडवोकेट श्री बी० बी० लाल को, वाद आर-सी० संख्या 11/75-सी० आई० यू० (ए०) में अभियुक्त रंजन द्विवेदी, संतोषानन्द और सुदेवानन्द की दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा दोषसिद्धि के विरुद्ध अभियुक्तों द्वारा बायर अपीलों का प्रतिरोध करने के लिये विशेष लोक अभियोजक नियुक्त करती है ।

[संख्या 225/35/77-ए० वी० डी०-II]

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

(Department of Personnel & Administrative Reforms)

New Delhi, the 4th January, 1978

S.O. 110.—In exercise of the powers conferred by subsection (6) of section 24 of the Code of Criminal Procedure, 1973 (2 of 1974), the Central Government hereby appoints Shri B. B. Lal, Advocate Delhi as a Special Public Prosecutor for contesting the appeals filed by the accused Ranjan Dwivedi, Santoshanand and Sudevanand against their conviction by the Delhi High Court, in case RC No. 11/75-CIU(A).

[No. 225/35/77-AVD.II]

नई दिल्ली, 6 जनवरी, 1978

का० आ० 111.—दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1973 (1974 का 2), की धारा 24 की उपधारा (6) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा बम्बई के एडवोकेट श्री कार्ल खंडलवाला को दिल्ली मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली के न्यायालय और सेशन्स कोर्ट, दिल्ली में श्री पी० एस० भिन्डर तथा अन्यों के विरुद्ध दिल्ली विशेष पुलिस स्थापना के रेगुलर केस नम्बर 7/77-सी० आई० यू० (ए०) की अभियोजन कार्रवाई करने के लिये विशेष लोक अभियोजक नियुक्त करती है।

[संख्या 225/70/77-ए० वी० डी०-II]

टी० के० सुब्रमणियन, अवर सचिव

New Delhi, the 6th January, 1978

S.O. 111.—In exercise of the powers conferred by subsection (6) of Section 24 of the Code of Criminal Procedure, 1973 (2 of 1974), the Central Government hereby appoints Shri Karl Khandalwala, Advocate, Bombay as a Special Public Prosecutor for conducting the prosecution of the Delhi Special Police Establishment Regular Case No. 7/77-CIU(A) against Shri P. S. Bhinder and others in the Court of Chief Metropolitan Magistrate, Delhi and the Court of Sessions, Delhi.

[No. 225/70/77-AVD.II]

T. K. SUBRAMANIAN, Under Secy.

वित्त मंत्रालय

(राजस्व विभाग)

नई दिल्ली, 28 नवम्बर, 1977

आय-कर

का० आ० 112.—केन्द्रीय सरकार, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 80 छ की उपधारा 2(ख) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए "श्री वीर राघव स्वामी मन्दिर तिरुवेल्लूर जिला, चिंगलेपुट" को उक्त धारा के प्रयोजनों के लिये तमिलनाडु राज्य में सर्वत्र विख्यात लोक पूजा का स्थान अधिसूचित करती है ।

[सं० 2058/फा० सं० 176/115/77-आई० टी० (ए० I)]

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

New Delhi, the 28th November, 1977

INCOME TAX

S.O. 112.—In exercise of the powers conferred by subsection (2)(b) of Section 80G of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), the Central Government hereby notifies "Sri Veeraraghavaswami Temple, Tiruvallur, Chingulput District" to be a place of public worship of renown throughout the State of Tamil Nadu for the purposes of the said Section.

[No. 2058/F. No. 176/115/77-IT(AI)]

का० आ० 113.—केन्द्रीय सरकार, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 80 छ की उपधारा 2(ख) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, "श्री वैकुंठनाथ पेरुमल मन्दिर, नागौर डाकघर (जाया) मंगमावम, सिरकाली तालुक, पंजौर जिला" को उक्त धारा के प्रयोजनों के लिये तमिलनाडु राज्य में सर्वत्र विख्यात लोक पूजा का स्थान अधिसूचित करती है।

[सं० 2059 फा०/सं० 176/114/77-आई० टी० (ए० I)]

S.O. 113.—In exercise of the powers conferred by sub-section (2)(b) of Section 80G of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961), the Central Government hereby notifies "Sri Vaikuntanathaperumal Temple, Nangur Post, (Via) Mangamadam, Sirkali Taluk, Thanjavur District" to be a place of public worship of renown throughout the State of Tamil Nadu for the purpose of the said Section.

[No. 2059/F. No. 176/114/77-IT(AI)]

का० आ० 114.—केन्द्रीय सरकार, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 80ज की उपधारा 2(ख) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, "श्री एकाम्बर नाकार मन्दिर, वृहद कांची-पुरम जिला चिंगलेपुट, तामिलनाडु", को उक्त धारा के प्रयोजनों के लिए तमिलनाडु राज्य में सर्वत्र विख्यात लोक पूजा का स्थान अधिसूचित करती है।

[सं० 2060 फा० सं० 376/30/77-आई० टी० (ए० 1)]

ए० शास्त्री, अवर सचिव

S.O. 114.—In exercise of the powers conferred by sub-section (2)(b) of Section 80G of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) the Central Government hereby notifies "Sri Ekambaranathar Temple, Big Kancheepuram, Chingleput District, Tamil Nadu" to be a place of public worship of renown throughout the State of Tamil Nadu for the purposes of the said section.

[No. 2060/F. No. 176/30/77-IT(AI)]

M. SHASTRI, Under Secy.

कार्यालय, समाहर्ता, केन्द्रीय उत्पादन एवं सीमा शुल्क, जयपुर (राजस्थान)

जयपुर, 7 नवम्बर, 1977

सीमाशुल्क

का० आ० 115.—मैं, सनत कुमार घोषाल, समाहर्ता, केन्द्रीय उत्पादन एवं सीमा शुल्क, जयपुर (राजस्थान), भारत सरकार, वित्त मंत्रालय (राजस्व विभाग), नई दिल्ली के दिनांक 18-7-1975 की अधिसूचना सं० 79-सीमाशुल्क एफ़० सं० 473/2/75-सीमा शुल्क VII के साथ पठित सीमा शुल्क अधिनियम 1962 (1962 का 52) की धारा 9 में प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए एतद्द्वारा राजस्थान राज्य के गुलाब पुरा (जिला भीलवाड़ा) को कथित अधिनियम के अन्तर्गत भांडागारण केन्द्र घोषित करता हूं।

[फ़ा० सं० 2/77/सी० सं० VIII (डी० सी०)-48/6/74]

सतन कुमार घोषाल, समाहर्ता

Office of the Collector, Central Excise, Jaipur (Rajasthan)

Jaipur, the 7th November, 1977

CUSTOMS

S.O. 115.—In exercise of the powers conferred by section 9 of the Customs Act, 1962 (52 of 1962), read with Ministry of Finance Notification No. 79-Customs F. No. 473/2/75-Cus.VII Dated the 18th July, 1975 issued under clause (a) of section 152 of the Customs Act, 1962 (52 of 1962) I hereby declare Gulabpura (Distt. Bhilwara) in the State of Rajasthan to be a 'Warehousing Station'.

[F. No. 2-Cus-77/C. No. VIII(DC)-48/6/74]

S. K. GHOSHAL, Collector

(आर्थिक कार्य विभाग)

(बैंकिंग प्रभाग)

नई दिल्ली, 30 दिसम्बर, 1977

का० आ० 116.—राष्ट्रीयकृत बैंक (प्रबन्ध और प्रकीर्ण) उपबंध योजना 1970 के खण्ड 3 के उपखंड (च) के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक के परामर्श से श्री इब्राहीम आशरफ़ उद्योगपति (टेनरी मालिक) दारुल गोला, 88/22, नाला रोड, सीसामऊ, कानपुर-208001 को दिसम्बर, 1977 के 30वें दिन से आरम्भ होने वाली और दिसम्बर, 1980 के 29वें दिन की समाप्ति होने वाली 3 वर्ष की अवधि के लिये बैंक आफ़ बड़ौदा का निदेशक नियुक्त करती है।

[संख्या एफ़० 9/24/77-बी० ओ० I]

(Department of Economic Affairs)

(Banking Division)

New Delhi, the 30th December, 1977

S.O. 116.—In pursuance of sub-clause (f) of clause 3 of the Nationalised Banks (Management and Miscelluneous Provisions) Scheme, 1970, the Central Government, after consultation with the Reserve Bank of India, hereby appoints Shri Ibrahim Ashraf, Industrialist (Tannery Owner), "Darul Maula", 88/22, Nala Road, Sisamau, Kanpur-208001, as a Director of the Bank of Baroda for a period of three years commencing on the 30th day of December, 1977 and ending with the 29th day of December, 1980.

[No. F. 9/24/77-BO.I]

नई दिल्ली, 31 दिसम्बर, 1977

का० आ० 117.—राष्ट्रीयकृत बैंक (प्रबन्ध और प्रकीर्ण उपबन्ध) योजना, 1970 की धारा 3 की उपधारा (ङ) के अनुसरण में, केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक के परामर्श से, एतद्द्वारा जिला जयंतिया पहाड़ी, बी० पी० ओ० मोकाईओ, डाकखाना जोवाई (मेघालय) के प्रगति शील किसान श्री मिस्सालन सुचिआंग को श्री किनफाम सिंह के स्थान पर, जिनकी नियुक्ति भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (बैंकिंग विभाग) की दिनांक 7 फरवरी, 1974 की अधिसूचना संख्या एफ० 9-4/49/73-बी० ओ० 1-7 के अन्तर्गत हुई थी, 31 दिसम्बर, 1977 से प्रारम्भ होकर 30 दिसम्बर, 1980 को समाप्त होने वाली तीन वर्ष की अवधि के लिये किसानों के हितों का प्रतिनिधित्व करने के लिये यूनाइटेड बैंक आफ इंडिया के निदेशक के रूप में नियुक्त करती है।

[संख्या एफ० 9/27/77-बी० ओ० I]

बलदेव सिंह, संयुक्त सचिव

New Delhi, the 31st December, 1977

S.O. 117.—In pursuance of sub-clause (c) of clause 3 of the Notification Banks (Management and Miscellaneous Provisions) Scheme, 1970, the Central Government, after consultation with the Reserve Bank of India, hereby appoints Shri Mihsalan Suchiang, Progressive farmer from Jaintia Hills District, B.P.O. Mokaiaw, Jowai P.O. (Meghalaya) as a Director of the United Bank of India for a period of three years commencing on the 31st day of December, 1977 and ending with the 30th day of December, 1980 to represent the interests of farmers in place of Shri Kynpham Singh appointed under the Notification of the Government of India in the Ministry of Finance (Department of Banking) No. F. 9-4/49/73-BO. I-7, dated the 7th February, 1974.

[No. F. 9/27/77-BO. I]

BALDEV SINGH, Jt. Secy

नई दिल्ली, 19 दिसम्बर, 1977

का० आ० 118.—क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार श्री एम० डी० प्रभु, को तुंगभद्रा ग्रामीण बैंक, बैल्लारी का अध्यक्ष नियुक्त करती है तथा 1 जनवरी, 1978 से आरम्भ होकर 30 जून, 1978 को समाप्त होने वाली अवधि को उस अवधि के रूप में निर्धारित करती है जिसमें श्री एम० डी० प्रभु अध्यक्ष के रूप में कार्य करेंगे।

[संख्या एफ० 3-9/77-आर० आर० बी०]

New Delhi, the 19th December, 1977

S.O. 118.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby appoints Shri M. D. Prabhu as the Chairman of the Tungabhadra Gramin Bank, Bellary and specifies the period commencing on the 1st January, 1978 and ending with the 30th June, 1978 as the period for which the said Shri M. D. Prabhu shall hold office as such Chairman.

[No. F. 3-9/77-RRB]

का० आ० 119:—क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार श्री एस० के० फडनवीस को मराठवाडा ग्रामीण बैंक, नंदेड का अध्यक्ष नियुक्त करती है तथा 1 जनवरी, 1978 से आरम्भ होकर 30 जून, 1978 को समाप्त होने वाली अवधि को उस अवधि के रूप में निर्धारित करती है जिसमें श्री एस० के० फडनवीस अध्यक्ष के रूप में कार्य करेंगे ।

[संख्या एफ० 3-24/77-आर० आर० बी०]

S.O. 119.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby appoints Shri S. K. Fadnavis as the Chairman of the Marathwada Gramin Bank, Nanded and specifies the period commencing on the 1st January, 1978 and ending with the 30th June, 1978 as the period for which the said Shri S. K. Fadnavis shall hold office as such Chairman.

[No. F. 3-24/77-RRB]

नई दिल्ली, 30 दिसम्बर, 1977

का० आ० 120:—क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार श्री बी० बी० के० सिन्हा को राय बरेली क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, राय बरेली का अध्यक्ष नियुक्त करती है तथा 1 जनवरी, 1978 से आरम्भ होकर 30 जून, 1978 को समाप्त होने वाली अवधि को उस अवधि के रूप में निर्धारित करती है जिस में बी० बी० के० सिन्हा अध्यक्ष के रूप में कार्य करेंगे ।

[सं० एफ० 3-15/77-आर० आर० बी०]

New Delhi, the 30th December, 1977

S.O. 120.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby appoints Shri B. B. K. Sinha as the Chairman of the Rae Bareli Kshetriya Gramin Bank, Rae Bareli and specifies the period commencing on the 1st January, 1978 and ending with the 30th June, 1978 as the period for which the said Shri B. B. K. Sinha shall hold office as such chairman.

[No. F. 3-15/77-RRB]

नई दिल्ली, 31 दिसम्बर, 1977

का० आ० 121:—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा हरदोई-उन्नाव ग्रामीण बैंक, हरदोई के अध्यक्ष के रूप में श्री काशी नाथ चतुर्वेदी की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 31 अक्तूबर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 1-1/77-आर० आर० बी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के 31 दिसम्बर, 1977 अंकों, अक्षरों और शब्दों के स्थान पर 30 जून, 1978 अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे ।

[सं० एफ० 1-1/77-आर० आर० बी०]

New Delhi, the 31st December, 1977

S.O. 121.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's notification of even number dated the 31st October, 1977 relating to the appointment of Shri Kashi Nath Chaturvedi as the Chairman of the Hardoi-Unnao Gramin Bank, Hardoi, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978" shall be substituted.

[No. F. 1-1/77-RRB]

का० आ० 122:—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा गोरखपुर क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, गोरखपुर के अध्यक्ष के रूप में श्री वी० के० अग्रवाल की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, आर्थिक कार्य विभाग की दिनांक 15 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 3-2/77 आर० आर० बी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के 31 दिसम्बर, 1977 अंकों, अक्षरों और शब्दों के स्थान पर 30 जून, 1978 अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे ।

[संख्या एफ० 3-2/77-आर० आर० बी०]

S.O. 122.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 15th September, 1977, relating to the appointment of Shri V. K. Agarwal as the Chairman of the Gorakhpur Kshetriya Gramin Bank, Gorakhpur, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 3-2/77-RRB]

का० आ० 123:—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, होशंगाबाद, के अध्यक्ष के रूप में श्री ए० एम० कोर्डे की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 31 अक्तूबर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 3-8/77 आर० आर० बी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना 31 दिसम्बर, 1977 अंकों, अक्षरों और शब्दों के स्थान पर 30 जून, 1978 अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे ।

[सं० एफ० 3-8/77-आर० आर० बी०]

S.O. 123.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 31st October, 1977, relating to the appointment of Shri A. M. Korde, as the Chairman of Kshetriya Gramin Bank, Hoshangabad, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 3-8/77-RRB]

का०आ० 124.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा नागार्जुन ग्रामीण बैंक, खम्माम के अध्यक्ष के रूप में वाई०वी० सत्यनारायण मूर्ति की नियुक्ति विषयक भारत सरकार वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 3-19/77-4 आर०आर०बी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के 31 दिसम्बर, 1977 अंकों, अक्षरों और शब्दों के स्थान पर 30 जून, 1978 अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे ।

[संख्या एफ० 3-19/77-आर० आर० बी०]

S.O 124.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated the 30th September, 1977, relating to the appointment of Shri Y. V. Satyanarayana Murthy as the Chairman of the Nagarjuna Grameen Bank, Khammam, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 3-19/77-RRB]

का०आ० 125.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा श्री टी०एम० राजशेखर को कावेरी ग्रामीण बैंक, मैसूर के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त करती है और 1 जनवरी, 1978 से प्रारम्भ होकर 30 जून, 1978 को समाप्त होने वाली अवधि को उस अवधि के रूप में निर्दिष्ट करती है जिसमें श्री टी०एम० राजशेखर अध्यक्ष के रूप में कार्य करेंगे ।

[संख्या एफ० 3-28/77—आर०आर०बी०]

S.O. 125.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby appoints Shri T.M. Rajasekhara, as the Chairman of the Cauvery Grameena Bank, Mysore and specifies the period commencing on the 1st January, 1978 and ending with the 30th June, 1978 as the period for which the said Shri T. M. Rajasekhara shall hold office as such Chairman.

[No. F. 3-28/77-RRB]

का०आ० 126.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा II के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा गौड़ ग्रामीण बैंक, मालदा के अध्यक्ष के रूप में श्री विमल चक्रवर्ती की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 15 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना संख्या एफ० 4-III75-ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के 31 दिसम्बर, 1977 अंकों, अक्षरों और शब्दों के स्थान पर 30 जून, 1978 अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे ।

[संख्या एफ० 4-11/75-ए० सी०]

S.O. 126.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 15th September, 1977, relating to the appointment of Shri Bimal Chakraborty as the Chairman of the Gaur Gramin Bank, Malda, namely :—

In the said notification, for the figures letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-11/75-AC]

का०आ० 127.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा जयपुर-नागौर आंचलिक ग्रामीण बैंक, जयपुर, के अध्यक्ष के रूप में श्री एस०एल० जैन की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-12/75-ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के 31 दिसम्बर, 1977 अंकों, अक्षरों और शब्दों के स्थान पर 30 जून, 1978 अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे ।

[संख्या एफ० 4-12/75-ए०सी०]

S.O. 127.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri S. L. Jain, as the Chairman of the Jaipur Nagaur Anchalik Gramin Bank, Jaipur, namely :

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-12/75-AC]

का०आ० 128.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा हरयाणा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, भिवानी के अध्यक्ष के रूप में श्री एस० के० खन्ना की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 का अधिसूचना सं० एफ० 4-14/75-ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के 31 दिसम्बर, 1977 अंकों, अक्षरों और शब्दों के स्थान पर 30 जून, 1978 अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे ।

[सं० एफ० 4-14/75-ए० सी०]

S.O. 128.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri S. K. Khanna, as the Chairman, of the Haryana Kshetriya Gramin Bank, Bhiwani, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-14/75-AC]

का०आ० 129.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा प्रथमा बैंक, मुरादाबाद के अध्यक्ष के रूप में श्री एस० आर० दस्तगीर की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-15/75-ए० सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के 31 दिसम्बर, 1977 अंकों, अक्षरों और शब्दों के स्थान पर 30 जून, 1978 अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे ।

[सं० एफ० 4-15/क57—ए०सी०]

S.O. 129.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri S. R. Dastgir as the Chairman of the Prathma Bank, Moradabad, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No F. 4-15/75-AC]

का० आ० 130.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा भगीरथ ग्रामीण बैंक, सीतापुर के अध्यक्ष के रूप में श्री बी०एन० राय की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-58/76 ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के 31 दिसम्बर, 1977 अंकों, अक्षरों और शब्दों के स्थान पर 30 जून, 1978 अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे ।

[सं० एफ० 4-58/76-ए० सी०]

S.O. 130.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 30th Septemeber, 1977 relating to the appointment of Shri B. N. Rai, as the Chairman of the Bhagirath Gramin Bank, Sitapur (U. P.), namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-58/76-AC]

का० आ० 131.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा साउथ मालाबार ग्रामीण बैंक, मल्लपुरम के अध्यक्ष के रूप में श्री ए० करणाकर शेट्टी की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-60/76-ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के 31 दिसम्बर, 1977 अंकों, अक्षरों और शब्दों के स्थान पर 30 जून, 1978 अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे ।

[सं० एफ० 4-60/76-ए०सी०]

S.O. 131.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's notification of even number dated the 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri A. Karunakara Shetty, as the Chairman of the South Malabar Gramin Bank, Malappuram, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures and words "30th June, 1978" shall be substituted.

[No. F. 4-60/76-AC]

का० आ० 132.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा चम्पारण क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, भोतीहारी के अध्यक्ष के रूप में श्री शिव शर्मा की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-69/75-ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के 31 दिसम्बर, 1977 अंकों, अक्षरों और शब्दों के स्थान पर 30 जून, 1978 अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे ।

[सं० एफ० 4-69/75-ए०सी०]

S.O. 132.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri Shiv Sharma, as the Chairman of the Champaran Kshetriya Gramin Bank, Motihari, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-69/75-AC]

का० आ० 133.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा भोजपुर रोहतास ग्रामीण बैंक, आरा के अध्यक्ष के रूप में श्री पी० के० जैन की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना संख्या एफ० 4-70/75-ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के 31 दिसम्बर, 1977 अंकों, अक्षरों और शब्दों के स्थान पर 30 जून, 1978 अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे ।

[सं० एफ० 4-70/75-ए०सी०]

S.O. 133.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri P. K. Jain, as the Chairman of the Bhojpur Rohtas Gramin Bank, Arrah, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-70/75-AC]

का० आ० 134.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा जम्मू रूरल बैंक, जम्मू के अध्यक्ष के रूप में श्री एम० आर० कोतवाल की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-72/75 ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के 31 दिसम्बर, 1977 अंकों, अक्षरों और शब्दों के स्थान पर 30 जून, 1978 अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे ।

[सं० एफ० 4 72/75-ए० सी०]

S.O. 134.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government makes the following amendments in this Department's notification of even number dated the 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri S. K. Kotwal,

as the Chairman of the Jammu Rural Bank, Jammu, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978" shall be substituted.

[No. F. 4-72/75-AC]

का०आ० 135.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा मयूराक्षी ग्रामीण बैंक, सूरी के अध्यक्ष के रूप में श्री के०एस० बनर्जी की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-75/77-ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के 31 दिसम्बर, 1977 अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर 30 जून, 1978 अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे ।

[सं० एफ० 4-75/76-ए०सी०]

S.O. 135.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even number dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri K. S. Banerjee, as the Chairman of the Mayurakshi Gramin Bank, Suri, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978" shall be substituted.

[No. F. 4-75/76-AC]

का०आ० 136.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा कटक ग्राम्य बैंक, कटक के अध्यक्ष के रूप में श्री स्वरूप चन्द्र दास की नियुक्ति विषयक भारत सरकार आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-76/76-ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के 31 दिसम्बर, 1977 अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर 30 जून, 1978 अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे ।

[सं० एफ० 4-76/76-ए०सी०]

S.O. 136.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri Swarup Chandra Dash, as the Chairman of the Cuttack Gramya Bank, Cuttack, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-76/76-AC]

का०आ० 137.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा सुलतानपुर क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, सुलतानपुर के अध्यक्ष के रूप में श्री जगदीश प्रसाद दुबे की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना संख्या एफ० 4-77/76-ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के 31 दिसम्बर, 1977 अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर 30 जून, 1978 अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे ।

[सं० एफ० 4-77/76-ए० सी०]

S.O. 137.— In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated the 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri Jagdish Prasad Dubey, as the Chairman of the Sultanpur Kshetriya Gramin Bank, Sultanpur, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No F. 4-77/76-AC]

का०आ० 138.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा प्रागज्योतिष गाओलिया बैंक, नलबाड़ी के अध्यक्ष के रूप में श्री जी० सी० कालिटा की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-79/75 ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के 31 दिसम्बर, 1977 अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर 30 जून, 1978 अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे ।

[सं० एफ० 4-79/75-ए०सी०]

S.O. 138.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks, Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even number dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri G. C. Kalita, as Chairman of Pragjyotish Gaonlia Bank, Nalbari, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978" shall be substituted.

[No. F. 4-79/75-AC]

का०आ० 139.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा बिलासपुर-रायपुर क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, बिलासपुर के अध्यक्ष के रूप में श्री एच० एम० शारदा की नियुक्ति विषयक भारत सरकार आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-79/76-ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के 31 दिसम्बर, 1977 के अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर 30 जून, 1978 अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे ।

[संख्या 4-79/76-ए०सी०]

S.O. 139.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks, Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri H. M. Sharda, as the Chairman of the Bilaspur-Raipur Kshetriya Gramin Bank, Bilaspur, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-79/76-AC]

का०आ० 140.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा मगध ग्रामीण बैंक, गया, के अध्यक्ष के रूप में श्री आर० के० प्रसाद की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय आर्थिक कार्य

विभाग (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ 4-80/76-ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :--

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[संख्या एफ० 4-80/76-ए०सी०]

S.O. 140.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No., dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri R. K. Prasad, as the Chairman of the Magadh Gramin Bank, Gaya, namely :—

In the said Notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-80/76-AC]

का०आ० 141.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा शेखावटी ग्रामीण बैंक, सीकर के अध्यक्ष के रूप में श्री आर० जी० पुरी की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, आर्थिक कार्य विभाग, बैंकिंग प्रभाग की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-81/76 ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[संख्या एफ० 4-81/76 ए०सी०]

S.O. 141.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri R. G. Puri, as the Chairman of the Shekhawati Gramin Bank, Sikar, namely :—

In the said Notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-81/76-AC]

का० आ० 142.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा मारवाड़ ग्रामीण बैंक, पाली के अध्यक्ष के रूप में श्री बलराम मिश्र की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-82/76-ए० सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किए जायेंगे।

[संख्या एफ० 4-82/76-ए०सी०]

S.O. 142.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri Balram Mishra, as the Chairman of the Marwar Gramin Bank, Pali, namely:

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-82/76-AC]

का०आ० 143.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा रायलासीमा ग्रामीण बैंक, कडप्पा, के अध्यक्ष के रूप में श्री कुरुपसागर कुंडे की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-83/76-ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :--

उक्त अधिसूचना के "30 दिसम्बर, 1977" के अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जन, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[संख्या एफ० 4-83/76-ए०सी०]

S.O. 143.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated the 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri Kurupasagar Kunde, as the Chairman of the Rayalaseema Grameena Bank, Cuddapah, namely :

In the said Notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-83/76-AC]

का० आ० 144.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा श्री विशाख ग्रामीण बैंक, श्रीकाकुलम के अध्यक्ष के रूप में श्री डी० आर० के० पटनायक की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-84/76-ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[संख्या एफ० 4-84/76-ए०सी०]

S.O. 144.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri D. R. K. Patnaik, as the Chairman of the Sri Vishakha Grameena Bank, Srikakulam, namely :

In the said Notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-84/76-AC]

का०आ० 145.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा त्रिपुरा ग्रामीण बैंक, अगरतला के अध्यक्ष के रूप में श्री मानवेन्द्र सेन की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-84/75-ए० सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[सं० एफ० 4-84/75-ए०सी०]

S.O. 145.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notificaton of even number dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri Manabendra Sen, as the Chairman of the Tripura Gramin Bank, Agartala, namely :—

In the said Notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-84/75-AC]

का०आ० 146.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा गुड़गांव ग्रामीण बैंक, गुड़गांव के अध्यक्ष के रूप में श्री आर० सी० बुधिराजा की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-85/75 ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[सं० एफ० 4-85/75-ए०सी०]

S.O. 146.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri R. C. Budhiraja, as the Chairman of the Gurgaon Gramin Bank, Gurgaon, namely :—

In the said Notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-85/75-AC]

का० आ० 147.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा कोसी क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, पूर्णिया के अध्यक्ष के रूप में श्री के० एन० शुक्ल की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना संख्या एफ० 4-85/76 ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे

[संख्या एफ० 4-85/76-ए०सी०]

S.O. 147.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in the Department's Notification of even No., dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri K. N. Shukla, as the Chairman of the Kosi Kshetriya Gramin Bank, Purnea, namely :—

In the said Notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-85/76-AC]

का० आ० 148.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा बोलांगीर आंचलिक ग्राम्य बैंक, बोलांगीर, के अध्यक्ष के रूप में श्री गोलक बिहारी सारंगी की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-86/75-ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[सं० एफ० 4-86/75-ए०सी०]

S.O. 148.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri Golak Bihari Sarangi, as the Chairman of the Bolangir Aanchalik Gramya Bank, Bolangir, namely :—

In the said Notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-86/75-AC]

का०आ० 149.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा मालप्रभा ग्रामीण बैंक, धारवार के अध्यक्ष के रूप में श्री एम० वी० इनामदार की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० 4-87/76-ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[सं० एफ० 4-87/76-ए०सी०]

S.O. 149.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even number, dated the 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri M. V. Inamdar, as the Chairman of the Malaprabha Grameena Bank, Dharwar, namely —

In the said Notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-87/76-AC]

का० आ० 150.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा पुरी ग्राम्य बैंक, पिपली के अध्यक्ष के रूप में श्री सुरेन्द्र महरती की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 दिसम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० 4-87/75 ए०सी० में निम्नलिखिति संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[संख्या एफ० 4-87/75-ए० सी०]

S.O. 150.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even number, dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri Surendra

Mahanty, as the Chairman of the Puri Gramya Bank, Pipli, namely.

In the said Notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substiuted.

[No. F. 4-87/75-AC]

का०आ० 151.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा कोरापुट, पंचवटी ग्राम्य बैंक, जेपोर, के अध्यक्ष के रूप में श्री पी० नायक की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-88/76-ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[सं० एफ० 4-88/76-ए० सी०]

S.O. 151.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No., dated 30th September, 1977 relating the appointment of Shri P. Nayak, as the Chairman, of the Koraput-Panchabati Gramya Bank, Jaypore, namely :

In the said Notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-88/76-AC]

का० आ० 152.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा बलिया क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, बलिया के अध्यक्ष के रूप में श्री डी०आर० कथूरिया की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, आर्थिक कार्य विभाग, बैंकिंग प्रभाग की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना संख्या एफ० 4-89/76 ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[सं० एफ० 4-89/76-ए०सी०]

S.O. 152.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even number, dated the 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri D. R. Kathuria, as the Chairman of Ballia Kshetriya Gramin Bank, Ballia, namely :

In the said Notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977" the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-89/76-AC]

का० आ० 153.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) के धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा नार्थ मालाबार ग्रामीण बैंक, कन्नानूर, के अध्यक्ष के रूप में श्री ए० एम० दामोदरन नायर की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-90/75 ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[सं० एफ० 4-90/75-ए०सी०]

S.O. 153.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No., dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri A. M. Damodaran Nair, as the Chairman of the North Malabar Gramin Ba k, Cannanore, namely :

In the said Notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-90/76-AC]

का० आ० 154.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा फर्रुखाबाद ग्रामीण बैंक, फर्रुखाबाद के अध्यक्ष के रूप में रघबीर चन्द खन्ना को नियुक्ति विषयक भारत सरकार, आर्थिक कार्य विभाग, बैंकिंग प्रभाग की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना संख्या एफ० 4-90/75 ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[सं० एफ० 4-90/75-ए०सी०]

S.O. 154.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri Raghbir Chand Khanna, as the Chairman of the Furrukhabad Gramin-Bank, Furrukhabad, namely :

In the said Notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-90/75-AC]

का० आ० 155.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा संयुक्त क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, आजमगढ़ के अध्यक्ष के रूप में श्री हसन किदवई की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-91/75-ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[सं० एफ० 4-91/75-ए०सी०]

S.O. 155.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even number, dated the 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri Hasan Kidwai, as the Chairman of the Samyukt Kshetriya Gramin Bank, Azamgarh, namely :

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977" the figures, letters and words "30th June, 1978" shall substituted.

[No. F. 4-91/75-AC]

का० आ० 156.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा बाराबंकी ग्रामीण बैंक, बाराबंकी के अध्यक्ष के रूप में श्री कंवर वीरेन्द्र सिंह गुप्ता की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-93/75-ए० सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[सं० एफ० 4-93/75-ए०सी०]

S.O. 156.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri Kanwar Virendra Singh Gupta, as the Chairman of the Barabanki Gramin Bank, Barabanki, namely :—

In the said notification, for the figures, letters, and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-93/75-AC]

का० आ० 157.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा मल्लभूम ग्रामीण बैंक बांकुरा के अध्यक्ष के रूप में श्री प्रताप चक्रवर्ती की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-94/75-ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "23 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[सं० एफ० 4-94/75-ए० सी०]

S.O. 157.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri Pratap Chakraborty, Chairman, Mallabhum Gramin Bank, Bankura, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-94/75-AC]

का० आ० 158.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद् द्वारा मुंगेर क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, मुंगेर के अध्यक्ष के रूप में श्री के० पी० लाल की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 31 अगस्त, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-132/76-ए० सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[सं० एफ० 4-132/76-ए० सी०]

S.O. 158.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in the Department's Notification of even No. dated 31st August, 1977 relating to the appointment of Shri K. P. Lal, as the Chairman of the Monghyr Kshetriya Gramin Bank, Monghyr, namely :—

In the said notification, for the fiures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-132/76-AC]

का० आ० 159.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा संथाल परगना ग्रामीण बैंक, दुमका के अध्यक्ष के रूप में श्री बी० के० घोष की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० ए० 4-134/76-ए० सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[सं० एफ० 4-134/76-ए० सी०]

S.O. 159.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri B. K. Ghosh, as the Chairman of the Santhal Parganas Gramin Bank, Dumka, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F 4-134/76-AC]

का० आ० 160.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा वैशाली क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, मुजफ्फरपुर के अध्यक्ष के रूप में श्री एन० के० सिन्हा की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त मंत्रालय, आर्थिक कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 31 अगस्त, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-135/76-ए० सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[सं० एफ० 4-135/76-ए०सी०]

S.O. 160.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 31st August, 1977, relating to the appointment of Shri N. K.

Sinha, as the Chairman of the Vaishali Kshetriya Gramin Bank, Muzaffarpur, namely :—

In the said notification for the figures, letters and words "31st December, 1977" the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-135/76-AC]

का० आ० 161.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा हिमाचल ग्रामीण बैंक मंडी के अध्यक्ष के रूप में श्री के० एस० राजपूत की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-136/76-ए० सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[सं० एफ० 4-136/76-ए० सी०]

S.O. 161.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even number dated 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri K. S. Rajput, as the Chairman of the Himachal Gramin Bank, Mandi, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977" the figures, letters and words "30th June 1978" shall be substituted.

[No. F. 4-136/76-AC]

का० आ० 162.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा बुंदेलखंड क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, टीकमगढ़ के अध्यक्ष के रूप में श्री एस० एम० वाधवानी की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 31 अगस्त, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-138/76-ए० सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[सं० एफ० 4-138/76-ए० सी०]

S.O. 162.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 31st August, 1977, relating to the appointment of Shri S. M. Wadhwani, as the Chairman of the Bundelkhand Kshetriya Gramin Bank, Tikamgarh, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-138/76-AC]

का० आ० 163.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा रीवा-सीधी ग्रामीण बैंक रीवा के अध्यक्ष के रूप में श्री बी० डी० नारंग की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 30 सितम्बर, 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-139/76-ए० सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[सं० एफ० 4-139/76-ए० सी०]

S.O. 163.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated the 30th September, 1977 relating to the appointment of Shri B. D. Narang, as the Chairman of the Rewa-Sidhi Gramin Bank, Rewa, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-139/76-AC]

का० आ० 164.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा पांड्यान ग्राम्य बैंक, सत्तूर के अध्यक्ष के रूप में श्री टी० आर० कल्लापिरन की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 31 अगस्त, 1977 की अधिसूचना संख्या एफ० 4-140/76-ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[सं० एफ० 4-140/76-ए० सी०]

S.O. 164.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following amendments in this Department's Notification of even No. dated 31st August, 1977 relating to the appointment of Shri T. R. Kallapiran, as the Chairman of the Pandyan Grama Bank, Sattur, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-140/76-AC]

का० आ० 165.—प्रादेशिक ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 (1976 का 21) की धारा 11 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा उत्तर बंग क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक कूच बिहार के अध्यक्ष के रूप में श्री सिद्धेश्वर सेन शर्मा की नियुक्ति विषयक भारत सरकार, वित्त कार्य विभाग, (बैंकिंग प्रभाग) की दिनांक 31 अगस्त 1977 की अधिसूचना सं० एफ० 4-141/76-ए०सी० में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना के "31 दिसम्बर, 1977" अंकों, अक्षरों और शब्द के स्थान पर "30 जून, 1978" अंक, अक्षर और शब्द प्रतिस्थापित किये जायेंगे।

[संख्या एफ० 4-141/76-ए० सी०]

S.O. 165.—In exercise of the powers conferred by section 11 of the Regional Rural Banks Act, 1976 (21 of 1976), the Central Government hereby makes the following

amendment in the Department's Notification of even No. dated 31st August, 1977 relating to the appointment of Shri Siddeswar Sen Sarma, as the Chairman of Uttar Banga Kshetriya Gramin Bank, Cooch-Behar, namely :—

In the said notification, for the figures, letters and words "31st December, 1977", the figures, letters and words "30th June, 1978", shall be substituted.

[No. F. 4-141/76-AC]
C. R. BISWAS, Dy. Secy.

का० आ० 166—बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 53 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक की सिफारिश पर, नेशनल बैंक आफ पाकिस्तान, कलकत्ता और हबीब बैंक लिमिटेड, बम्बई की दिनांक 19 दिसम्बर, 1970 के एस०ओ० 3949 में, उक्त अधिनियम की धारा 11 की उपधारा (2) के उपबन्धों से दी गई छूट को 31 दिसम्बर, 1978 तक की एक वर्ष की अवधि के लिए और बढ़ाती है।

[संख्या 15(34)-बी० ओ० III/77]
मे० भा० उसगांवकर, अवर सचिव

S.O. 166.—In exercise of the powers conferred by section 53 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949), the Central Government, of the recommendation of the Reserve Bank of India, extends for a further period of one year till the 31st December, 1978 the exemption granted in S.O. 3949, dated the 19th December, 1970 to the National Bank of Pakistan, Calcutta and the Habib Bank Ltd., Bombay from the provisions of sub-section (2) of section 11 of the said Act.

[No. 15(34)-B.O. III/77]
M. B. USGAONKAR, Under Secy.

भारतीय रिजर्व बैंक
RESERVE BANK OF INDIA

नई दिल्ली, 2 जनवरी, 1978
New Delhi, the 2nd January, 1978

का० आ० 167—भारतीय रिजर्व बैंक अधिनियम, 1934 के अनुसरण में दिसम्बर, 1977 के दिनांक 2 को समाप्त हुए सप्ताह के लिए लेखा

S.O. 167.—An Account pursuant to the RESERVE BANK OF INDIA ACT, 1934 for the week ended the 2nd day of December, 1977

इशू विभाग
ISSUE DEPARTMENT

देयताएं LIABILITIES	रुपये Rs.	रुपये Rs.	आस्तियां ASSETS	रुपये Rs.	रुपये Rs.
बैंकिंग विभाग में रखे हुए नोट Notes held in the Banking Department	11,27,87,000		सोने का सिक्का और बुलियन :— Gold Coin and Bullion		
संचलन में नोट Notes in circulation	8335,80,68,000		(क) भारत में रखा हुआ (a) Held in India	187,80,46,000	
			(ख) भारत के बाहर रखा हुआ (b) Held outside India	..	
			विदेशी प्रतिभूतियां Foreign Securities	1771,73,97,000	
			जोड़ Total		1959,54,43,000
			रुपये का सिक्का Rupee Coin		12,37,36,000
			भारत सरकार की रुपया प्रतिभूतियां Government of India Rupee Securities		6375,16,76,000
			देशी विनिमय बिल और दूसरे वाणिज्य पत्र Internal Bills of Exchange and other commercial paper		..
कुल देयताएं Total Liabilities		8347,08,55,000	कुल आस्तियां Total Assets		7347,08,55,000

दिनांक : 7 दिसम्बर, 1977
Dated, the 7th day of December, 1977

आई० जी० पटेल, गवर्नर
I. G. PATEL, Governor

2 दिसम्बर, 1977 को भारतीय रिजर्व बैंक के बैंकिंग विभाग के कार्यकलाप का विवरण

Statement of the Affairs of the Reserve Bank of India, Banking Department as on the 2nd December, 1977

देयताएं LIABILITIES	रुपये Rs.	आस्तियां ASSETS	रुपये Rs.
चुकता पूंजी Capital Paid Up	5,00,00,000	नोट Notes	11,27,87,000
आरक्षित निधि Reserve Fund	150,00,00,000	रुपये का सिक्का Rupee Coin	4,52,000
राष्ट्रीय कृषि ऋण (दीर्घकालीन प्रवर्तन) निधि National Agricultural Credit (Long Term Operations) Fund	495,00,00,000	छोटा सिक्का Small Coin	5,17,000
राष्ट्रीय कृषि ऋण (स्थिरीकरण) निधि National Agricultural Credit (Stabilisation) Fund	165,00,00,000	खरीदे और भुनाये गये बिल Bills Purchased and Discounted :—	
राष्ट्रीय औद्योगिक ऋण (दीर्घकालीन प्रवर्तन) निधि National Industrial Credit (Long Term Operations) Fund	715,00,00,000	(क) देशी (a) Internal	129,16,15,000
जमाराशियां :— Deposits :—		(ख) विदेशी (b) External	..
(क) सरकारी (a) Government		(ग) सरकारी खजाना बिल (c) Government Treasury Bills	174,40,53,000
केन्द्रीय सरकार (i) Central Government	68,42,47,000	विदेशों में रखा हुआ बकाया Balances Held Abroad	1747,00,50,000
राज्य सरकारें (ii) State Governments	14,36,91,000	निवेश Investments	1200,07,05,000
(ख) बैंक (b) Banks		ऋण और अग्रिम :— Loans and Advances to :—	
अनुसूचित वाणिज्य बैंक (i) Scheduled Commercial Banks	1574,20,77,000	केन्द्रीय सरकार को (i) Central Government	..
अनुसूचित राज्य सहकारी बैंक (ii) Scheduled State Co-operative Banks	28,71,63,000	राज्य सरकारों को (ii) State Governments	89,94,97,000
गैर अनुसूचित राज्य सहकारी बैंक (iii) Non-Scheduled State Co-operative Banks	1,96,25,000	ऋण और अग्रिम :— Loans and Advances to :—	
अन्य बैंक (iv) Other Banks	1,75,60,000	अनुसूचित वाणिज्य बैंकों को (i) Scheduled Commercial Banks	245,38,73,000
(ग) अन्य (c) Others	1857,84,30,000	राज्य सहकारी बैंकों को (ii) State Co-operative Banks	422,26,53,000
		दूसरों को (iii) Others	2,11,00,000
		राष्ट्रीय कृषि ऋण (दीर्घकालीन प्रवर्तन) निधि से ऋण, अग्रिम और निवेश Loans Advances and Investments from National Agricultural Credit (Long Term Operations) Fund	
		(क) ऋण और अग्रिम :— (i) Loans and Advances to :—	
		राज्य सरकारों को (i) State Governments	98,13,97,000
		राज्य सहकारी बैंकों को (ii) State Co-operative Banks	14,91,27,000
		केन्द्रीय भूमिबन्धक बैंकों को (iii) Central Land Mortgage Banks	
		कृषि पुनर्वित्त और विकास निगम को (iv) Agricultural Refinance and Development Corporation	171,10,00,000
		(ख) केन्द्रीय भूमिबन्धक बैंकों के डिबेंचरों में निवेश (b) Investment in Central Land Mortgage Bank Debentures	7,99,44,000

देयताएं LIABILITIES	रुपये Rs.	आस्तियां ASSETS	रुपये Rs.
देय बिल Bills Payable	166,84,22,000	राष्ट्रीय कृषि ऋण (स्थिरीकरण) निधि से ऋण और अग्रिम Loans and Advances from National Agricultural Credit (Stabilisation) Fund	
अन्य देयताएं Other Liabilities	709,23,31,000	राज्य सहकारी बैंकों को ऋण और अग्रिम Loans and Advances to State Co-operative Banks	130,28,35,000
		राष्ट्रीय औद्योगिक ऋण (दीर्घकालीन प्रचलन) निधि से ऋण, अग्रिम और निवेश Loans, Advances and Investments from National Industrial Credit (Long Term Operations) Fund	
		(क) विकास बैंक को ऋण और अग्रिम (a) Loans and Advances to the Development Bank	566,91,79,000
		(ख) विकास बैंक द्वारा जारी किये गये बांडों/डिबेंचरों में निवेश (b) Investment in bonds/debentures issued by the Development Bank	..
		अन्य आस्तियां Other Assets	942,27,62,000
रुपये Rupees	5953,36,46,000	रुपये Rupees	5953,35,46,000

[No. F. 10/2/77-B.O./I]

दिनांक 7 दिसम्बर, 1977
Dated : the 7th day of December, 1977

आई० जी० पटेल, गवर्नर
I. G. PATEL, Governor

का० आ० 168.—भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 के अनुसरण में दिसम्बर, 1977 के दिनांक 9 को समाप्त हुए सप्ताह के लिए लेखा।

S.O. 168.—An Account pursuant to the RESERVE BANK OF INDIA ACT, 1934 for the week ended the 9th day of December, 1977

निर्गम विभाग
ISSUE DEPARTMENT

देयताएं LIABILITIES	रुपये Rs.	रुपये Rs.	आस्तियां ASSETS	रुपये Rs.	रुपये Rs.
बैंकिंग विभाग में रखे हुए नोट Notes held in the Banking Department	9,15,88,000		सोने का सिक्का और बुलियन :— Gold Coin and Bullion		
संचलन में नोट Notes in circulation	8432,66,93,000		(क) भारत में रखा हुआ (a) Held in India	187,80,46,000	
			(ख) भारत के बाहर रखा हुआ (b) Held outside India	..	
जारी किये गये कुल नोट Total notes issued		8441,82,81,000	विदेशी प्रतिभूतियां Foreign Securities	1771,73,97,000	
			जोड़ Total		1959,54,43,000
			रुपये का सिक्का Rupee Coin		12,11,72,000
			भारत सरकार की रुपया प्रतिभूतियां Government of India Rupee Securities		6470,16,66,000
			देशी विनिमय बिल और दूसरे वाणिज्य पत्र Internal Bills of Exchange and other commercial paper		..
कुल देयताएं Total Liabilities		8441,82,81,000	कुल आस्तियां Total Assets		8441,82,81,000

दिनांक : 14 दिसम्बर, 1977
Dated : the 14th day of December, 1977

आई० जी० पटेल, गवर्नर
I. G. PATEL, Governor

9 दिसम्बर, 1977 को भारतीय रिज़र्व बैंक के बैंकिंग विभाग के कार्यकलाप का विवरण

Statement of the Affairs of the Reserve Bank of India, Banking Department as on the 9th December, 1977

देयताएं LIABILITIES	रुपये Rs.	आस्तियां ASSETS	रुपये Rs.
चुकता पूंजी Capital Paid Up	5,00,00,000	नोट Notes	9,15,88,000
आरक्षित निधि Reserve Fund	150,00,00,000	रुपये का सिक्का Rupee Coin	4,94,000
राष्ट्रीय कृषि ऋण (दीर्घकालीन प्रवर्तन) निधि National Agricultural Credit (Long Term Operations) Fund	495,00,00,000	छोटा सिक्का Small Coin	5,20,000
राष्ट्रीय कृषि ऋण (स्थिरीकरण) निधि National Agricultural Credit (Stabilisation) Fund	165,00,00,000	खरीदे और भुनाये गये बिल Bills Purchased and Discounted :	
राष्ट्रीय औद्योगिक ऋण (दीर्घकालीन प्रवर्तन) निधि National Industrial Credit (Long Term Operations) Fund	715,00,00,000	(क) देशी (a) Internal	133,23,80,000
जमाराशियां :— Deposits :—		(ख) विदेशी (b) External	..
(क) सरकारी (a) Government		(ग) सरकारी खजाना बिल (c) Government Treasury Bills	242,05,49,000
केन्द्रीय सरकार (i) Central Government	65,74,38,000	विदेशों में रखा हुआ बकाया Balances Held Abroad	1800,05,16,000
राज्य सरकारें (ii) State Governments	10,44,83,000	निवेश Investments	1016,27,99,000
(ख) बैंक (b) Banks		ऋण और अग्रिम :— Loans and Advances to :—	
अनुसूचित वाणिज्य बैंक (i) Scheduled Commercial Banks	1490,88,85,000	केन्द्रीय सरकार को (i) Central Government	..
अनुसूचित राज्य सहकारी बैंक (ii) Scheduled State Co-operative Banks	25,82,22,000	राज्य सरकारों को (ii) State Governments	146,12,98,000
गैर-अनुसूचित राज्य सहकारी बैंक (iii) Non-Scheduled State Co-operative Banks	1,94,52,000	ऋण और अग्रिम :— Loans and Advances to :—	
अन्य बैंक (iv) Other Banks	1,56,43,000	अनुसूचित वाणिज्य बैंकों को (i) Scheduled Commercial Banks	192,31,75,000
(ग) अन्य (c) Others	1846,83,30,000	राज्य सहकारी बैंकों को (ii) State Co-operative Banks	428,75,09,000
		दूसरों को (iii) Others	4,25,00,000
		राष्ट्रीय कृषि ऋण (दीर्घकालीन प्रवर्तन) निधि से ऋण, अग्रिम और निवेश Loans, Advances and Investments from National Agricultural Credit (Long Term Operations) Fund	
		(क) ऋण और अग्रिम :— (a) Loans and Advances to :—	
		राज्य सरकारों को (i) State Governments	98,11,96,000
		राज्य सहकारी बैंकों को (ii) State Co-operative Banks	15,87,75,000
		केन्द्रीय भूमिबन्धक बैंकों को (iii) Central Land Mortgage Banks	..
		कृषि पुनर्वित्त और विकास निगम को (iv) Agricultural Refinance and Development Corporation	171,10,00,000
		(ख) केन्द्रीय भूमिबन्धक बैंकों के डिबेंचरों में निवेश (b) Investment in Central Land Mortgage Bank Debentures	7,99,44,000

देयताएं LIABILITIES	रुपये Rs.	आस्तियां ASSETS	रुपये Rs.
देय बिल Bills Payable	197,73,67,000	राष्ट्रीय कृषि ऋण (स्थिरीकरण) निधि से ऋण और अग्रिम Loans and Advances from National Agricultural Credit (Stabilisation) Fund	
अन्य देयताएं Other Liabilities	736,53,67,000	राज्य सहकारी बैंकों को ऋण और अग्रिम Loans and Advances to State Co-operative Banks	129,97,22,000
		राष्ट्रीय औद्योगिक ऋण (दीर्घकालीन प्रवर्तन) निधि से ऋण, अग्रिम और निवेश Loans, Advances and Investments from National Industrial Credit (Long Term Operations) Fund	
		(क) विकास बैंक को ऋण और अग्रिम (a) Loans and Advances to the Development Bank	576,66,29,000
		(ख) विकास बैंक द्वारा जारी किये गये बांडों/डिबेंचरों में निवेश (b) Investment in bonds/debentures issued by the Development Bank	..
		अन्य आस्तियां Other Assets	935,45,93,000
रुपये Rupees	5907,51,87,000	रुपये Rupees	5907,51,87,000

दिनांक : 14 दिसम्बर, 1977
Dated the 14th day of December, 1977

आई० जी० पटेल, गवर्नर
I. G. PATEL, Governor
[No. F. 10/2/77-BO I]

च० व० मीरचन्दानी, अवर सचिव
C. W. MIRCHANDANI, Under Secy.

(व्यय विभाग)

नई दिल्ली, 31 दिसम्बर, 1977

शुद्धि-पत्र

का० आ० 169.—5 नवम्बर, 1977 के भारत के राजपत्र के भाग 2, खण्ड 3, उपखण्ड (2), में पृष्ठ 3882 पर, सा० आ० 3415 के हिन्दी पाठ में, उद्धरण चिन्हों के बीच के अंश में चौथी और छठी पंक्ति के अंत में अर्द्धविराम शामिल कर दिये जाएं, पांचवीं पंक्ति में अर्द्धविराम का विलोप कर दिया जाए, पांचवीं पंक्ति में "तो" शब्द के पश्चात् पूर्ण-विराम का चिन्ह, शामिल कर दिया जाए; और, सा० आ० 3416 के हिन्दी पाठ में, उद्धरण चिन्हों के बीच के अंश में पांचवीं पंक्ति में "तो" शब्द के पश्चात् पूर्णविराम का चिन्ह शामिल कर दिया जाए ।

[सं० फा० 13(4)-संस्था V(ख)/77-(ii)]

एस० एम० एल० मल्होत्रा, अवर सचिव

(Department of Expenditure)

New Delhi, the 31st December, 1977

CORRIGENDUM

S.O. 169.—In the Gazette of India—Part II—Section 3—sub-Section (ii), at page 3882, in the English version of S.O. 3415 dated 5th November, 1977, in the third-line of the portion within inverted commas, for "rule" read "rules"; and at page 3883, in the fifth line of the English version of the Explanatory Memorandum under S. O. 3416, for "role" read "rule".

[No. F. 13(4)-E V(B)/77-(i)]

S. S. L. MALHOTRA, Under Secy.

वाणिज्य मंत्रालय

संयुक्त मुख्य-नियंत्रक आयात-निर्यात का कार्यालय,

आदेश

कलकत्ता, 17 अगस्त, 1977

का० आ० 170.—सर्वश्री भारत ट्रेडिंग कारपोरेशन, पी-3, न्यू सी० आई० टी० रोड, चौथी मंजिल, कलकत्ता-700073 को अप्रैल-मार्च 78 अवधि के लिए निम्न प्रकार से लाइसेंस प्रदान किया गया था :—

लाइसेंस संख्या एवं दिनांक	माल का विवरण	मूल्य
पी/ई/2510783/सी/एक्सएक्स/63/सी/77, दिनांक 22-6-77	दालचीनी, लौंग और जायफल/जावित्री	30,000 रुपए

पार्टी ने उक्त लाइसेंस की सीमाशुल्क प्रयोजन प्रति की अनुलिपि प्रति जारी करने के लिए यह बताते हुए आवेदन किया है कि वह सीमा-शुल्क सदन, कलकत्ता के पास पंजीकृत कराने के पश्चात् खो गई/अस्थानस्थ हो गई है और 20,000/-रुपए का उपयोग में न लाया गया शेष धन अर्थात 10,000/-रुपए की दालचीनी के लिए और 10,000/-रुपए की जायफल/जावित्री को छोड़ कर लौंग के लिए 10,000/-रुपए उपयोग में लाए गए हैं ।

इस तर्क के समर्थन में पार्टी ने महानगर मैजिस्ट्रेट, कलकत्ता द्वारा विधिवत साक्ष्यांकित स्टाम्प कागज पर एक शपथ-पत्र दाखिल किया है ।

मैं संतुष्ट हूं कि आयात लाइसेंस संख्या पी/ई/2510783/सी/एक्सएक्स/63/सी/77, दिनांक 22-6-77 की सीमा-शुल्क प्रति बिना रद्द किए, धरोहर रखे हस्तान्तरण किए अथवा किसी भी अन्य प्रयोजन के लिए किसी भी

अन्य पार्टी को सौंपे बिना ही खो गई/अस्थानस्थ हो गई है और निदेश देता हूं कि आवेदक को 20,000 रुपए मूल्य के लिए अर्थात् 10,000 रुपए की दाल-चीनी के लिए और 10,000 रुपए की जायफल/जावित्री के लिए उक्त लाइसेंस की सीमा-शुल्क प्रयोजन प्रति की अनुलिपि प्रति जारी की जानी चाहिए ।

[संख्या ई० आई०/13204/3/एएम-78/80]

MINISTRY OF COMMERCE

(Office of the Joint Chief Controller of Imports and Exports)

ORDER

Calcutta, the 17th August, 1977

S.O. 170.—M/s. Bharat Trading Corporation, P-3, New C.I.T. Road, 4th Floor, Calcutta-700073 was granted the licence for the period April-March '78 as under :—

Licence No. & date	Description of goods	Value
P/E/2510783/C/XX/ 63/C/77 dated 22.6.77	Cinnamon, Cloves and Nutmegs/Mace	Rs. 30,000

The party has applied for duplicate Customs Purposes Copy of the above licence stating that the same has been lost after having registered with the customs House Calcutta and utilised for Rs. 10,000 for cloves leaving the unutilised balance of Rs. 20,000 i.e. Rs. 10,000 for cinnamon and Rs. 10,000 for Nutmegs/Mace.

In support of this contention the firm have filed an affidavit on stamp paper duly attested by the Metropolitan Magistrate Calcutta.

I am satisfied that the customs copy of Import Licence No. P/E/2510783/C/XX/63/C/77 dated 22-6-77 has been lost/misplaced without have been cancelled, pledged, transferred or handed over to any other party for any purpose and direct to issue duplicate customs purposes copy of the aforesaid licence to the applicant for the value of Rs. 20,000 i.e. Rs. 10,000 cinnamon and Rs. 10,000 for Nutmegs/Mace.

[No. EI/13204/3/AM-'78/90]

आदेश

का० आ० 171.—सर्वश्री बनसन्स, पी-3, न्यू सी० आई० टी० रोड, कलकत्ता को अप्रैल-मार्च 78 अवधि के लिए निम्न प्रकार से लाइसेंस प्रदान किया गया था :—

लाइसेंस संख्या एवं दिनांक	माल का विवरण	मूल्य
पी/ई/2510788/सी/एक्सएक्स/ 63/सी/77, दिनांक 23-6-77	दालचीनी, लौंग और जायफल/जावित्री	30,000रुपए

पार्टी ने उक्त लाइसेंस की सीमा-शुल्क प्रयोजन प्रति की अनुलिपि प्रति जारी करने के लिए यह बताते हुए आवेदन किया है कि वह सीमा-शुल्क सदन, कलकत्ता के पास पंजीकृत कराने के पश्चात खो गई/अस्थानस्थ हो गई है और 20,000 रुपए का उपयोग में न लाया गया शेष धन अर्थात् 10,000 रुपए की दाल-चीनी के लिए और 10,000 रुपए की जायफल/जावित्री को छोड़कर लौंग के लिए 10,000 रुपए उपयोग में लाए गए हैं ।

इस तर्क के समर्थन में पार्टी ने महानगर मजिस्ट्रेट, कलकत्ता द्वारा विधिवत साक्ष्यांकित स्टाम्प कागज पर एक शपथ-पत्र दाखिल किया है ।

मैं संतुष्ट हूं कि आयात लाइसेंस संख्या पी/ई/2510788/सी/एक्सएक्स/63/सी/77, दिनांक 23-6-77 की सीमा-शुल्क प्रति बिना रद्द किए, धरोहर रखे हस्तान्तरण किए अथवा किसी भी अन्य प्रयोजन के लिए किसी भी अन्य पार्टी को सौंपे बिना ही खो गई/अस्थानस्थ हो गई है और निदेश देता हूं कि आवेदक को 20,000 रुपए मूल्य के लिए अर्थात् 10,000 रुपए की दालचीनी के लिए और 10,000 रुपए की जायफल/जावित्री के लिए उक्त लाइसेंस की सीमा-शुल्क प्रयोजन प्रति की अनुलिपि प्रति जारी की जानी चाहिए ।

[संख्या ई० आई०/14081/3/एएम-78/80]

आर० बारा, उप-मुख्य-नियंत्रक,
कृते मुख्य-नियंत्रक

ORDER

S.O. 171.—M/s. Bansons, P-3, New C.I.T. Road, Calcutta-700012 was granted the licence for the period April-March '78 as under :—

Licences No. & date	Description of goods	Value
P/E/2510788/C/XX/ 63/C/77 dated 23.6.77	Cinnamon, Cloves and Nutmeges/Mace	Rs. 30,000

The party has applied for duplicate Customs Purposes Copy of the above licence stating that the same has been lost or misplaced after having been registered with the customs House, Calcutta and utilised for Rs. 10,000 for cloves leaving the unutilised balance of Rs. 20,000 i.e. Rs. 10,000 for cinnamon and Rs. 10,000 for Nutmegs/Mace.

In support of this contention the firm have filed an affidavit on stamp paper duly attested by the Metropolitan Magistrate Calcutta.

I am satisfied that the customs copy of Import licence No. P/E/2510788/C/XX/63/C/77 dated 23-6-77 has been lost/misplaced without having been cancelled, pledged, transferred or handed over to any other party for any purpose and direct to issue duplicate custom purposes copy of the aforesaid licence to the applicant for the value of Rs. 20,000 i.e. Rs. 10,000 for cinnamon and Rs. 10,000 for Nutmegs/Mace.

[No. EI/14081/3/AM'78/160]

R. BARA, Dy. Chief Controller
for Jt. Chief Controller

उद्योग मंत्रालय

(औद्योगिक विकास विभाग)

नई दिल्ली, 29 दिसम्बर, 1977

का० आ० 172.—केन्द्रीय रेशम बोर्ड अधिनियम, 1948 (1948 का 61) की धारा 4(3) (जे०) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार श्री किशोर वेणीलाल गांधी, प्रबन्ध निदेशक, मैं० वेणीलाल एक्सपोर्ट हाउस (प्रा०) लि० बम्बई को एतद्द्वारा केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य के रूप में नामित करती है और भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय की अधिसूचना सा० आ० संख्या 642 दिनांक 16 फरवरी, 1977 में निम्नलिखित और संशोधन करती है, अर्थात :—

उक्त अधिसूचना में क्रमांक 28 के पश्चात् निम्नलिखित प्रविष्टि समाविष्ट की जाएगी अर्थात् :—

"29. श्री किशोर वेणीलाल गांधी,
प्रबन्ध निदेशक,
मैं० वेणीलाल एक्सपोर्ट हाउस (प्रा०) लि०, बम्बई ।"

[सं० एफ० 25012/24/76-रेशम]

एस० वेणुगोपालन, निदेशक

MINISTRY OF INDUSTRY

(Department of Industrial Development)

New Delhi, the 29th December, 1977

S.O. 172.—In exercise of the powers conferred by Section 4(3),(J) of the Central Silk Board Act, 1948 (61 of 1948) the Central Government hereby nominates Shri Kishor Venilal Gandhi, Managing Director, M/s. Venilal's Export House (P) Limited, Bombay as a member of the Central Silk Board and makes the following further amendment in the Notification of the Government of India in the Ministry of Commerce S.O. No. 642 dated the 16th February, 1977, namely :—

In the said notification, after Serial No. 28 the following shall be inserted, namely :—

"29. Shri Kishor Venilal Gandhi, Managing Director, M/s. Venilal's Export House (P) Limited, Bombay."

[F. No. 25012/24/76-SILK]

S. VENUGOPALAN, Director

नागरिक पूर्ति तथा सहकारिता मंत्रालय

भारतीय मानक संस्था

नई दिल्ली, 1977-12-27

का० आ० 173.—समय समय पर संशोधित भारतीय मानक संस्था (प्रमाणन चिह्न) नियम 1955 के नियम 4 के उपविनियम (1) के अनुसार भारतीय मानक संस्था द्वारा अधिसूचित किया जाता है कि संस्था ने कुछ मानक चिह्न निर्धारित किए हैं जिनकी डिजाइन शाब्दिक विवरण तथा भारतीय मानक के शीर्षक सहित अनुसूची में दी गई है ।

भारतीय मानक संस्था (प्रमाणन चिह्न) अधिनियम 1952 और उसके अधीन बने नियमों के निमित्त ये मानक चिह्न उनके आगे दी गई तिथियों से लागू होंगे ।

अनुसूची

क्रम संख्या	मानक चिह्न की डिजाइन	उत्पाद/उत्पाद की श्रेणी	तत्सम्बन्धी भारतीय मानक की संख्या और शीर्षक	मानक की डिजाइन का शाब्दिक विवरण	लागू होने की तिथि
1	2	3	4	5	6
1.	IS:1806 ISI	माल्टयुक्त दुग्ध खाद्य	IS : 1806-1975 माल्टयुक्त दुग्ध खाद्यों की विशिष्टि (पहला पुनरीक्षण)	भारतीय मानक संस्था का मोनोग्राम जिसमें 'ISI', शब्द होते हैं, स्तम्भ (2) में दिखाई गई शैली और अनुपात में तैयार किया गया है और जैसा डिजाइन में दिखाया गया है उस मोनोग्राम के ऊपर की ओर भारतीय मानक की पदसंख्या दी गई है ।	1977-08-01
2.	IS:7932 ISI	ब्वायलर जल उपचार यौगिक	IS : 7932-1976 ब्वायलर जल उपचार यौगिक की विशिष्टि	भारतीय मानक संस्था का मोनोग्राम जिसमें 'ISI,' शब्द होते हैं, स्तम्भ (2) में दिखाई गई शैली और अनुपात में तैयार किया गया है और जैसा डिजाइन में दिखाया गया है उस मोनोग्राम के ऊपर की ओर भारतीय मानक की पदसंख्या दी गई है ।	1976-12-01

[सं० सी० एम० डी०/13 : 9]

MINISTRY OF CIVIL SUPPLIES AND COOPERATION

INDIAN STANDARDS INSTITUTION

New Delhi, the 1977-12-27

S.O. 173.—In pursuance of sub-rule (1) of rule 4 of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Rules, 1955 the Indian Standards Institution, hereby notifies that the Standard Mark(s), design(s) of which together with the verbal description of the design(s) and the title(s) of the relevant Indian Standards are given in the Schedule hereto annexed, have been specified.

These Standard Marks for the purpose of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Act, 1952 and the Rules and Regulations framed thereunder, shall come into force with effect from the dates shown against each :

SCHEDULE

Sl. No.	Design of the Standard Mark	Product/Class of Product	No. and Title of the Relevant Indian Standard	Verbal description of the Design of the Standard Mark	
1	2	3	4	5	5
1.	IS:1806 ISI	Malted milk foods	IS : 1806-1975 Specification for malted milk foods (First revision).	The monogram of the Indian Standards Institution consisting of letters 'ISI' drawn in the exact style and relative proportions as indicated in Col. (2); the number of the Indian Standard being superscribed on the top side of the monogram as indicated in the design.	1977-08-01

1	2	3	4	5	6
2.		Boiler water treatment compound	IS : 7932-1976 Specification for boiler water treatment compound	The monogram of the Indian Standards Institution, consisting of letters 'ISI' drawn in the exact style and relative proportions as indicated in Col. (2); the number of the Indian Standards being superscribed on the top side of the monogram as indicated in the design.	1976-12-01

[No. CMD/13 : 9]

का० आ० 174.—भारतीय मानक संस्था (प्रमाणन चिन्ह) विनियम 1955 के विनियम 7 के उपविनियम (2) के अनुसार भारतीय मानक संस्था द्वारा अधिसूचित किया जाता है कि विभिन्न वस्तुओं की प्रति इकाई मुहर लगाने की फ़ीस अनुसूची में दिए गए ब्यौरे के अनुसार निर्धारित की गई है/हैं और यह/ये फ़ीस प्रत्येक वस्तु के आगे दी गई तिथि(यों) से लागू होंगी ।

अनुसूची

क्रम संख्या	उत्पाद/उत्पाद की श्रेणी	तत्सम्बन्धी मानक की संख्या और शीर्षक	इकाई	प्रति इकाई मुहर लगाने की फ़ीस	लागू होने की तिथि
1	2	3	4	5	6
1.	माल्टयुक्त दुग्ध खाद्य	IS : 1806-1975 माल्टयुक्त दुग्ध खाद्यों की विशिष्टि (पहला पुनरीक्षण)	एक मीटरी टन	रु० 5.00	1977-08-01
2.	बॉयलर जल उपचार यौगिक	: 7932-1976 बॉयलर जल उपचार यौगिक की विशिष्टि	एक लीटर	3 पैसे	1976-12-01

[संख्या सी०एम०डी०/13 : 10]

वाई० एस० वेंकटेश्वरन्, अपर महानिदेशक

S.O. 174.—In pursuance of sub-regulation (3) of regulation 7 of the Indian Standards Institution (Certification Marks) Regulations, 1955, the Indian Standards Institution, hereby, notifies that the marking fee(s) per unit for various products details of which are given in the Schedule hereto annexed, have been determined and the fee(s) shall come into force with effect from the dates shown against each :

SCHEDULE

Sl. No.	Product/Class of Product	No. and Title of Relevant Indian Standard	Unit	Marking Fee per Unit	The date of effect
1	2	3	4	5	6
1.	Malted milk foods	IS : 1806-1975 Specification for malted milk foods (First revision)	One Tonne	Rs. 5.00	1977-08-01
2.	Boiler water treatment compound	IS : 7932-1976 Specification for boiler water treatment compound.	One litre	3 Paise	1976-12-01

[No. CMD/13 : 10]

Y. S. VENKATESWARAN, Addl. Director General

पैट्रोलियम मंत्रालय

नई दिल्ली, 30, दिसम्बर, 1977

का० आ० 175.—अतः केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि लोकहित में यह आवश्यक है कि गुजरात राज्य में कूप सं० एस० के-1 (कादी-45) से सी० टी० एफ़ कादी तक पैट्रोलियम के परिवहन के लिये पाइप लाइन तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग द्वारा बिछाई जानी चाहिये ।

और यतः यह प्रतीत होता है कि ऐसी लाइनों को बिछाने के प्रयोजन के लिए एतद्पाबद्ध अनुसूची में वर्णित भूमि में उपयोग का अधिकार अर्जित करना आवश्यक है ।

अतः, अब पैट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के अधिकार का अर्जन) अधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार ने उसमें उपयोग का अधिकार अर्जित करने का अपना आशय एतद् द्वारा घोषित किया है ।

बशर्ते कि उक्त भूमि में हितबद्ध कोई व्यक्ति, उस भूमि के नीचे पाइपलाइन बिछाने के लिए आक्षेप समक्ष अधिकारी, तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग, निर्माण और देखभाल प्रभाग मकरपुरा रोड़ बड़ोदरा-9 को इस अधिसूचना की तारीख से 21 दिनों के भीतर कर सकेगा ।

और ऐसा आक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिर्दिष्टः यह भी कथन करेगा कि क्या वह चाहता है कि उसकी सुनवाई व्यक्तिशः हो या किसी विधि व्यवसायी की मार्फ़त ।

अनुसूची

कूप सं० एस को-1 (कावी-45) से सी० टी० एफ़० कादी तक पाइप लाइन बिछाना

राज्य : गुजरात जिला : मेहसाना तालुका कावी

गांव	सर्वेक्षण सं०	क्षेत्रफल		
		हे०	ए आर ई	सेंटी
कादी	1831/2	0	06	00
	1833	0	03	90
	कार्ट ट्रेक	0	00	90
	1836	0	13	55
	1838	0	11	40
	1852	0	12	75
	1851	0	06	75
	1853	0	05	40

[सं० 12016/2/77-प्रोडक्शन I]

MINISTRY OF PETROLEUM

New Delhi, the 30th December, 1977

S.O. 175.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of petroleum from Well No. SK-1 (Kadi-45) to CTF Kadi in Gujarat State pipelines should be laid by the Oil & Natural Gas Commission;

And whereas, it appears that for the purpose of laying such pipelines, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto ;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the section 3 of the Petroleum and mineral Piplines (Acquisition of Right of User in land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein :

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipelines under the land to the Competent Authority, Oil & Natural Gas Commission, Construction & Maintenance Division, Makarpura Road, Vadodara-9 ;

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by a legal practitioner.

SCHEDULE

Laying Pipeline from Well No. SK-1 (KADI-45) to CTF Kadi

State : Gujarat District : Mehsana Taluka : Kadi

Village	Survey No.	Area		
		Hectare	Are	Centiare
Kadi	1831/2	0	06	00
	1833	0	03	90
	Cart track	0	00	90
	1836	0	13	55
	1838	0	11	40
	1852	0	12	75
	1851	0	06	75
	1853	0	05	40

[No. 12016/2/77—Prod. I]

का० आ० 176.—यतः केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि लोकहित में यह आवश्यक है कि गुजरात राज्य में क्रम सं० के० ई० एक्स-2 से कूप सं० के० ई० एक्स-5 पर स्थित लाइन तक पेट्रोलियम के परिवहन के लिये पाइप लाइन तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग द्वारा बिछाई जानी चाहिये ।

और यतः यह प्रतीत होता है कि ऐसी लाइनों को बिछाने के प्रयोजन के लिए एतदुपाबद्ध अनुसूची में वर्णित भूमि में उपयोग का अधिकार अर्जित करना आवश्यक है ।

अतः, अब पेट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के अधिकार का अर्जन) अधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार ने उसमें उपयोग का अधिकार अर्जित करने का अपना आशय एतद्द्वारा घोषित किया है ।

बशर्ते कि उक्त भूमि में हितबद्ध कोई व्यक्ति, उस भूमि के नीचे पाइपलाइन बिछाने के लिए आक्षेप समक्ष अधिकारी, तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग, निर्माण और देखभाल प्रभाग, मकरपुरा रोड़ बड़ोदरा-9 को इस अधिसूचना की तारीख से 21 दिनों के भीतर कर सकेगा ।

और ऐसा आक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिर्दिष्टः यह भी कथन करेगा कि क्या वह चाहता है कि उसकी सुनवाई व्यक्तिशः हो या किसी विधि व्यवसायी की मार्फ़त ।

अनुसूची

कूप सं० के० ई० एक्स-II से कूप सं० के० ई० एक्स 5 की लाइन तक पाइप लाइन बिछाना ।

राज्य गुजरात जिला तथा तालुका : गांधीनगर

गांव	ब्लाक सं०	क्षेत्रफल		
		हे०	ए०आर०ई०	सेंटी
जमियतपुरा	53	0	04	35
	52	0	07	95
	59	0	09	00
	58	0	06	90
	66	0	03	69
	65	0	14	72
	69	0	09	00
	70	0	02	25
	197	0	12	00

[सं० 12016/2/77—प्रोडक्शन 2]

S.O. 176.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of petroleum from Well No. KEX. 11 to Line of Well No. KEX. 5 in Gujarat State pipelines should be laid by the Oil & Natural Gas Commission;

And whereas, it appears that for the purpose of laying such pipelines, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto ;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the section 3 of the Petroleum and mineral Piplines (Acquisition of Right of User in land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein :

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipelines under the land to the Competent Authority, Oil & Natural Gas Commission, Construction & Maintenance Division, Makarpura Road, Vadodara-9 ;

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by a legal practitioner.

SCHEDULE

Laying pipeline from well No. KEX. 11 to line of well No. KEX. 5

State : Gujarat Dist & Taluka : Gandhinagar

Village	Block No.	Area		
		Hectare	Are	Centiare
Jamiyatpura	53	0	04	35
	52	0	07	95
	59	0	09	00
	58	0	06	90
	66	0	03	69
	65	0	14	72
	69	0	09	00
	70	0	02	25
	197	0	12	00

[No. 12016/2/77-Prod. II]

का० आ० 177.—यतः केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि लोकहित में यह आवश्यक है कि गुजरात राज्य में कूप सं० एस० जे० पी० (एस०-54) संनन्द-12 में जी० जी० एस० तक पेट्रोलियम के परिवहन के लिए पाइप लाइन तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग द्वारा बिछाई जानी चाहिए ।

और यतः यह प्रतीत होता है कि ऐसी लाइनों को बिछाने के प्रयोजन के लिये एतद्पाबद्ध अनुसूची में वर्णित भूमि में उपयोग का अधिकार अर्जित करना आवश्यक है ।

अतः, अब पेट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के अधिकार का अर्जन) अधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार ने उसमें उपयोग का अधिकार अर्जित करने का अपना आशय एतद् द्वारा घोषित किया है ।

बशर्ते कि उक्त भूमि में हितबद्ध कोई व्यक्ति, उस भूमि के नीचे पाइप लाइन बिछाने के लिए आक्षेप समक्ष अधिकारी, तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग, निर्माण और रेखभाल प्रभाग, मकरपुरा रोड़ बडोदरा-9 को इस अधिसूचना की तारीख से 21 दिनों के भीतर कर सकेगा ।

और ऐसा आक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिर्दिष्टः यह भी कथन करेगा कि क्या वह चाहता है कि उसकी सुनवाई व्यक्तिशः हो या किसी विधि व्यवसायी की मार्फत ।

अनुसूची

कूप सं० एस जे० पी० (एस-54) से व्यधन क्षेत्र सनंद-12 पर जी० जी० एस तक पाइप लाइन बिछाने के लिए ।

राज्य : गुजरात जिला : मेहसाना तालुका : कादी

गांव	सर्वेक्षण सं०	हे०	एआरई	सेंटी०
1	2	3	4	5
अदराज	1881	0	14	55
	1880	0	14	70
	1874	0	01	05
	1875	0	02	00
	1877	0	08	00
	1878	0	08	00
	1876	0	04	50
	1862	0	17	95
	1844	0	03	00
	1843	0	04	95
	1845	0	10	00
अवराज (क्रमशः)	कार्ट-ट्रेक	0	01	00
	1794	0	10	95
	1782	0	04	95
	1783	0	02	70
	1784	0	15	55
	1785	0	18	30
	1786	0	07	05
	1787	0	03	30
मेवाँ	कार्ट-ट्रेक	0	01	00
	168	0	19	35
	91/पी	0	15	00
	91/पी	0	15	00
	82	0	01	00
	81	0	15	00
	80	0	06	45
	193	0	12	15

[सं० 12016/2/77-प्रोडक्शन-III]

S.O. 177.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of petroleum from Well No. SJP (S. 54) to GGS at Sanand-12 in Gujarat State pipelines would be laid by the Oil & Natural Gas Commission ;

And whereas, it appears that for the purpose of laying such pipelines, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto ;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 3 of the Petroleum and Minerals pipelines (Acquisition of right of user in land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein :

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipelines under the land to the Competent Authority, Oil & Natural Gas Commission, Construction & Maintenance Division, Makarpura Road, Vadodara-9;

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by a legal practitioner.

SCHEDULE

For laying pipeline from Well No. SJP (S. 54) to GGS at D.S. Sanand-12

State : Gujarat District : Mehsana Taluka : Kad

Villages	Survey No.	Hectare	Are	Centiare
1	2	3	4	5
Adraj	1881	0	14	55
	1880	0	14	70
	1874	0	01	05
	1875	0	02	00
	1877	0	08	00
	1878	0	08	00
	1876	0	04	50
	1862	0	17	95
	1844	0	03	00
	1843	0	04	95
	1845	0	10	00
	Cart track	0	01	00
	1794	0	10	95
	1782	0	04	95
	1783	9	02	70
	1784	0	15	55
	1785	0	18	30

1	2	3	4	5
Adraj (Contd.)	1786	0	07	05
	1787	0	03	30
Merda	Cart track	0	01	00
	168	0	19	35
	91/P	0	15	00
	91/P	0	15	00
	82	0	01	00
	81	0	15	00
	80	0	06	45
	193	0	12	15

[No. 12016/2/77P-rod. III]

का० आ० 178.—यतः केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि लोकहित में यह आवश्यक है कि गुजरात राज्य में कूप सं० के-29 से कूप सं० के-57 पर मिनी जी० जी० एस० तक पेट्रोलियम के परिवहन के लिये पाइप लाइन तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग द्वारा बिछाई जानी चाहिये ।

और यतः यह प्रतीत होता है कि ऐसी लाइनों को बिछाने के प्रयोजन के लिये एतद्पाबद्ध अनुसूची में वर्णित भूमि में उपयोग का अधिकार करना आवश्यक है ।

अतः, अब पेट्रोलियम और खनिज पाइप लाइन (भूमि में उपयोग के अधिकार का अर्जन) अधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुये केन्द्रीय सरकार ने उसमें उपयोग का अधिकार अर्जित करने का अपना आशय एतद् द्वारा घोषित किया है ।

बशर्ते कि उक्त भूमि में हितबद्ध कोई व्यक्ति, उस भूमि के नीचे पाइप लाइन बिछाने के लिये आक्षेप सक्षम अधिकारी, तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग, निर्माण और देखभाल प्रभाग, मकरपुरा रोड़, बड़ोदरा-9 को इस अधिसूचना की तारीख से 21 दिनों के भीतर कर सकेगा ।

और ऐसा आक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिर्दिष्टः यह भी कथन करेगा कि क्या वह चाहता है कि उसकी सुनवाई व्यक्तिशः हो या किसी विधि व्यवसायी की मार्फत ।

अनुसूची

कूप सं० के-29 से कूप सं० के-57 पर स्थित मिनी जी० जी० एस० तक पाइप लाइन बिछाने के लिये

राज्य : गुजरात जिला तथा तालुका : गांधीनगर

गांव	सर्वेक्षण सं०	हे०	ए आर ई	सेंटी०
भोयन राठोड़	3/1/1	0	04	05
	312	0	01	95
	कार्ट-ट्रेक	0	00	60
	248	0	10	07
	कार्ट-ट्रेक	0	02	40
	251	0	01	65
	235	0	09	75
	243	0	29	10
	242	0	13	00
	241	0	02	00
	कार्ट-ट्रेक	0	03	90
	195	0	12	00
	196	0	03	00

[सं० 12016/2/77-प्रोडक्शन-IV]

S.O. 178.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of petroleum from Well No. K-29 to Mini CGS at Well No. K-57 in Gujarat State pipelines should be laid by the Oil & Natural Gas Commission ;

And whereas, it appears that for the purpose of laying such pipelines, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto ;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the section 3 of the Petroleum and Minerals pipelines (Acquisition of right of user in land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein.

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipelines under the land to the Competent Authority, Oil & Natural Gas Commission, Construction & Maintenance Division, Makarpura Road, Vadodara-9;

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by a legal practitioner.

SCHEDULE

For laying pipeline from Well No. K-29 to Mini GGS at Well No. K-57

State : Gujarat District & Taluka : Gandhinagar

Village	Survey No.	Hectare	Are	Centiare
Bhoyan Rathod	3/1/1	0	04	05
	3/2	0	01	95
	Cart-track	0	00	60
	248	0	10	07
	Cart track	0	02	40
	251	0	01	65
	235	0	09	75
	243	0	29	10
	242	0	13	00
	241	0	02	00
	Cart-track	0	03	90
	195	0	12	00
	196	0	03	00

[No. 12016/2/77-Prod. IV]

का० आ० 179.—यतः केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि लोकहित में यह आवश्यक है कि गुजरात राज्य में कूप सं० एस-12 से एस-12 के पास जी० जी० एस० तक पेट्रोलियम के परिवहन के लिये पाइप लाइन, तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग द्वारा बिछाई जानी चाहिये ।

और यतः यह प्रतीत होता है कि ऐसी लाइनों को बिछाने के प्रयोजन के लिए एतद्पाबद्ध अनुसूची में वर्णित भूमि में उपयोग का अधिकार अर्जित करना आवश्यक है ।

अतः, अब पेट्रोलियम और खनिज पाइप लाइन (भूमि में उपयोग के अधिकार का अर्जन) अधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार ने उसमें उपयोग का अधिकार अर्जित करने का अपना आशय एतद्द्वारा घोषित किया है ।

बशर्ते कि उक्त भूमि में हितबद्ध कोई व्यक्ति ,उस भूमि के नीचे पाइप लाइन बिछाने के लिये आक्षेप सक्षम अधिकारी, तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग, निर्माण और देखभाल प्रभाग, मकरपुरा रोड बड़ोदरा-9 को इस अधिसूचना की तारीख से 21 दिनों के भीतर कर सकेगा ।

और ऐसा आक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिर्दिष्टः यह भी कथन करेगा कि क्या वह चाहता है कि उसकी सुनवाई व्यक्तिशः हो या किसी विधि व्यवसायी की मार्फत ।

अनुसूची

कूप सं० एस-12 से एस-12 के पास जी० जी० एस० तक पाइप-लाइन बिछाने के लिये

राज्य : गुजरात	जिला : मेहसाना		तालुका : कादी	
गांव	सर्वेक्षण सं०	हे०	ऐ आर ई	सेंटी०
मेरदा	80	0	04	95
	193	0	07	50

[सं० 12016/2/77–प्रोडक्शन-V]

S.O. 179.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of petroleum from Well No. S-12 to GGS near S-12 in Gujarat State pipelines should be laid by the Oil & Natural Gas Commission;

And whereas, it appears that for the purpose of laying such pipelines, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of right of user in land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein:

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipelines under the land to the Competent Authority, Oil & Natural Gas Commission, Construction & Maintenance Division, Makarpura Road, Vadodara-9;

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by a legal practitioner.

SCHEDULE

For laying pipeline from Well No. S-12 to GGS near S-12

State : Gujarat	District : Mehsana		Taluka : Kadi	
Village	Survey No.	Hectare	Are	Centiare
Merda	80	0	04	95
	193	0	07	50

[No. 12016/2/77-Prod. V]

का० आ० 180.—यतः पेट्रोलियम और खनिज पाइप लाइन (भूमि के उपयोग के अधिकार का अर्जन) अधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) के अधीन भारत सरकार के पेट्रोलियम मंत्रालय की अधिसूचना का० आ० सं० 1390 तारीख 18-4-77 द्वारा केन्द्रीय सरकार ने उस अधिसूचना से संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट भूमियों के उपयोग के अधिकार को पाइप लाइनों को बिछाने के प्रयोजन के लिए अर्जित करने का अपना आशय घोषित कर दिया था ।

और यतः सक्षम प्राधिकारी के उक्त अधिनियम की धारा 6 की उपधारा (1) के अधीन सरकार को रिपोर्ट दे दी है ।

और आगे, यतः केन्द्रीय सरकार ने उक्त रिपोर्ट पर विचार करने के पश्चात् इस अधिसूचना से संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट भूमियों में उपयोग का अधिकार अर्जित करने का विनिश्चय किया है ।

अब, अतः उक्त अधिनियम की धारा 6 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्ति का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा घोषित करती है कि इस अधिसूचना के संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट उक्त भूमियों में उपयोग अधिकार पाइप लाइन बिछाने के प्रयोजन के लिए एतद्द्वारा अर्जित किया जाता है ।

और, आगे उस धारा की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार निदेश देती है कि उक्त भूमियों में उपयोग का अधिकार केन्द्रीय सरकार में विहित होने के बजाय तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग में सभी भारों से मुक्त रूप में, इस घोषणा के प्रकाशन की इस तारीख को निहित होगा ।

अनुसूची

कूप सं० एस पी एल से एम के० 64 तक पाइप लाइन

राज्य : गुजरात	जिला : मेहसाना	तालुका : कादी		
गांव	सर्वेक्षण सं०	हे०	ऐ आर ई	सेन्टी०
सूरज	644	0	01	00
	643	0	13	20
	641	0	09	00
	640	0	19	20
	663	0	08	00

[सं० 12016/2/77-प्रोडक्शन-VI]

S.O. 180.—Whereas by a notification of the Government of India in the Ministry of Petroleum, S.O. No. 1390, dated 18-4-77 under sub-section (1) of section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of right of user in land) Act, 1962 (50 of 1962) the Central Government declared its intention to acquire the right of user in the lands specified in the schedule appended to that notification for the purpose of laying pipeline;

And whereas the Competent Authority has under sub-section (1) of section 6 of the said Act, submitted report to the Government;

And further whereas the Central Government has after considering the said report, decided to acquire the right of user in the lands specified in the schedule appended to this notification;

Now therefore in exercise of the power conferred by sub-section (1) of the section 6 of the said Act, the Central Government hereby declares that the right of user in the said lands specified in the schedule appended to this notification hereby acquired for laying the pipelines;

And further in exercise of power conferred by sub-section (4) of that section, the Central Government directs that the right of user in the said lands shall instead of vesting in the Central Government vest on this date of the publication of this declaration in the Oil & Natural Gas Commission free from encumbrances.

SCHEDULE

Pipeline from Well No. SPL to MK-64

State : Gujarat	District : Mehsana		Taluka : Kadi	
Village	Survey No.	Hectare	Are	Centiare
Suraj	644	0	01	00
	643	0	13	20
	641	0	09	00
	640	0	19	20
	663	0	08	00

[No. 12016/2/77-Prod. VI]

का० आ० 181.—यतः पेट्रोलियम और खनिज पाइप लाइन (भूमि के उपयोग के अधिकार का अर्जन) अधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) के अधीन भारत सरकार के पेट्रोलियम मंत्रालय की अधिसूचना का०आ०सं० 2121 तारीख 10-6-77 द्वारा केन्द्रीय सरकार ने उस अधिसूचना से संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट भूमियों के उपयोग के अधिकार को पाइप लाइनों को बिछाने के प्रयोजन के लिए अर्जित करने का अपना आशय घोषित कर दिया था ।

और यतः सक्षम प्राधिकारी के उक्त अधिनियम की धारा 6 की उपधारा (1) के अधीन सरकार को रिपोर्ट दे दी है ।

और आगे, यतः केन्द्रीय सरकार ने उक्त रिपोर्ट पर विचार करने के पश्चात् इस अधिसूचना से संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट भूमियों में उपयोग का अधिकार अर्जित करने का विनिश्चय किया है ।

अब, अतः उक्त अधिनियम की धारा 6 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्ति का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा घोषित करती है कि इस अधिसूचना से संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट उक्त भूमियों में उपयोग का अधिकार पाइप लाइन बिछाने के प्रयोजन के लिए एतद्द्वारा अर्जित किया जाता है ।

और, आगे उस धारा की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार निदेश देती है कि उक्त भूमियों में उपयोग का अधिकार केन्द्रीय सरकार में विहित होने के बजाय तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग में सभी भारों से मुक्त रूप में, इस घोषणा के प्रकाशन की इस तारीख को निहित होगा ।

अनुसूची

कूप सं० एन० के० ए० जेड से डब्ल्यू एच० आई० एन० के० 25 तक उपयोग कर्त्ता के अधिकार का अर्जन करना

राज्य: गुजरात	जिला : अहमदाबाद		तालुका : वीरमगम	
गांव	सर्वेक्षण सं०	हे०	ए०आर०ई०	सेन्टी०
तेलावी	191	0	02	40
	190	0	13	20
	कार्ट ट्रेक	0	00	84
	214	0	25	32
	212/1	0	07	20
	209/4/4	0	13	20
	210/2	0	13	20
	209/4/1	0	15	24
	कार्ट ट्रेक	0	00	60
	226/4/1	0	43	20
	226/3/1	0	10	40
	226/5/11	0	12	60
	226/2/1	0	02	40
	225/4	0	03	60

[सं० 12016/2/77—प्रोडक्शन VII]

S.O. 181.—Whereas by a notification of the Government of India in the Ministry of Petroleum, S.O. No. 2121 dated 10-6-77 under sub-section (1) of section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of right of user in land) Act, 1962 (50 of 1962) the Central Government declared its intention to acquire the right of user in the lands specified in the schedule appended to that notification for the purpose of laying pipeline ;

And whereas the Competent Authority has under sub-section (1) of section 6 of the said Act, submitted report to the Government ;

And further whereas the Central Government has after considering the said report, decided to acquire the right of user in lands specified in the schedule appended to this notification ;

Now therefore in exercise of the power conferred by sub-section (1) of the section 6 of the said Act, the Central Government hereby declares that the right of user in the said lands specified in the schedule appended to this notification hereby acquired for laying the pipelines ;

And further in exercise of power conferred by sub-section (4) of that section, the Central Government directs that the right of user in the said lands shall instead of vesting in the Central Government vest on this date of the publication of this declaration in the Oil & Natural Gas Commission free from encumbrances.

SCHEDULE

Acquisition of right of user for Well No. NKAZ to WHI NK-25

State : Gujarat District : Ahmedabad Taluka : Viramgam

Village	Survey No.	Hectare	Are	Centiare
Telavi	191	0	02	40
	190	0	13	20
	Cart-track	0	00	84
	214	0	25	32
	212/1	0	07	20
	209/4/4	0	13	20
	210/2	0	13	20
	209/4/1	0	15	24
	Cart-track	0	00	60
	226/4/1	0	43	20
	226/3/1	0	10	40
	226/5/11	0	12	60
	226/2/1	0	02	40
	225/4	0	03	60

[No. 12016/2/77—Prod. VII]

का० आ० 182.—यतः पैट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि के उपयोग के अधिकार का अर्जन) अधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) के अधीन भारत सरकार के पैट्रोलियम मंत्रालय की अधिसूचना का० आ० सं० 2122 तारीख 10-6-77 द्वारा केन्द्रीय सरकार ने उस अधिसूचना से संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट भूमियों के उपयोग के अधिकार को पाइप लाइनों को बिछाने के प्रयोजन के लिए अर्जित करने का अपना आशय घोषित कर दिया था ।

और यतः सक्षम प्राधिकारी के उक्त अधिनियम की धारा 6 की उपधारा (1) के अधीन सरकार को रिपोर्ट दे दी है ।

और आगे, यतः केन्द्रीय सरकार ने उक्त रिपोर्ट पर विचार करने के पश्चात् इस अधिसूचना से संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट भूमियों में उपयोग का अधिकार अर्जित करने का विनिश्चय किया है ।

अब, अतः उक्त अधिनियम की धारा 6 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्ति का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा घोषित करती है कि इस अधिसूचना से संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट उक्त भूमियों में उपयोग का अधिकार पाइप लाइन बिछाने के प्रयोजन के लिए एतद्द्वारा अर्जित किया जाता है ।

और, आगे उस धारा की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार निदेश देती है कि उक्त भूमियों में उपयोग का अधिकार केन्द्रीय सरकार में विहित होने के बजाय तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग में सभी भारों से मुक्त रूप में, इस घोषणा के प्रकाशन की इस तारीख को निहित होगा ।

अनुसूची

कूप सं० एन एक्स० बी० क्यू० से डब्ल्यु० एच० आई० काडी 25 तक पाइप लाइन बिछाने के लिये

राज्य : गुजरात	जिला : अहमदाबाद		तालुका : वीरमगम	
गांव	सर्वेक्षण सं०	हे०	ए० आर० ई०	सेन्टेयर
तिलावी	236/5/पी	0	69	84
	226/5/3-पी	0	03	60

[सं० 12016/2/77-प्रोडक्शन VIII]

S.O. 182.—Whereas by a notification of the Government of India in the Ministry of Petroleum, S.O. No. 2122 dated 10-6-77 under sub-section (1) of section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of right of user in land) Act, 1962 (50 of 1962) the Central Government declared its intention to acquire the right of user in the lands specified in the schedule appended to that notification for the purpose of laying pipeline ;

And whereas the Competent Authority has under sub-section (1) of section 6 of the said Act, submitted report to the Government;

And further whereas the Central Government has after considering the said report, decided to acquire the right of user in lands specified in the schedule appended to this notification ;

Now therefore in exercise of the power conferred by sub-section (1) of the section 6 of the said Act, the Central Government hereby declares that the right of user in the said lands specified in the schedule appended to this notification hereby acquired for laying the pipelines ;

And further in exercise of power conferred by sub-section (4) of that section, the Central Government directs that the right of user in the said lands shall instead of vesting in the Central Government vest on this date of the publication of this declaration in the Oil & Natural Gas Commission free from encumbrances.

SCHEDULE

For laying pipeline from Well No. NKBQ to W.H.I. Kadi-25

State : Gujarat District : Ahmedabad Kalol : Viramgam

Village	Survey No.	Hectare	Are	Centiare
Telavi	236/5/P	0	69	84
	226/5/3-P	0	03	60

[No. 12016/2/77-Prod. VIII]

का० आ० 183.—यतः केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि लोकहित में यह आवश्यक है कि गुजरात राज्य में, व्यधन क्षेत्र के० 74 से जी० जी० एस० II तक पैट्रोलियम के परिवहन के लिये पाइप लाइन तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग द्वारा बिछाई जानी चाहिये;

और यतः यह प्रतीत होता है कि ऐसी लाइनों को बिछाने के प्रयोजन के लिये एतद्पाबद्ध अनुसूची में वर्णित भूमि में उपयोग का अधिकार अर्जित करना आवश्यक है;

अतः अब पैट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के अधिकार का अर्जन (अधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुये केन्द्रीय सरकार ने उसमें उपयोग का अधिकार अर्जित करने का अपना आशय एतद् द्वारा घोषित किया है;

बशर्ते कि उक्त भूमि में हितबद्ध कोई व्यक्ति, उस भूमि के नीचे पाइपलाइन बिछाने के लिये आक्षेप सक्षम अधिकारी, तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग, निर्माण तथा रखरखाव प्रभाग, मकरपुरा रोड, बदोदरा 9 को इस अधिसूचना की तारीख से 21 दिनों के भीतर कर सकेगा;

और ऐसा आक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिर्दिष्टतः यह भी कथन करेगा कि क्या वह यह चाहता है कि उसकी सुनवाई व्यक्तिगत हो या किसी विधि व्यवसायी की मार्फत ।

अनुसूची

व्यधन क्षेत्र नं० के० 74 से जी० जी० एस० IV तक पाइप लाइन बिछाना

राज्य : गुजरात जिला : मेहसाना तालुका : कलोल

गांव	सर्वेक्षण नं०	हेक्टेयर	ए० आर०	ई० सेन्टेयर
कलोल	251/35	0	23	40
	251/43	0	00	98
	251/39	0	14	64
	251/40	0	04	85
	251/41	0	09	52
	ब्लाक नं०			
भामासाना	882	0	10	71
	883/2	0	10	79

[सं० 12016/2/77-प्रोडक्शन IX]

S.O. 183.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of petroleum from DS No. K.-74 to G.G.S. IV in Gujarat State pipelines should be laid by the Oil & Natural Gas Commission;

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipelines, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the section 3 of the Petroleum and Mineral Pipelines (Acquisition of Right of User in land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein :

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipelines under the land to the Competent Authority, Oil & Natural Gas Commission, Construction & Maintenance Division. Makarpura Road, Vadodara-9;

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by a legal practitioner.

SCHEDULE

For laying pipeline from D.S. No. K-74 to GGS-IV

State : Gujarat District Mehsana Taluka : Kalol

Villages	Survey No.	Hectare	Are	Centiare
Kalol	251/35	0	23	40
	251/43	0	00	98
	251/39	0	14	64
	251/40	0	04	85
	251/41	0	09	52
	Block No.			
Bhamasana	882	0	10	71
	883/2	0	10	79

[No.12016/2/77—Prod. IX]

का० आ० 184.—यतः केन्द्रीय सरकार को यह प्रतीत होता है कि लोकहित में यह आवश्यक है कि गुजरात राज्य में पुराने फ्लेअर बिन्दु से सी० टी० एफ० के निकट प्रस्तावित फ्लेअर बिन्दु तक पैट्रोलियम के परिवहन के लिये पाइप लाइन तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग द्वारा बिछाई जानी चाहिये;

और यतः यह प्रतीत होता है कि ऐसी लाइनों को बिछाने के प्रयोजन के लिये एतद्पाबद्ध अनुसूची में वर्णित भूमि में उपयोग का अधिकार अर्जित करना आवश्यक है;

अतः अब पैट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि में उपयोग के अधिकार का अर्जन) अधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार ने उसमें उपयोग का अधिकार अर्जित करने का अपना आशय एतद्द्वारा घोषित किया है :

बशर्ते कि उक्त भूमि में हितबद्ध कोई व्यक्ति, उस भूमि के नीचे पाइपलाइन बिछाने के लिये आक्षेप सक्षम अधिकारी, तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग, निर्माण तथा रख रखाव प्रभाग मकरपुरा रोड बडोदरा 9 को इस अधिसूचना की तारीख से 21 दिनों के भीतर कर सकेगा;

और ऐसा आक्षेप करने वाला हर व्यक्ति विनिर्दिष्टतः यह भी कथन करेगा कि क्या वह यह चाहता है कि उसकी सुनवाई व्यक्तिगत हो या किसी विधि व्यवसायी की मार्फत ।

अनुसूची

पुराने प्रज्वलित केन्द्र से सी० टी० एफ़० के समीप प्रस्तावित प्रज्वलित केन्द्र के पास पैपलाइन लाइन का बिछाना

राज्य : गुजरात	जिला : मेहसाना	तालुका : कलोल		
गांव	सर्वेक्षण नम्बर	हेक्टेयर	ए आर ई	सेंटियर
सेज	994/6	0	02	25
	994/4/5	0	01	20
	994/4/6	0	02	25
	994/4/7	0	02	25
	994/4/1	0	01	35
	994/4/2	0	01	65
	994/4/3	0	01	50
	994/4/4	0	01	80
	993	0	15	50

[सं० 12016/2/77-प्रोडक्शन-X]

S.O. 184.—Whereas it appears to the Central Government that it is necessary in the public interest that for the transport of petroleum from Old Flare Point to Proposed Flair Point near CTF in Gujarat State pipelines should be laid by the Oil & Natural Gas Commission;

And whereas it appears that for the purpose of laying such pipelines, it is necessary to acquire the right of user in the land described in the schedule annexed hereto;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of the section 3 of the Petroleum and Mineral Pipelines (Acquisition of Right of User in land) Act, 1962 (50 of 1962), the Central Government hereby declares its intention to acquire the right of user therein :

Provided that any person interested in the said land may, within 21 days from the date of this notification, object to the laying of the pipelines under the land to the Competent Authority, Oil & Natural Gas Commission, Construction & Maintenance Division, Makarpura Road, Road, Vadodara-9;

And every person making such an objection shall also state specifically whether he wishes to be heard in person or by a legal practitioner.

SCHEDULE

For laying Gas pipeline from old Flare point to proposed Flare point near CTF

State : Gujarat	District : Mehsana		Taluka : Kalol	
Village	Survey No.	Hectare	Are	Centiare
Saij	994/6	0	02	25
	994/4/5	0	01	20
	994/4/6	0	02	25
	994/4/7	0	02	25
	994/4/1	0	01	35
	994/4/2	0	01	65
	994/4/3	0	01	50
—	994/4/4	0	01	80
	993	0	15	50

[No. 12016/2/77—Prod. X]

का० आ० 185.—यतः पेट्रोलियम और खनिज पाइपलाइन (भूमि के उपयोग के अधिकार का अर्जन) अधिनियम, 1962 (1962 का 50) की धारा 3 की उपधारा (1) के अधीन भारत सरकार के पेट्रोलियम मंत्रालय की अधिसूचना का० आ० सं० 2558 तारीख, 27-7-77 द्वारा केन्द्रीय सरकार ने उस अधिसूचना से संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट भूमियों के उपयोग के अधिकार को पाइप लाइनों को बिछाने के प्रयोजन के लिए अर्जित करने का अपना आशय घोषित कर दिया था;

और यतः सक्षम प्राधिकारी ने उक्त अधिनियम की धारा 6 की उपधारा (1) के अधीन सरकार को रिपोर्ट दे दी है ।

और आगे, यतः केन्द्रीय सरकार ने उक्त रिपोर्ट पर विचार करने के पश्चात् इस अधिसूचना से संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट भूमियों में उपयोग का अधिकार अर्जित करने का विनिश्चय किया है;

अब, अतः उक्त अधिनियम की धारा 6 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्ति का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद द्वारा घोषित करती है कि इस अधिसूचना में संलग्न अनुसूची में विनिर्दिष्ट उक्त भूमियों में उपयोग का अधिकार पाइप लाइन बिछाने के प्रयोजन के लिए एतद्द्वारा अर्जित किया जाता है;

और आगे उस धारा की उपधारा (4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार निदेश देती है कि उक्त भूमियों में उपयोग का अधिकार केन्द्रीय सरकार में विहित होने के बजाय तेल तथा प्राकृतिक गैस आयोग में सभी संघर्षों से मुक्त रूप में, इस घोषणा के प्रकाशन की इस तारीख को निहित होगा ।

अनुसूची

व्यधन क्षेत्र एस० के०-2 से सी० टी० एफ़० कादी तक पाइप लाइन बिछाने के लिए अधिकार के उपयोग का अर्जन करना

राज्य : गुजरात	जिला : मेहसाना	तालुका : कादी		
गांव	सर्वेक्षण नं०	हेक्टेयर	ए आर ई	सेन्टेयर
कादी	1808	0	06	60
	1810/2	0	07	60
	1815	0	12	75
	1816	0	01	50
	1818/	0	07	20
	1818	0	06	30
	1819]	0	06	75
	कार्ट ट्रेक	0	03	15

1	2	3	4	5
	1861	0	02	40
	1860/1	0	30	55
	1837	0	04	10
	1852	0	24	45
	1851	0	10	05
	1853	0	02	00

[सं० 12016/2/77-प्रोडक्शन XI]

टी० पी० सुब्रह्मनियन, अवर सचिव

S.O. 185.—Whereas by a notification of the Government of India in the Ministry of Petroleum, S.O. No. 2588, dated 27-7-1977 under sub-section (1) of section 3 of the Petroleum and Minerals Pipelines (Acquisition of right of user in land) Act, 1962 (50 of 1962) the Central Government declared its intention to acquire the right of user in the lands specified in the schedule appended to that notification for the purpose of laying pipeline;

And whereas the Competent Authority has under sub-section (1) of section 6 of the said Act, submitted report to the Government;

And further whereas the Central Government has after considering the said report, decided to acquire the right of user in the lands specified in the schedule appended to this notification;

Now therefore in exercise of the power conferred by sub-section (1) of the section 6 of the said Act, the Central Government hereby declares that the right of user in the said lands specified in the schedule appended to this notification hereby acquired for laying the pipelines;

And further in exercise of power conferred by sub-section (4) of that section, the Central Government directs that the right of user in the said lands shall instead of vesting in the Central Government vest on this date of publication of this declaration in the Oil & Natural Gas Commission free from encumbrances.

SCHEDULE

Acquisition of right of user for laying pipeline from D.S. SK-2 to CTF Kadi

State : Gujarat District : Mehsana Taluka : Kadi

Village	Survey No.	Hectare	Are	Centiare
Kadi	1808	0	06	60
	1810/2	0	07	50
	1815	0	12	75
	1816	0	01	50
	1818/P	0	07	20
	1818/P	0	06	30
	1819/P	0	06	75
	Cart-track	0	03	15
	1861	0	02	40
	1860/1	0	30	55
	1837	0	04	10
	1852	0	24	45
	1851	0	10	05
	1853	0	02	00

[No. 12016/2/77—Prod. XI]

T. P. SUBRAHMANYAN, Under Secy.

ऊर्जा मंत्रालय

(कोयला विभाग)

नई दिल्ली, 22 दिसम्बर, 1977

का० आ० 186.—केन्द्रीय सरकार ने, कोयला वाले क्षेत्र (अर्जन और विकास) अधिनियम, 1957 (1957 का 20) की धारा 4 की उपधारा (1) के अधीन, भारत सरकार के ऊर्जा मंत्रालय, कोयला विभाग की अधिसूचना का० आ० 429 (अ) तारीख 12 अगस्त, 1975 द्वारा, उक्त अधिसूचना से उपाबद्ध अनुसूची में विनिर्दिष्ट परिक्षेत्र में 4050.00 एकड़ (लगभग) या 1638.95 हेक्टर (लगभग) भूमियों में कोयले का पूर्वेक्षण करने के अपने आशय की सूचना दी थी।

और केन्द्रीय सरकार ने उक्त अधिनियम की धारा 7 की उपधारा (1) के अधीन भारत सरकार के ऊर्जा मंत्रालय, (कोयला विभाग) की अधिसूचना सं० का० आ० 2614, तारीख 10 अगस्त, 1977 द्वारा 12 अगस्त, 1977 से प्रारंभ होने वाली छह मास की और अवधि को उस अवधि के रूप में विनिर्दिष्ट किया था जिसके भीतर केन्द्रीय सरकार उक्त भूमि या ऐसी भूमियों में या उन पर किसी अधिकार को अर्जित करने के अपने आशय की सूचना दे सकेगी;

और केन्द्रीय सरकार का समाधान हो गया है कि उक्त भूमि के भाग में कोयला अभिप्राप्य है;

अत:, अब, केन्द्रीय सरकार, कोयला वाले क्षेत्र (अर्जन और विकास) अधिनियम, 1957 (1957 का 20) की धारा 7 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए—

(क) इस से उपाबद्ध अनुसूची 1 में वर्णित 264.037 हेक्टर (लगभग) या 652.45 एकड़ (लगभग) माप की भूमियों को,

(ख) इससे उपाबद्ध अनुसूची 2 में 1209.551 हेक्टर (लगभग) या 2988.87 एकड़ (लगभग) माप की भूमियों में खनिजों के खनन, खदान, बेधन, उनकी खुदाई करने और उन्हें तलाश करने, उन्हें प्राप्त करने, उन पर कार्य करने और उन्हें ढोकर ले जाने के अधिकार;

अर्जित करने के अपने आशय की सूचना देती है।

टिप्पण—1. इस अधिसूचना के भीतर आने वाले क्षेत्रों के नक्शों का निरीक्षण, कलक्टर, अंबिकापुर, जिला सरगुजा (मध्यप्रदेश), कोयला नियंत्रक 1, कौंसिल हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता या वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (राजस्व अनुभाग), बिसेसर हाउस, टेम्पुल रोड, नागपुर (महाराष्ट्र) के कार्यालय में किया जा सकता है।

टिप्पण—2. कोयला नियंत्रक, 1, कौंसिल हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता को केन्द्रीय सरकार द्वारा अधिनियम के अधीन सक्षम प्राधिकारी नियुक्त किया गया है।

अनुसूची 1

भट गांव खण्ड

उत्तरी विश्रामपुर कोलफील्ड्स

मध्य प्रदेश

(सभी अधिकार)

का० सं० डब्ल्यू सी एल/पी एल जी/वी के जी/भटगांव/भूमि 1-77 तारीख 12-7-76
(अर्जित की जाने वाली भूमि)

क्र० सं०	ग्राम	तहसील	जिला	क्षेत्र हेक्टरों में		योग	टिप्पण
				राजस्व भूमि	सरकारी भूमि		
1.	तेलगांव	सूरजपुर	सरगुजा	35.217	38.985	74.222	भाग
2.	भटगांव	,,	,,	16.664	81.936	98.000	भाग
3.	दुग्गा	,,	,,	42.031	46.834	88.865	भाग
4.	बैजनाथपुर	,,	,,	0.729	1.641	2.370	भाग
	योग			94.641	169.396	264.037	
				हेक्टर (लगभग) या 233.862 एकड़ (लगभग)	हेक्टर (लगभग) या 418.586 एकड़ (लगभग)	हेक्टर (लगभग) या 652.45 एकड़ (लगभग)	

ग्राम तलगांव में अर्जित किए जाने वाले प्लाटों की संख्याएं :

1(पी), 43(पी), 173(पी), 174(पी), 175, 176(पी), 178/1पी 183/1(पी), 183/2 (पी), 184/1, 184/2, 185, 186(पी), 187(पी), 189(पी), 190 से 196, 198/1(पी), 198/2(पी), 198/3(पी), 198/4(पी), 198/5(पी), 198/6(पी), 198/7(पी), 199(पी), 200(पी), 202(पी), 207/3(पी), 207/5(पी), 207/5(पी), 237(पी), 238(पी), 239(पी), 240(पी), 242(पी), 243(पी), 244(पी), 246(पी), 247(पी), 250(पी), 317(पी), 318(पी), 319(पी), 322(पी), 323, 324(पी), 325(पी), 326(पी), 330(पी), 331(पी), 333(पी), 334(पी), 342(पी), 343(पी), 347(पी), 367(पी), 369(पी), 373(पी), 374(पी), 375(पी), 376(पी), 379(पी), 381/1(पी), 381/2(पी), 382, 383(पी), 399(पी), 405/1(पी), 405/2(पी), 407(पी), 408(पी), 411(पी), 509(पी), 510(पी), 511(पी), 512(पी), 513(पी), 553(पी), 554 से 558, 559(पी), 560(पी), 561(पी), 562(पी), 563(पी), 564(पी), 565, 566(पी), 573(पी), 1165(पी), 1166(पी), 1167 से 1170, 1171(पी), 1177(पी), 1178(पी), 1179 से 1181, 1182(पी), 1183(पी), 1184(पी), 1189(पी), 1190(पी), 1191 से 1213, 1214/1 से 1214/10, 1214/11(पी), 1214/12, 1215, 1216, 1217(पी), 1218 से 1223, 1224(पी), 1225 से 1227, 1228(पी), 1231(पी), 1232(पी), 1235(पी), 1240(पी), 1246(पी), 1268/1(पी), 1268/2(पी), 1269, 1270, 1271(पी), 1272(पी), 1278(पी), 1279(पी), 1376, 1393(पी), 1451(पी), 1454/1(पी), 1454/2(पी).

ग्राम भटगांव में अर्जित किए जाने वाले प्लाटों की संख्याएं :

1075(पी), 1078(पी), 1079(पी), 1092(पी), 1097/1(पी), 1098(पी), 1099(पी), 1100, 1101(पी), 1102(पी), 1103, 1104(पी), 1107(पी), 1108(पी), 1109(पी), 1110(पी), 1111(पी), 1112, 1113(पी), 1114(पी), 1116(पी), 1217/4(पी), 1217/15(पी), 1217/22(पी), 1217/24(पी), 1217/25(पी), 1217/27(पी), 1217/28, 1221(पी), 1230(पी), 1231(पी), 1233(पी), 1234, 1235/1(पी), 1259(पी), 1260(पी), 1261(पी), 1262(पी), 1253(पी), 1264(पी), 1272(पी), 1273(पी), 1274(पी), 1276(पी), 1277(पी), 1281(पी), 1287(पी), 1288(पी), 1289 से 1295, 1296(पी), 1297 से 1299, 1300(पी), 1304(पी), 1307(पी), 1308(पी), 1309(पी), 1314/2(पी), 1316, 1317(पी), 1318(पी), 1321/1(पी), 1435(पी), 1436(पी), 1437(पी), 1438(पी), 1442(पी), 1443(पी), 1472(पी), 1476(पी), 1483(पी), 1484(पी), 1485, 1486, 1487(पी), 1488(पी), 1489(पी), 1491(पी), 1492 से 1995, 1496(पी), 1497(पी), 1498, 1499(पी), 1502(पी), 1509(पी), 1559(पी), 1561(पी), 1562(पी), 1563(पी), 1570(पी), 1571(पी), 1572(पी), 1575(पी), 1576(पी), 1577/1(पी), 1577/2(पी), 1578(पी), 1579(पी), 1580(पी), 1583(पी), 1605(पी), 1650(पी), 1651(पी), 1652/1(पी), 1652/2, 1653, 1654(पी), 1657(पी), 1659(पी), 1661(पी), 1663(पी), 1664(पी), 1665, 1666/1(पी), 1666/2(पी), 1667(पी), 1668 से 1673, 1674(पी), 1675 से 1680.

ग्राम बुग्दा में अर्जित किए जाने वाले प्लाटों की संख्याएं :

16(पी), 17(पी), 21(पी), 23/2(पी), 23/3, 23/4, 23/5, 23/6, 23/7, 23/8, 23/9, 23/10, 23/11, 24, 25, 26, 27(पी), 28(पी), 29(पी), 30 से 49, 50/1, 50/2, 51, 52, 53(पी), 54(पी), 55(पी), 56(पी), 67(पी), 70(पी), 71(पी), 72(पी), 73(पी), 83(पी), 84(पी), 85(पी), 86 से 109, 110/1, 110/2, 111 से 115, 116/1, 116/2, 117, 118, 119/1, 119/2, 120 से 122, 123(पी), 124 से 131, 132(पी), 133(पी), 135(पी), 142(पी), 145(पी), 148/1(पी), 148/2, 148/3(पी), 213(पी), 214(पी), 227(पी), 335(पी), 236(पी), 237(पी), 247/1(पी), 247/2(पी), 248(पी), 249(पी), 587(पी), 588/1(पी), 588/2, 589(पी), 594/1(पी), 594/2, 697(पी), 704(पी).

ग्राम बैजनाथपुर में अर्जित किए जाने वाले प्लाटों की संख्याएं :

450(पी), 451(पी), 453(पी), 1850(पी), 1851(पी), 1852, 1853(पी), 1854, 1855, 1856(पी), 1857, 1863(पी).

सीमा वर्णन :

ब्लाक सं० 1

क1-क2	रेखा ग्राम बैजनाथपुर प्लाट सं० 1851, 1850, 453, 452, 450 और 1853 में से होकर जाती है और बिन्दु क2 पर मिलती है।
क2-क3	रेखा ग्राम भटगांव, प्लाट सं० 1217/4 (अर्ध-वृत्ताकार रूप में) 1217/22, 1217/15, 1221 और 1674 में से होकर जाती है और बिन्दु क3 पर मिलती है।
क-3 क4	रेखा ग्राम भटगांव, प्लाट सं० 1674 में से होकर जाती है और बिन्दु क4 पर मिलती है।
क4-क5	रेखा ग्राम तेलगांव, प्लाट सं० 198/2 में से होकर जाती है और बिन्दु क5 पर मिलती है।
क5-क6	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 198/7 में से होकर जाती है और बिन्दु क6 पर मिलती है।
क6-क7	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 198/7, 198/2, 198/1 में से होकर तब ग्राम भटगांव प्लाट सं० 1674 में से होकर जाती है और बिन्दु क7 पर मिलती है।
क7-क8	रेखा ग्राम भटगांव प्लाट सं० 1674 में से होकर और ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 198/6, 198/1 में से होकर प्लाट सं० 196 और 195 की सीमा के साथ-साथ और तब प्लाट सं० 189, 186, 187, 173, 178/1 में से होकर जाती है और बिन्दु क8 पर मिलती है।
क8-ङ	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 178/1, 174, 176, 183/2, 183/1, 1392/3, 43 में से होकर तब ग्राम भटगांव प्लाट सं० 1217/4 में से होकर जाती है और बिन्दु ङ पर मिलती है।
ङ-ख	रेखा ग्राम भटगांव प्लाट सं० 1217/4 में से होकर जाती है और बिन्दु ख पर मिलती है।
ख-क1	रेखा ग्राम भटगांव, प्लाट सं० 1217/4 में से होकर और तब ग्राम बैजनाथपुर, प्लाट सं० 1863, 1857, 1856, 1850 और 1851 में से होकर जाती है और प्रारम्भिक बिन्दु क1 पर मिलती है।

खण्ड-II

क-9-क6	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 198/5, 198/3, 198/4 198/1 और 198/7 में से होकर जाती है और बिन्दु क6 पर मिलती है।
क6-क5	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 198/7 में से होकर जाती है और बिन्दु क5 पर मिलती है।
क5-क10	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 198/7, 198/2 में से होकर और तब ग्राम भटगांव प्लाट सं० 1674, 1233 1231, 1230, 1221, 1235/1, 1317, 1318, 1321/1, 1476, 1484, 1483, 1487, 1488, 1489 1491, 1472, 1496, 1497, 1493, 1442, 1438, 1437, 1436, 1435, 1113, 1116, 1075, 1078, 1079, 1092, 1108, 1107, 1104, 1101 में से होकर जाती है और बिन्दु क10 पर मिलती है।
क10-क11	रेखा ग्राम भटगांव प्लाट सं० 1101 और 1099 में से होकर जाती है और बिन्दु क11 पर मिलती है।
क11-क12	रेखा ग्राम भटगांव प्लाट सं० 1099 और 1097/1 में से होकर जाती है और बिन्दु क12 पर मिलती है।
क12-क13	रेखा ग्राम भटगांव प्लाट सं० 1097/1, 1098, 1099 में से होकर जाती है और बिन्दु क13 पर मिलती है।
क13-क14	रेखा ग्राम भटगांव सं० प्लाट 1101, 1102, 1104, 1107 में से होकर जाती है और बिन्दु क14 पर मिलती है।
क14-क15	रेखा ग्राम भटगांव प्लाट सं० 1107, 1104 में से होकर जाती है और बिन्दु क15 पर मिलती है।
क15-क16	रेखा ग्राम भटगांव प्लाट सं० 1104, 1107, 1108, 1109, 1110, 1111, 1502, 1499, 1563, 1570, 1571, 1572 में से होकर जाती है और बिन्दु क16 पर मिलती है।
क16-क17	रेखा ग्राम भटगांव में से प्लाट सं० 1572 की सीमा के साथ-साथ और प्लाट सं० 1576, 1575, 1562, 1561 1556, 1583, 1577/2, 1580, 1579, 1605, 1666/1, 1666/2 में से होकर जाती है और बिन्दु क17 पर मिलती है।
क17-क18	रेखा ग्राम भटगांव में से, प्लाट सं० 1666/2 की सीमा के साथ-साथ और प्लाट सं० 1667 में से होकर जाती है और बिन्दु क18 पर मिलती है।
क18-क19	रेखा ग्राम भटगांव प्लाट सं० 1667, 1666/1 1605, 1578, 1577/1, 1579, 1577/2, 1562, 1575, 1576 में से होकर जाती है और बिन्दु क19 पर मिलती है।
क19-क20	रेखा ग्राम भटगांव प्लाट सं० 1576 में से होकर प्लाट सं० 1375, 1236, 1237, 1245, 1246, 1248, 1249/2 1250 की सीमा के साथ-साथ जाती है और तब ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 200 में से होकर आगे बढ़ती है और बिन्दु क20 पर मिलती है।

क20-क21	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 200, 202, 207/4 207/3 में से होकर जाती है और बिन्दु क21 पर मिलती है।
क21-क22	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 207/4 में से होकर जाती है और बिन्दु क22 पर मिलती है।
क22-क23	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 207/4, 207/3 में से होकर प्लाट सं० 207/4, 202 और 200 में से आगे बढ़ती है और बिन्दु क23 पर मिलती है।
क23-क24	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 200 में से होकर प्लाट सं० 203 209/1, 209/2, 209/3, 213 की सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु क24 पर मिलती है।
क24-क9	रेखा ग्राम तेलगांव में से होकर प्लाट सं० 213 और 214 भी सामान्य सीमा के साथ-साथ और तब प्लाट सं० 199, 198/5 में से होकर जाती है और प्रारम्भिक बिन्दु क9 पर मिलती है।
खण्ड-III	
क25-क22	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 407, 405/2, 399, 326, 318, 317, 319, 322, 250, 247, 237, 1451 में से होकर प्लाट सं० 1452 की सीमा के साथ साथ जाती है और तब प्लाट सं० 207/5 में से होकर आगे बढ़ती है और बिन्दु क22 पर मिलती है।
क22-क21	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 207/4 में से होकर जाती है और बिन्दु क21 पर मिलती है।
क21-क26	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 207/4 में से होकर और ग्राम भटगांव प्लाट सं० 1264, 1263, 1261, 1260, 1959 1277, 1309 में से होकर प्लाट सं० 1313 की सीमा के साथ-साथ जाती है और तब प्लाट सं० 1307, 1304, 1314/2, 1667 में से होकर आगे बढ़ती है और बिन्दु क26 पर मिलती है।
क26-क27	रेखा ग्राम भटगांव प्लाट सं० 1667 में से होकर जाती है और बिन्दु क27 पर मिलती है।
क27-क18	रेखा ग्राम भटगांव प्लाट सं० 1667 में से होकर जाती है और बिन्दु क18 पर मिलती है।
क18-क17	रेखा ग्राम भटगांव प्लाट सं० 1667 में से होकर जाती है और बिन्दु क17 पर मिलती है।
क17-क28	रेखा ग्राम भटगांव में से होकर प्लाट सं० 1667 की सीमा के साथ-साथ और प्लाट सं० 1662/2, 1661, 1663, 1664, 1659, 1657, 1654, 1652/1, 1650, 1651 में से होकर जाती है और ग्राम दुग्गा प्लाट सं० 23/2, 21, 27, 28, 17, 16, 56, 71, 70, 67, 148/3, 148/1 में से होकर आगे बढ़ती है और बिन्दु क28 पर मिलती है।
क28-क29	रेखा ग्राम दुग्गा प्लाट सं० 148/1, 145 में से होकर जाती है और बिन्दु क29 पर मिलती है।
क29-क30	रेखा ग्राम दुग्गा प्लाट सं० 142, 148/3, 73, 72, 55, 56 में से होकर जाती है और बिन्दु क30 पर मिलती है।
क30-क31	रेखा ग्राम दुग्गा प्लाट सं० 56, 55, 53, 54, 85, 84, 83 में से होकर प्लाट सं० 138 और 136 के साथ-साथ जाती है और प्लाट सं० 135, 133, 132, 213, 214, 227, 123, 234, 236, 249 और 248 में से होकर आगे बढ़ती है और बिन्दु क31 पर मिलती है।
क31-क32	रेखा ग्राम दुग्गा प्लाट सं० 248, 247/1, 237 236, 704, 587, 588/1, 588/2, 589 594/1 में से होकर जाती है और ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 1240 और 511 में से होकर आगे बढ़ती है और बिन्दु क32 पर मिलती है।
क32-क33	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 511, 513 में से होकर जाती और बिन्दु क33 पर मिलती है।
क33-क34	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 513 में से होकर जाती है और बिन्दु क34 पर मिलती है।
क34-क35	रेखा ग्राम भटगांव प्लाट सं० 513, 1454/1, 1454/2 में से होकर और तब ग्राम भटगांव प्लाट सं० 1287, 1288, 1296, 1281, 1300 और 1667 में से होकर जाती है और बिन्दु क35 पर मिलती है।
क35-क36	रेखा ग्राम भटगांव, प्लाट सं० 1667, 1304, 1308, 1309, 1277, 1259, 1253, 1976, 1274, 1273, 1272, 1261 1252, 1263, 1264 में से होकर और तब ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 207/4, 207/5 में से होकर जाती है और बिन्दु क37 पर मिलती है।
क36-क37	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 207/4 और 237 से में होकर जाती है और बिन्दु क37 पर मिलती है।
क37-क38	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 239, 244, 246, 331, 324, 325, 326, 399, 405/1 और 411 में से होकर जाती है और बिन्दु क38 पर मिलती है।
क38-क39	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 411 में से होकर जाती है और बिन्दु क39 पर मिलती है।
क39-क25	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 411, 408, 407 में से जाती है और प्रारम्भिक बिन्दु क25 पर मिलती है।
खण्ड IV	
क40-क41	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 566, 564, 563, 562, 561, 559 में से होकर प्लाट सं० 573 की सीमा के साथ-साथ जाती है और बिन्दु क41 पर मिलती है।

क41-क42	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 573, 553, 513 में से होकर जाती है और बिन्दु क42 पर मिलती है।
क42-क37	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 513, 512, 510, 509, 391/1, 383, 381/2, 373, 375, 369, 367, 342, 343, 334, 333, 243, 242, 244, 239 में से होकर और प्लाट सं० 234 की सीमा के साथ साथ जाती है और बिन्दु क37 पर मिलती है।
क37-क36	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 372 और 207/4, में से होकर जाती है और बिन्दु क36 पर मिलती है।
क36-क34	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 207/4, 238, 239, 240, 242, 243, 347, 334, 343, 367, 369, 1454/1, 376, 379, 381/2, 510, 512, 513 में से होकर जाती है और बिन्दु क34 पर मिलती है।
क34-क33	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 5/3 में से होकर जाती है और बिन्दु क33 पर मिलती है।
क33-क43	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 513, 1214/1, 1235, 1217, 1231, 1228, 1224, 1246, 1268/1, में से होकर जाती है और बिन्दु क43 पर मिलती है।
क43-क44	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 1268/1, 1268/2, 1272, 1271, 1278, 1279, 1190 और 1189 में से होकर जाती है और बिन्दु क44 पर मिलती है।
क44-क40	रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 1189, 1190, 1184, 1183, 1182, 1178, 1177, 1171 1166, 1165, 566 में से होकर जाती है और प्रारम्भिक बिन्दु क40 पर मिलती है।

अनुसूची-2

भटगांव खण्ड

उत्तरी विश्रामपुर कोल फील्ड

(मध्य प्रदेश)

भा सं० डब्ल्यू० सी-एच/पी एल जी/बी के पी/भटगांव/भूमि/1-77 तारीख 12-7-1976 (जिसमें ऐसी भूमियों को दर्शित किया गया है जिनमें खनिजों के खनन, खदान, वेधन, उन्हें प्राप्त करने, उन पर कार्य करने और उन्हें ढोकर ले जाने के अधिकार अर्जित किए जाने वाले हैं)

खनन अधिकार :

क्र०सं०	ग्राम	तहसील	जिला	क्षेत्र, हैक्टरों में		योग	टिप्पण
				राजस्व भूमि	सरकारी भूमि		
1.	तेलगांव	सूरजपुर	सरगूजा	62.044	58.220	120.164	भाग
2.	भटगांव	,,	,,	312.568	158.689	471.257	,,
3.	दुरगा . . .	,,	,,	193.126	75.871	268.997	,,
4.	बिसही . . .	,,	,,	135.496	26.924	162.420	,,
5.	कपसरा . .	,,	,,	81.509	8.639	90.148	,,
6.	बरोधी . . .	,,	,,	8.993	60.257	69.250	,,
7.	बैजनाथपुर	,,	,,	15.844	11.471	27.315	,,
		योग :		809.580 हेक्टर (लगभग) या 2000.52 एकड़ (लगभग)	399.971 हेक्टर (लगभग) या 988.35 एकड़ (लगभग)	1209.551 हेक्टर (लगभग) या 2988.87 एकड़ (लगभग)	

ग्राम तलगांव में ग्रर्जित किए जाने वाले प्लाटों की संख्याएं :

161(पी), 162, 163(पी), 164(पी), 175 से 171, 172(पी), 173(पी), 178/1(पी), 178/2(पी), 186(पी), 187(पी), 188, 189(पी), 197, 198/1(पी), 198/2(पी), 198/3(पी), 198/4(पी), 198/5(पी), 198/6(पी), 198/7(पी), 199(पी), 200(पी), 201, 202(पी), 203 से 206, 207/1, 207/2, 207/3(पी), 207/4(पी), 207/5(पी), 207/6, 208, 209/1 से 209/3, 210 से 213, 214(पी) 215(पी), 217(पी), 218(पी), 219(पी), 220(पी), 221, 222, 223/1 से 223/5, 224 से 236, 237(पी), 238(पी), 239(पी), 240(पी), 241, 242(पी), 243(पी), 244(पी), 245, 246(पी), 247(पी), 248, 249, 250(पी), 251, 252(पी), 253(पी), 254 (पी), 260(पी), 261(पी), 263(पी), 265(पी), 266, 267(पी), 299(पी), 301(पी), 302(पी), 303(पी), 315(पी), 316, 317 (पी), 318(पी), 319(पी), 320, 321, 322(पी), 324(पी), 325(पी), 326(पी), 327 से 329, 330(पी), 331(पी), 332, 333(पी), 334(पी), 335 से 341, 341(पी), 343(पी), 344 से 346, 347(पी), 248/1, 348/2, 349, 350/1, 350/2, 351 से 366, 367(पी), 368, 369(पी), 370 से 372, 373(पी), 374 (पी), 375(पी), 376(पी), 377, 378, 379(पी), 380, 381/1 (पी), 381/2(पी), 383(पी), 284 से 396, 397/1, 397/2, 398, 399(पी), 400 से 404, 405/1(पी), 405/2(पी), 407(पी), 411(पी), 412, 413, 414(पी), 415 से 424, 425(पी), 426 (पी), 427(पी), 429(पी), 459(पी), 460 से 508, 509(पी), 510(पी), 511(पी), 512(पी), 513(पी), 514(पी), 515 से 432, 533(पी), 541(पी), 542(पी), 543(पी), 544 से 552, 553(पी), 559(पी), 560(पी), 561(पी), 562(पी), 563(पी), 564(पी), 566(पी), 567(पी), 571(पी), 572, 573(पी), 574, 575, 576(पी), 577(पी), 1214/11 (पी), 1217(पी), 1224(पी), 1228(पी), 1229, 1230/1, 1230/2 1231(पी), 1232(पी), 1233, 1234, 1235(पी), 1236 से 1239, 1240(पी), 1241 से 1244, 1245/1 से 1245/5, 1246(पी), 1247/1, 1247/2(पी), 1248(पी), 1252(पी), 1253(पी), 1268/1(पी), 1451(पी), 1454/1(पी), 1454/2(पी).

ग्राम भटगांव में ग्रर्जित किए गाने वाले प्लाटों की संख्याएं :

254(पी), 335(पी), 337(पी), 338(पी), 339 से 385, 386(पी), 387, 388(पी), 389, 390, 391(पी), 411(पी), 413(पी), 414 से 423, 424(पी), 425(पी), 426(पी), 428(पी), 429, 430, 431(पी), 432(पी), 433(पी), 434(पी), 435(पी), 436(पी), 437 से 533, 534(पी), 535, 536(पी), 537(पी), 538(पी), 539 से 547, 548/1, 548/2, 549 से 551, 552/1 से 552/4, 552/5(पी), 553 से 600, 601/1, 601/2, 602 से 617, 618/1, 618/2, 619 से 653, 654/1 से 654/3, 655 से 746, 757/1, 747/2, 748 से 767, 768(पी), 769(पी), 770 से 774, 830(पी), 851(पी), 852(पी), 853 से 855, 856(पी), 857 से 868, 869/1, 869/2, 870 से 926, 827/1, 927/2, 828 से 834, 935/1, 935/2, 936 से 961, 962/1, 962/2(पी), 963, 964(पी), 1003(पी), 1004(पी), 1005 से 1007, 1008(पी), 1009(पी), 1010, 1011(पी), 1012 से 1025, 1026/1, 1036/2, 1027 से 1048, 1049/1 से 1049/9, 1050, 1051/1 से 1051/5, 1052/1 से 1052/4, 1052/1 से 1053/8, 1054 से 1057, 1058/1, 1058/2, 1059 से 1074, 1075(पी), 1076, 1077, 1078(पी), 1079(पी), 1080 से 1091, 1082(पी), 1093 से 1096, 1097/1 (पी), 1097/2, 1098(पी), 1099(पी), 1101(पी), 1102(पी), 1104(पी), 1105, 1106, 1107(पी), 1108(पी), 1109(पी), 1110(पी), 1111(पी), 1113(पी), 1114(पी), 1115, 1116(पी), 1117 से 1183, 1184/1, 1184/2, 1185 से 1200, 1201/1, 1202/2, 1203/1, 1216, 1217/1 से 1217/3, 1217/4(पी), 1217/5 से 1215/14, 1217/15(पी), 1217/16 से 1217/21, 1217/22(पी), 1217/23, 1217/24(पी), 1217/25(पी), 1217/26, 1217/27 (पी), 1218 से 1220, 1221(पी), 1222 से 1229, 1230(पी), 1231(पी), 1232, 1233(पी), 1235/1(पी), 1235/2, 1236 से 1248, 1249/1 1249/2, 1250 से 1258, 1259(पी), 1260(पी), 1261(पी), 1262(पी), 1263(पी), 1264 (पी), 1265, 1266/1, 1266/2, 1267 से 1271, 1272(पी), 1273(पी), 1274(पी), 1275, 1276(पी), 1277(पी), 1278 से 1280, 1281(पी), 1282 से 1286, 1287(पी), 1288(पी), 1296(पी), 1300(पी), 1301 से 1303, 1304(पी), 1405, 1306, 1307(पी), 1308(पी), 1309(पी), 1310 से 1313, 1314/ 1, 1314/2(पी), 1315, 1317(पी), 1318(पी), 1319, 1320, 1321/1(पी), 1321/2, 1321/3, 1332 से 1434, 1435(पी), 1436(पी), 1437(पी), 1438(पी), 1439/1, 1439/2, 1440, 1441, 1442(पी), 1443(पी), 1444 से 1471, 1472(पी), 1473 से 1475, 1476(पी), 1477 से 1482, 1483(पी), 1484 (पी), 1487(पी), 1488(पी), 1489(पी), 1490, 1491(पी), 1496(पी), 1497(पी), 1499(पी), 1500, 1501, 1502(पी), 1503 से 1532, 1533/1, 1533/2, 1533/2, 1534 से 1536, 1537/1, 1537/2, 1538 से 1555, 1556(पी), 1557 से 1560, 1561(पी), 1562(पी), 1563(पी), 1564 से 1569, 1570(पी), 1571(पी), 1572(पी), 1573, 1574, 1575(पी), 1576(पी), 1577/1(पी), 1577/2(पी), 1578(पी), 1579(पी), 1580(पी), 1581, 1582, 1583(पी), 1584 से 1594, 1595/1, 1595/2, 1596 से 1604, 1605(पी), 1606 से 1641, 1642/1, 1642/2, 1643 से 1646, 1647/1, 1647/2, 1648, 1649, 1650(पी), 1651(पी), 1652/1(पी), 1654(पी), 1655/1, 1655/2, 1656/1, 1656/2, 1657(पी), 1658, 1659(पी), 1660, 1661(पी), 1662, 1663(पी), 1664(पी), 1666/1(पी), 1666/2(पी), 1667(पी), 1674(पी).

ग्राम दुग्दा में ग्रर्जित किए जाने वाले प्लाटों की संख्याएं :—

1/1 से 1/6. 2 से 15, 16 (पी), 17 (पी), 18 से 20, 21(पी), 22, 23/1, 23/2(पी), 27(पी), 28(पी), 29(पी), 53 (पी), 54(पी), 55(पी), 56(पी), 57 से 66, 67(पी), 68, 69, 70 (पी), 71(पी), 72 (पी), 73 (पी), 74 से 82, 83 (पी), 84 (पी), 85(पी), 123 (पी), 132 (पी), 133 (पी), 134, 135 (पी), 136 से 139, 140/1, 140/2, 140/3, 140/4, 141, 142 (पी), 143, 144, 145(पी), 146, 147, 148/1(पी), 148/3 (पी), 148/4, 149, 150/1, 150/2, 151 से 165, 166/1, 166/2, 167 से 212, 213 (पी), 214 (पी), 215 से 222, 223/1, 223/2, से 226, 227(पी), 228 से 234, 235 (पी), 236 (पी), 237(पी) 238/1, 238/2, 230 से 224, 245/1, 245/2, 246, 247/1(पी) 247/2(पी), 248(पी), 248(पी), 250 से 258, 259/1, 259/2, 260/1, 260/1, 260/2, 260/3, 261/1, 261/2, 262/1, 262/2, 263, 264/1 264/2, 265 से 335, 336/1, 336/2, 337 से 354, 355/1, 355/2, 356, 357, 358/1, 358/2, 359 से 363. 364/1, 354/2, 365, 366, 367/1, 367/2, 368 से 381, 382/1, 382/2, 382/3, 382/4, 383 से 388, 389/1, 389/2, 390 से 407, 408/1, 408/2, 409 से 412, 413/1, 413/2, 413/3, 414 से 419, 420/1, 420/2, 421 से 429, 430/1, 430/2, 431/1, 431/2, 432 से 468, 469/1, 469/2, 469/3, 470, 471/1, 471/2, 472 से 483, 484/1, 484/2, 485 से 510, 511 (पी), 512 (पी), 513 से 419, 520(पी), 521 (पी), 522, 523 (पी), 531 (पी), 532, 533/1 (पी), 533/2, 534 से 537, 538/1, 538/2, 538/3, 539 से 582, 583/1, 583/2, 583/3, 584, 585(पी), 586,

587(पी), 588/1 (पी), 589 (पी), 590 से 593, 594/1 (पी), 595/1 (पी), 596/6 (पी), 596, 696, 697 (पी), 701 से 703, 704 (पी).

ग्राम बिसाही में अर्जित किए जाने वाले प्लाटों की संख्याएं

86 (पी), 87 से 92, 93/1, से 93/4, 94 से 99, 100/1, 100/2, 101 से 109, 110 (पी), 111 (पी), 117 (पी), 119 (पी), 143 (पी), 145 (पी), 146 से 151, 152(पी), 153(पी), 154 से 159, 160/1 160/2, 161 से 164, 165/1 से 165/3, 166 से 168, 169(पी), 170, 171 (पी), 174 (पी), 255 (पी), 259 (पी), 260 (पी), 261 (पी), 262 से 266, 267/1, 267/2, 268 से 296, 279/1 से 297/3, 298 से 343, 344/1 से 344/3, 345 से 352, 353/1 से 353/4, 354, 355/1 से 355/3, 356/1 से 356/6, 357, 358 (पी), 359 (पी), 363 (पी), 387 (पी), 389 (पी), 390 (पी), 391(पी), 392 से 407, 408 (पी), 409(पी), 414 (पी), 415 (पी), 416(पी), 417 से 422, 423/1, 423/2, 424 से 426, 427/1 से 427/3, 428, 429, 430/1, 430/2, 431/1 से 431/3, 432 से 439, 440/1, 440/2, 441 से 449, 450/1 से 450/7, 451 से 461, 462(पी), 463 से 469, 470/1 से 470/3, 471 से 482, 483/1 से 483/3, 484/1 से 484/3, 485 से 512, 513/1 से 513/9, 514/1, 514/2, 515 से 519, 520/1 से 520/4, 521, 522/1, 522/2, 523, 524, 525/1 से 525/6, 526 से 534, 535/1 से 535/4, से 536, 537/1, 537/2, 538 से 546, 547/1 से 547/4, 548/1 से 548/6, 549/1 से 549/5, 550 से 564, 565/1, 565/2, 566 से 576, 577/1 से 577/7, 578 से 586, 587/1, 587/2, 588 से 596, 597/1, 597/2, 598 से 617, 618/1 और 618/2.

ग्राम कपसरा में अर्जित किए जाने वाले प्लाटों की संख्या

12(पी), 13 से 15, 16(पी), 17(पी), 134(पी), 137(पी), 138, 139, 140(पी), 144 से 153, 154(पी), 155 से 161, 162/1, 162/2, 163/1, 163/2, 164 से 172, 173/1, 173/2, 174 से 232, 233/1, 233/2, 234 से 240, 241(पी), 242(पी), 243(पी), 244(पी), 245, 246(पी), 247(पी), 248 से 250, 251/1, 251/2, 252 से 254, 256(पी), 257(पी), 258(पी), और 726(पी).

ग्राम बरोधी में अर्जित किए जाने वाले प्लाटों की संख्या

2/1 (पी), 2/8, 3(पी), 4(पी), 5(पी), 6(पी), 7(पी), 8(पी), 9(पी), 10(पी), 11(पी), 287(पी), 291(पी), 298(पी), 299(पी), 300, 301/1 (पी), 301/2 और 478/1(पी).

ग्राम बैजनाथपुर में अर्जित किए जाने वाले प्लाटों की संख्या :—

392(पी), 394(पी), 410(पी), 411(पी), 412(पी), 413, 414, 415(पी), 416 से 432, 433(पी), 434(पी), 435(पी), 440(पी), 441 से 449, 450 (पी), 451(पी), 452, 453(पी), 454(पी), 455(पी), 479(पी), 481(पी), 482(पी), 483(पी), 484(पी), 485 से 498, 499(पी), 500(पी), 515(पी), 516(पी), 517, 518(पी), 1850(पी), 1851(पी), 1853(पी) और 2086 (पी).

सीमा वर्णन :

खण्ड-1 :

ख-1-ख-2 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे क-9-क-6 जाती है।

ख-2-ख-3 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क-6-क-7 जाती है।

ख-3-ख-4 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क-7-क-8 जाती है।

ख-4-ख-1 . रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 178/1, 178/2, 172, 164, 163, 161 और 198/5 में से होकर जाती है और प्रारंभिक बिन्दु ख-1 पर मिलती है।

खण्ड-2 :

ख5-ख6 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क25-क22 जाती है।

ख6-ख7 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से जाती है, जिनसे रेखा क22-क23 जाती है।

ख7-ख8 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क23-क24 जाती है।

ख8-ख5 . रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 213 की सीमा पर से होकर और प्लाट सं० 214, 215, 217, 218, 219, 220, 267, 265, 261, 260, 263, 254, 253, 299, 252, 302, 301, 303, 317, 318, 315, 399, 405/2, 407 से होकर जाती है और प्रारंभिक बिन्दु ख-5 पर मिलती है।

खण्ड-3 :

ख9-ख10 . रेखा सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाटों में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क20-क21 जाती है।

ख10-ख11 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क21-क26, क26-क27 और क27-क18 जाती है।

ख11-ख12 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनमे रेखा क18-क19 जाती है।

ख12-ख9 . रेखा सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क-19-क20 जाती है।

खण्ड-4 :

ख13-ख14 . रेखा सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क40-क41 जाती है।

ख14-ख15 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क41-क42 जाती है।

ख15-ख16 . रेखा सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क42-क37 जाती है।

ख16-ख17 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क37-क38 जाती है।

ख17-ख13 . रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 411, 414, 427, 428, 425, 426, 459, 514, 533, 543, 541, 542, 577, 576, 561, 562, 571, 567 में से होकर जाती है और प्रारंभिक बिन्दु ख 13 पर मिलती है।

खण्ड-5 :

ख18-ख19 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क34-क35 जाती है ।

ख19-ख20 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क35-क36 जाती है ।

ख20-ख18 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा सं० क36-क34 जाती है ।

खण्ड 6 :

ख21-ख22 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क1-क2 जाती है ।

ख22-ख23 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क2-क3 जाती है।

ख23-ख24 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क3-क4 जाती है ।

ख24-ख25 . रेखा, सभी अधिकारों सहित उन्हीं प्लाट संख्याओं से होकर जाती है, जिनसे रेखा क4-क5 जाती है ।

ख-25-ख26 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क5-क10 जाती है ।

ख26-ख27 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क10-क11 जाती है ।

ख-27-ख28 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क11-क12 जाती है ।

ख28-ख29 . रेखा सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क12-क13 जाती है ।

ख29-ख30 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है जिनसे रेखा क13-क14 जाती है ।

ख30-ख31 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है जिनसे रेखा क14-क15 जाती है ।

ख31-ख32 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क15-क16 जाती है ।

ख32-ख33 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क16-क17 जाती है ।

ख33-ख34 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क17-क28 जाती है ।

ख34-ख35 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क28-क29 जाती है ।

ख35-ख36 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क29-क30 जाती है ।

ख36-ख37 . रेखा, सभी अधिकारों सहित उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क30-क31 जाती है ।

ख37-ख38 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा सं० क31-क32 जाती है ।

ख38-ख39 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट सं० में से होकर जाती है, जिनसे रेखा सं० क32-क33 जाती है ।

ख39-ख40 . रेखा, सभी अधिकारों सहित, उन्हीं प्लाट संख्याओं में से होकर जाती है, जिनसे रेखा क33-क43 जाती है ।

ख40-ख41 . रेखा ग्राम तेलगांव प्लाट सं० 1268/1, 1247/2, 1253, 1252, 1248 में से होकर जाती है, और तब ग्राम दुग्गा प्लाट सं० 595/1, 596/1, 596/6, 585 में से होकर आगे बढ़ती है और बिन्दु ख-41 पर मिलती है ।

ख41-ख42 . रेखा, ग्राम दुग्गा प्लाट सं० 585, 533/1, 531, 520, 521, 532, 512 में से होकर जाती है और तब ग्राम बरोधी प्लाट सं० 478/1, 2/1, 30/1 में से होकर आगे बढ़ती है और बिन्दु ख-42 पर मिलती है ।

ख42-ख43 . रेखा, ग्राम बरोधी प्लाट सं० 301/1, 298, 291 287, 2/1, 10, 9, 8, 7, 6, 5, 4, 3 में से होकर जाती है और बिन्दु ख-43 पर मिलती है ।

ख43-ख44 . रेखा ग्राम बरोधी और कपसरा की सामान्य सीमा से प्रारंभ होती है और ग्राम कपसरा प्लाट सं० 726, 255, 251/6, 256, 247, 257, 258, 246, 244, 243, 242, 241, 154, 137, 134 में से होकर जाती है और बिन्दु ख-44 पर मिलती है ।

ख44-ख45 . रेखा, ग्राम कपसरा प्लाट सं० 140, 154, 17, 16, 12 में से होकर जाती है और तब ग्राम बिसही प्लाट सं० 414 415, 416, 409 में से होकर आगे बढ़ती है और बिन्दु ख-45 पर मिलती है ।

ख45-ख46 . रेखा, ग्राम बिसही प्लाट सं० 409, 408, 389, 390, 387, 391, 363, 358, 359, 255, 259, 260, 261, 174, 171, 169, 153, 152, 143, 145, 119, 117, 462, 111, 110, 86 से होकर जाती है और तब ग्राम भटगांव प्लाट सं० 1012, 1011, 1008, 1009, 1004, 1003, 962/2, 964, 851, 852, 856, 768, 769, 823, 435, 436, 434, 433, 432, 431, 428, 425, 426, 424, 411, 413, 386, 388, 391, 335, 337, 338, 534, 536, 537, 538, 552/5 में से होकर आगे बढ़ती है और बिन्दु ख-46 पर मिलती है ।

ख46-ख47 . रेखा, ग्राम भटगांव प्लाट सं० 254 में से होकर जाती है और बिन्दु ख-47 पर मिलती है।

ख47-ख48 . रेखा ग्राम भटगांव प्लाट सं० 254 में से होकर जाती है और तब ग्राम बैजनाथपुर प्लाट सं० 2086, 394 में से होकर आगे बढ़ती है और बिन्दु ख48 पर मिलती है ।

ख48-ख21 . रेखा ग्राम बैजनाथपुर प्लाट सं० 412, 411, 410, 2086, 435, 434, 433, 440, 500, 499, 515, 516, 518, 484, 483, 482, 479, 455, 454, 453, 1850, 1851 में से होकर जाती है और प्रारंभिक बिन्दु ख21 पर मिलती है ।

[फा०सं० 19(35)/77-कोयला]

एस० आर० ए० रिजवी, निदेशक

MINISTRY OF ENERGY

(Department of Coal)

New Delhi, the 22nd December, 1977

S.O. 186.—Whereas by the notification of the Government of India in the Ministry of Energy, Deptt. of Coal, S.O. 429(E) dated the 12th August, 1975 under sub-section (1) of section 4 of the Coal Bearing Areas (Acquisition and Development) Act, 1957 (20 of 1957), the Central Government gave notice of its intention to prospect for coal in 4050.00 acres (approximately) or 1638.75 hectares (approximately) of the lands in the locality specified in the Schedule appended to that notification.

And whereas by the notification of the Government of India in the Ministry of Energy (Department of Coal) No. S.O. 2614 dated the 10th August, 1977, under sub-section (1) of section 7 of the said Act, the Central Government specified a further period of six months commencing from the 12th August, 1977, as the period within which the Central Government may give notice of its intention to acquire the said lands or any rights in or over such lands;

And whereas the Central Government is satisfied that coal is obtainable in part of the said land.

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 7 of the Coal Bearing Areas (Acquisition and Development) Act, 1957 (20 of 1957), the Central Government hereby gives notice of its intention to acquire :—

(a) the lands measuring 264.037 hectares (approx.) or 652.45 acres (approx.) described in Schedule I appended hereto;

(b) the rights to mine, quarry, bore, and search for, win, work and carry away minerals in the lands measuring 1209.551 hectares (approx.) or 2988.87 acres (approx.) in schedule II appended hereto.

Note 1—The plans of the areas covered by this notification may be inspected in the Office of the Collector, Ambikapur District-Surguja, (Madhya Pradesh); the Coal Controller, 1, Council House Street, Calcutta or the Western Coalfields Limited (Revenue Section), Bisesar House, Temple Road, Nagpur (Maharashtra).

Note 2—The Coal Controller, 1, Council House Street, Calcutta has been appointed by the Central Government as the competent Authority under the Act.

SCHEDULE 'A'

BHATGAON BLOCK

NORTH BISRAMPUR COALFIELDS

(Madhya Pradesh)

(ALL RIGHTS)

Drg. No. WCL/PLG/BKP/Bhatgaon/Land/1-77 dt. 12-7-76 (Land to be acquired

Sl. No.	Village	Tahsil	Distt.	Area in Hectares			Remarks
				Revenue land	Govt. land	Total	
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	Telgaon	Surajpur	Surguja	35.217	38.985	74.202	Part
2.	Bhatgaon	,,	,,	16.664	81.936	98.600	Part
3.	Dugga	,,	,,	42.031	46.834	88.865	Part
4.	Baijnathpur	,,	,,	0.729	1.641	2.370	Part
		Total :		94.641 Hectares (approx.) or 233.862 acres (approx.)	169.396 Hectares (approx.) or 418.586 acres (approx.)	264.037 Hectares (approx.) or 652.45 acres (approx.)	

ग्राम तलगांव में अर्जित किए जाने वाले प्लाटों की संख्याएं :

Plot Nos. to be acquired in village Telgaon :

1(P), 43(P), 173(P), 174(P), 175, 176(P), 178/1(P), 183/1(P), 183/2(P), 184/1, 184/2, 185, 186(P), 187(P), 189(P), 190 to 196, 198/1(P),198/2(P), 198/3(P), 198/4(P),198/5(P), 198/6(P), 198/7(P), 199(P), 200(P), 202(P), 207/3(P), 207/4(P), 207(5)(P), 237(P), 238(P), 239(P), 240(P), 242(P), 243(P), 244(P), 246(P), 247(P), 250(P), 317(P), 318(P), 319(P), 322(P), 323, 324(P), 325(P), 326(P), 330(P), 331(P), 333(P), 334(P), 342(P), 343(P), 347(P), 367(P), 369(P), 373(P), 374(P), 375(P), 376(P), 379(P), 381/1(P), 381/2(P), 382, 383(P), 399(P), 405/1(P), 405/2(P), 407(P), 408(P), 411(P), 509(P), 510(P), 511(P), 512(P),513(P),553(P),554 to 558, 559(P), 560(P), 561(P),562(P), 563(P), 464(P), 565, 566(P), 573(P), 1165(P), 1166(P), 1167 to 1170, 1171(P), 1177(P), 1178(P), 1179 to 1181, 1182(P), 1183(P), 1184(P) 1189(P), 1190(P), 1191 to 1213, 1214/1 to 1214/10, 1214/11(P), 1214/12, 1215, 1216, 1217(P), 1218 to 1223, 1224(P), 1225 to 1227, 1228(P), 1231(P), 1232(P), 1235(P), 1240(P), 1246(P), 1268/1(P), 1268/2(P), 1269, 1270, 1271(P), 1272(P). 1278(P), 1279(P), 1376, 1392/3(P), 1451(P) 1454/1(P), 1454/2(P).

ग्राम भटगांव में अर्जित किए जाने वाले प्लाटों की संख्याएं :

Plot Nos. to be acquired in village Bhatgaon.

1075(P), 1078(P). 1079(P), 1092(P), 1097/1(P), 1098(P), 1099(P), 1100, 1101(P), 1102(P), 1103, 1104(P), 1107(P), 1108(P), 1109(P), 1110(P), 1111(P), 1112, 1113(P), 1114(P), 1116(P), 1217/4(P), 1217/15(P), 1217/22(P), 1217/24(P), 1217/25(P), 1217/27(P), 1217/28, 2221(P), 1230(P), 1231(P), 1233(P), 1234, 1235/1(P), 1259(P), 1260(P), 1261(P), 1262(P), 1263(P), 1264(P), 1272(P), 1273(P), 1274(P), 1276(P), 1277(P), 1281(P), 1287(P), 1288(P), 1289 to 1295, 1296(P), 1297 to 1299, 1300(P), 1304(P), 1307(P), 1308(P), 1309(P), 1314/2(P), 1316, 1317(P), 1318(P), 1321/1(P), 1435(P), 1436(P), 1437(P), 1438(P), 1442(P), 1443(P), 1472(P), 1476(P), 1483(P), 1484(P), 1485, 1486, 1487(P), 1488(P), 1489(P), 1491(P), 1492 to 1495, 1496(P), 1497(P), 1498, 1499(P), 1502(P), 1509(P), 1556(P), 1561(P), 1562(P), 1563(P), 1570(P), 1571(P), 1572(P), 1575(P), 1576(P), 1577/1(P), 1577/2(P), 1578(P), 1579(P), 1580(P), 1583(P), 1605(P), 1650(P), 1651(P), 1652/1(P), 1652/2, 1653, 1654(P), 1657(P), 1659(P), 1661(P), 1663(P), 1664(P), 1565 1666/1(P), 1666/2(P), 1667/P), 1668 to 1673, 1674(P), 1675 to 1680.

ग्राम दुग्दा में अर्जित किए जाने वाले प्लाटो की संख्याएं

Plot Nos. to be acquired in village Dugga.

16(P), 17(P), 21(P), 23/2/(P), 23/3, 23/4, 23/5, 23/6, 23/7, 23/8, 23/9, 23/10, 23/11, 24, 25, 26, 27(P), 28(P), 29(P), 30 to 49, 50/1, 50/2, 51, 52, 53(P), 54(P), 55(P), 56(P), 67(P),70(P), 71(P), 72(P), 73(P), 83 (P), 84(P), 85(P), 86 to 109, 110/1, 110/2, 111 to 115, 116/1, 116/2, 117, 118, 119/1, 119/2, 120 to 122, 123(P), 124 to 131, 132(P), 133(P), 135(P), 142(P), 145(P), 148/1(P), 148/2, 148/3(P), 213(P), 214(P), 227(P), 235(P), 236(P), 237(P), 247/1(P), 247/2(P), 248(P), 249(P), 587(P), 588/1(P), 588/2, 589(P), 594/1(P), 594/2, 697(P), 704(P),

ग्राम बैजनाथपुर में अर्जित किए जाने वाले प्लाटों की संख्याएं

Plot Nos. to be acquired in village Baijnathpur.

450(P), 451(P), 453(P), 1850(P), 1851(P), 1852, 1853(P), 1854, 1855, 1856(P), 1857, 1863(P).

BOUNDARY DESCRIPTION

Block No. 1

A1—A2	Line passes through village Baijnathpur in Plot nos. 1851, 1850, 453, 452, 450, and 1853 and meets at point A2.
A2—A3	Line passes through village Bhatgaon in plot nos. 1217/4 (Semi Circular way), 1217/22, 1217/25, 1217/27, 1217/15, 1221 and 1674 and meets at point A3.
A3—A4	Line passes through village Bhatgaon in plot no. 1674, and meets at point A4.
A4—A5	Line passes through village Telgaon in plot no. 198/2, and meets at point A5.
A5—A6	Line passes through village Telgaon plot no. 198/7 and meets at point A6.
A6—A7	Line passes through village Telgaon in plot nos. 198/7, 198/2, 198/1, and then through village Bhatgaon in plot no. 1674 and meets at point A7.
A7—A8	Line passes through village Bhatgaon in plot no. 1674 and through village Telgaon in plot nos. 198/6, 98/1, along the boundary of plot nos. 196 and 195 and then through plot nos. 189, 186, 187, 173, 178/1, and meets at point A8.
A8—M	Line passes through village Telgaon in plot nos. 178/1, 174, 176, 183/2, 183/1, 1392/3, 43 and then through village Bhatgaon in plot no. 1217/4 and meets at point M.
M—N	Line passes through village Bhatgaon in plot no. 1217/4 and meets at point 'N'.
N—A1	Line passes through village Bhatgaon in plot no. 1217/4 and then through village Baijnathpur in plot nos. 1863, 1857, 1856, 1850, and 1851 and meets at starting point A1.

Block II :

A9—A6	Line passes through village Telgaon in plot nos. 198/5, 198/3, 198/4, 198/1 and 198/7 and meets at point A6.
A6—A5	Line passes through village Telgaon in plot no. 198/7 and meets at poin A5.
A5—A10	Line passes through village Telgaon in plot nos. 198/7, 198/2, and then through village Bhatgaon in plot nos. 1674, 1233, 1231, 1230, 1221, 1235/1, 1317, 1318, 1321/1, 1476, 1484, 1483, 1487, 1488, 1489, 1491, 1472, 1496, 1497, 1493, 1442, 1438, 1437, 1436, 1435, 1113, 1116, 1075, 1078, 1079, 1092, 1108, 1107, 1104, 1101, and meets at point A10.
A10—A11	Line passes through village Bhatgaon in plot nos. 1101 and 1099 and meets at point A11.
A11—A12	Line passes through village Bhatgaon in plot nos. 1099 and 1097/1 and meets at point A12.
A12—A13	Line passes through village Bhatgaon in plot nos. 1097/1, 1098, 1099 and meets at point A13.
A13—A14	Line passes through village Bhatgaon in plot nos. 1101, 1102, 1104, 1107, and meets at point A14.
A14—A15	Line passes through village Bhatgaon in plot nos. 1107, 1104, and meets at point A15.
A15—A16	Line passes through village Bhatgaon in plot nos. 1104, 1107, 1108, 1109, 1110, 1111, 1502, 1499, 1563, 1570, 1571, 1572 and meets at point A16.
A16—A17	Line passes through village Bhatgaon along the boundary of plot nos. 1572 and through plot nos. 1576, 1575, 1562, 1561, 1556, 1583, 1577/2, 1580, 1579, 1605, 1666/1, 1666/2 and meets at point A17.
A17—A18	Line passes through village Bhatgaon along the boundary of plot no. 1666/2 and through plot no. 1667 and meets at point A18.
A18—A19	Line passes through village Bhatgaon in plot nos. 1667, 1666/1, 1605, 1578, 1577/1, 1579, 1577/2, 1562, 1575, 1576 and meets atpoint A19.
A19—A20	Line passes through village Bhotgaon in plot no. 1576, along the boundary of plot nos. 1315, 1236, 1237, 1245, 1246, 1248, 1249/2, 1250, and then proceeds through village Telgaon in plot no. 200 & meets at point A20.
A20—A21	Line passes through village Telgaon in plot nos. 200, 202, 207/4, 207/3, and meets at point A21.
A21—A22	Line passes through village Telgaon in plot nos. 207/4 aand meets at point A22.
A22—A23	Line passed through village Telgaon in plot nos. 207/4, 207/3, along the boundary of plot no. 207/2 and proceeds through plot nos. 207/4, 202 and 200 and meets at point A23.
A23—A24	Line passes through village Telgaon in plot no. 200, along the boundary of plot nos. 203, 209/1, 209/2, 209/3, and meets at point A24.

A24—A9	Line passes through village Telgaon along the common boundary of plot nos. 213 & 214 and then through plot nos. 199. 198/5 and meets at starting point A9.
Block-III :	
A25—A22	Line passes through village Telgaon in plot nos. 407, 405/2, 399, 326, 318, 317, 319, 322, 250, 247, 237, 1451, along the boundary of plot no. 1452 and then proceeds through plot no. 207/5 and meets at point A22.
A22—A21	Line passes through village Telgaon in plot no. 207/4 and meets at point A21.
A21—A26	Line passes through village Telgaon in plot no. 207/4 and through village Bhatgaon in plot nos. 1264, 1263, 1261, 1260, 1259, 1277, 1309 along the boundary of plot no. 1313 and then proceeds through plot nos. 1307 1304, 1314/2, 1667 and meets at point A26.
A26—A27	Line passes through village Bhatgaon in plot no. 1667 and meets at point A-27.
A27—A18	Line passes through village Bhatgaon in plot no. 1667 and meets at point A18.
A18—A17	Line passes through village Bhatgaon in plot no. 1667 and meets at point A17.
A17—A20	Line passes through village Bhatgaon along the boundary of plot no. 1667 and through plot nos. 1666/2, 1661, 1663, 1664, 1659, 1657, 1654, 1652/1, 1650, 1651 and proceeds through village Dugga in plot nos, 23/2, 21, 27, 28, 17, 16, 56, 71, 70, 67, 148/3, 148/1, and meets at point A28.
A28—A29	Line passes through village Dugga in plot nos. 148/1, 145 and meets at point A29.
A29—A30	Line passes through village Dugga in plot nos. 142, 148/3, 73, 72, 55, 56 and meet at point A30.
A30—A31	Line passes through village Dugga in plot nos. 56, 55, 53, 54, 85, 84, 83, along the boundary of plot nos. 138 & 136 and proceeds through plot nos, 135, 133, 132, 213, 214, 227, 123, 235, 236, 249 and 248 & meets at point A31.
A31—A32	Line passes through village Dugga in plot nos. 248, 247/1, 237, 236, 704, 587, 588/1, 588/2, 589, 594/1 and proceeds through village Telgaon in plot nos. 1240, and 511 and meets at point A32.
A32—A33	Line passes through village Telgaon in plot nos. 511, 513 and meets at point A33.
A33—A34	Line passes through village Telgaon in plot no. 513 and meets at point A34.
A34—A35	Line passes through village Telgaon in plot Nos. 513, 1454/1, 1454/2, and then through village Bhatgaon in plot nos. 1287, 1288, 1296, 1281, 1300 and 1667 and meets at point A35.
A35—A36	Line passes through village Bhatgaon in plot nos. 1667, 1304, 1308, 1309 1277, 1259, 1276, 1274, 1273, 1272, 1261, 1262, 1263, 1264, and then through village Telgaon in plot nos. 207/4, 207/5 and meets at point A36.
A36—A37	Line passes through village Telgaon in plot nos. 207/4, and 237 and meets at point A37.
A37—A38	Line passes through villag Telgaon in plot nos. 239, 244, 246, 231, 324, 325, 326, 399, 405/1 & 411 and meets at point A38.
A38—A39	Line passes through village Telgaon in plot no. 411 and meets at point A39.
A39—A25	Line passes through village Telgaon in plot no. 411, 408, 407 and meets at starting point A25.
Block IV :	
A40—A41	Line passes through village Telgaon in plot Nos. 566, 564, 563, 562, 561, 559 and along the boundary of plot no. 573 and meets at point A41.
A41—A42	Line passes through village Telgaon in plot no. 573, 553, 513 and meets at point A42.
A42—A37	Line passes through village Telgaon in plot nos. 513, 512, 510, 509, 381/1, 383, 381/2, 373, 375, 369, 367, 342, 343, 334, 333, 243, 242, 244, 239 & along the boundary of plot no. 237 and meets at point A37.
A37—A36	Line passes through village Telgaon in plot nos. 237 and 207/4 and meets at point A36.
A36—A34	Line passes through village Telgaon in plot nos. 207/4, 238, 239, 240, 242, 243, 347, 334, 343, 367, 369, 1454/1, 376, 373, 379, 381/2, 510, 512, 513, and meets at point A34.
A34—A33	Line passes through village Telgaon in plot no. 513 and meets at point A33.
A33—A43	Line passes through village Telgaon in plot nos. 513, 1214/11, 1235, 1217, 1231, 1228, 1224, 1246, 1268/1, and meets at point A43.
A43—A44	Line passes through village Telgaon in plot nos. 1268/1, 1268/2, 1272, 1271, 1278, 1279, 1190 & 1189 and meets at point A44.
A44—A40	Line passes through village Telgaon in plot nos. 1189, 1190, 1184, 1183, 1182, 1178, 1177, 1171, 1166, 1165, 566 and me cts at the starting point A40.

SCHEDULE 'II'

BHATGAON BLOCK

NORTH BISRAMPUR COALFIELDS

(Madhya Pradesh)

Drawing No. WCL/PLG/BKP/Bhatgaon/Land/1-77 dated 12-7-1776.

(Showing lands where rights to mine, quarry, bore, win, work and carry away minerals to be acquired)

MINING RIGHTS :

Sl. No.	Village	Tahsil	Distt.	Area in Hectares			Remarks
				Revenue land	Govt. land	Total	
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	Telgaon	Surajpur	Surguja	62.044	58.120	120.164	Part
2.	Bhatgaon	,,	,,	312.568	158.689	471.257	Part
3.	Dugga	,,	,,	193.126	75.871	268.997	Part
4.	Bisahi	,,	,,	135.496	26.924	162.420	Part
5.	Kapsara	,,	,,	81.509	8.639	90.148	Part
6.	Barodhi	,,	,,	8.993	60.257	69.250	Part
7.	Baijnathpur	,,	,,	15.844	11.471	27.315	Part
		Total		809.580 Hectares (approx.) or 2000.52 acres (approx.)	399.971 Hectares (approx.) or 988.35 acres (approx.)	1209.551 Hectares (approx.) or 2988.87 acres (approx.)	

Plot Nos. to be acquired in village Telgaon :

161(P), 162, 163(P), 164(P), 165 to 171, 172(P), 173(P), 178/1(P), 178/2(P), 186(P), 187(P), 188, 189(P), 197, 198/1(P), 198/2(P), 198/3(P), 198/4(P), 198/5(P), 198/6(P), 198/7(P), 199(P), 200(P), 201, 202(P), 203 to 206, 207/1, 207/2, 207/3(P), 207/4(P), 207/5(P), 207/6, 208, 209/1 to 209/3, 210 to 213, 214(P), 215(P), 217(P), 218(P), 219(P), 220(P), 221, 222, 223/1 to 223/5, 224 to 236, 237/P), 238(P), 239/(P), 240(P), 241, 242(P), 243(P), 244(P), 245, 246(P), 247(P), 248, 249, 250(P), 251, 252(P), 253(P), 254/P), 260(P), 261(P), 263(P), 265(P), 266, 267(P), 299(P), 301(P), 302(P), 303(P), 315(P), 316, 317(P), 318(P), 319(P), 320, 321, 322(P), 324(P), 325(P), 326(P), 327 to 329 330(P), 331(P), 332, 333(P), 334(P), 335 to 341, 342(P), 343(P), 344 to 346, 347(P), 348/1, 348/2, 349, 350/1, 350/2, 351 to 366, 367(P), 368, 369(P), 370 to 372, 373(P), 374(P), 375(P), 376(P), 377, 378, 379(P), 380, 381/1(P), 381/2(P), 383(P), 384 to 396, 397/1, 397/2, 398, 399(P), 400 to 404, 405/1(P), 405/2(P), 407(P), 411(P), 412, 413, 414(P), 415 to 424, 425(P), 426(P), 427(P), 429(P), 459(P), 460 to 508, 509(P), 510(P), 511(P), 512(P), 513(P), 514(P), 515 to 532, 533(P), 541(P), 542(P), 543(P), 544 to 552, 553(P), 559(P), 560(P), 561(P), 562(P), 563(P), 564(P), 566(P), 567(P), 571(P), 572, 573(P), 574, 575, 576(P), 577(P), 1214/11(P), 1217(P), 1224(P), 1228(P), 1229, 1230/1, 1230/2, 1231(P), 1232(P), 1233, 1234, 1235(P), 1236 to 1239, 1240(P), 1241 to 1244, 1245/1 to 1245/5, 1246(P), 1247/1, 1247/2(P), 1248(P), 1252(P), 1253(P), 1268/1(P), 1451(P), 1454/1(P), 1454/2(P).

Plot Nos. to be acquired in village Bhatgaon :

254(P), 335(P), 337(P), 338(P), 339 to 385, 386(P), 387, 388(P), 389, 390, 391(P), 411(P), 413(P), 414 to 423, 424(P), 425(P), 426(P), 428(P), 429, 430, 431(P), 432(P), 433(P), 434(P), 435(P), 436(P), 437 to 533, 534(P), 535, 536(P), 537(P), 538(P), 539 to 547, 548/1, 548/2, 549 to 551, 552/1 to 552/4, 552/5(P), 553 to 600, 601/1, 601/2, 602 to 617, 618/1, 618/2, 619 to 653, 654/1 to 654/3, 655 to 746, 747/1, 747/2, 748 to 767, 768(P), 769(P), 770 to 774, 823(P), 851(P), 852(P), 853 to 855, 856(P), 857 to 868, 869/1, 869/2, 870 to 926, 927/1, 927/2, 928 to 934, 935/1, 935/2, 936 to 961, 962/1, 962/2(P), 963, 964(P), 1003(P), 1004(P), 1005 to 1007, 1008(P), 1009(P), 1010, 1011 (P), 1012 to 1025, 1026/1, 1026/2, 1027 to 1048, 1049/1 to 1049/9, 1050, 1051/1 to 1051/5, 1052/1 to 1052/4, 1053/1 to 1053/8, 1054 to 1057, 1058/1, 1058/2, 1054 to 1079, 1075(P), 1076, 1077, 1078(P), 1079(P), 1080 to 1091, 1092(P), 1093 to 1096, 1097/1(P), 1097/2, 1098(P), 1099(P), 1101(P), 1102(P), 1104(P), 1105, 1106, 1107 (P), 1108(P), 1109(P), 1110(P), 1111(P), 1113(P), 1114(P), 1115, 1116(P), 1117 to 1183, 1184/1, 1184/2, 1185 to 1200, 1201/1, 1201/2, 1203 to 1216, 1217/1 to 1217/3, 1217/4(P), 1217/5 to 1217/14, 1217/15(P), 1217/16 to 1217/21, 1217/22(P), 1217/23, 1217/24(P), 1217/25(P), 1217/26, 1217/27(P), 1218 to 1220, 1221(P), 1222 to 1229, 1230(P), 1231(P), 1232, 1233(P), 1235/1(P), 1235/2, 1236 to 1248, 1249 /1, 1249/2, 1250 to 1258, 1259(P), 1260(P), 1261(P), 1262(P), 1263(P), 1264(P), 1265, 1266/1, 1266/2, 1267 to 1271, 1272(P), 1273(P), 1274(P), 1275, 1276(P), 1277(P), 1278 to 1280, 1281(P), 1282 to 1286, 1287(P), 1288(P), 1296(P), 1300(P), 1301 to 1303, 1304(P), 1305, 1306, 1207(P), 1308(P), 1309(P), 1310 to 1313, 1314/1, 1314/2(P) 1315,, 1317(P), 1318(P), 1319, 1320, 1321/1(P), 1321/2, 1321/3, 1322 to 1434, 1435(P), 1436(P), 1437(P), 1438(P), 1439/1, 1439/2, 1440, 1441, 1442(P), 1443(P), 1444 to 1471, 1472(P), 1473 to 1475, 1476(P), 1477 to 1482, 1483(P), 1484(P), 1487(P), 1488(P), 1489(P), 1490, 1491(P), 1496(P), 1497(P), 1499(P), 1500, 1501, 1502(P), 1503 to 1532, 1533/1, 1533/2, 1534 to 1536, 1537/1, 1537/2, 1538 to 1555, 1556(P), 1557 to 1560, 1561(P), 1562(P), 1563(P), 1564 to 1569, 1570(P), 1571(P),

1572(P), 1573, 1574, 1575(P), 1576(P), 1577/1(P), 1577/2(P), 1578(P), 1579(P)' 1580(P), 1581, 1582, 1583(P), 1584 to 1594, 1595/1, 1595/2 1596, to 1604, 1605(P), 1606 to 1641, 1642/1, 1642/2, 1643 to 1646, 1647/1, 1647/2, 1648, 1649, 1650(P), 1651(P), 1652/1(P), 1654(P), 1655/1, 1655/2, 1656/1, 1656/2, 1657(P), 1658,1659(P), 1660, 1661(P), 1662, 1663(P), 1664(P), 1666/1(P), 1666/2(P), 1667(P), 1674(P),

Plot Nos. to be acquired in villag Dugga :

1/1 to 1/6, 2 to 15, 16(P), 17(P), 18 to 20, 21(P), 22, 23/1, 23/2(P), 27(P), 28(P), 29(P), 53(P), 54(P), 55(P), 56(P), 57 to 66, 67(P), 68, 69, 70(P), 71(P), 72(P), 73(P), 74 to 82, 83(P), 84(P), 85(P), 123(P), 132(P), 133(P), 134, 135(P), 136 to 139, 140/1, 140/2, 140/3, 140/4, 141, 142, 142/P), 143, 144, 145(P), 146, 147, 148/1(P), 148/3(P), 148/4, 149, 150/1, 150/2, 151 to 165, 166/1, 166/2, 167 to 212, 213(P), 214(P), 215 to 222, 223/1, 223/2, 224 to 226, 227(P), 228 to 234, 235(P), 236(P), 237(P), 238/1, 238/2. 239 to 244, 245/1, 245/2, 246, 247/1(P). 247/2(P), 248(P), 249(P), 250 to 258, 259/1, 259/2, 260/1, 260/2, 260/3, 261/1, 261/2, 262/1 262/2, 263, 264/1, 264/2, 265 to 335, 336/1, 336/2, 337 to 354, 355/1, 355/2, 356, 357, 358/1, 358/2, 359 to 363 364/1, 364/2, 365, 366, 367/1, 367/2, 368, to 381, 382/1, 382/2, 382/3, 382/4, 383 to 388, 389/1, 389/2, 390 to 407, 408/1, 408/2, 409 to 412, 413/1,, 413/2, 413/3, 414 to 419, 420/1, 420/2, 421 to 429, 430/1, 430/2, 431/1, 431/2, 432 to 468, 469/1, 469/2, 469/3, 470, 471/1, 471/2, 472 to 483, 484/1, 484/2, 485 to 510, 511(P),, 512(P), 513 to 519, 520(P), 521(P), 522, 523(P), 531(P), 532, 533/1(P), 533/2, 534 to 537, 538, 1, 538/2, 538/3, 539 to 582, 583/1, 583/2, 583/3, 584, 585/P), 586, 587(P), 588/1, 589(P), 590 to 593, 594/1(P), 595/1(P), 596/6(P) 696, 697(P), 701 to 703, 704(P).

Plot Nos. to be acuuired in village Bisahi :

86(P), 87 to 92, 93/1 to 93/4, 94 to 99, 100/1, 100/2, 101 to 109, 110(P), 111(P), 117(P), 119(P), 143(P), 145(P), 146 to 151, 152(P), 153(P), 154 to 159, 160/1, 160/2, 161 to 164, 165/1, to 165/3, 166 to 168, 169(P), 170, 171(P), 174(P), 255(P), 259(P), 260(P), 261(P), 262 to 266, 267/1, 267/2, 268 to 296, 297/1, to 297/3, 298 to 343, 344/1 to 344/3, 345 to 352, 353/1 to 353/4, 354, 355/1 to 355/3, 356/1 to 356/6, 357, 358(P), 359(P), 363(P), 387(P), 389(P), 390(P), 391(P), 392 to 407, 408(P), 409(P), 414(P) 415(P), 416(P), 417 to 422, 423/1, 423/2, 424, to 426, 427/1 to 427/3, 428, 429, 430/1, 430/2, 431/1 to 431/3, 432, to 439, 440/1, 440/2, 441 to 449, 450/1 to 450/7, 451 to 461, 462(P), 463 to 469, 470/1 to 470/3, 471 to 482, 483/1 to 483/3, 484/1 to 484/3, 485 to 512, 513/1 to 513/9, 514/1, 514/2, 515 to 519, 520/1 to 520/4, 521, 522/1, 522/2, 523, 524, 525/1, to 525/6, 526 to 534, 535/1 to 535/4, 536, 537/1, 537/2, 538 to 546, 547/1 to 547/4, 548/1 to 548/6, 549/1 to 549/5, 550 to 564, 565/1, 565/2, 566 to 576, 577/1, to 577/7, 578 to 586, 587/1, 587/2, 588 to 596, 597/1, 597/2, 598 to 617, 618/1 and 618/2.

Plot Nos. to be acquired in village Kapsara :

12(P), 13 to 15, 16(P), 17(P), 134(P), 137(P), 138,139, 140(P) 144 to 153, 154(P), 155 to 161, 162/1, 162/2, 163/1, 163/2, 164 to 172, 173/1, 173/2, 174 to 232, 233/1, 233/2, 234 to 240, 241(P), 242/P), 243(P), 244(P), 245, 246(P), 247(P), 248 to 250, 251/1, 251/2, 252 to 254, 256(P), 257(P), 257(P), 258(P), and 726(P),

Plot. Nos to be acquired in village Barodhi :

2/1(P), 2/8, 3(P), 4(P), 5(P), 6(P), 7(P), 8(P), 9(P), 10(P) 11(P), 287(P), 291(P), 298(P), 299, 300, 301/1(P), 301/2 and 478/1(P).

Plot Nos. to be acquired in village Baijnathpur :

392(P), 394(P) 410(P), 411(P), 412(P), 413, 414, 415,(P) 416 to 432 , 433(P), 434(P), 435(P), 440(P), 441 to 449, 450(P), 451(P), 452, 453(P). 454(P), 455(P), 479(P), 481(P), 482(P), 483(P), 484(P), 485 to 498, 499(P), 500(P), 515(P), 516(P),. 517, 518(P), 1850(P), 1851(P), 1852(P), and 2086(P)

Boundary Description

Block I :

B1—B2	Line passes through the same plot nos. as line A9—A6 in all rights.
B2—B3	Line passes through the same plot nos. as line A6–A7 in all Rights.
B3—B4	Line passes through the same plot nos, as line A7–A8 in All Rights.
B4—B1	Line passes through village Telgaon in plot nos. 178/1, 178/2, 172, 164, 163, 161, and 198/5 and meets at the starting point B1.

Blocik II :

B5—B6	Line passes through the same plot nos. as line A25—A22 in All Rights.
B6—B7	Line passes through the same plot nos. as line A22–A23 in All Rights.
B7—B8	Line passes through the same plot nos. as line A23–A24 in All Rights.
B8—B5	Line passes through village Telgaon on the boundary of plot no. 213 & through plot nos. 214, 215, 217, 218, 219, 220, 267, 265, 261, 260, 263, 254, 253, 299, 252, 302, 301, 303, 317, 318, 315, 399, 405/2, 407 and meets at starting point B5.

Block III :

B9—B10	Line passes through the same plot nos. as line A20–A21 in All Rights.
B10—B11	Line passes through the same plot nos. as line A21–A26, A26–A27, and A27–A18 in All Rights.
B11—B12	Line passes through the same plot nos as line A18–A19 in All Rights.
B12—B9	Line passes through the same plot nos. as line A19–A20 in All Rights.

Block-IV :

B13—B14	Line passes through the same plot nos. as line A40–A41 in all Rights.
B14—B15	Line passes through the same plot nos. as line A41—A42 in All Rights.
B15—B16	Line passes through the same plot nos. as line A42—A37 in All Rights.
B16—B17	Line passes through the same plot nos. as line A37–A38 in All Rights.
B17—B13	Line passes through village Telgaon in plot nos. 411, 414, 427, 429, 425, 426, 459, 514, 533, 543, 541, 542, 577, 576, 561, 562, 571, 567 and meets at starting point B13.

Block-V :

B18—B19	Line passes through the same plot nos. as line A34–A35 in All Rights.
B19—B20	Line passes through the same plot nos. as line A35–A36 in All Rights.

B20 –B18	Line passes through the same plot nos. as line A36-A34 in All Rights.
Block—VI :	
B21—B22	Line passes through the same plot nos. as line A1-A2 in All Rights.
B22—B23	Line passes through the same plot nos. as line A2-A3 in All Rights.
B23—B24	Line passes through the same plot nos. as Line A3-A4 in All Rights.
B24—B25	Line passes through the same plot nos. as line A4-A5 in All Rights.
B25—B26	Line passes through the same plot nos. as line A5-A10 in all Rights.
B26—B27	Line passes through the same plot nos. as line A10-A11 in All Rights.
B27—B28	Line passes through the same plot nos. as line All—A12 in All Rights.
B28—B29	Line passes through the same plot nos. as line A12—A13 in All Rights.
B29—B30	Line passes through the same plot nos. as line A13-A14 in all Rights.
B30—B31	Line passes through the same plot nos. as line A14-A15 in All Rights.
B31—B32	Line passes through the same plot nos. as line A15-A16 in All Rights.
B32—B33	Line passes through the same plot nos. as line A16-A17 in All Rights.
B33—B34	Line passes through the same plot nos. as line A17-A28 in All Rights.
B34—B35	Line passes through the same plot nos as line A28-A29 in All Rights.
B35—B36	Line passes through the same plot nos. as line A29-A30 in All Rights.
B36—B37	Line passes through the same plot nos. as line A30-A31 in All Rights.
B37—B38	Line passes through the same plot nos. as line A31-A32 in All Rights.
B38—B39	Line passes through the same plot nos. as line A32-A33 in All Rights.
B39—B40	Line passes through the same plot nos. as line A33-A43 in All Rights.
B40—B41	Line passes through village Telgaon in plot nos. 1268/1, 1247/2, 1253, 1252, 1248, and then proceeds through village Dugga in plot nos. 595/1. 596/6, 585 and meets at point B41.
B41—B42	Line passes through village Dugga in plot nos(585, 533/1, 531, 520, 521, 523, 512, 511, and then proceeds through village Barodhi in plot nos. 478/1, 2/1, 301/1 and meets at point B42.
B42—B43	Line passes through village Barodhi in plot nos. 301/1, 298, 291, 287, 2/1, 10, 9/8, 7,6, 5,4, 3, and meets at point B43
B43—B44	Line starts from the common boundary o villages Barodhi and Kapsara and passes through village Kapsara in plot nos. 726, 255, 251/1, 256, 247, 257, 258, 246, 244, 243, 244, 242, 241, 154, 137, 134 & meets at point B44.
B44—B45	Line passes through village Kapsara in plot nos. 140, 154, 17, 16, 12 & then proceeds through village Bisahi in plot nos. 414, 415, 416, 409 & meets at point B45.
B45—B46	Line passes through village Bisahi in plot nos. 409, 408, 389, 390, 387, 391, 363, 358, 359, 255, 259, 260, 261, 174, 171, 169, 153, 152, 143, 145, 119, 117, 462, 111, 110, 86 and then proceeds through village Bhatgaon in plot nos. 1012, 1011, 1008, 1009, 1004, 1003, 962/2, 964, 851, 852, 856, 768, 769, 823, 435, 436, 434, 433, 432, 431, 428, 425, 426, 424, 411, 413, 386, 388, 391, 335, 337, 338, 534, 536, 537, 538, 552/5 & meets at point B46.
B46—B47	Line passes through village Bhatgaon in plot nos. 254 & meets at point B47.
B47—B48	Line passes through village Bhatgaon in plot no. 254 & then proceeds through village Baijnathpur in plot nos. 2086, 394, and meets at point B48.
B48—B21	Line passes through village Baijnathpur in plot nos. 412, 411, 410, 2086, 435, 434, 433, 440, 500, 499, 515, 516, 518, 484, 483, 481, 482, 479. 455, 454, 453, 1850, 1851 & meets at the starting point B21.

[F. No. 19(35)/77-CL]

S. R. A. RIZVI, Director

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय

(स्वास्थ्य विभाग)

नई दिल्ली, 18 जुलाई, 1977

का० आ० 187.—केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना (बंगलौर) नियम, 1976 के नियम 1 के खण्ड 3 के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा निम्नलिखित और क्षेत्रों को निर्दिष्ट करती है जिनमें उक्त नियम 19 जुलाई 1977 से लागू होंगे, अर्थात् :—

केन्द्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना औषधालय राजाजीनगर (नं० 5) (नं० 1045/5, "कमल कुंज" 1 मेन रोड, IV ब्लाक, राजाजीनगर, बंगलौर-560010 औषधालय के अन्तर्गत आने वाले क्षेत्र की सीमाएं

उत्तर में श्रीरामपुरम का तीसरा चौराहा, लक्ष्मीनारायणपुरम् और प्रकाशनगर के तीसरे मेन से श्री राजराजेश्वरी कल्याण मण्डपम् के सामने 80 फीट रोड के संगम तक, 80 फीट रोड से गवर्नमेंट सोप फैक्ट्री के संगम तक ।

पश्चिम में गवर्नमेंट सोप फैक्ट्री के संगम से वेस्ट कोर्ड रोड से लेकर मगादी रोड के संगम तक, न्यू मैसूर रोड से होसाहाल्ली बस डिपो तक (इसमें वैस्ट कोर्ड रोड और न्यू मैसूर रोड के आस-पास वाले क्षेत्र भी शामिल हैं जो अनुसूची 'क' में दिए गये हैं) ।

दक्षिण में 40 फीट रोड से लेकर होसाहाल्ली बस डिपो से मीटर गेज (मैसूर) रेलवे लाइन के संगम तक, मैसूर रेलवे लाइन के से बिन्नी-स्टीन गार्डन्स (बिन्नी मिल्स) के निकट अण्डर ब्रिज के संगम तक ।

पूर्व में गुडरोड के कुल भाग से लेकर विन्नीस्टोन गार्डन्स के निकट अण्डर ब्रिज, सिटी रेलवे स्टेशन रोड से मीटर गेज रेलवे लाइन (निकट ओकलीपुरम्) से सेम्पिग थियेटर से आने वाली अण्डर ब्रिज रोड तक।

निम्नलिखित क्षेत्र जो पहले माल्लेश्वरम् औषधालय के अन्तर्गत आते थे, अब राजाजीनगर औषधालय के अन्तर्गत आएंगे ।

1. ओकलीपुरम् एक्सटेंशन
2. हनुमन्तपुरा
3. रामचन्द्रपुरा
4. दयानन्द नगर
5. स्वतंत्रपल्या
6. राजाजीनगर का एन० ब्लाक (IV ब्लाक का एक्सटेंशन)
7. श्रीरामपुरम् और लक्ष्मीनारायणपुरम का भाग जो तीसरे चौराहे से विभाजित है ।
8. प्रकाशनगर का भाग जो तीसरे मैन से विभाजित है ।

उपयुक्त क्षेत्रों के अलावा निम्नलिखित अतिरिक्त क्षेत्र भी राजाजीनगर औषधालय के अन्तर्गत आएंगे ।

अनुसूची 'क'

वैस्ट कोर्ड रोड के पश्चिम में स्थित साथ वाले क्षेत्र ।

1. महालक्ष्मी एक्सटेंशन
2. कोथीराया गुट्टा
3. बयापलाया
4. वैस्ट कोर्ड रोड के पश्चिम में स्थित राजाजीनगर का एक्सटेंशन इसमें केठामारनहाल्ली भी शामिल है ।
5. शिवानहाल्ली
6. सानेगुरूवनहाल्ली
7. ओड्डारापाल्या
8. अग्रहर दसाराहल्ली
9. थिम्पानाहाल्ली
10. होसाहाल्ली एक्सटेंशन (इसमें गवर्नमेंट क्वार्टर भी शामिल हैं)
11. होसाहाल्ली
12. ब्लाक I से VI तक का राजाजीनगर का पूरा क्षेत्र ।
13. भाष्यमनगर
14. जेडीहाल्ली
15. मिनर्वामिल्स क्षेत्र
16. गोपालपुरा
17. विन्नीस्टोन गार्डन
18. केम्पापुर अग्रहर
19. चोलूरेपल्या
20. सिटी रेलवे स्टेशन के निकट रेलवे क्वार्टर्स

[सं० एस० 11012/10/77-के० स० स्वा० यो० (नीति)]

आर० के० जिन्दल, अवर सचिव

MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY WELFARE

(Department of Health)

New Delhi, the 18th July, 1977

S.O. 187.—In pursuance of clause 3 of rule 1 of the Central Government Health Scheme (Bangalore) Rules, 1976, the Central Government hereby specifies the following further areas to which the said rules shall extend with effect from the 19th July, 1977, namely :—

CGHS DISPENSARY RAJAJINAGAR (No. 5)

(No. 1045/5, "Kamalkunj" 1 Main Road,

IV Block, Rajajinagar, Bangalore-560010).

Area bounded

In the North by III Cross of Sriramapuram, Lakshminarayanapuram and III Main of Prakashnagar upto the junction of 80 ft. Road opposite to Sri Rajarajeswari Kalyana Mandapam, 80 ft. Road upto the junction of Government Soap Factory.

In the West by West Chord Road from the junction of Government Soap Factory upto the junction of Magadi Road, New Mysore Road upto Hosahalli Bus Depot (including the adjacent areas lying on the West Chord Road and New Mysore Road specified in Schedule 'A').

In the South by 40 ft. Road from Hosahalli Bus Depot upto the junction of metre gauge (Mysore) Railway line, Mysore Railway line upto the junction of under-bridge, near Binnyston gardens (Binny Mills).

In the East by part of the Goodshed Road from the under-bridge near Binnyston gardens, City Railway Station Road upto the under bridge on the Metre gauge Railway line (near Okalipuram) Metre gauge Railway line from the under bridge (near Okalipuram) upto the under bridge road coming from Sampige Theatre.

The undermentioned areas which were previously covered by the Malleswaram Dispensary will now be covered by the Rajajinagar Dispensary.

1. Okalypuram Extension.
2. Hanumanthapura.
3. Ramachandrapura.
4. Dayanandanagar.
5. Swathanthrapalya.
6. N. Block of Rajajinagar (Extn. of IV Block).
7. Part of Sriramapuram and Lakshminarayanapuram bifurcated by III Cross.
8. Part of Prakshnagar bifurcated by III Main.

Apart from the above areas the undermentioned additional areas will be covered by the Rajajingar Dispensary.

SCHEDULE 'A'

Adjacent areas lying to the West of West Chord Road.

1. Mahalakshmi Extension.
2. Kothiraya Gutta.
3. Bayapalaya.
4. Extension of Rajajinagar lying to the West of West, Chord Road including Kethamaranahalli.
5. Shivanahalli.
6. Saneguruvanahalli.
7. Oddarapalya.
8. Agrahar Dasarahalli.
9. Thimmanahalli.
10. Hosahalli Extension (Including Government Quarters).
11. Hosahablli.
12. Entire Rajajinagar Areas from Block I to VI.
13. Bhashyamnagar.
14. Jediballi.
15. Minerva Mills area.
16. Gopalapura.
17. Binnyston Garden.
18. Kempapur Agrahara.
19. Cholurapalya.
20. Railway Quarters near City Railway Station.

[No. S. 11012/10/77-CGHS(P)]

R. K. JINDAL, Under Secy.

नई दिल्ली, 12 जनवरी, 1978

का० आ० 188.—लेडी हार्डिंग आयुर्विज्ञान महाविद्यालय और अस्पताल (अर्जन) और प्रकीर्ण उपबन्ध अधिनियम, 1977 (1977 का 34) की धारा (1) की उप-धारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा पहली फरवरी, 1978 की तारीख निश्चित करती है जिस दिन उक्त अधिनियम प्रवृत्त हो जाएगा।

[संख्या यू० 12012/26/77-एमई (पी)]

आर० वी० श्रीनिवासन उप, सचिव

New Delhi, the 12th January, 1978

S.O. 188.—In exercise of the powers conferred by sub-section (2) of section (1) of the Lady Hardinge Medical College and Hospital (Acquisition) and Miscellaneous Provisions Act, 1977 (34 of 1977), the Central Government hereby appoints the 1st of February, 1978, as the date on which the said Act shall come into force.

[No. U. 12012/26/77-ME(P)]

R. V. SRINIVASAN, Dy. Secy.

कृषि और सिंचाई मंत्रालय

(कृषि विभाग)

नई दिल्ली, 23 सितम्बर, 1977

का० आ० 189.—पशुधन आयात अधिनियम, 1898 (1898 का अधिनियम संख्या 9) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार यू० के० तथा आयरलैण्ड से पशुओं की अश्वीय जातियों के भारत में आयात पर, इस अधिसूचना के जारी होने की तारीख से छह महीने की अवधि के लिए प्रतिबंध लगाती है।

यतः यह प्रतिबंध एक गैर—अभिज्ञात 'ग्राम'—'निगेटिव कोक्को बेसिलस' के कारण यू० के० तथा आयरलैण्ड में घोड़ों में एक योनिरोग के कथित प्रकोप को ध्यान में रखते हुए लगाया गया है। यू० के० तथा आयरलैण्ड से 31 मार्च, 1977 के बाद आयात हुए ऐसे सभी पशुओं के स्वामियों द्वारा इस मंत्रालय को ऐसे पशुओं का विवरण तुरन्त भेजा जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त पशुओं के स्वामी स्टेट/आर्मी/यूनिवर्सिटी रोग जांच प्रयोगशाला से इन पशुओं का परीक्षण भी करवा लें और इस आशय का एक प्रमाण पत्र प्राप्त करें कि मानक विधियों का प्रयोग करके पशुओं का परीक्षण किया जा चुका है और वे कथित योनिरोग से मुक्त पाए गए हैं।

[संख्या 50-22/77-एल० डी० टी० (एल० एच०-ए० क्यू०)]

बी० बी० कपूर, उप सचिव

MINISTRY OF AGRICULTURE & IRRIGATION

(Department of Agriculture)

New Delhi, the 23rd September, 1977

S.O. 189.—In exercise of the powers conferred by Sub-Section (1) of Section 3 of Livestock Importation Act, 1898 (Act No. IX of 1898) the Central Govt. hereby prohibits the import into India of equine species of animals from U. K. and Ireland for a period of six months from the date of issue of this notification.

Whereas, the ban is imposed considering the reported occurance in U.K. & Ireland of a Veneral disease in horses, caused by an unidentified Gram—negative coccobacillus, the owners of all such animals imported from U.K. & Ireland after 31st March, 1977 are hereby required to notify the details of such animals to this Ministry forthwith. They are further required to get these animals tested by a State/Army/University disease investigation laboratory and obtain a Certificate to the effect that the animals were tested using standard methods and found free from reported veneral infection.

[No. 50-22/77-LDT(LH-AQ)]

B. B. KAPUR, Dy. Secy.

(खाद्य विभाग)

शुद्धि-पत्र

नई दिल्ली, 19 दिसम्बर, 1977

का० आ० 190—इस विभाग के आदेश संख्या 52/7/74-एफ० सी० III (खंड 8) दिनांक 24-11-76 में निम्नलिखित शुद्धियां की जायें :—

स्थानान्तरण आदेश में क्रम संख्या	की जाने वाली शुद्धियां
1.	कालम 5 में दिनांक "3-6-69" के स्थान पर "4-6-69" पढ़ें।

[सं० 52/7/74-एफ़ सी-III (वाल्यूम X)]

(Department of Food)

CORRIGENDUM

New Delhi, the 19th December, 1977

S.O. 190.—In this Department Order No. 52/7/74-FC-III (Vol. VIII) dated 24-11-1976, the following correction shall be carried out :—

S. No. in the Transfer Order	Correction to be carried out.
1	For the date "3-6-69" in col. 5, read "4-6-69".

[No. 52/7/74-FC-III (Vol. X)]

आदेश

नई दिल्ली, 28 दिसम्बर, 1977

का० आ० 191.—यतः केन्द्रीय सरकार ने खाद्य विभाग, क्षेत्रीय खाद्य निदेशालयों, उपाप्ति निदेशालयों और खाद्य विभाग के वेतन तथा लेखा कार्यालयों द्वारा किए जाने वाले खाद्यान्नों के क्रय, भण्डारण, संचलन, परिवहन, वितरण तथा विक्रय के कृत्यों का पालन करना बन्द कर दिया है जोकि खाद्य निगम अधिनियम, 1964 (1964 का 37) की धारा 13 के अधीन भारतीय खाद्य निगम के कृत्य हैं।

और यतः खाद्य विभाग, क्षेत्रीय खाद्य निदेशालयों, उपाप्ति निदेशालयों और खाद्य विभाग के वेतन तथा लेखा कार्यालयों में कार्य कर रहे और उपरिवर्णित कृत्यों के पालन में लगे निम्नलिखित अधिकारियों और कर्मचारियों ने केन्द्रीय सरकार के तारीख 16 अप्रैल, 1971 के परिपत्र के प्रत्युत्तर में उसमें विनिर्दिष्ट तारीख के अन्दर भारतीय खाद्य निगम के कर्मचारी न बनने के अपने आशय की उक्त अधिनियम की धारा 12 ए की उपधारा (1) के परन्तुक द्वारा यथा अपेक्षित सूचना नहीं दी है।

अतः अब खाद्य निगम अधिनियम, 1961 (1964 का 37), यथा अद्यतन संशोधित, की धारा 12ए द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा निम्नलिखित अधिकारियों और कर्मचारियों की प्रत्येक के सामने दी गई तारीख से भारतीय खाद्य निगम में स्थानान्तरित करती है :—

क्रम सं०	अधिकारी/कर्मचारी का नाम	केन्द्रीय सरकार के अधीन किस पद पर स्थायी है	स्थानान्तरण के समय केन्द्रीय सरकार के अधीन किस पद पर है ।	भारतीय खाद्य निगम को स्थानान्तरण की तारीख
1	2	3	4	5
1.	श्री के० एस० गुप्ता	सहायक निदेशक	सहायक निदेशक	1-3-1969
2.	श्री एम० टी० आर० नायर	तकनीकी सहायक	तकनीकी अधिकारी	1-9-1970
3.	श्री डी० सी० जैन	सुपरवाईजर (विपणन आसूचना)	सुपरवाईजर	16-7-1970
4.	श्री के० के० दीवान	गोदाम अधीक्षक	गोदाम अधीक्षक	28-4-1976
5.	श्री सैयद हुसैन अली खान	गुण निरीक्षक	गुण निरीक्षक	1-3-1969
6.	श्री एन० वेंकटस्वरा राव	—	-वही-	1-3-1969
7.	श्री सी० लिंगायाह	—	गोदाम क्लर्क	1-3-1969
8.	श्री एम० डी० अहमद	तकनीकी सहायक	तकनीकी सहायक	1-3-1969
9.	श्री एस० के० एम० डी० हुसैन	टेली क्लर्क	गोदाम क्लर्क	1-3-1969
10.	श्री एम० आर० नाचीनारकिनियन	—	गोदाम क्लर्क	1-3-1969

[सं० 52/7/74-एफ़०सी०-III (खण्ड 10)]

बख्शी राम, उप सचिव

ORDER

New Delhi, the 28th December, 1977

S.O. 191.—Whereas the Central Government has ceased to perform the functions of purchase, storage, movement, transport, distribution and sale of foodgrains done by the Department of Food, the Regional Directors of Food, the Procurement Directorates and the Pay & Accounts Offices of the Department of Food which under Section 13 of the Food Corporations Act, 1964 (37 of 1964) are the functions of the Food Corporation of India;

And whereas the following officers and employees serving in the Department of Food, the Regional Directorates of Food, the Procurement Directorates and the Pay & Accounts Offices of the Department of Food and engaged in the performance of the functions mentioned above have not, in response to the Circular of the Central Government dated the 16th April, 1971 intimated, within the date specified therein, their intention of not be coming employees of the Food Corporation of India as required by the proviso to sub-Section (1) of section 12-A of the said Act;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by Section 12-A of the Food Corporations Act, 1964 (37 of 1964) as amended upto date the Central Government hereby transfers the following officers and employees to the Food Corporation of India with effect from the date mentioned against each of them.

S. No.	Name of the officer/employees	Permanent post held under the Central Govt.	Post held under the Central Govt. at the time of transfer	Date of transfer to the FCI
1	2	3	4	5
1.	Shri K. S. Gupta	Assistant Director	Assistant Director	1-3-1969
2.	Shri M. T. R. Nair	Technical Assistant	Technical Officer	1-9-1970
3.	Shri D. C. Jain	Supervisor (Marketing Intelligence)	Supervisor	16-7-1970
4.	Shri K. K. Dewan	Godown Superintendent	Godown Superintendent	28-4-1976
5.	Shri Syed Hussain Ali Khan	Quality Inspector	Quality Inspector	1-3-1969
6.	Shri N. Venkateswara Rao	—	Do	1-3-1969
7.	Shri C. Lingaiah	—	Godown Clerk	1-3-1969
8.	Shri Md. Ahmed Ali Khan	Teach. Assistant	Tech. Assistant	1-3-1969
9.	Shri Sk. Md. Hussain	Tally Clark	Godown Clerk	1-3-1969
10.	Shri M. R. Nachinarkinian	—	Godown Clerk	1-3-1969

[No. 52/7/74-FC-III (Vol. X)]

BAKHSHI RAM, Dy. Secy.

पर्यटन और नागर विमानन मंत्रालय

नई दिल्ली, 31 दिसम्बर, 1977

का० आ० 192—अंतर्राष्ट्रीय विमानपत्तन प्राधिकरण अधिनियम, 1971 (1971 का 43) की धारा 5 की उप-धारा (4) के साथ पठित धारा 3 की उप-धारा (3) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क तथा सीमा-शुल्क बोर्ड के सदस्य (सीमा-शुल्क), श्री जी० एस० साहनी को श्री एम० जी० अब्रोल के स्थान पर तत्काल तथा 12-11-1979 तक भारत अंतराष्ट्रीय विमानपत्तन प्राधिकरण का एक अंशकालिक सदस्य नियुक्त करती है ।

[सं० ए० वी० 24012/3/77-ए०ए०]

सी० एल० ढींगरा, उप-सचिव,

MINISTRY OF TOURISM AND CIVIL AVIATION

New Delhi, the 31st December, 1977

S.O. 192.—In exercise of the powers conferred by sub-section (3) of Section 3 read with Sub-section (4) of Section 5 of the International Airports Authority Act, 1971 (43 of 1971), the Central Government hereby appoints Shri G. S. Sawney, Member (Customs), Central Board of Excise & Customs as a part-time Member of the International Airports Authority of India with immediate effect till 12-11-79, vice Shri M. G. Abrol.

[No. AV. 24012/3/77-AA]

C. L. DHINGRA, Dy. Secy.

नई दिल्ली, 7 जनवरी, 1978

का० आ० 193—यतः 1 जनवरी, 1978 को एयर इंडिया का एक बोइंग 747 विमान वी० टी० ई० बी० डी० बम्बई से उड़ान सं० ए० आई०-855 का परिचालन करते समय बम्बई के निकट दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिसके परिणामस्वरूप विमान पर सवार 213 व्यक्तियों (जिनमें 23 विमान कार्मिक भी सम्मिलित थे) की मृत्यु हो गयी;

और यतः केन्द्रीय सरकार यह अनुभव करती है कि उक्त दुर्घटना की परिस्थितियों की औपचारिक जांच करना वांछनीय है ;

अतः, अब, वायुयान नियम, 1937 के नियम 75 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा निदेश करती है कि उक्त दुर्घटना की औपचारिक जांच की जाए ।

केन्द्रीय सरकार उक्त जांच करने लिए के बम्बई उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, श्री जस्टिस एम० एन० चन्दुरकर को नियुक्त करती है ।

केन्द्रीय सरकार उक्त जांच करने के लिए असेसरों के रूप में कार्य करने के लिए निम्नलिखित को भी नियुक्त करती है :—

1. एयर कामोडोर पी० एसदरे,
   वायु सेना मुख्यालय,
   नई दिल्ली ।

2. कैप्टेन आर० ए० विलियम्स,
   प्रशिक्षण निदेशक,
   केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थान,
   इंडियन एयरलाइंस ।

3. श्री ए० वी० वरतक,
   नागर विमानन के सेवा-निवृत्त उप-महानिदेशक ।

4. श्री आर० वरदराजन्,
   प्रोजेक्ट को-आर्डिनेटर तथा इंचार्ज
   डिजाइन ब्यूरो
   हिन्दुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड,
   बंगलौर ।

जांच अदालत 31 मार्च, 1978 तक अपनी जांच पूरी कर लेगी और केन्द्रीय सरकार को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर देगी ।

जांच अदालत का मुख्यालय बम्बई में होगा ।

[फा० सं० ए० वी० 15013/1/78-ए]

एस० एकाम्बरम्, उप-सचिव

New Delhi, the 7th January, 1978

S.O. 193.—Whereas on 1st January, 1978 an Air India Boeing 747 aircraft VT-EBD while operating flight No. AI-855 from Bombay crashed near Bombay resulting in the death of 213 persons (including 23 crew members) on board;

And whereas it appears to the Central Government that it is expedient to hold a formal investigation into the circumstances of the said accident;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by rule 75 of the Aircraft Rules, 1937, the Central Government hereby directs that a formal investigation of the said accident be held.

The Central Government is further pleased to appoint Shri Justice M. N. Chandurkar, Judge of the Bombay High Court to hold the said investigation.

The Central Government is also pleased to appoint :

(1) Air Commodore P.S. Dere,
Air Headquarters,
New Delhi.

(2) Capt. R. A. Williams,
Director of Training,
Central Training Establishment,
Indian Airlines.

(3) Shri A. V. Vartak,
Retd. Deputy Director General of Civil Aviation.

(4) Shri R. Varadarajan,
Project Co-ordinator and Incharge Design Bureau,
Hindustan Aeronautics Limited, Bangalore.

to act as assessors to the said investigation.

The Court of Inquiry will complete its inquiry and make its report to the Central Govegnment by 31st March, 1978.

The headquarters of the Court of Inquiry will be at Bombay.

[F. No. Av. 15013/1/78-A]

S. EKAMBARAM, Dy. Secy.

नौवहन व परिवहन मंत्रालय

(परिवहन पक्ष)

नई दिल्ली, 24 दिसम्बर, 1977

का० आ० 194—राष्ट्रीय नौवहन बोर्ड नियम, 1960 के नियम 4 के उपनियम (2) के साथ पठित व्यापार पोत अधिनियम 1958 (1958 का 44) की धारा 4 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा नौसेना नौसेना मुख्यालय के उपाध्यक्ष की राष्ट्रीय नौवहन बोर्ड में केन्द्रीय सरकार का प्रतिनिधित्व करने वाला सदस्य नियुक्त करती है, और भारत सरकार के नौवहन और परिवहन मंत्रालय (परिवहन पक्ष) की अधिसूचना सं० सा० आ० 1245,

दिनांक 13/15 मार्च, 1976 में निम्नलिखित संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना में क्रम सं० 11 के सामने की प्रविष्टि के लिए "नौसेना के उपाध्यक्ष नौसेना मुख्यालय" रखी जाए।

[सं० एम. एस. बी.-3/75 एम डी]

सु० रामचन्द्र राव, अवर सचिव।

MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT

(Transport Wing)

New Delhi, the 24th December, 1977

S.O. 194.—In exercise of the powers conferred by sub-tion 4 of the Merchant Shipping Act, 1958 (44 of 1958), read with sub-rule (2) of rule 4 of the National Shipping Board Rules, 1960, the Central Government hereby appoints the Deputy Chief of the Naval Staff, Naval Headquarters, as a Member representing the Central Government in the National Shipping Board and makes the following amendment in the notification of the Government of Iddia in the Ministry of Shipping and Transport (Transport Wing) S.O. No. 1245 dated the 13/15th March, 1976, namely :—

In the said notification for the entry against S. No. 11, the entry "Deputy Chief of Naval Staff, Naval Headquarters" shall be substituted.

[No. MSB-3/75-MD]

S. RAMACHANDRA RAO, Under Secy.

नई दिल्ली, 31 दिसम्बर, 1977

(व्यापार-पोत)

का०आ० 195.—व्यापार पोत अधिनियम, 1958 (1958 का 44) की धारा 237 और 238 के उपबंधों के अनुसरण में, और इस विषय पर पिछली सभी अधिसूचनाओं का अधिक्रमण करते हुए, केन्द्रीय सरकार एतद्द्वारा नीचे दी गयी सारणी के स्तम्भ 1 में विनिर्दिष्ट पत्तनों को उन पत्तनों के रूप में नियत करती है, जहां से अनबर्थड यात्री जहाज प्रस्थान अथवा प्रगमन कर सकते हैं अथवा जहां पर वे उपरोक्त धारा 238 के प्रयोजनों के लिए सारणी के स्तंभ 2 में तदनुरूपी प्रविष्टियों में निर्दिष्ट अधिकारियों और अनबर्थड यात्रियों को उतार सकते हैं।

सारणी

पत्तन 1	अधिकारी 2
काण्डला	उप-संरक्षक, काण्डला पत्तन, गांधीधाम।
माण्डवी	उप-इंजीनियर, पत्तन अधिकारी, माण्डवी, कच्छ।
बेदी	सर्वेक्षक प्रभारी, एम एम डी, बेदी बंदर, जामनगर।
ओखा	पत्तन अधिकारी, ओखा।
पोरबन्दर	पत्तन अधिकारी, पोरबन्दर।
वेरावाल/नवाबन्दर	पत्तन अधिकारी, वेरावाल।
जफराबाद	पत्तन अधिकारी, महुआ।
बम्बई	मुख्य अधिकारी, एम एम डी, बम्बई, अधिनियम की धारा 9(1) के अन्तर्गत बम्बई में सर्वेक्षक नियुक्त।
थूल (रेवास)	सहायक पत्तन अधिकारी, बंदरा
रेवडांडा	यथोक्त
धरमतार मुरूद जंजीरा श्रीवर्धन	सहायक पत्तन अधिकारी, मुरूद।
हरनाई डभोल पालशेट बोरया जेगढ़ वशावदा सीवरी रत्नगिरी मलाद पूरणगढ़ भुसकजई	पत्तन अधिकारी, रत्नगिरी।
जैतापुर विजयदुर्ग देवगढ़ अचरा	सहायक पत्तन अधिकारी, विजयदुर्ग।
मालवान वेंगुरला	पत्तन अधिकारी, वेंगुरला।
पंजीम मारमुगाव	सर्वेक्षक, एम एम डी, अधिनियम की धारा 9(1) के अधीन मारमुगाव और पंजीम में नियुक्त।
अल्लेपी	राज्य पत्तन अधिकारी, केरल, अल्लेपी
त्रिवेंद्रम	पत्तन संरक्षक, त्रिवेंद्रम।
कोचीन	सर्वेक्षक प्रभारी, एम एम डी, कोचीन, अधिनियम की धारा 9(1) के अधीन नियुक्त।
क्यूलोन	पत्तन संरक्षक, क्यूलोन
कोजीकोड	पत्तन अधिकारी, कोजीकोड
कुड्डालोर	पत्तन अधिकारी, कुड्डालोर
नागापट्टीनम् पम्बान	पत्तन अधिकारी, नागापट्टीनम्
रामेश्वरम्	पत्तन अधिकारी, रामेश्वरम्
मद्रास	मुख्य अधिकारी, एम एम डी, मद्रास। अधिनियम की धारा 9(1) के अधीन मद्रास में सर्वेक्षक के पद पर नियुक्त।
काकीनाडा	पत्तन अधिकारी, काकीनाडा
मुसलीपट्नम	पत्तन अधिकारी, मुसलीपट्नम।
विशाखापत्तनम्	सर्वेक्षक, एम एम डी, अधिनियम की धारा 9(1) के अधीन विशाखापत्तनम् में नियुक्त।
गोपालपुर	पत्तन अधिकारी, गोपालपुर।
पारादीप	उप-संरक्षक, पारादीप पत्तन न्यास, पारादीप।
कलकत्ता	मुख्य अधिकारी, एम एम डी, अधिनियम की धारा 9(1) के अधीन कलकत्ता में नियुक्त सर्वेक्षक।
न्यू मंगलौर (मंगलौर सहित)	उप-संरक्षक, नव मंगलौर पत्तन।
नव तूतीकोरिन (तूतीकोरिन सहित)	उप-संरक्षक, नव तूतीकोरिन पत्तन।

[सं० 2-एम एम डी (42)/73 एम ए]

श्रीमती भवानी निर्मल, अवर सचिव।

New Delhi, 31st December, 1977

(Merchant Shipping)

S.O. 195.—In pursuance of the provisions of sections 237 and 238 of the Merchant Shipping Act, 1958 (44 of 1958), and in supersession of all the previous notifications on the subject, the Central Government hereby appoints the posts specified in column 1 of the Table below as the ports from which an unberthed passenger ship may depart or proceed or at which may discharge unberthed passengers, and the officers specified

in the correspnding entries in column 2 thereof for the purposes of the said section 238 :

TABLE

Ports	Officers
Kandla	Deputy Conservator, Kandla Port, Gandhidham.
Mandvi	Deputy Engineer and Port Officer, Mandvi, Kutch.
Bedi	Surveyor-in-charge, MMD, Bedi Bunder, Jamnagar.
Okha	Port Officer, Okha.
Porbandar	Port Officer, Porbandar.
Veraval, Nawabander	Port Officer, Veraval.
Jafrabad	Port Officer, Mahuva.
Bombay	Principal Officer, MMD, Bombay, Surveyor appointed at Bombay under Section 9(1) of the Act.
Thul (Rewas)	Assistant Port Officer, Bandra.
Revdanda	Assistant Port Officer, Bandra.
Dharamtar, Murud (Janjira), Shrivardhan	Assistant Port Officer, Murud.
Harnai, Dabhol, Palshet, Borya, Jaigad, Varavda (Tiwri), Ratnagiri, Salad, Purnagad, Musakazai	Port Officer, Ratnagiri.
Jaitpur, Vijaydurg, Deogad, Achra	Assistant Port Officer, Vijaydurg.
Malvan, Vengurla	Port Officer, Vengurla.
Panjim, Marmugao	Surveyor, MMD, appointed at Marmugao and Panjim under Section 9(1) of the Act.
Alleppey	State Port Officer, Kerala, Alleppey.
Trivandrum	Port Conservator, Trivandrum.
Cochin	Surveyor-in-Charge, MMD, Cochin, appointed under Section 9(1), of the Act.
Quilon	Port Conservator, Quilon.
Kozhikode	Port Officer, Kozhikode.
Cuddalore	Port Officer, Cuddalore.
Nagapattinam, Pamban	Port Officer, Nagapattinam.
Rameshwaram	Port Officer, Rameshwaram.
Madras	Principal Officer, MMD, Madras. Surveyor at Madras appointed under Section 9(1) of the Act.
Kakinada	Port Officer, Kakinada.
Masulipatnam	Port Officer, Musulipatnam.
Visakhapatnam	Surveyor, MMD, appointed at Visakhapatnam under Section 9(1) of the Act.
Gopalpur	Port Officer, Gopalpur.
Paradip	Deputy Conservator, Paradip Port Trust, Paradip.
Calcutta	Principal Officer, MMD Calcutta Surveyor appointed at Calcutta under Section 9(1) of the Act.
New Mangalore (including Mangalore)	Deputy Conservator, Port of New Mangalore.
New Tuticorin (including Tuticorin)	Deputy Conservator, Port of New Tuticorin.

[No. 2-MMD(42)/73-MA]
SMT. B. NIRMAL, Under Secy.

नई दिल्ली, 2 जनवरी, 1978

का०आ० 196.—कोचीन डाक कर्मकार (नियोजन का विनियमन) स्कीम, 1959 में और संशोधन करने के लिए स्कीम का एक प्रारूप, डाक कर्मकार (नियोजन का विनियमन) अधिनियम, 1948 (1948 का 9) की धारा 4 की उपधारा (1) की अपेक्षानुसार, भारत के राजपत्र भाग 2, खंड 3 उपखंड (ii), तारीख 10 सितम्बर, 1977 के पृष्ठ ..... पर भारत सरकार के नौवहन और परिवहन मंत्रालय (परिवहन पक्ष) की अधिसूचना सं० का०आ० 2830, तारीख 24 अगस्त, 1977 के अन्तर्गत प्रकाशित किया गया था, जिसमें उन सभी व्यक्तियों से, जिनके उससे प्रभावित होने की संभावना थी, राजपत्र में उक्त अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से दो मास की अवधि के अवसान तक, आक्षेप और सुझाव मांगे गए थे ;

और उक्त राजपत्र जनता को 20 सितम्बर, 1977 को उपलब्ध करा दिया गया था ;

और केन्द्रीय सरकार को उक्त प्रारूप की यथात जनता से कोई आक्षेप और सुझाव प्राप्त नहीं हुए हैं ;

अतः अब, केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 4 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, कोचीन डाक कर्मकार (नियोजन का विनियमन) स्कीम, 1959 में संशोधन करने के लिए निम्नलिखित स्कीम बनाती है, अर्थात् :—

1. संक्षिप्त नाम और प्रारंभ : (1) इस स्कीम का संक्षिप्त नाम कोचीन डाक कर्मकार (नियोजन का विनियमन) संशोधन स्कीम 1978 है ।

(2) यह तुरन्त प्रवृत्त होगी ।

2. कोचीन डाक कर्मकार (नियोजन का विनियमन) स्कीम, 1959 के खंड 38 में, उपखंड (6) के पश्चात्, निम्नलिखित उपखंड अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात्

"(7) कोई रजिस्ट्रीकृत नियोजन किसी रजिस्ट्रीकृत डाक कर्मकार को, रजिस्ट्रीकृत डाक कर्मकार को सामान्यतः और वस्तुतः शोध्य मजदूरी से अधिक कोई चीज नकद या अन्यथा, न संवत्त करेगा, न संदत्त करायेगा और न संदत्त करने के लिए दुष्प्रेरण करेगा ।"

[फा० सं० एल डी एक्स/6/77]

वी० शंकरलिंगम, अवर सचिव

New Delhi, the 2nd January, 1978

S.O. 196.—Whereas certain draft scheme further to amend the Cochin Dock Workers (Regulation of Employment) Scheme, 1959 was published as required by sub-section (1) of section 4 of the Dock Workers (Regulation of Employment) Act, 1948 (9 of 1948) at page 3084 of the Gazette of India, Part II, section 3, sub-section (ii), dated the 10th September, 1977 under the notification of the Government of India in the Ministry of Shipping and Transport (Transport Wing) No. S.O. 2830, dated the 24th August, 1977 inviting objections and suggestions from all persons likely to be affected thereby, till the expiry of a period of two months from the date of publication of the said notification in the Official Gazette;

And whereas the said Gazette was made available to the public on the 20th September, 1977;

And whereas no objections and suggestions have been received from the public on the said draft by the Central Government;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 4 of the said Act, the Central Government hereby makes the following Scheme to amend the Cochin Dock Workers (Regulation of Employment) Scheme, 1959, namely :—

1. Short title and commencement.- This Scheme may be called the Cochin Dock Workers (Regulation of Employment) Amendment Scheme, 1978.

(2) It shall come into force on the date of its publication in the Official Gazette.

2. In clause 38 of the Cochin Dock Workers (Regulation of Employment) Scheme, 1959, after sub-clause (6), the following sub-clause shall be inserted, namely :—

"(7) A registered employer shall not pay or cause to be paid or abet the payment to a registered dock worker anything in cash or otherwise in excess of the wages normally and actually due to the registered dock worker."

[File No. LDX/6/77]

V. SANKARALINGAM, Under Secy.

निर्माण और आवास मंत्रालय

नई दिल्ली, 4 जनवरी, 1978

का० आ० 197.—यतः केन्द्रीय सरकार का दिल्ली की बृहत् योजना में निम्नलिखित क्षेत्रों के बारे में जो कतिपय संशोधन करने का प्रस्ताव है, उन्हें दिल्ली विकास अधिनियम, 1957 (1957 का 61वां) की धारा 44 के उपबन्धों के अनुसार दिनांक 31 जुलाई, 1971 के नोटिस सं० एफ० 3(36) 70-एम०पी० में प्रकाशित किया गया था और उक्त अधिनियम की धारा 11-ए० की उप-धारा (3) में यथा अपेक्षित उक्त नोटिस के जारी होने की तारीख से 30 दिन के अन्दर आपत्तियां/सुझाव आमंत्रित किए गए थे;

तथा यतः निम्नलिखित उक्त संशोधन के बारे में आपत्ति/सुझाव पर विचार करने के बाद केन्द्रीय सरकार ने दिल्ली की बृहत् योजना में संशोधन करने का निर्णय किया है;

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 11-ए० की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार ने इस अधिसूचना के भारत के राजपत्र में प्रकाशित होने की तारीख से दिल्ली की उक्त बृहत् योजना में निम्नलिखित संशोधन किए हैं :—

संशोधन :

"लगभग 1.12 हैक्टेयर (2.76 एकड़) के आकार का क्षेत्र जो उत्तर में ओबराय इण्टरकान्टीनेंटल होटल, पूर्व में 45.7 मीटर (150 फुट) चौड़े लिंक रोड, दक्षिण में ब्लाइण्ड इन्स्टीट्यूट और पश्चिम में गोल्फ कोर्स के अन्तर्गत क्षेत्र से घिरा है, को मनोरंजनात्मक (जिला पार्क तथा खेल के मैदान) से वाणिज्यिक में बदल दिया गया है।"

[संख्या के०-13011(6)/70-यू०डी०आई० (ए०)]

हरी राम गोयल, अवर सचिव

MINISTRY OF WORKS & HOUSING

New Delhi, the 4th January, 1978

S.O. 197.—Whereas certain modification, which the Central Government propose to make in the Master Plan for Delhi regarding the areas mentioned hereunder, was published with Notice No. F. 3 (36) 70-MP, dated the 31st July, 1971, in accordance with the provisions of section 44 of the Delhi Development Act, 1957 (61 of 1957) inviting objections/suggestions, as required by sub-section (3) of section 11-A of the said Act, within thirty days from the date of the said notice;

And whereas the Central Government, after considering the objection and suggestion with regard to the said modification mentioned hereunder, have decided to modify the Master Plan for Delhi;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (2) of section 11-A of the said Act, the Central Government hereby make the following modification in the said Master Plan for Delhi with effect from the date of publication of this notification in the Gazette of India, namely :—

MODIFICATION :

"An area measuring about 1.12 hects. (2.76 acres) surrounded by Oberoi Intercontinental Hotel in the north, 45.7 metres (150 feet) wide link road in the east, Institute of Blinds in the south and the area under Golf Course in the west, is changed from recreational (District Parks and Playgrounds) to "commercial"."

[No. K-13011 (6)/70-UDI (A)]

H. R. GOEL, Under Secy.

संचार मंत्रालय

(डाक-तार बोर्ड)

नई दिल्ली, 10 जनवरी, 1978

का०आ० 198.—का०आ०संख्या 627, दिनांक 8 मार्च, 1960 द्वारा लागू किए गए भारतीय तार नियम, 1951 के नियम 434 के खंड III के पैरा (क) के अनुसार डाक-तार महानिदेशक ने बाराबंकी टेलीफोन केन्द्र में दिनांक 16-2-78 से प्रमाणित दर प्रणाली लागू करने का निश्चय किया है।

[संख्या 5-3/78 पी०एच०बी०]

MINISTRY OF COMMUNICATIONS

(P & T Board)

New Delhi, the 10th January, 1978

S.O. 198.—In pursuance of para (a) of Section III of Rule 434 of Indian Telegraph Rules, 1951, as introduced by S. O. No. 627 dated 8th March, 1960, the Director General, Posts and Telegraphs, hereby specifies the 16-2-1978 as the date on which the Measured Rate System will be introduced in Barabanki Telephone Exchange, U.P. Circle.

[No. 5-3/78-PHB]

का०आ० 199.—स्थायी आदेश संख्या 627, दिनांक 8 मार्च, 1960 द्वारा लागू किए गए भारतीय तार नियम, 1951 के नियम 434 के खंड III के पैरा (क) के अनुसार डाक-तार महानिदेशक ने हल्दिया टेलीफोन में दिनांक 1-2-1978 से प्रमाणित दर प्रणाली लागू करने का निश्चय किया है।

[संख्या 5-4/78 पी०एच०बी०]

के० बी० मुदगल, सहायक महानिदेशक (पी०एच०बी०)

S.O. 199.—In pursuance of para (a) of Section III of Rule 434 of Indian Telegraph Rules, 1951, as introduced by S. O. No. 627 dated 8th March, 1960, the Director General, Posts and Telegraphs, hereby specifies the 1-2-1978 as the date on which the Measured Rate System will be introduced in Haldia Telephone Exchange, West Bengal Circle.

[No. 5-4/78-PHB]

K. B. MUDGAL, Assistant Director General (PHB)

रेल मंत्रालय

(रेलवे बोर्ड)

नई दिल्ली, 12 जनवरी, 1978

का०आ० 200.—भारतीय रेल अधिनियम, 1890 (1890 का 9) की धारा 56ख की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार, अपना यह समाधान हो जाने पर कि किसी रेलवे स्टेशन तक केवल माल को ले जाने के लिए आशयित रेल गाड़ियों द्वारा बुक किए गए माल का, ऐसे स्टेशन से अविलम्ब हटाया जाना आवश्यक है

और उस उपधारा के परन्तुक में विनिर्दिष्ट बातों को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित रेल स्टेशनों को 1-8-77 से 6 महीने की अवधि के लिए "अधिसूचित स्टेशन" घोषित करती है अर्थात् :—

1. मुम्बई (वाड़ी बन्दर)
2. नागपुर
3. हावड़ा गुड्स
4. चितपुर
5. काशीपुर रोड
6. इलाहाबाद
7. कानपुर सेन्ट्रल गुड्स शेड (ब्राड गेज)
8. नयी दिल्ली
9. मद्रास साल्ट कोटार्स
10. एर्णाकुलम गुड्स
11. बंगलौर सिटी जंकशन
12. रायपुरम
13. कालीकट
14. सिकन्दराबाद
15. हैदराबाद
16. विजयवाड़ा
17. कोल्हापुर (गुड़ मार्केट)
18. सनतनगर
19. मौला अली
20. काचीगुडा
21. औरंगाबाद
22. शालीमार
23. रांची
24. टाटानगर
25. न्यू गुवाहाटी
26. न्यू जलपाईगुड़ी
27. सिलीगुड़ी टाउन (माल)
28. कांकरिया
29. बड़ौदा जंकशन
30. असरवा जंकशन
31. मुम्बई (कार्नाक ब्रिज)

[संख्या टी०सी० 1/1680/75/2]

बी० मोहन्ती, सचिव और पदेन संयुक्त सचिव।

MINISTRY OF RAILWAYS

(Railway Board)

New Delhi, the 12th January, 1978

S.O. 200.—In exercise of the powers conferred by sub-section (2) of Section 56(B) of the Indian Railways Act, 1890 (9 of 1890), the Central Government, being satisfied that it is necessary that the goods booked by trains intended solely for the carriage of goods to any railway station should be removed without delay from such railway station and having regard to the factors specified in that sub-section, hereby declares the following railway stations at "notified stations" for a further period of six months with effect from the 1st February, 1978, namely :—

1. Bombay (Wadi Bunder)
2. Nagpur
3. Howrah goods
4. Chitpur
5. Cossipur Road
6. Allahabad
7. Kanpur Central goods Shed (Broad gauge)
8. New Delhi
9. Madras Salt Cotaurs
10. Ernakulam goods
11. Bangalore City Junction
12. Royapuram
13. Calicut
14. Secunderabad
15. Hyderabad
16. Vijayawada
17. Kolhapur (gur market)
18. Sanat Nagar
19. Maula Ali
20. Kacheguda
21. Aurangabad
22. Shalimar
23. Ranchi
24. Tatanagar
25. New Gauhati
26. New Jalpaiguri
27. Siliguri Town (goods)
28. Kankaria
29. Baroda Junction
30. Asarva Junction
31. Bombay (Carnac Bridge)

[No. TC 1/1680/75/2]

B. MOHANTY, Secy. and ex-officio Jt. Secy.

पूर्ति और पुनर्वास मंत्रालय

(पुनर्वास विभाग)

नई दिल्ली, 4 जनवरी, 1978

का० आ० 201.— विस्थापित व्यक्ति (प्रतिकर तथा पुनर्वास) अधिनियम, 1954 (1954 का 44) की धारा 3 की उप-धारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार इसके द्वारा तमिलनाडु राज्य के तहसीलदारों को अपने-अपने क्षेत्र में, तहसीलदारों के रूप में उनके अपने कार्यों के अलावा, उक्त अधिनियम द्वारा या उसके अधीन पूर्ति और पुनर्वास मंत्रालय (पुनर्वास विभाग), नई दिल्ली द्वारा तमिलनाडु राज्य को हस्तान्तरित किए गए कार्य के संबंध में प्रबंध अधिकारी को सौंपे गए कार्यों को निष्पादित करने के लिए प्रबंध अधिकारी के रूप में नियुक्त करते हैं।

[संख्या 27(2)/73-एस०एस०-II]

MINISTRY OF SUPPLY & REHABILITATION

(Department of Rehabilitation)

New Delhi, the 1st January, 1978

S.O. 201.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 3 of the Displaced Persons (Compensation & Rehabilitation) Act, 1954 (44 of 1954), the Central Government hereby appoints all Tehsildars in the State of Tamil Nadu to be Managing Officers for the purpose of performing in addition to their own duties as Tehsildars within their jurisdiction, the functions assigned to a Managing Officer by or under the said Act in relation to the work transferred to the Government of Tamil Nadu by the Ministry of Supply and Rehabilitation (Department of Rehabilitation), New Delhi.

[No. 27 (2)/73-SS. II]

का० आ० 202.— विस्थापित व्यक्ति (प्रतिकर तथा पुनर्वास) अधिनियम, 1954 (1954 का 44) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार इसके द्वारा तमिलनाडु सरकार के जिला राजस्व अधिकारियों को जिला राजस्व

अधिकारियों के रूप में अपने कार्यों के अलावा उक्त अधिनियम द्वारा या इसके अधीन बन्दोबस्त आयुक्त को सौंपे गए कार्यों को निष्पादित करने के लिए, बन्दोबस्त आयुक्त के रूप में नियुक्त करती है।

[संख्या 27(2)/73-एस० एस०-II]

S.O. 202.—In exercise of the powers conferred by Subsection (1) of Section 3 of the Displaced Persons (Compensation and Rehabilitation) Act, 1954 (44 of 1954), the Central Government hereby appoints District Revenue Officers, Government of Tamil Nadu, as Settlement Commissioners for the purpose of performing, in addition to their own duties as District Revenue Officers, the functions assigned to them as Settlement Commissioner by or under the aforesaid Act.

[No. 27 (2)/73-SS. II]

का० आ० 203.— निष्क्रान्त सम्पत्ति प्रशासन अधिनियम, 1950 (1950 का 31) की धारा 6 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार इसके द्वारा तमिलनाडु सरकार के राजस्व विभाग के संयुक्त सचिव को अपने कार्यों के अलावा तमिलनाडु राज्य में निष्क्रान्त सम्पत्तियों के संबंध में उक्त अधिनियम द्वारा या उसके अन्तर्गत अभिरक्षक को सौंपे गए कार्यों को निष्पादित करने के लिए निष्क्रान्त सम्पत्ति के अपर अभिरक्षक के रूप में नियुक्त करती है।

[संख्या 27(2)/73-एस०एस०-II]

S.O. 203.—In exercise of the powers conferred by Subsection (1) of Section 6 of the Administration of Evacuee Property Act, 1950 (31 of 1950), the Central Government hereby appoints Joint Secretary, Revenue Department, Government of Tamil Nadu as Additional Custodian of Evacuee Property in addition to his own duties for the purpose of discharging the duties imposed on the Custodian by or under the said Act in respect of evacuee properties in the State of Tamil Nadu.

[No. 27 (2)/73-SS. II]

का० आ० 204. — निष्क्रान्त सम्पत्ति प्रशासन अधिनियम, 1950 (1950 का 31) की धारा 6 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार इसके द्वारा तमिलनाडु राज्य में जिला राजस्व अधिकारियों को जिला राजस्व अधिकारियों के रूप में अपने कार्यों के अलावा तमिलनाडु राज्य में निष्क्रान्त सम्पत्तियों के संबंध में उक्त अधिनियम के द्वारा या उसके अधीन उप अभिरक्षक को सौंपे गए कार्यों को निष्पादित करने के लिए निष्क्रान्त सम्पत्ति के उप अभिरक्षक के रूप में नियुक्त करती है।

[संख्या 27(2) 73-एस०एस०-II]

S.O. 204.—In exercise of the powers conferred by Subsection (1) of Section 6 of the Administration of Evacuee Property Act, 1950 (31 of 1950), the Central Government hereby appoints the District Revenue Officers in the State of Tamil Nadu as Deputy Custodians of Evacuee Property in addition to their own duties as District Revenue Officers for the purpose of discharging the duties imposed on such Deputy Custodians by or under the said Act in respect of evacuee properties in their respective Districts.

[No. 27 (2)/73-SS. II]

का० आ० 205.— निष्क्रान्त सम्पत्ति प्रशासन अधिनियम, 1950 (1950 का 31) की धारा 6 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार इसके द्वारा तमिलनाडु राज्य के मंडल राजस्व अधिकारियों को मंडल राजस्व अधिकारियों के अपने कार्यों के अलावा, तमिलनाडु राज्य में अपने-अपने मंडलों में निष्क्रान्त सम्पत्तियों के संबंध में उक्त अधिनियम द्वारा या उसके अधीन सहायक अभिरक्षकों को सौंपे गए कार्यों को निष्पादित करने के लिए निष्क्रान्त सम्पत्ति के सहायक अभिरक्षक के रूप में नियुक्त करती है।

[संख्या 27(2) 73-एस०एस०-II]

दीना नाथ असीजा, संयुक्त निदेशक

S.O. 205.—In exercise of the powers conferred by Subsection (1) of Section 6 of the Administration of Evacuee Property Act, 1950 (31 of 1950), the Central Government hereby appoints Revenue Divisional Officers in the State of Tamil Nadu as Assistant Custodians of Evacuee Property in addition to their own duties as Revenue Divisional Officers for the purpose of discharging the duties imposed on such Assistant Custodians by or under the said Act in respect of evacuee properties in their respective Divisions.

[No. 27 (2)/73-SS. II]

D. N. ASIJA, Jt. Director

नई दिल्ली, 4 जनवरी, 1978

का० आ० 206.— विस्थापित व्यक्ति (प्रतिकर तथा पुनर्वास) अधिनियम, 1954 (1954 का 44) की धारा 39 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए मुख्य बन्दोबस्त आयुक्त इसके द्वारा तमिलनाडु सरकार के राजस्व विभाग के संयुक्त सचिव को निम्नलिखित शक्तियां सौंपते हैं :—

(1) उक्त अधिनियम की धारा 23 के अधीन अपील सुनने की शक्तियां।

(2) उक्त अधिनियम की धारा 24 के अधीन पुनरीक्षण की शक्तियां।

(3) उक्त अधिनियम के अधीन मामलों के हस्तान्तरण की शक्तियां।

[संख्या 27(2) 73-एस०एस०-II]

ज० चक्रवर्ती, मुख्य बन्दोबस्त आयुक्त

S.O. 206.—In exercise of the powers conferred by Subsection (2) of Section 34 of the Displaced Persons (Compensatiton and Rehabilitation) Act, 1954 (44 of 1954), the Chief Settlement Commissioner hereby delegates to the Joint Secretary, Revenue Department, Government of Tamil Nadu, the following powers :—

(i) Powers to hear Appeals under Section 23 of the said Act.

(ii) Powers to hear revisions under Section 24 of the said Act.

(iii) Powers to transfer cases under Section 28 of the said Act.

[No. 27 (2)/73-SS. II]

J. CHAKRABARTY, Chief Settlement Commissioner.

श्रम मंत्रालय

आदेश

नई दिल्ली, 6 अगस्त, 1977

का० आ० 207.—इससे उपाबद्ध अनुसूची में विनिर्दिष्ट औद्योगिक विवाद पीठासीन अधिकारी, केन्द्रीय सरकार औद्योगिकी अधिकरण (सं० 2) धनबाद के समक्ष लंबित हैं;

और उक्त पीठासीन अधिकारी की सेवाएं अब उपलब्ध नहीं हैं;

अतः, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 33ख की उप-धारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार पीठासीन अधिकारी, केन्द्रीय सरकार औद्योगिक अधिकरण (सं० 2), धनबाद से उक्त विवादों से सम्बद्ध कार्यवाही को को वापस लेती है और उन्हें उक्त अधिनियम की धारा 7-क के अधीन

गठित केन्द्रीय सरकार औद्योगिक अधिकरण नं० (2) धनबाद को हस्तांतरित करती है और यह निदेश देती है कि उक्त केन्द्रीय सरकार औद्योगिक अधिकरण नं० (3), धनबाद और आगे कार्यवाही उसी प्रक्रम से करेगा जिस पर वह उसे हस्तांतरित की जाए और विधि के अनुसार उसका निपटान करेगा ।

अनुसूची

क्रमांक	आदेश/अधिसूचना संख्या और तारीख	विवाद के पक्षकार
1.	एल-20012(166) 76-डी-III(ए), तारीख 30-12-1976	मैसर्स बी० सी० सी० लि० की वैस्ट गुडिडीह कौलियरी, डाकघर सिजुआ, जिला धनबाद के प्रबंधतंत्र से सम्बद्ध नियोजक ।
2.	एल० 28012(1)/77-डी-4 (बी)/डी-3 (बी) तारीख 15-3-1976	मैसर्स चरखी माइका माइनिंग कम्पनी लि० की भुजवा और कोनारगढ़ माइका माइन्स, हजारीबाग के प्रबंधतंत्र से सम्बद्ध नियोजक और उनके कर्मकार ।
3.	एल-29012(14) 77-डी-3(बी) तारीख 25/26 अप्रैल, 1977	बोकारो स्टील लिमिटेड की भवनथपुर लाइम स्टोन माइन के प्रबंधतंत्र से सम्बद्ध नियोजक और उनके कर्मकार ।

[संख्या एस- 11025/1/77-डी-4 (बी)-पा० फा०]

भूपेन्द्र नाथ, डेस्क अधिकारी

MINISTRY OF LABOUR

ORDER

New Delhi, the 6th August, 1977

S.O. 207.—Whereas the industrial disputes specified in the Schedule hereto annexed are pending before the Presiding Officer, Central Government Industrial Tribunal (No. 2), Dhanbad;

And whereas the services of the said Presiding Officer are no longer available;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 33-B of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby withdraws the proceedings in relation to the said disputes from the Presiding Officer, Central Government Industrial Tribunal (No. 2), Dhanbad and transfers the same to the Central Govern ment Industrial Tribunal (No. 3), Dhanbad consistituted under Section 7-A of the said Act and directs that the said Central Government Industrial Tribunal (No. 3), Dhanbad shall proceed with the same proceedings from the stage at which they are transferred to it and dispose of the same according to law.

SCHEDULE

Sl. No.	No. & date of reference	Parties to the dispute
1	2	3
1.	L-20012(166)/76-D-III(A) dated 30-12-76	Employers in relation to the management of West Gudidih Colliery of M/s. BCC Ltd. P.O. Sijua, Distt. Dhanbad.
2.	L-28012(1)/77-D-IV(B)/D III(B) dt. 15-3-77	Employers in relation to the management of Bhujwa and Konargarha Mica Mines of M/s. Charkhi Mica Mining Co. Ltd., Hazaribagh and their workmen.
3.	L-29012(14)/77-D-III(B) dt. 25/26th April, 1977	Employers in relation to the management of Bhawanath-pur lime Stone Mine of Bokaro Steel Limited and their workmen.

[No. S. 11025(1)/77-D-IV(B)-Pt. File]
BHUPENDRA NATH, Desk Officer

नई दिल्ली, 4 जनवरी, 1978

का० आ० 208.—केन्द्रीय सरकार ने यह समाधान हो जाने पर कि लोकहित में ऐसा करना अपेक्षित था, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 2 के खण्ड (ढ) के उपखण्ड (6) के उपबन्धों के अनुसरण में भारत सरकार के श्रम मंत्रालय की अधिसूचना संख्या का० आ० 2570 तारीख 27 जुलाई, 1977 द्वारा फासफोराइट खनन उद्योग को उक्त अधिनियम के प्रयोजनों के लिए 27 जुलाई, 1977 से छः मास की कालावधि के लिए लोक उपयोगी सेवा घोषित किया था ।

और केन्द्रीय सरकार की राय है कि उक्त कालावधि को आगे छः मास की कालावधि के लिए बढ़ाया जाना लोकहित में अपेक्षित है;

अतः अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 2 के खण्ड (ढ) के उपखण्ड (6) के परन्तुक द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार उक्त उद्योग को उक्त अधिनियम के प्रयोजनों के लिए 27 जनवरी, 1978 से आगे छः मास की कालावधि के लिए लोक उपयोगी सेवा घोषित करती है ।

[संख्या 11017/2/77-डी 1ए(II)]

New Delhi, the 4th January, 1978

S.O. 208.—Whereas, the Central Government having been satisfied that the public interest so required had, in pursuance of the provisions of sub-clause (vi) of clause (n) of section 2 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), declared by the notification of the Government of India in the Ministry of Labour No. S.O. 2570 dated the 27th July, 1977, the phoshorite mining industry to be a public utility service for the purposes of the said Act, for a period of six months from the 27th July, 1977.

And whereas, the Central Government is of opinion that public interest requires the extension of the said period by a further period of six months;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by the proviso to sub-clause (vi) of clause (n) of section 2 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby declares the said industry to be a public utility service for the purposes of the said Act for a further period of six months from the 27th January, 1978.

[No. S. 11017/13/77/DI (A)]

का० आ० 209.—केन्द्रीय सरकार ने यह समाधान हो जाने पर कि लोकहित में ऐसा करना अपेक्षित था, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 2 के खण्ड (ढ) के उपखण्ड (VI) के उपबन्धों के अनुसरण में भारत सरकार के श्रम मंत्रालय की अधिसूचना संख्या का० आ० 2571 ता० 27 जुलाई, 1977 द्वारा पाइराटस खनन उद्योग को उक्त अधिनियम के प्रयोजनों के लिये 27 जुलाई, 1977 से छः मास की कालावधि के लिये लोक उपयोगी सेवा घोषित किया था ।

और केन्द्रीय सरकार की राय है कि उक्त कालावधि को आगे छः मास की कालावधि के लिये बढ़ाया जाना लोकहित में अपेक्षित है;

अतः, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) की धारा 2 के खण्ड (ढ) के उपखण्ड (VI) के परन्तुक द्वारा प्रदत्त शक्तियों

का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार उक्त उद्योग को उक्त अधिनियम के प्रयोजनों के लिये 27 जनवरी, 1978 से आगे छः मास की कालावधि के लिये लोक उपयोगी सेवा घोषित करती है।

[संख्या एस०/11017/2/77-डी० 1 ए(II)]

एल० के० नारायणन, डैस्क अधिकारी

S.O. 209.—Whereas, the Central Government having been satisfied that the public interest so required had, in pursuance of the provisions of sub-clause (vi) of clause (n) of section 2 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), declared by the notification of the Government of India in the Ministry of Labour No. S.O. 2571 dated the 27th July, 1977 the pyrites mining industry to be a public utility service for the purposes of the said Act, for a period of six months from the 27th July, 1977;

And whereas, the Central Government is of opinion that public interest requires the extension of the said period by a furher period of six months;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by the proviso to sub-clause (vi) of clause (n) of section 2 of the Industrial Dispute Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby declares the said industry to be a public utility service for the purposes of the said Act for a further period of six months from the 27th January, 1978.

[No. S. 11017/14/77/DI (A)]

L. K. NARAYANAN, Desk Officer.

नई दिल्ली, 5 जनवरी, 1978

का० आ० 210.—अधिसूचना का निम्नलिखित प्रारूप, जिसे केन्द्रीय सरकार, न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, 1948 (1948 का 11) की धारा 28 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, बनाना चाहती है उन सभी व्यक्तियों की जानकारी के लिये प्रकाशित किया जाता है, जिनके उससे प्रभावित होने की संभावना है और सूचना दी जाती है कि उक्त प्रारूप पर, राजपत्र में इस अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से दो मास के अवसान पर या उस के पश्चात् विचार किया जायेगा।

उक्त दो मास की अवधि के अवसान के पूर्व उक्त प्रारूप की बाबत किसी व्यक्ति से प्राप्त किन्ही आक्षेपों और सुझावों पर केन्द्रीय सरकार विचार करेगी।

अधिसूचना का प्रारूप

केन्द्रीय सरकार, न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, 1948 (1948 का 11) की धारा 26 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, यह निदेश देती है कि राजपत्र में इस अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से पांच वर्ष की अवधि तक उक्त अधिनियम की धारा 12, 13, 14 और 18 के उपबन्ध ऐसे रेल सेवकों को लागू नहीं होंगे जो केन्द्रीय सरकार द्वारा अनुमोदित काल वेतनमान में हैं और जो भारतीय रेल अधिनियम, 1890 (1890 का 9) के अध्याय 6क के और भारतीय रेल स्थापन संहिता के उपबन्धों द्वारा शासित हैं और जो रेल में किसी अनुसूचित नियोजन में नियोजित हैं।

[सं० एस० 32014(2)/77/डब्ल्यू० सी० (एम० डब्ल्यू०)]

हंस राज छाबड़ा, उप सचिव

New Delhi, the 5th January, 1978

S.O. 210.—The following draft of a notification which the Central Government proposes to make, in exercise of the powers conferred by sub-secion (2) of section 26 of the Minimum Wages Act, 1948 (11 of 1948) is hereby published for the information of all persons likely to be affected thereby and notice is hereby given that the said draft will be taken into consideratios on or after the expiry of two months from the date of publication of this notification in the Official Gazette.

Any objections or suggestions which may be received from any person in respect of the said draft, before the expiry of the said period of two months, will be considered by the Central Government.

DRAFT NOTIFICATION

In exercise of the powers conferred by sub-section (2) of section 26 of the Minimum Wages Act, 1948 (11 of 1948), the Central Government hereby directs that for a period of five years from the date of publication of this notification, in the Official Gazette, the provisions of sections 12, 13, 14 and 18 of the said Act shall not apply to railway servants who are on time scales of pay approved by the Central Government and governed by the provisions of Chapter VI A of the Indian Raiway Act, 1890 (9 of 1890) and the Indian Railway Establishment Code and who are employed in any Scheduled employment in Railways.

[No. S-32014 (2)/77-WC (MW)]

H. R. CHHABRA, Dy. Secy.

नई दिल्ली, 4 जनवरी, 1978

का० आ० 211.—केन्द्रीय सरकार, कोयला खान श्रम कल्याण निधि अधिनियम, 1947 (1947 का 32) की धारा 5 की उपधारा (5) के अनुसरण में, वर्ष 1977-78 के दौरान कोयला खान श्रमिक गृह और सामान्य कल्याण निधि के सामान्य कल्याण खाते में प्राप्तियों और उसमें से व्यय का निम्नलिखित प्राक्कलन, वर्ष 1976-77 के लेखा विवरण सहित, तथा वर्ष 1976-77 के दौरान उक्त निधि के सामान्य कल्याण खाते में से कालावधि वित्त घोषित कार्यकलापों की रिपोर्ट, प्रकाशित करती है, अर्थात् :—

भाग-I

1977-78 के दौरान प्राप्तियों और व्यय का प्राक्कलन

सामान्य कल्याण खाता

प्राप्ति	व्यय
4,38,28,000 रु०	4,38,28,000 रु० (जिसमें उधार भी सम्मिलित है)

भाग-II

वर्ष 1976-77 का लेखा विवरण

सामान्य कल्याण खाता

प्राप्ति		व्यय	
1. 1-4-1976 को प्रारम्भिक अतिशेष	1,86,40,923		
2. वर्ष के दौरान व्यय		3,83,50,000 रु०	
3. वर्ष के दौरान प्राप्ति	3,91,34,800		
4. 31-3-1977 को अन्तिम अतिशेष			1,94,25,723
	5,77,75,723		5,77,75,723

टिप्पणी:—ऊपर दिखाये गये आंकड़े अनन्तिम हैं, क्योंकि 1976-77 का लेखा अभी बन्द नहीं किया गया है।

भाग-III

वर्ष 1976-77 के दौरान वित्तपोषित कार्यकलापों की रिपोर्ट

1. चिकित्सा सुविधायें:

(क) अस्पताल : तीन केन्द्रीय अस्पताल, धनबाद, आसनसोल और मानेन्द्रगढ़ में एक-एक, और विभिन्न कोयला क्षेत्रों में स्थित 12 क्षेत्रीय अस्पताल, कार्य करते रहे। धनबाद, आसनसोल और मानेन्द्रगढ के केन्द्रीय अस्पतालों की शैया संख्या क्रमशः 300

350, और 100 थी। चान्दा कोयला क्षेत्र में एक क्षेत्रीय अस्पताल की स्थापना के बारे में सक्रिय रूप से विचार की जा रही थी और अब अस्पताल को बल्लारपुर के बजाय हिन्दुस्तान लालपेट कोलियरी में स्थापित करने के लिये अन्तिम रूप से निश्चय कर लिया गया है। तलचर कोयला क्षेत्र में राष्ट्रीय कोयला विकास निगम के अस्पताल में, निधि द्वारा उस कोयला क्षेत्र में एक क्षेत्रीय अस्पताल की व्यवस्था के विकल्प के रूप में यथोचित आवर्ती तथा अनावर्ती अनुदान देकर, एक विशेष वार्ड की व्यवस्था के लिये मंजूरी दे दी गई है।

(ख) औषधालयः—मुग्मा कोयला क्षेत्र में एक एलोपैथिक स्थाई औषधालय, असाम कोयला क्षेत्र में एक चल चिकित्सा एकक और विभिन्न कोयला क्षेत्रों में 29 आयुर्वेदिक औषधालय कार्य करते रहे। अपेक्षित आयुर्वेदिक औषधियों के विनिर्माण के लिये झरिया कोयला क्षेत्र में केन्द्रीय आयुर्वेदिक औषधालय भी कार्य करता रहा।

(ग) कुटुम्ब कल्याण और प्रसूति तथा बाल कल्याण केन्द्रः—संगठन के प्रत्येक क्षेत्रीय अस्पताल से संलग्न कुटुम्ब कल्याण केन्द्र कार्यरत रहा। इसके अतिरिक्त, संगठन द्वारा पहले से स्थापित ऐसे दो केन्द्र, एक बारगोलाई में और दूसरा तलचर में, अर्हित महिला स्वास्थ्य परिदर्शकों के भारसाधन में स्वतन्त्र एककों के रूप में भी कार्य करते रहे। चांदा कोयला क्षेत्र कोलियरी कर्मकारों के फायदों के लिये सरकारी अस्पताल, चांदा से संलग्न ब्लाक बराबर काम करता रहा।

(घ) औषधालय सेवाओं को सुधारने के लिये वित्तीय सहायताः—कोलियरी कर्मकारों और उनके आश्रितों के फायदे के लिये कोलियरियों में औषधालयों का स्तर सुधारने के लिये कोलियरी प्रबन्धकों को प्रोत्साहित करने के लिये सहायतार्थ अनुदान देने की स्कीम चालू रखी गई तथा कोलियरी प्रबन्धकों को इस वर्ष के दौरान कोलियरी कर्मकारों के लिये औषधालय सेवाओं की व्यवस्था करने के लिये 6.17 लाख रुपये की रकम दी गई।

(ङ) यक्ष्मा से पीड़ित कोलियरी कर्मकारों और उनके आश्रितों के इलाज के लिये, संगठन के अपने यक्ष्मा अस्पतालों में 312 शैयाओं की व्यवस्था के अतिरिक्त, उनके लिये विभिन्न यक्ष्मा आरोग्याश्रमों में 56 शैयायें आरक्षित रहीं। यक्ष्मा की गृहोप चर्या की स्कीम चालू रखी गई और इस स्कीम के अधीन इलाज कराने वाले यक्ष्मा रोगियों को अनुसूची के अनुसार निर्वाह भत्ता भी दिया जाता रहा। उस अवधि के दौरान इस स्कीम पर 1.96 लाख रु० की राशि व्यय की गई।

(च) भारतीय श्रम संगठन परियोजना के अधीन प्रबन्धकों कल्याण निधि द्वारा चलाये गये कोयला खानों, लौह, अभ्रक, और चूना पत्थर तथा डोलोमाइट खानों के विभिन्न केन्द्रीय/प्रादेशिक अस्पतालों में 29 परिवार कल्याण केन्द्र खोलकर इस वर्ष के दौरान परिवार नियोजन को सुदृढ़ किया गया है। इन सभी अस्पतालों में, जहां परिवार कल्याण केन्द्र स्थित हैं, पात्र दम्पत्ति सर्वेक्षण का तैयार करना, अभिप्रेरण प्रयोजनों के लिये और परम्परागत निरोधों के प्रदाय के लिये परिवार कल्याण कर्मकारों द्वारा कोलियरी कर्मकारों के निवास स्थानों पर जाने के अतिरिक्त बन्ध्यकरण आपरेशन (नसबन्दी और ट्यूबक्टोमी) किये जा रहे हैं। परिवार कल्याण कार्यक्रम के लिये तीनों क्षेत्रों अर्थात् एक बिहार में, एक पश्चिमी बंगाल में और एक मध्य प्रदेश में, 3 जीपें (डीजल) दी जा रही हैं। इन विभिन्न परिवार कल्याण केन्द्रों को प्रदाय करने के लिये उपस्कर और औजार प्राप्त किये जाते हैं। श्रव्य-दृश्य उपस्कर भी प्राप्त हो गया है और यह परिवार कल्याण केन्द्रों को तब दिया जायेगा जब कर्मचारिवृन्द को उपस्कर आदि के प्रयोग का प्रशिक्षण दे दिया जायेगा। अप्रैल, 1976 से फरवरी, 1977 तक इन 29 केन्द्रों में 5621 नसबन्दी और 2745 ट्यूबेक्टोमी के आपरेशन किये गये। इसके अतिरिक्त निधि के अस्पतालों के चिकित्सा और पैरा-चिकित्सा कर्मचारिवृन्द इस वर्ष के दौरान लगाये गये विभिन्न कैम्पों में सेवायें (बाध्यकरण आपरेशन) देने में राज्य सरकार प्रबन्धकों के अस्पतालों की सहायता करते रहे।

(छ) पुनर्वास: धनबाद और आसनसोल के केन्द्रीय अस्पतालों में से प्रत्येक से संलग्न पुनर्वास केन्द्र कार्य करते रहे। मध्य प्रदेश कोयला क्षेत्र में छिन्दवाड़ा में पुनर्वास केन्द्र भी कार्य करता रहा। पश्चिमी बंगाल में सिधवाड़ी में पुनर्वास एवं उत्लाघ गृह ने कार्य करना आरम्भ कर दिया है।

(ज) अन्य चिकित्सा सुविधायें:—चिकित्सीय और लोक स्वास्थ्य की दिशा में इस संगठन के अन्य महत्वपूर्ण क्रियाकलाप हैं, कैंसर कोढ़ और मानसिक रोगों के इलाज के लिये सुविधाओं की व्यवस्था, धनबाद और आसनसोल के केन्द्रीय अस्पतालों में रक्त बैंक चलाना, कोलियरी कर्मकारों को एनको और कृत्रिम दन्तावली का मुफ्त प्रदाय, मलेरिया तथा फाइलेरिया नियंत्रण कार्य आदि आदि।

2. शिक्षा तथा आमोद प्रमोद विषयक सुविधाएं

(क) इस प्रयोजन के लिए महत्वपूर्ण क्रियाकलापों को प्रकाश में लाने वाले कुछ सुसंगत आंकड़े नीचे दिए गए हैं:—

(i) बहुउद्देशीय संस्थान	60	
(ii) प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र	3	(60 बहुउद्देश्यीय संस्थानों को छोड़कर)
(iii) महिला कल्याण केन्द्र	4	
(iv) पोषक प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र	163	
(v) कोलियरी कर्मकारों के बच्चों को छात्रवृत्तियां	547	
(vi) विद्यालय के लिए छात्रावास	1	
(vii) अवकाश-गृह	2	

कोयला पांच चुने हुए उम्मीदवारों में से जिनमें से एक प्रतीक्षा सूची में था, चार को पाटलीपुत्र मेडीकल कालिज में खनिकों के पुत्र-पुत्रियों के लिए संरक्षक सीटों पर प्रवेश दिया गया।

(ख) खेल और क्रीड़ा:

कोलियरी कर्मकारों के मनोरंजन के लिए प्रत्येक वर्ष खेलों और क्रीड़ाओं का आयोजन किया जाता है। वर्ष 1976-77 के दौरान विभिन्न खेलों और क्रीड़ाओं के आयोजन के लिए संगठन द्वारा 1.60 लाख रु० की रकम खर्च की गई।

(ग) अन्य क्रिया-कलाप:

इस सम्बन्ध में दी गई अन्य सुविधाओं में (1) शिक्षा संस्थाओं को सहायतार्थ अनुदान, (2) कोयला खनिकों के आश्रितों को छात्रवृत्ति, (3) कोयला खनिकों के लिए खेल और क्रीड़ा की व्यवस्था, (4) फिल्मों का प्रदर्शन, और (5) खानों में दुर्घटनाओं में मरने वाले कोलियरी कर्मकारों की पत्नियों और विद्यालय जाने वाले उनके बच्चों को वित्तीय सहायता की व्यवस्था आदि है।

(3) (क) **जल प्रदाय स्कीम** :

इस वर्ष के दौरान, 7.64 लाख रु० की रकम जल प्रदाय स्कीमों पर खर्च की गई है। यह संगठन, जल-प्रदाय स्कीम में जैसा विहित है उसके अनुसार, संवीक्षित व्यय के कुल खर्चे के 50 प्रतिशत तक कोलियरी प्रबन्धकों को सहायतार्थ अनुदान देता रहा। पश्चिमी बंगाल और बिहार राज्य सरकारों द्वारा निष्पादित और निधि द्वारा अंशतः वित्तपोषित दो एकीकृत स्कीमों में से पूर्ववर्ती एक में कार्य आरम्भ हो चुका है और पश्चात्वर्ती निष्पादन अधीन रही ।

(ख) **कुओं की खुदाई** :

अब तक पूरे किए गए कुओं की कुल संख्या 296 है। रिपोर्ट से संबंधित अवधि के दौरान 20 कुएं खोदने की स्वीकृति दी गई थी

4. **सहकारी आन्दोलन** :

इस वर्ष के दौरान कोई भी नए ग्राहमरी स्टोर, सहकारी उधार सोसाइटी और थोक या केन्द्रीय सहकारी स्टोर नहीं खोले गए । पुनर्विलोकनाधीन अवधि के अन्त में कोलियरी कर्मकारों के सहकारी स्टोरों और उधार सोसाइटियों की संख्या 579 थी। इनमें ऐसे 12 थोक या केन्द्रीय सहकारी स्टोर भी थे जो पहले ही खोले गए थे और कोलियरी कर्मकारों के लिए कार्य करते रहे ।

[सं० जैड 16016/2/77-एम II]

New Delhi, the 4th January, 1978

S.O. 211.—In pursuance of sub-section (5) of section 5 of the Coal Mines Labour Welfare Fund Act, 1947 (32 of 1947), the Central Government hereby publishes the following estimates of receipts into and expenditure from the General Welfare Account of the Coal Mines Labour Housing and General Welfare Fund during the year 1977-78 together with a statement of the account for the year 1976-77 and a report on the activities financed during the year 1976-77 from the General Welfare Accounts of the said Fund, namely :—

PART I

Estimates of Receipts and expenditure during 1977-78

GENERAL WELFARE ACCOUNT

Receipt	Expenditure
Rs. 4,38,28,000	Rs. 4,38,28,000 (including loans)

PART II

Statement of Account for the year 1976-77

GENERAL WELFARE ACCOUNT

	Receipt	Expenditure
1. Opening balance as on 1-4-1976	1,86,40,923	
2. Expenditure during the year		3,83,50,000
3. Receipt during the year .	3,91,34,800	
4. Closing balance as on 31-3-1977		1,94,25,723
TOTAL	5,77,75,723	5,77,75,723

N.B. : The figures shown above are provisional as the accounts for 1976-77 have not yet been closed.

PART III

Report on the activities financed during the year 1976-77

1. Medical facilities.

(a) Hospitals.—The 3 Central Hospitals, one each at Dhanbad, Asansol and Manendragarh and 12 Regional Hospitals situated in different coalfields continued to function. The bed strength of the Central Hospital at Dhanbad, Asansol and Manendragarh was 300,350 and 100 respectively. The proposal for the establishment of a Regional Hospital in Chanda Coalfield remained under active consideration and it has finally been decided to be set up at Hindusthan Lalpeth Colliery instead of at Ballarpur. Provision of a specialised ward in the National Coal Development Corporation's Hospital in Talcher Coalfield by giving suitable recurring and non-recurring grant as an alternative to Fund's providing a Regional Hospital in that coalfield has been sanctioned.

(b) Dispensaries.—One Allopathic Statice Dispensary in Mugma Coalfield, one Mobile Medical Unit in Assam Coalfield and 29 Ayurvedic Dispensaries in various coallields were continued. A Central Ayurvedic Pharmacy in Jharia Coalfield to manufacture required Ayurvedic medicines also continued to function.

(c) Family Welfare and Maternity and Child Welfare Centre.

A Family Welfare Centre attached to each of the Regional Hospital of the Organisation remained in operation Besides, 2 such Centres one each at Bargolai and Talcher already established by the organisation also continued to function as independent units under the charge of qualified Lady Health Visitors. For the benefit of the colliery workers in Chanda Coalfield, the block attached to the Govt. Hospital, Chanda continued to function.

(d) Financial assistance for improving dispensary services.

With a view to encourage the colliery management for improving the standard of dispnsaries at the collieries for the benefit of colliery workers and their dependents, the scheme for the payment of grant-in-aid was continued and a sum of Rs. 6.17 lakhs was paid to the colliery management during the year for providing medical facilities to the colliery workers.

(e) For the treatment of colliery workers and their dependents suffering from T. B., besides provision of 312 beds at the organisation's own T.B. Hospitals, 56 beds remained reserved for them in different T.B. Sanatoria. The Scheme of Domiciliary T. B. Treatment continued to function and payment of subsistence allowance to the T. B. patients undergoing treatment under the scheme also continued to be made according to schedule. A sum of Rs. 4.96 lakhs was spent on this scheme during the period.

(f) The Family Welfare service has been strengthened during the year by opening 29 family Welfare Centres at various Central/Regional Hospitals of the Coal Mines, Iron, Mica and Limestone and Dolomite Mines run by the management Welfare Fund under the ILO/UNFPA project. All these hospitals where the Family Welfare Centres are located are conducting sterlisation operations (Vasectomy and Tubectomy(in addition to preparation of Eligible Couple Survey, visit to the residence of the workers of the collieries by the Family Welfare workers for motivation purposes and for supply of Conventional Contraceptives. 3 Jeeps (Diesel) are being supplied to the three regions i.e. one in Bihar, one in West Bengal and one in M.P. for Family Welfare Programme. Equipments and instruments are to be procured for supply to these various Family Welfare Centres. Audio Visual equipment has also been received and the same will be supplied to the Family Welfare Centres after the staff has been given training about the handling of the equipment etc. From April, 1976 to February 1977 5,621 Vasectomies and 2,745 Tubectomies were performed at these 29 Centres. In addition, the Medical and the Para-Medical staff of the Fund's hospitals assist the State Government/Management hospitals in giving services (Sterlisation operations) at the various camps held during the year.

(g) Rehabilitation—The Rehabilitation Centres attached to each of the Central Hospitals at Dhanbad and Asansol continued to function. The Rehabilitation Centre at Chhindwara in M.P. Coalfield also continued functioning. The Rehabilitation-cum-Convalescent Home at Sidhabari in West Bengal Coalfield started functioning.

(h) Other Medical Facilities.—Other important activities of the Organisation conducted on the medical and public health sides were provision of facilities for the treatment of Cancer, Leprosy and Mental cases, running of Blood Bank at the Central Hospitals at Dhanbad and Asansol, free supply

of spectacles and dentures to the colliery workers, Malaria and Filaria control operation etc. etc.

2. Educational and Recreation Facilities :

(a) Some relevant statistics high-lighting the important activities on this account are given below :—

(i) Multipurpose Institutes	60	
(ii) Adult Education Centres.	3	(excluding)
(iii) Women Welfare Centres.	4	(60 M.PTS)
(iv) Feeder Adult Education Centres.	163	
(v) Scholarship to the Children of colliery workers.	547	
(vi) Boarding Houses for school	1	
(vii) Holiday Home.	2	

Out of the five selected candidates including one in waiting list, were admitted in the Patliputra Medical College against reserved seats for sons and daughters of Colliery workers.

(b) Games and Sports.—Games and Sports are held every year to provide recreation to colliery workers. During the year 1976-77 for organising various games and sports a sum of Rs. 1.60 lakhs was spent by the organisation.

(c) Other activities .—Other important facilities provided in this connection comprise of. (1) grant-in-aid to the Educational Institutions, (2) Scholarship towards of coal miners, (3) provision for games and sports amongst coal miners, (4) exhibition of films, and (5) provision for financial assistance to the wives and school going children of colliery workers who died of accident in mines.

3. (a) Water Supply Scheme :

During the year, a sum of Rs. 7.64 lakhs has been spent on Water Supply Schemes. The organisation continued to pay grant-in-aid as prescribed in the Water Supply Scheme up to 50 per cent on the total cost of scrutinised expenditure to the colliery managements. Out of two integrated Water Supply Schemes executed by the State Governments of West Bengal and Bihar partly financed by the Fund the former one has been put to commission and the latter remained under execution.

(b) Sinking of wells :

Total number of wells so far completed is 296. During the period under report, sanction was accorded to sinking of 29 wells.

4. Cooperative Movement :

No new Primary Stores, Credit Cooperative Societies and Wholesale or Central Cooperative Stores were opened during the year. The total number of cooperative Stores and credit societies of colliery workers at the end of the period under review stood at 579. These included 12 Wholesale or Central Cooperative Stores already opened and continued functioning for colliery workers.

[No. Z-16016/2/77-MII]

नई दिल्ली, 5 जनवरी, 1978

का०आ० 212.—कोयला खान श्रम कल्याण निधि अधिनियम, 1947 (1947 का 32) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केन्द्रीय सरकार श्री एस० एन० सक्सेना, कल्याण आयुक्त (मुख्यालय) श्रम मंत्रालय को उनके कल्याण आयुक्त (मुख्यालय) के कर्तव्यों के साथ 3 दिसम्बर, 1977 (पूर्वाह्न) से कोयला खान कल्याण आयुक्त के रूप में नियुक्त करती है।

[सं० ए-22018/1/73-एम०-II भाग II]

पी० के० सेन, अवर सचिव

New Delhi, the 5th January, 1978

S.O. 212.—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 9 of the Coal Mines Labour Welfare Fund Act, 1947 (32 of 1947), the Central Government has appointed with effect from 3rd December, 1977 (fore-noon), Shri S. N. Saxena, Welfare Commissioner (Headquarters) in the Ministry of Labour as the Coal Mines Welfare Commissioner, in addition to his duties as Welfare Commissioner (Headquarters).

[No. A-22018/1/73-M.II-Part II]

P. K. SEN, Under Secy.

नई दिल्ली, 6 जनवरी, 1978

का०आ० 213.—केन्द्रीय सरकार, कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948 (1948 का 34) की धारा 87 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड, कोचीन को, जो भारत सरकार के नौवहन और परिवहन मंत्रालय के अधीन पब्लिक सेक्टर उपक्रम है, उक्त अधिनियम के प्रवर्तन से 11 फरवरी, 1976 से 10 फरवरी, 1977 तक, जिसमें यह तारीख भी सम्मिलित है एक वर्ष की अवधि के लिए छूट देती है।

2. पूर्वोक्त छूट को शर्तें निम्नलिखित हैं, अर्थात्—

(1) उक्त कारखाने का नियोजक, उस अवधि की बाबत जिसके दौरान उस कारखाने पर उक्त अधिनियम प्रवर्तमान था (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अवधि' कहा गया है), ऐसी विवरणियां, ऐसे प्ररूप में और ऐसी विशिष्टियों सहित देगा जो कर्मचारी राज्य बीमा (साधारण) विनियम, 1950 के अधीन उसे उक्त अवधि की बाबत देनी थी ;

(2) निगम द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (1) के अधीन नियुक्त किया गया कोई निरीक्षक, या निगम का इस निमित्त प्राधिकृत कोई अन्य पदधारी—

(i) धारा 44 की उपधारा (1) के अधीन, उक्त अवधि की बाबत दी गई किसी विवरणी की विशिष्टियों को सत्यापित करने के प्रयोजनार्थ; या

(ii) यह अभिनिश्चित करने के प्रयोजनार्थ कि कर्मचारी राज्य बीमा (साधारण) विनियम 1950 द्वारा यथा अपेक्षित रजिस्टर और अभिलेख, उक्त अवधि के लिए रखे गये थे या नहीं; या

(iii) यह अभिनिश्चित करने के प्रयोजनार्थ कि कर्मचारी नियोजक द्वारा दिए गए उन फायदों को, जिसके प्रतिफलस्वरूप इस अधिसूचना के अधीन छूट दी जा रही है, नकद में और वस्तु रूप में पाने का हकदार बना हुआ है या नहीं; या

(iv) यह अभिनिश्चित करने के प्रयोजनार्थ कि उस अवधि के दौरान जब उक्त कारखाने के सम्बन्ध में अधिनियम के उपबन्ध प्रवृत्त थे, ऐसे किन्हीं उपबंधों का अनुपालन किया गया था या नहीं;

निम्नलिखित कार्य करने के लिए सशक्त होगा :—

(क) प्रधान या अव्यवहित नियोजक से अपेक्षा करना कि वह उसे ऐसी जानकारी दे जिसे उपरोक्त निरीक्षक या अन्य पदधारी आवश्यक समझता है; या

(ख) ऐसे प्रधान या अव्यवहित नियोजक के अधिभोगाधीन किसी कारखाने, स्थापन, कार्यालय या अन्य परिसर में किसी भी उचित समय पर प्रवेश करना और उसके प्रभारी से यह अपेक्षा करना कि वह व्यक्तियों के नियोजन और मजदूरी के संदाय से संबंधित ऐसे लेखा, बहियां और अन्य दस्तावेज, ऐसे निरीक्षक या अन्य पदधारी के समक्ष प्रस्तुत करें और उसकी परीक्षा करने दें, या उन्हें ऐसी जानकारी दे जिसे वे आवश्यक समझते हैं; या

(ग) प्रधान या अव्यवहित नियोजक की, उसके अभिकर्ता या सेवक की, या ऐसे किसी व्यक्ति की जो ऐसे कारखाने, स्थापन, कार्यालय या अन्य परिसर में पाया जाए, या ऐसे किसी व्यक्ति की जिसके बारे में उक्त निरीक्षक या अन्य पदधारी के पास यह विश्वास

करने का युक्तियुक्त कारण है कि वह कर्मचारी है, परीक्षा करना; या

(घ) ऐसे कारखाने, स्थापन कार्यालय या अन्य परिसर में रखे गए किसी रजिस्टर, लेखाबही या अन्य दस्तावेज की नकल तैयार करना या उससे उद्धरण लेना।

व्याख्यात्मक ज्ञापन

इस मामले में पूर्वापेक्षी प्रभाव से छूट देनी आवश्यक हो गई है क्योंकि छूट के लिए प्राप्त आवेदन-पत्र की कार्रवाई पर समय लगा। तथापि, यह प्रमाणित किया जाता है कि कारखाना छूट का पात्र है। यह भी प्रमाणित किया जाता है कि पूर्वापेक्षी प्रभाव से छूट देने से किसी के हित पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

[सं० एस० 38014/19/76-एच०आई०]

New Delhi, the 6th January, 1978

S.O. 213.—In exercise of the powers conferred by section 87 of the Employees' State Insurance Act, 1948 (34 of 1948), the Central Government hereby exempts the Cochin Shipyard Limited, Cochin, a Public Sector Undertaking under the Ministry of Shipping and Transport from the operation of the said Act for a period of one year with effect from the 11th February, 1976 upto and inclusive of the 10th February 1977.

2. The above exemption is subject to the following conditions, namely :—

(1) The employer of the said factory shall submit in respect of the period during which that factory was subject to the operation of the said Act (hereinafter referred to as the said period), such returns in such form and containing such particulars as were due from it in respect of the said period under the Employees' State Insurance (General) Regulations, 1950 ;

2. Any Inspector appointed by the Corporation under sub-section (1) of section 45 of the said Act, or other Official of the Corporation authorised in this behalf shall, for the purposes of —

(i) verifying the particulars contained in any return submitted under sub-section (1) of section 44 for the said period ; or

(ii) ascertaining whether registers and records were maintained as required by the Employees' State Insurance (General) Regulations, 1950 for the said period; or

(iii) ascertaining whether the employees continue to be entitled to benefits provided by the employer in cash and kind being benefits in consideration of which exemption is being granted under this notification ; or

(iv) ascertaining whether any of the provisions of the Act has been complied with during the period when such provisions were in force in relation to the said factory ;

be empowered to —

(a) require the principal or immediate employer to furnish to him such information as he may consider necessary; or

(b) enter any factory, establishment, office or other premises occupied by such principal or immediate employer at any reasonable time and require any person found incharge thereof to produce to such Inspector or other official and allow him to examine such accounts, books and other documents relating to the employment of persons and payment of wages or to furnish to him such information as he may consider necessary; or

(c) examine the principal or immediate employer, his agent or servant, or any person found in such factory, establishment, office or other premises, or any person whom the said Inspector or other official has reasonable cause to believe to have been an employee; or

(d) make copies of or take extracts from, any register, account book or other document maintained in such factory, establishment, office or other premises.

EXPLANATORY MEMORANDUM

It has become necessary to give retrospective effect to the exemption in this case, as the processing of the application for exemption took time. However, it is certified that the factory is eligible for exemption. It is also certified that the grant of exemption with retrospective effect will not affect the interest of anybody adversely.

[No. S-38014/19/76-HI]

का०आ० 214.—केन्द्रीय सरकार, कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948 (1948 का 34) की धारा 87 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, और भारत सरकार के श्रम मंत्रालय की अधिसूचना संख्या का०आ० 3352 तारीख 18 सितम्बर, 1976 के अनुक्रम में भारत हैवी प्लेट्स एण्ड वैसल्स लिमिटेड, विशाखापटनम, आन्ध्र प्रदेश को उक्त अधिनियम के प्रवर्तन से पहली जुलाई, 1977 से 31 मार्च, 1978 तक, जिसमें यह दिन भी सम्मिलित है, की और अवधि के लिए छूट देती है।

2. पूर्वोक्त छूट की शर्तें निम्नलिखित हैं, अर्थात :—

(1) उक्त कारखाने का नियोजक, उस अवधि की बाबत जिसके दौरान उस कारखाने पर उक्त अधिनियम प्रवर्तमान था (जिसे इसमें इसके पश्चात 'उक्त अवधि' कहा गया है), ऐसी विवरणियां, ऐसे प्ररूप में और ऐसी विशिष्टियों सहित देगा जो कर्मचारी राज्य बीमा (साधारण) विनियम, 1950 के अधीन उसे उक्त अवधि की बाबत देनी थी;

(2) निगम द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (1) के अधीन नियुक्त किया गया कोई निरीक्षक, या निगम का इस निमित्त प्राधिकृत कोई अन्य पदधारी—

(i) धारा 44 की उपधारा (1) के अधीन, उक्त अवधि की बाबत दी गई किसी विवरणी की विशिष्टियों को सत्यापित करने के प्रयोजनार्थ; या

(ii) यह अभिनिश्चित करने के प्रयोजनार्थ कि कर्मचारी राज्य बीमा (साधारण) विनियम, 1950 द्वारा यथा अपेक्षित रजिस्टर और अभिलेख उक्त अवधि के लिए रखे गए थे या नहीं; या

(iii) यह अभिनिश्चित करने के प्रयोजनार्थ कि कर्मचारी, नियोजक द्वारा दिए गए उन फायदों को, जिसके प्रतिफलस्वरूप इस अधिसूचना के अधीन छूट दी जा रही है, नकद में और वस्तु रूप में पाने का हकदार बना हुआ है या नहीं; या

(iv) यह अभिनिश्चित करने के प्रयोजनार्थ कि उस अवधि के दौरान, जब उक्त कारखाने के सम्बन्ध में अधिनियम के उपबन्ध प्रवृत्त थे, ऐसे किन्हीं उपबन्धों का अनुपालन किया गया था या नहीं।

निम्नलिखित कार्य करने के लिए सशक्त होगा—

(क) प्रधान या अव्यवहित नियोजक से अपेक्षा करना कि वह उसे ऐसी जानकारी दे जिसे उपरोक्त निरीक्षक या अन्य पदधारी आवश्यक समझता है; या

(ख) ऐसे प्रधान या अव्यवहित नियोजक के अधिभोगाधीन किसी कारखाने, स्थापन, कार्यालय या अन्य परिसर में किसी भी उचित समय पर प्रवेश करना और उसके प्रभारी से यह अपेक्षा करना कि वह व्यक्तियों के नियोजन और मजदूरी के सन्दाय से संबंधित ऐसे लेखा, बहियां और अन्य दस्तावेज ऐसे निरीक्षक या अन्य पदधारी के समक्ष प्रस्तुत करें और उनकी परीक्षा करने दें, या उन्हें ऐसी जानकारी दे जिसे वे आवश्यक समझते हैं; या

(ग) प्रधान या अव्यवहित नियोजक की, उसके अभिकर्ता या सेवक की, या ऐसे किसी व्यक्ति की जो ऐसे कारखाने, स्थापन कार्यालय या अन्य परिसर में पाया जाए, या ऐसे किसी व्यक्ति की जिसके बारे में उक्त निरीक्षक या अन्य पदधारी के पास यह विश्वास करने का युक्तियुक्त कारण है कि वह कर्मचारी है, परीक्षा करना; या

(घ) ऐसे कारखाने, स्थापन, कार्यालय या अन्य परिसर में रखे गए किसी रजिस्टर, लेखाबही या अन्य दस्तावेज की नकल तैयार करना या उससे उद्धरण लेना।

व्याख्यात्मक ज्ञापन

इस मामले में छूट की पूर्वापेक्षी प्रभाव देना आवश्यक हो गया है, क्योंकि छूट के मंजूरी संबंधी प्रस्ताव पर कार्रवाई करने में समय लगा। तथापि, यह प्रमाणित किया जाता है कि जिन परिस्थितियों में कारखाने को मूल रूप में छूट प्रदान की गई थी, वे अभी तक भी विद्यमान है और कारखाना छूट के लिए पात्र है। यह भी प्रमाणित किया जाता है कि पूर्वापेक्षी प्रभाव छूट की मंजूर किसी भी व्यक्ति के हित पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालेगी।

[सं० एस०-38014/10/77-एच०आई०]

S.O. 214.—In exercise of the powers conferred by section 87 of the Employees' State Insurance Act, 1948 (34 of 1948) and in continuation of the notification of the Government of India in the Ministry of Labour No. S.O. 3352 dated the 18th September, 1976, the Central Government hereby exempts the Bharat Heavy Plate and Vessels Limited, Visakhapatnam from the operation of the said Act for a further period from the 1st July, 1977 upto and inclusive of the 31st March, 1978.

2. The above exemption is subject to the following conditions, namely :—

(1) The employer of the said factory shall submit in respect of the period during which that factory was subject to the operation of the said Act (hereinafter referred to as the said period), such returns in such form and containing such particulars as were due from it in respect of the said period under the Employees' State Insurance (General) Regulation, 1950;

2. Any Inspector appointed by the Corporation under sub-section (1) of section 45 of the said Act, or other Official of the Corporation authorised in this behalf shall, for the purposes of—

(i) verifying the particulars contained in any return submitted under sub-section (1) of section 44 for the said period; or

(ii) ascertaining whether registers and records were maintained as required by the Employees' State Insurance (General) Regulations, 1950 for the said period; or

(iii) ascertaining whether the employees continue to be entitled to benefits provided by the employer in cash and kind being benefits in consideration of which exemption is being granted under this notification; or

(iv) ascertaining whether any of the provisions of the Act has been complied with during the period when such provisions were in force in relation to the said factory;

be empowered to—

(a) require the principal or immediate employers to furnish to him such information as he may consider necessary; or

(b) enter any factory, establishment, office or other premises occupied by such principal or immediate employer at any reasonable time and require any person found incharge thereof to produce to such Inspector or other official and allow him to examine such accounts, books and other documents relating to the employment of persons and payment of wages or to furnish to him such information as he may consider necessary; or

(c) examine the principal or immediate employer, his agent or servant, or any person found in such factory, establishment, office or other premises, or any person whom the said Inspector or other official has reasonable cause to believe to have been an employee; or

(d) make copies of or take extracts from, any register, account book or other document maintained in such factory, establishment, office or other premises.

EXPLANATORY MEMORANDUM

It has become necessary to give retrospective effect to the exemption in this case, as the processing of the application for exemption took time. However, it is certified that the conditions under which the factory was initially granted exemption still persist and the factory is eligible for exemption. It is also certified that the grant of exemption with retrospective effect will not affect the interest of anybody adversely.

[No. S-38014/10/77-HI]

का०आ० 215.—केन्द्रीय सरकार, कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948 (1948 का 34) की धारा 87 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, और भारत सरकार के श्रम मंत्रालय की अधिसूचना सं० का०आ० 2934 तारीख 31 अगस्त, 1977 के अनुक्रम में दी हिन्दुस्तान एयरोनैटिक्स लिमिटेड, कानपुर को उक्त अधिनियम के प्रवर्तन से 1 नवम्बर, 1977 से 30 अप्रैल 1978 तक जिसमें यह दिन भी सम्मिलित है की और अवधि के लिए छूट देती है।

2. पूर्वोक्त छूट की शर्तें निम्नलिखित हैं, अर्थात् :—

(1) उक्त कारखाने का नियोजक, उस अवधि की बाबत जिसके दौरान उस कारखाने पर उक्त अधिनियम प्रवर्तमान था (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त अवधि' कहा गया है), ऐसी विवरणियां, ऐसे प्ररूप में और ऐसी विशिष्टियों सहित देगा जो कर्मचारी राज्य बीमा (साधारण) विनियम, 1950 के अधीन उसे उक्त अवधि की बाबत देनी थीं;

(2) निगम द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (1) के अधीन नियुक्त किया गया कोई निरीक्षक या निगम का इस निमित्त प्राधिकृत कोई अन्य पदधारी—

(i) धारा 44 की उपधारा (1) के अधीन, उक्त अवधि की बाबत दी गई किसी विवरणी की विशिष्टियों को सत्यापित करने के प्रयोजनार्थ; या

(ii) यह अभिनिश्चित करने के प्रयोजनार्थ कि कर्मचारी राज्य बीमा (साधारण) विनियम, 1950 द्वारा यथा अपेक्षित रजिस्टर और अभिलेख उक्त अवधि के लिए रखे गये थे या नहीं; या

(iii) यह अभिनिश्चित करने के प्रयोजनार्थ कि कर्मचारी, नियोजक द्वारा दिए गए उन फायदों को, जिसके प्रतिफलस्वरूप इस अधिसूचना के अधीन छूट दी जा रही है, नकद में और वस्तु रूप में पाने का हकदार बना हुआ है या नहीं; या

(iv) यह अभिनिश्चित करने के प्रयोजनार्थ कि उस अवधि के दौरान, जब उक्त कारखाने के सम्बन्ध में अधिनियम के उपबन्ध प्रवृत्त थे; ऐसे किन्हीं उपबंधों का अनुपालन किया था या नहीं;

निम्नलिखित कार्य करने के लिए सशक्त होगा—

(क) प्रधान या अव्यवहित नियोजक से अपेक्षा करना कि वह उसे ऐसी जानकारी दे जिसे उपरोक्त निरीक्षक या अन्य पदधारी आवश्यक समझता है; या

(ख) ऐसे प्रधान या अव्यवहित नियोजन के अधिभोगाधीन किसी कारखाने स्थापन कार्यालय या अन्य परिसर में किसी भी उचित समय पर प्रवेश करना और उसके प्रभारी से यह अपेक्षा करना कि वह व्यक्तियों के नियोजन और मजदूरी के संदाय से संबंधित ऐसे लेखा, बहियां और अन्य दस्तावेज, ऐसे निरीक्षक या अन्य पदधारी के समक्ष प्रस्तुत करें और उनकी परीक्षा करने दें या उन्हें ऐसी जानकारी दे जिसे वे आवश्यक समझते हैं; या

(ग) प्रधान या अव्यवहित नियोजक की, उसके अभिकर्ता या सेवक की या ऐसे किसी व्यक्ति की जो ऐसे कारखाने, स्थापन, कार्यालय या अन्य परिसर में पाया जाए, या ऐसे किसी व्यक्ति की जिसके बारे में उक्त निरीक्षक या अन्य पदधारी के पास यह विश्वास करने का युक्तियुक्त कारण है कि वह कर्मचारी है, परीक्षा करना; या

(घ) ऐसे कारखाने, स्थापन, कार्यालय या अन्य परिसर में रखे गए किसी रजिस्टर, लेखाबही या अन्य दस्तावेज की नकल तैयार करना या उससे उद्धरण लेना।

व्याख्यात्मक ज्ञापन

इस मामले में पूर्वापेक्षी प्रभाव से छूट देनी आवश्यक हो गई क्योंकि छूट के लिए प्राप्त आवेदन पत्र की कार्रवाई पर समय लगा। तथापि, यह प्रमाणित किया जाता है कि जिन परिस्थितियों में कारखाने को आरंभ में छूट दी गई थी वे अभी भी विद्यमान हैं और कारखाना छूट का पात्र है। यह भी प्रमाणित किया जाता है कि पूर्वापेक्षी प्रभाव से छूट देने से किसी के हित पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

[सं० एस-38014/11/77-एच०आई०]

एस० एस० सहस्रनामन, उप सचिव

S.O. 215.—In exercise of the powers conferred by section 87 of the Employees' State Insurance Act, 1948 (34 of 1948) and in continuation of the notification of the Government of India in the Ministry of Labour No. S.O. 2934 dated the 31st August, 1977, the Central Government hereby exempts the Hindustan Aeronautics Limited, Kanpur from the operation of the said Act for a further period of six months with effect from the 1st November, 1977 upto and inclusive of the 30th April, 1978.

2. The above exemption is subject to the following conditions namely :—

(1) The employer of the said factory shall submit in respect of the period during which that factory was subject to the operation of the said Act (hereinafter referred to as the said period), such returns in such from and containing such particulars as were due from it in respect of the said period under the Employees' State Insurance (General) Regulation, 1950;

2. Any Inspector appointed by the Corporation under sub-section (1) of section 45 of the said Act, or other Official of the Corporation authorised in this behalf shall, for the purposes of—

(i) verifying the particulars contained in any return submitted under sub-section (1) of section 44 for the said period; or

(ii) ascertaining whether registers and records were maintained as required by the Employees' State Insurance (General) Regulations, 1950 for the said period; or

(iii) ascertaining whether the employees continue to be entitled to benefits provided by the employer in cash and kind being benefits in consideration of which exemption is being granted under this notification; or

(iv) ascertaining whether any of the provisions of the Act has been complied with during the period when such provisions were in force in relation to the said factory;

be empowered to—

(a) require the principal or immediate employer to furnish to him such information as he may consider necessary; or

(b) enter any factory, establishment, office or other premises occupied by such principal or immediate employer at any reasonable time and require any person found incharge thereof to produce to such Inspector or other official and allow him to examine such accounts, books and other documents relating to the employment of persons and payment of wages or to furnish to him such information as he may consider necessary; or

(c) examine the principal or immediate employer, his agent or servant, or any person found in such factory, establishment, office or other premises, or any person whom the said Inspector or other official has reasonable cause to believe to have been an employee; or

(d) make copies of or take extracts from, any register, account book or other document maintained in such factory, establishment, office or other premises.

EXPLANATORY MEMORANDUM

It has become necessary to give retrospective effect to the exemption in this case, as the processing of the application for exemption took time. However, it is certified that the conditions under which the factory was initially granted exemption still persist and the factory is eligible for exemption. It is also certified that the grant of exemption with retrospecive effect will not affect the interest of anybody adversely.

[No. S-38014/11/77-HI]

S. S. SAHASRANAMAN, Dy. Secy.

नई दिल्ली, 13 जनवरी, 1978

का. आ. 216.—कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948 (1948 का 34) की धारा 1 की उपधारा (3) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार 22 जनवरी, 1978 को उस तारीख के रूप में नियत करती है, जिसको उक्त अधिनियम के अध्याय 4 (धारा 44 और 45 के सिवाय जो पहले ही प्रवृत्त की जा चुकी है) और अध्याय 5 और 6 (धारा 76 की उपधारा (1) और धारा 77, 78, 79 और 81 के सिवाय जो पहले ही प्रवृत्त की जा चुकी है)

के उपबन्ध राजस्थान राज्य के निम्नलिखित क्षेत्रों में प्रवृत्त होंगे, अर्थात् :—

"तहसील और जिला अजमेर में तबीजी ग्राम और अजमेर नगरपालिका की विस्तारित सीमा में आने वाले क्षेत्र ।"

[सं. एस. 38013/33/77-एच. आई]

एस. एस. सहस्रानामन, उप सचिव

New Delhi, the 13th January, 1978

S.O. 216.—In exercise of the powers conferred by sub-section (3) of section 1 of the Employees' State Insurance Act, 1948 (34 of 1948), the Central Government hereby appoints the 22nd January, 1978 as the date on whch the provisions of Chapter IV (except sections 44 and 45 which have already been brought into force) and Chapters V and VI (except sub-section (1) of section 76 and sections 77, 78, 79 and 81 which have already been brought into force] of the said Act shall come into force in the following areas in the State of Rajasthan, namely :—

"Areas falling within Tabiji Village, in Tehsil and Distrirt Ajmer and the extended limits of Ajmer Municipality."

[No. S-38013/33/77-HI]

S. S. SAHASRANAMAN, Dy. Secy.

New Delhi, the 7th January, 1978.

S.O. 217.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal-Cum-Labour Court No. 3, Dhanbad, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of M/s. Charki Mica Mining Co. Ltd., P. O. Kodarma, District Hazaribagh, and their workmen, which was received by the Central Government on the 27-12-1977.

CENTRAL GOVT. INDUSTRIAL TRIBUNAL-CUM-

LABOUR COURT NO. 3, DHANBAD

Reference No. 1 of 1974

PARTIES :

Employers in relation to the management of M/s. Charki Mica Mining Co. Ltd., P.O. Kodarma, Dist. Hazaribagh.

AND

Their workmen represented by Metalliferous Mine Workers Association, Kodarma.

APPEARANCES :

For Employers—Shri M. P. Singh, Director of the Company.

For Workmen—Shri S. N. Sahay, Secretary.

INDUSTRY : Mica STATE : Bihar

Dated, Dhanbad, the 17th December, 1977

AWARD

This is a reference U/s. 10(1)(d) of the Industrial Disputes Act, 1947, by the Govt. of India, Ministry of Labour under Order No. L-28011/8/73-IR.IV dated the 24th December'73. The schedule of reference is extracted below :—

SCHEDULE

"Whether the workman employed by M/s. Charki Mica Mining Co. Ltd., P.O. Kodarma, Distt. Hazaribagh are entitled to bonus at the rate of 20 per cent of earned wages during the accounting year commencing in 1971 ? If not, to what quantum of bonus are the workmen entitled for above-mentioned accounting year ?"

2. Three points have been raised on behalf of the management and a prayer has been made to decide them before taking up the dispute referred to in the reference. Contention is that if the points are upheld, the reference would be invalid and it would not be necessary to hear it on merits.

3. Before proceeding further I may mention that the sponsoring union was not in existence in 1966, rather, as it appears it came into existence in 1972.

4. First point raised on behalf of the management is that the dispute which is the subject matter of the reference is covered by a valid settlement dated September 12, 1966 arrived at between the management and their workmen and hence the Central Government had no jurisdiction to make the reference. The second contention is that no dispute was raised with the management and so there was no dispute to be referred to for bonus for the accounting year commencing in 1971.

5. References Nos. 25 of 1973 and 26 of 1973 were referred to by the Central Government in which the point in issue was the same as here and the parties to the dispute were the workmen of Nand & Samonta & Co., and the Company itself. Preliminary points similar to those raised here were placed before the Tribunal and after its decision the management went in writ under Articles 226 & 227 of the Constitution of India. The matter was heard by their Lordships of the Patna High Court and the points raised were upheld and it was said that the references were in competent as the Central Government could not have made the same when a settlement arrived at between the parties was still subsisting and there being no demand made on the management directly, raising of dispute before the R.L.C. and reference by the Central Government on the basis of the failure report was invalid.

6. The settlement dated 12th of September, 1966 is on record and M/s. Charki Mica Mining Co. Ltd., was one of the parties to the settlement bofore the R.L.C.(C) Dhanbad. I have already said above that the matter which came before their Lordships of the Patna High Court was raised by Nand & Samonata & Co., which was also a partyto the settlement above-mentioned.

7. Taking the first point I find that the settlement has not been terminated and was therefore subsisting when the present reference was made. Therefore, undoubtedly the Central Government had no jurisdiction to make the reference which is in competent.

8. Section 19 of the Industrial Disputes Act, 1947 deals with the period of operation of settlements and awards and Section 19(2) reads as follows :—

"Such settlement shall be binding for such period as is agreed upon by the parties, and if no such period is agreed upon, for a period of six months (from the date on which the memorandum of settlement is signed by the parties to the dispute), and shall continue to be binding on the parties after the expiry of the period aforesaid, until the expiry of two months from the date on which a notice in writing of an intention to terminate the settlement is given by one of the parties to the other party or parties to the settlement."

It would thus appear that a settlement will subsist for the period for which it had been agreed upon between the parties and if there is no agreed period then it will continue for a period of six months from the date on which the memorandum of settlement is signed by the parties and when it is terminated by a notice in writing it will continue to operate until the expiry of two months from the date on which that notice is given. Even when a settlement is for a fixed period it will not only continue to be binding for the duration of that period but thereafter also until it is terminated by a notice in writing and even thereafter it will continue for a period of two months more from the date of such notice.

9. Their Lordships while considering the writ application of Nand & Samonta & Co., referred to a Bench decision of the Patna High Court in Criminal writ jurisdiction Case No. 93, 102—106 of 1975 in the case of B. Samonta & G. Samonta and also to the case of National Carbon Co. (India)

Ltd., Vs. M. N. Gan (AIR. 1957 Calcutta 500) and also to the observations made in Cochin State Power, Light Corporation Ltd., Vs. its Workmen reported in 1964 (II) L.L.J. 100 as well as the case reported in A.I.R. 1973 Supreme Court 2272 and A.I.R. 1968 Supreme Court 585, the case of Employers of Tungabhadra Industries Ltd., Vs. the Workmen and the case of the Bangalore Woollen, Cotton & Silk Ltd., Vs. Workmen respectively. After considering the above cases their Lordships came to the conclusion that Section 19(2) of the Industrial Dispules Act, 1947 was mandatory and if no period had been given to terminate the settlement it would continue to be operative till it was terminated by a valid and proper notice.

10. It appears from the order in that writ application that this very settlement of 1966 was considered by their Lordships in an unreported case (C.W.J.C. Nos. 93, 102—106 of 1975) and it was observed that—

> "I am therefore of the opinion that the settlement arrived at on the 12th September, 1966 was in force during the relevant period and the employers had to pay bonus according to the rate agreed to by and between the parties....."

11. It is thus clear that the period for which the reference was made, there was a valid settlement subsisting and accordingly it was not competent for the Central Government to make the reference.

12. Coming to the other point I find that there is no material on record to show that any dispute was raised with the management before it was taken to the A.L.C. (C) Hazaribagh. Although it is said in the rejoinder dated 17-3-76 filed on behalf of the union that the demand was raised under letter No. MMWA/404/73 dated 12-10-73, no copy of that demand is on record and it is categorically denied on behalf of the management. From the failure report it appears that an industrial dispute had been raised before the management under letter No. MMWA/229/73 dated 23-2-73 and then there was another letter No. MMWA/404/73 dated 12-10-73. But there is no evidence that either the first letter or the second letter was served upon the management and the demand was refused. Therefore, there is a paucity of evidence on the point and it may very well be said that no demand was made with the management and the matter was taken to A.L.C. direct. In this connection I may refer to the case of Sindhu Re-settlement Corporation Ltd. Vs. Industrial Tribunal of Gujrat report in A.I.R. 1968 Supreme Court 529. It has been observed by their Lordships that—

> "If no dispute at all was raised by the respondents with the management any request sent by them to the Government would only be a demand by them and not an industrial dispute between them and their employer. An industrial dispute as defined, must be a dispute between employers and employers, employers and workmen and workmen and workmen. A mere demand to a Government without a dispute being raised by the workmen with their employer cannot become an industrial dispute."

13. Thus the two points raised on behalf of the management succeed and I am of opinion that the reference is incompetent.

This is my award.

S. R. SINHA, PRESIDING OFFICER

[No. L-28011/8/73-I.R-IV]
JAGDISH PRASAD, Under Secy.

New Delhi, the 12th January, 1978

S.O. 218.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal-Cum-Labour Court No. 3, P.O. Jagjivan Nagar, Dhanbad, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of M/s. M. N. Ghosh & Sons, Raising Contractors of Gua Ore Mine of M/s. Indian Iron & Steel Co. Ltd., District Singbhum, and their workmen, which was received by the Central Government on the 27th December, 1977.

CENTRAL GOVT. INDUSTRIAL TRIBUNAL-CUM-LABOUR COURT NO. 3, DHANBAD

Reference No. 4 of 1977

Old No. 39 of 1973

PARTIES :

Employers in relation to the management of M/s. M. N. Ghosh & Sons, Raising Contractors, Gua Ore Mines, P.O. Gua, Distt. Singbhum.

AND

Their workmen represented by United Mineral Workers' Union, P.O. Gua, Distt. Singbhum.

APPEARANCES :

For Employers—Shri S. K. Ghose, Partner of the Company.

For Workmen—Shri P. Mazumdar, General Secretary of the Union.

INDUSTRY : Iron Ore. STATE : Bihar.

Dated, Dhanbad, the 17th December, 1977

AWARD

This is a reference U/s 10(1)(d) of the Industrial Disputes Act, 1947, by the Govt. of India, Ministry of Labour and Rehabilitation, Dept. of Labour & Employment under Order No. L-29012/23/73-LRIV dated the 17th October 1973. The schedule of reference is as follows :—

SCHEDULE

> "Whether the action of M/s. M. N. Ghosh & Sons, Raising Contractors, Gua Ore Mines of M/s. Indian Iron and Steel Co. Ltd., P.O. Gua, Distt. Singbhum in discharging from services Sarvasri Etwa Singh, Jhari Ram and Soma, Miners with effect from 25th August, 1971 and Sri Soma Das miner with effect from the 13th September, 1971 was justified ? If not, to what relief are the workmen concerned entitled ?"

2. There is a settlement between the parties and prayer is to accept the terms of compromise and to dispose of the reference accordingly. Of the concerned workmen, Jhari Ram, Sona Das and Soma have put their signature and on behalf of the union the General Secretary and the Secretary have also put their signature. On behalf of the management one of the Partners has signed it and there are two witnesses who have also signed.

3. The terms of compromise seem to be quite fair and just. Each one of the concerned workmen is to get Rs. 5000 and then temporary employment specifically for a period of two months only in un-skilled category in any of the works under M/s. M. N. Ghosh & Sons.

4. As the parties have reached a settlement and the terms are quite fair and proper, I do not find any reason not to accept the compromise and to give an award in terms thereof.

5. This compromise was signed on 13-9-77 and on 3-12-77 a petition was filed not only by the three signatories of the compromise petition but also by Etwa Singh who has put his L.T.I. and their prayer is not to accept the compromise. I do not find any reason to accede to their request. The union as well as three of the four concerned workmen having entered into a compromise and the same being quite fair and proper it would not be at all justifiable to reject the compromise and to proceed de novo. The matter is pending since long and it is better that the concerned workmen may get some relief. This petition is therefore rejected.

6. The petition of compromise is incorporated in the award which will be in terms thereof and this is my award.

S. R. SINHA, Presiding Officer

BEFORE THE CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL

TRIBUNAL (NO. 2) DHANBAD

In the matter of an 'Industrial Dispute' under the Central Government (Labour Department) order of Reference No. L-29012/23/73-LR. IV Dt. 17-10-75.

AND

In the matter of Reference No. 4 of 1977.

BETWEEN

the Management of M/s. M. N. Ghosh & Sons contractors to M/s. Indian Iron & Steel Co. Ltd., P.O. Gua, Dist. Singhbhum, Bihar.

AND

their workmen represented by United Mineral Workers' Union, P.O. Gua, Dist. Singhbhum, Bihar.

THE HUMBLE JOINT PETITION

of the parties above named

MOST RESPECTFULLY SHEWETH :

1. That the above matter is pending adjudication before this Hon'ble Tribunal.

2. That the matter in dispute has been amicably settled between the parties on the following terms :

(a) M/s. M. N. Ghosh & Sons will pay and the four workmen concerned (viz. Etwa Singh, Jhari Ram, Soma and Soma Das) will each accept a sum of Rs. 5000 (Rupees five thousand) only in full and final settlement of all their claims against any dues from the said employers, M/s. M. N. Ghosh & Sons. After the payment subject only to clause (b) below, the said four workman will not have any claim whatsoever either against M/s. M. N. Ghosh & Sons or the principal employers, M/s. Indian Iron & Steel Co. Ltd.

(b) The said four workmen will be given purely temporary employment, specifically for a period of two months only, in unskilled category, in any of the Works under M/s. M. N. Ghosh & Sons. The said temporary employment will not confer any right for future employment under M/Ms. M. N. Ghosh & Sons or under the Principal employers, M/s. Indian Iron & Steel Co. Ltd.

(c) The amount mentioned in (a) above will be paid immediately after the Central Government Industrial Tribunal No. 3, Dhanbad accepts the terms of this settlement and passes an Award in terms thereof. The payments will be made at Gua in the presence of Shri P. Mazumdar, General Secretary of the Union.

3. That in view of the compromise as aforesaid, the parties do not desire to proceed any further in the matter.

In these circumstances, it is humbly prayed that Your Honour may kindly be pleased to accept the above terms of compromise and to dispose off the Reference, in terms thereof.

And for this act of kindness, your petitioners, as in duty bound, shall ever pray.

FOR

UNITED MINERAL WORKERS UNION

FOR AND ON BEHALF OF

M/s. M. N. GHOSH & SONS

1. (P. Mozoomdar)
General Secretary

2. (S. K. Rao)
Secretary

3. (Jhari Ram)
Concerned Workman

4. (Sona Das)
Concerned Workman

5. (Soma)
Concerned Workman

Witnesses :
1.
2.

(Sisir Kumar Ghosh)
Partner

S. R. SINHA, Presiding Officer,
[No. L-29012/23/73-LR-IV]
JAGDISH PRASAD, Under Secy.

Calcutta dated : 30-9-77.

New Delhi, the 13th January, 1978

S.O. 219.—In pursuance of section 17 of the Industrial Disputes Act, 1947 (14 of 1947), the Central Government hereby publishes the following award of the Central Government Industrial Tribunal-Cum-Labour Court No. 2, Bombay, in the industrial dispute between the employers in relation to the management of M/s. English Indian Clays Limited, Veli, Trivandrum and their workmen, which was received by the Central Government on 27-12-1977.

BEFORE THE CENTRAL GOVERNMENT INDUSTRIAL TRIBUNAL NO. 2, BOMBAY CAMP : TRIVANDRUM (KERALA)

Reference No. CGIT-2o3 of 1977

PARTIES :

Employers in relation to the management of Messrs English Indian Clays Limited, Veli Trivandrum.

AND

Their Workman Shri E. Badrudeen.

APPEARANCES

For the Employers—Shri N. Krishnan Kutty, Advocate.

For the Workmen—Shri R. Lakshmana Iyer, Advocate.

INDUSTRY : Clay Mines STATE : Kerala

Bombay, dated the 16th December, 1977

AWARD

The Government of India in the Ministry of Labour in exercise of the powers conferred on it under Section 10(1)(d) of the Industrial Disputes Act, 14 of 1947 has referred the following dispute to this Tribunal for adjudication as per its Order No. L-29012/4/76-D. III(B) dated 17-5-1977 :—

"Whether the action of the management of Messrs English Indian Clays Limited, Veli Trivandrum is justified in dismissing Shri E. Badarudeen, Mine Worker ? If not, what relief is he entitled to ?"

2. The facts as disclosed in the statement of claim filed by the Clay Workers Congress, Thonnakkal P.O., Tribandrum District are that the workman herein Badarudeen was employed in the Melthonnakkal Claymine of M/s. English Indian Clays Limited, Veli, Trivandrum (hereinafter referred to as 'the company') for the first time in November, 1973. He was dismissed from service on 30th June, 1976 after holding a domestic enquiry for the alleged misconduct of using obscene language against the Assistant Mines Manager Surakumar when he asked him (the workman) to dig the clay pit from the top and not from the bottom. The workman submits that the enquiry is conducted in violation of the principles of natural justice and that the charges against

him were all trumped up with a view to get rid of him as he proving to be a difficult trade union leader to deal with. It is claimed that during the relevant period the workman was Unit Secretary of the Clay Workers Congress at Melthonnakkal Mine. It is stated that the workman was not given an opportunity to file his objection to the Enquiry being conducted by the Assistant Personnel Officer Shri Thomas who is prejudicial against him. It is also complained that the workman was not permitted to have the assistance of a co-worker in conducting his defence in the enquiry. Objection is taken to the complainant Surakumar being engaged by the management to represent them before the Enquiry Officer. According to the Union a material witness in the case should not have been asked to represent the management at the enquiry. It is also alleged that the original enquiry proceedings are suppressed and in their place some other papers substituted. The workman further submits that the Enquiry Officer mis-read the evidence of the defence witnesses. They say that the management placed reliance on the past record of the workman in determining the quantum of punishment without giving him a reasonable opportunity to explain his past conduct. It is also said that the management should have sent a second notice to the workman enclosing a copy of the Enquiry Officer's report to enable him to show cause against the proposed punishment. For the above reasons the workman prays that the order of dismissal may be set aside and that he may be reinstated in service with full back wages and continuity of service.

3. The management in their preliminary written statement submits that the enquiry held by the Assistant Personnel Officer Thomas is quite proper, and that it does not contravene any of the principles of natural justice. They submit that since the workman was found guilty of wilful disobedience of lawful orders given by the Assistant Mines Manager and was also found guilty of having used very vulgar language against the Assistant Mines Manager at the time he was giving him instructions, and also having regard to his past service record the punishment of dismissal is proper. They submit that the workman is not entitled to any relief whatsover and this reference may be rejected. The management have also taken the plea that since the Union does not represent a substantial section of the workmen of the company it is not competent to espouse the cause of the workman herein.

4. The management filed a rejoinder to the statement of claim filed on behalf of the workman saying that they were not aware if the workman Badarudeen was an office-bearer of the Union. They deny the averment that the workman had actively participated in the negotiations carried on between the management and the Union at any time prior to the date of the incident. They deny the averment that the record of the Enquiry Proceedings has been in any way tampered with or substituted. They further submit that the workman not having raised any objection at the appropriate time to Thomas conducting the enquiry and after having fully participated in the enquiry he is estopped from questioning the competence of the Enquiry Officer to hold the enquiry. They also stated that it is not necessary to give a further opportunity to the workman to show cause against the punishment proposed. Nor is it necessary to send a copy of the enquiry Officer's report before awarding the punishment. They hay that as soon as the workman applied for a copy of the Enquiry Officer's report the same was furnished. They pray that this reference may be answered against the workman.

5. The workman filed a further statement to the rejoinder filed by the management denying the averments made therein.

6. On the above averments the following issues arise for consideration :

(1) Whether the enquiry is vitiated by non-observance of the principles of natural justice or for any other reason ?

(2) Whether the finding of guilty arrived at by the Enquiry Officer is warranted by the evidence placed on record ?

(3) Whether the punishment awarded by the General Manager is dis-proportionate to the gravity of the misconduct in question ?

(4) Whether the workman is entitled to the relief of reinstatement ?

(5) To what relief ?

7. The workman examined himself as WW-1 while the management examined the Enquiry Officer Thomas as EW-1.

Issue I :

(5) To what relief ?

8. The workman herein joined the service of the company in November, 1973 as an unskilled workman. The company carries on the business of digging clay and processing the same. The clay in question is used in the manufacture of Glazed paper. This company has got clay mines at Akkulam and Melthonnakkal in Trivandrum District and its procesing plant at Veli, Trivandrum city. At the Akkulam mine 76 persons work while at Melthonnakkal about 50 persons are engaged. In the processing plant at Veli about 80 workers are employed.

9. The workman WW-1 was engaged to work on the Melthonnakkal Clay Mine at the relevant time. On 10-6-1976 the Assistant Mines Manager Surakumar asked WW-1 not to dig the clay from the bottom of the mine but from the top. WW-1 got annoyed at this and called him "Compan" (an obscene word). When the Assistant Mines Manager turned round and asked him to repeat what he was saying WW-1 threw away the pick-axe and said "Myre idapadanu" (vulgar word). Thereupon the Assistant Mines Manager issued a show cause notice to him and also placed him under suspension pending enquiry. The workman refused to received the said notice and also continued to work in spite of the order of suspension. For disobedience of the orders of the Assistant Mines Manager and using abusive language against him and for refusing to accept the notice and to obey the order of suspension, charge-memos were issued to the workman. To these charge-memos, the explanations Ex. E-14 and E-15 were submitted by the workman. Thereafter Thomas EW1 was appointed as the Enquiry Officer. EW-1 issued Ex. E-11 to the workman informing him that the enquiry would be held on 21-6-1976 at 3 P.M. and that WW-1 should be present to cross-examine the management's witnesses and also to lead evidence in his defence. The enquiry was accordingly held on 21-6-1976 from 3.30 P.M. The enquiry proceedings recorded in Malayalam are marked as Ex. E-1. The Enquiry Officer's report is Ex. E-2 dated 24-6-1976 wherein he found the workman guilty of the aforesaid charges. The General Manager by his order dated 30-6-1976 accepted the Enquiry Officer's report and awarded the punishment of dismissal. The workman approached the Union for redressal of his grievance. On behalf of the workman the Union issued the letter Ex. E-7 dated 28-7-1976

to the management demanding reinstatement. The management stated that the enquiry was properly held and the punishment awarded was in order. The Union referred the matter to the Labour Enforcement Officer (C), Trivandrum requesting him to take up the matter in conciliation vide Ex. E-9 their letter dated 10-8-1976. The attempt at conciliation having failed the dispute is referred to this Tribunal for adjudication.

10. On behalf of the workman the following points are urged under this issue :—

(i) The enquiry record is tampered with.

(ii) The order appointing Thomas EW-1 as Enquiry Officer was not communicated to the delinquent with the result he could not raise any objection to Thomas conducting the enquiry. It is said that EW-1 is biased against the workman.

(iii) The management failed to issue reply to the explanations submitted by WW-1 to the show cause notice issued to him.

(iv) The list of witnesses the management proposed to examine at the enquiry was not furnished in advance.

(v) The complainant Surakumar was in charge of the conduct of this case for the management before the Enquiry Officer. It is said that the complainant cannot be a prosecutor also.

(vi) The management failed to furnish a copy of the enquiry Officer's report along with a notice indicating the quantum of punishment.

(vii) Without giving any opportunity to the workman to meet the case the management placed reliance on the past service record of the workman in determining the quantum of punishment.

(viii) The workman was denied the facility of engaging his co-worker in defence of his case before the Enquiry Officer.

Point (i) :

11. It is alleged that the original enquiry proceedings are suppressed and in its place a different set of papers substituted. According to WW-1 the Enquiry proceedings Ex. E-1 is a fabricated one and not the original. To this effect there is the evidence of the workman WW-1. The Enquiry Officer EW-1 denied this allegation. I am inclined to accept the evidence of EW-1 on this point. The Enquiry proceedings Ex. E-1 contains the admitted signatures of WW-1 in English on pages 1, 7, 9 (on page 9 there are three signatures of his) and 10 (pages are numbered by me for the sake of convenience of reference). EW-1 further stated that the workman's initials appear on the other pages. WW-1 denies the genuineness of the initials. At page 10 there is an endorsement under the signature of WW-1 to the effect that he received a copy of this proceedings on the same day. WW-1 denies the genuineness of that endorsement but not his signature below that. Ex. W-1 is a carbon copy of the Enquiry proceedings Ex. E-1. The signatures of WW-1 appearing on pages 7, 9 and 10 of Ex. E-1 do not appear on Ex. W-1. Nor does Ex. W-1 bear the initials of the workman or the signatures of any other person appearing on pages 2, 3, 4, 5, 7, 8, 9 and 10 of its original Ex. E-1. For this reason the workman is emboldened to take the plea that Ex. W-1 is not a carbon copy of Ex. E-1. But he admits his signatures on pages 1, 7, 9 and 10 in Ex. E-1. It cannot be therefore said that the corresponding pages in Ex. W-1 are not the carbon copies of those pages. The learned Advocate for the workman went to the extent of saying that Ex. E-1 itself is not the original but a substituted copy. Unless the workman accounts for his signature appearing on the several pages in Ex. E-1 this wild contention cannot be accepted. Further EW-1 has stated that the letter 'E' appearing on pages 1 to 7 in Ex. E-1 represents the initials of WW-1 taken in his presence. WW-1 denies the truth of that statement made by EW-1. I prefer to accept EW-1's evidence as he appears to be a disinterested witness. It is not even suggested to him that he is biased against the workman. The Enquiry Officer EW-1 further stated that the enquiry was conducted from 3.30 P.M. to 5.30 P.M. and at 5.30 P.M. he handed over a carbon copy of the proceedings (Ex. W-1) to WW-1. The workman WW-1 denied that Ex. W-1 is a carbon copy of Ex. E-1 while admitting having received the same at 5.30 P.M. He says that the enquiry was over by 3.30 P.M. and he was made to wait till 5.30 P.M. for getting a copy. During this period of two hours it is alleged that Ex. E-1 was fabricated. There is no basis for this allegation. The enquiry could not have commenced at 1 P.M. when the notice of enquiry Ex. E-11 fixed the time at 3 P.M. On behalf of the workman the Union issued a notice Ex. E-7 dated 28-7-1976 running into 4 typed pages. As many as 13 objections are taken therein to question the validity of the Enquiry Officer's findings. Nowhere is it stated that Ex. W-1 note a carbon copy of the original proceedings. Nor is it suggested therein that Ex. W-1 contained any incorrect particulars. Further WW-1 was specifically asked to give the reason for his saying that Ex. W-1 was not a faithful copy of the Enquiry proceedings. He could not give any satisfactory reply. In the course of his chief examination WW-1 stated that the evidence of MW-2 (Sankar) was materially tampered with in Ex. E-1. The Court asked him in what respects it was so tampered with. He could not give any reply. It is unnecessary to pursue this discussion further. Relying on the evidence of EW-1 and in view of the fact it contains WW-1's admitted signature I find that Ex. E-1 is the original enquiry proceedings and that Ex. W-1 is its carbon copy. Finally it was not disputed that Ex. W-1 is a carbon copy of Ex. E-1

Point (ii) :

12. It is true that the order passed by the management appointing Thomas EW-1 as the Enquiry Officer was not communicated to the workman. For this reason it is stated that the workman could not raise any objection at the appropriate time to Thomas conducting the enquiry. In the statement of claim it is stated that EW-1 is biased against the workman. In the cross-examination of EW-1 not a single question is put to him regarding his bias against WW-1 nor even a suggestion to that effect was made to him. After he was appointed as Enquiry Officer Thomas issued the notice Ex. E-11 dated 18-6-1976 informing WW-1 the date, time and venue of the enquiry. He was also told that he could cross-examine the management's witnesses and also bring witnesses in his defence. No protest was made in writing to EW-1 conducting the enquiry. During the course of the enquiry also there is nothing on record to show that WW-1 protested against EW-1 proceeding with the enquiry. Having fully participated in the enquiry conducted by EW-1 without a protest it is not open to the workman to accuse him of bias when once the finding was given against him. In his evidence also WW-1 has not stated how and for what reason EW-1 was

biased against him. I therefore hold that the plea of bias of the Enquiry Officer cannot be upheld.

Point (iii) :

13. It is pointed out that when the workman submitted the explanations Ex. E-14 and Ex. E-15 to the charge Memos. served on him, the management should have informed him whether the said explanations were found satisfactory or not. The learned Advocate for the management submits that the fact that an enquiry was ordered after the receipt of the explanations is sufficient to show that the explanations were not found acceptable. It is also not shown how the workman is prejudiced by the management not informing him that the explanations submitted to the charge-memos. were not found satisfactory. I see no merit in this contention.

Point (iv) :

14. It is said that the failure on the part of the management to furnish the workman sufficiently in advance a list of witnesses they proposed to examine at the enquiry has caused prejudice to the workman. The learned Advocate for the management submits that failure to submit the list of witnesses in advance does not vitiate the enquiry. It is also pointed out that the names of the management's witnesses were indicated in the charge-memos. served on the workman and at the time of enquiry no one other than those witnesses was examined. It may also be noticed that the workman could not have been taken by surprise by the management examining the only two material witnesses that were directly involved in the incident in question viz. Surakumar, Assistant Mines Manager, the person who was insulted and disobeyed and Sankar Supervisor, the eye-witness. No effort has been made to show as to how any prejudice has been caused to WW-1 by the list of witnesses not being furnished to him in advance. Further if WW-1 felt that he was handicapped by a list of management's witnesses not being furnished to him in advance he could have asked for adjournment of the enquiry on that ground. It is not the case of the workman that any such request was made for adjournment. It is said that the workman being ignorant of the procedure did not pray for adjournment on that ground. This cannot be believed for the workman was a unit Secretary of the trade union and he claims to have actively participated in conducting negotiation with the management prior to this enquiry.

Point (v) :

15. The Assistant Mines Manager Surakumar was directed by the management to present the management's case before the Enquiry Officer. The same person happens to be the complainant in the case and in that capacity he figured as a witness for the management. It is argued that the complainant could not act as prosecutor as it is opposed to the principles of natural justice. I do not agree with this contention. At the most Surakumar's role in the enquiry proceedings may amount to nothing more than a party conducting his own case in person. No prejudice can be said to have been caused to the workman on account of the Assistant Mines Manager Surakumar presenting the case, in which he was a complainant.

Point (vi) :

16. Point (vi) is not pressed by the learned Advocate for the workman

Point (vii) :

17. The learned Advocate for the workman urged that the General Manager in his order Ex. E-3 erred in relying on the past record of service of the workman in awarding the punishment of dismissal. According to the workman without giving him an opportunity to meet this case, the management should not be permitted to rely on the past service record to dismiss him from services. The learned Advocate for the management submitted that a reading of the order of the General Manager (Ex. E-3) clearly shows that the punishment of dismissal was imposed for the misconduct in question. He invites attention to the following passage in Ex. E-3 to substantiate this plea :

> "In the enquiry conducted in regard to the allegation of misconduct, you participated, cross-examined the witnesses and produced and examined your own witnesses. But you did not give any statement in the enquiry. It is not proved as per the enquiry evidence that the explanations submitted by you is true. On the other hand all the charges levelled against you have been proved. It is clear that you deserve the punishment of dismissal in view of the seriousness of the offence committed by you and in view of the discipline in the concern.
>
> Your past record of service is also taken into account to decide the nature of punishment to be imposed on you. For the misconduct of assaulting a driver of the company though you could have been dismissed, you are awarded only a punishment of 21 days suspension as a special case. It was specifically stated in the order issued on 19-5-1975 that in case any misconduct is noticed on your part in future serious action will be taken against you and you will be severely punished. Even after this order you are found to have committed very serious misconduct."

A reading of the above paragraphs clearly supports the stand taken by the learned Counsel for the management, namely the past service record was taken into consideration to see if there was any case to impose a lesser punishment.

Point (viii) :

18. It is submitted that the workman was not given an opportunity to engage any co-worker to conduct his defence before the Enquiry Officer. Admittedly no Memo. to this effect was submitted to the Enquiry Officer. The workman, WW-1 says that he made an oral request in that behalf to EW-1 and that EW-1 rejected the same. If this version were true it should have found a place among the several grounds urged in the notice Ex. E-7 dated 28-7-1976 which was a notice issued by the Union on behalf of WW-1 questioning the validity of the order of dismissal. The Enquiry Officer as EW-1 denied the truth of this case and I am inclined to accept his evidence in this regard.

19. On a careful perusal of the enquiry proceedings I hold that the enquiry was fairly conducted and that the workman was given ample opportunity to plead his case. Issue 1 held against the workman.

ISSUE 2 :

20. The case against the delinquent workman rests on the evidence of the Management's witnesses MW-1 and MW-2, Surakumar, Assistant Mines Manager and Sankar, Mines Supervisor respectively. Both of them have consistently spoken to the workman having uttered the obscene and derogatory words in question. The workman did not choose to get into the box to prove his version that the objectionable words were not addressed to MW-1, but to his co-worker. Instead two co-workers were examined as DWs 1 and 2 in support of this case. After considering the entire evidence the Enquiry Officer chose to place reliance on the evidence of the two management's witnesses. It is not shown how the Enquiry Officer erred in placing reliance on the evidence of those two witnesses. It is submitted that the enquiry officer was led away by the evidence of the Assistant Mines Manager by virtue of his position and also because of the fact that he was appointed as Presenting Officer by the management. I do not agree with this contention. Then it is urged that the evidence of the defence witnesses was misread by the Enquiry Officer. The attention of EW-1 was drawn to the following portion of the Enquiry Officer's report and he was asked if the evidence of DW 2 (Ahammed Kannu) supported that statement.

> "According to DW2, the delinquent came late in the afternoon and instead of going up he started working at the bottom."

The witness after going through the evidence stated that DW-2 did not state before him that the delinquent went to the work spot late that afternoon. The mistake if any does not affect the appreciation of the evidence on any material point and no other instance of mis-reading of the evidence has been brought to my notice.

21. It is then argued that the enquiry Officer did not discuss the defence evidence. I do not agree. A reading of the report clearly shows that the defence version also was considered. It may be noticed that when the workman himself did not choose to get into the box to speak to his version of the case the enquiry Officer was justified in accepting the version of the complainant MW-1 as corroborated by MW-2 in preference to that of the workman's witnesses DW-1 and DW-2. For the aforesaid reasons I hold that the findings recorded by the Enquiry Officer EW-1 are based on proper evidence.

22. Issue 2 held against the workman.

Issue 3 :

23. EW-1 during the course of his cros-examination was asked if R. Velayudhan and Sukumaran, two persons working in the processing plant at Veli were not given the punishment of suspension for the offence of using vulgar language against the management. He was also asked if a workman at Akkulam mine was also not similarly dealt with for a similar offence. The witness while admitting that fact stated that there must have been special circumstances to justify the action taken by the management, like tendering apology and praying for mercy by the workman concerned. The learned Advocate for the workman submits that WW-1 also should have been given the punishment of suspension and not that of dismissal. In the absence of the relevant records pertaining to the cases of Velayudhan and Sukumaran and the other workman including their past service record it is not possible to accept this contention of the learned Counsel for the workman that different standards were applied to the workman in question. It is not the case of the workman that the aforesaid three persons were charged for the misconduct of using abusive language against their immediate superior when he tried to direct the workman to do the work in a particular manner. It must be therefore held that the plea that more severe punishment is given to the workman herein then was given to the other persons referred to above for similar misconduct cannot be accepted.

24. Then it is submitted that the real reason for the dismissal of the workman is his trade union activity. A letter written by the Union on 8-1-1976 on its letter head addressed to the management is filed to show that the workman herein was taking active part in sponsoring the cause of the workmen. Only the letter head is relied upon for the purpose of showing that WW-1 was the General Secretary of this Union. It is true the workman herein is shown in the printed portion as one of the General Secretaries of the Union. The management disputes the claim of the workman that he was an active trade Union worker at any time. They filed a copy of the Memo. of settlement entered into between the parties on 7-7-1976 wherein the name of the workman WW-1 does not appear as a signatory to that agreement. No other document is filed to show that WW-1 had taken any active part in the trade Union activity. The workman in the course of his evidence stated that there are documents to show that he had participated in the discussions held between the company or the labour Department and the workman's union. Again he went back on that statement to say that no such documentary evidence is available. According to him he was elected to the office of the Unit Secretary about four years before his dismissal. The fact of his election he says must have been communicated to the company and that a copy of that letter must be available with the Union. EW-1 has stated that he was not aware if WW-1 was at any time an office bearer of this union. The above evidence of WW-1 is not sufficient to show that he was an active trade union worker and for that reason he was dismissed from service. The learned Advocate for the management submits that even if WW-1 was an office-bearer of the Union on the date of the misconduct he had no business to misbehave in the manner he did and in the matter of awarding punishment for misconduct no different standard can be applied to a workman just because he is an office bearer of the Union. An office-bearer of the Union should set an example to other members of the Union by behaving properly and showing the required respect to the lawful orders issued by him superiors. I find on the evidence placed before me that WW-1 failed to substantiate his plea that he was dismissed from service for his trade union activities.

25. From the facts of the cases I am not inclined to accept the contention that the punishment awarded to the workman is out of all proportion to the misconduct with which he was charged. However, I feel that the punishment of dismissal may be altered to one of the discharge from service to enable the workmen to claim retranchment compensation and one month's pay in lieu of notice. The workman joined the service of the company in November, 1973 and he was removed from service with effect from 30-6-1976. It is not disputed that he was being paid Rs. 400 per month at the time of his discharge. On this basis he will get retrenchment compensation for three years amounting to 1-1/2 month's pay i.e. Rs. 600 and one month's pay (Rs. 400) in lieu of notice

26. Issue 3 held accordingly.

Issue 4 :

27. In view of the findings on points 1 and 2 this point does not arise for consideration. Further the learned Advocate for the workman stated that the workman was not interested in seeking reinstatement.

28. Issue 4 found accordingly against the workman.

Issue 5 :

29. In the result the order of the management in terminating the services of the workman E. Badarudeen is justified. The order of dismissal is modified into one of discharge. On that basis the workman is held entitled to claim Rs. 1000 by way of retrenchment compensation and notice pay.

This reference is answered accordingly.

P. RAMAKRISHNA, Presiding Officer

[No. L-29012/4/76-D-III-B]

JAGDISH PRASAD, Under Secy.

नई दिल्ली, 9 नवम्बर, 1977

का० आ० 220.—केन्द्रीय सरकार, खान अधिनियम, 1952 (1952 का 35) की धारा 27 के अनुसरण में उक्त अधिनियम की धारा 24 की उपधारा (4) के अधीन उसे, उस दुर्घटना के जो बिहार राज्य के धनबाद जिले में चासनाला कोलियरी में 5 अप्रैल, 1976 को घटित हुई थी, कारणों और परिस्थितियों की जांच करने के लिए, भारत सरकार के श्रम मंत्रालय की अधिसूचना सं० का० आ० 1561 तारीख 20 अप्रैल, 1976 द्वारा, उक्त धारा के अधीन नियुक्त जांच न्यायालय द्वारा दी गई रिपोर्ट को प्रकाशित करती है।

बिहार राज्य के धनबाद जिले में चासनाला कोलियारी में 5 अप्रैल, 1976 को घटित दुर्घटना के कारणों और परिस्थितियों की जांच न्यायालय की रिपोर्ट :---

रिपोर्ट

आरम्भ :–

1. भारत सरकार ने श्रम मंत्रालय की तारीख 20 अप्रैल, 1976 की अधिसूचना द्वारा यह राय व्यक्त की कि चासनाला कोयला खान (जो बिहार राज्य के धनबाद जिले में स्थित है) में जो दुर्घटना 5 अप्रैल, 1976 को हुई तथा जिसके कारण जानी नुकसान हुआ, उसके कारणों और परिस्थितियों की जांच की जानी चाहिए और मुझे खान अधिनियम 1952 (1952 का 35) की धारा 24 की उपधारा (1) के अधीन यह जांच करने के लिए नियुक्त किया गया। जांच करने के लिए जिस अधिसूचना द्वारा जांच करने हेतु निम्नलिखित व्यक्तियों को भी निर्धारकों के रूप में नियुक्त किया गया अर्थात् :--

1. श्री सी० करुणाकरण, सेवानिवृत्त
   खान महानिदेशक, भारतीय भूसर्वेक्षण संस्था।
2. श्री जी० एस० मरवाह निदेशक,
   इंडियन स्कूल आफ माइन्स।
3. श्री दामोदर पांडे,
   संसद-सदस्य।

2. 5 अप्रैल, 1976 को जो हुआ, वह यह था कि उक्त दिन दोपहर के लगभग डेढ़ बजे मर्बरी बेड में जमा पानी चासनाला कोयला खान की 13/14 सीम में चला गया जिसका उल्लेख 3/4 इन्कलाइनों की पुरानी खदानों के रूप में किया गया है। परिणामस्वरूप एक सर्वेक्षक दल के पांच व्यक्ति मारे गए जो भूमि के नीचे की पुरानी खदानों में सर्वेक्षण कार्य कर रहे थे। इस दुर्घटना में जिन व्यक्तियों की जानें गईं, उनके नाम तथा उनके व्यवसाय नीचे दिए गए हैं :--

क्रमांक	नाम	व्यवसाय
1	2	3
1.	श्री एस० राय चौधरी . . .	सर्वेक्षक
2.	श्री आर० एन० बनर्जी . . .	सर्वेक्षक
3.	श्री फटिक ओझा . . .	चेनमैन
4.	श्री बल्लभ मोदक . . .	चेनमैन
5.	श्री सीता रामसिंह . . .	चेनमैन

3. प्रथम तीन व्यक्तियों के शव दुर्घटना की तारीख अर्थात् 5 अप्रैल, 1976 को 3/4 इन्कलाइनों की भूमि के नीचे की पुरानी खदानों में से बाहर निकाले गए। उन्हें इन्कलाइन नं० 4 में जे-स्तर के ठीक नीचे पाया गया। श्री बल्लभ मोदक का शव 8 अप्रैल, 1976 को उसी क्षेत्र से निकाला गया जहां से दुर्घटना की तारीख को अन्य तीन शव निकाले गए थे। श्री सीताराम सिंह का शव "पेक्चर पांइट" (जिस नाम से उसे अब पुकारा जाता है) के नीचे गहरी खान के पहले हारिजन् में मलबे में पाया गया। (जिन स्थानों से शव निकाले गए थे, पक्ष नं० 8 द्वारा प्रस्तुत एक प्लान में उन्हें प्रदर्श बी/1 मार्क करके दर्शाया गया है)। इस अवस्था पर यह उल्लेखनीय है कि कि इन्कलाइन 3/4 की भूमि की नीचे की खदानों में जो पानी जमा हो गया था, उसकी अत्यन्त भारी मात्रा तेजी से बह कर इस "पेक्चर" (जैसा कि इसे अब कहा जा रहा है) के रास्ते 27-12-1975 को गहरी खान में चला गया था, जिसके परिणामस्वरूप पहली दुर्घटना हुई थी।

4. जब मुझे 20-4-1976 की अधिसूचना की प्रति मिली तो मैं, और तीनों निर्धारकों जिनके नाम ऊपर दिए गए हैं, उस दुर्घटना के कारणों और परिस्थितियों की जांच कर रहे थे जो, 27-12-1975 को हुई थी। तब उक्त जांच में पेश हुए उनके पक्षकार भी उपस्थित थे। पहली जांच के संबंध में पेश होने वाले सभी पक्षों को निर्धारकों सहित, इस वर्तमान जांच न्यायालय के गठन की सूचना दे दी गई और इसी दूसरी जांच के संबंध में गठित जांच न्यायालय के बारे में पर्याप्त प्रचार किया गया। धनबाद के प्रमुख संगठनों को टाइपकृत नोटिस भेजे गए और यह जांच करने के बारे में एक नोटिस कोयला खान बचाव केन्द्र समिति, धनसार (जिला धनबाद) के प्रधान के परिसर में सूचना बोर्ड पर लगा दी गई। उक्त नोटिस द्वारा इस जांच न्यायालय की पहली बैठक 17 मई, 1976 को होनी निश्चित की गई और 17 मई, 1976 को निम्नलिखित पक्षकार पेश हुए :—

1. चसनाला कोयला खान का प्रबन्धक, जिनका प्रतिनिधित्व उनके लिखित आवेदन में उल्लिखित व्यक्ति करते हैं (उन्हें पक्षकार नं० 1 बनाया गया)।

2. दि इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस (इण्टक), इंडियन नेशनल माइन वर्कर्स फेडरेशन और राष्ट्रीय कोलियरी मजदूर संघ जो संयुक्त रूप से एक याचिका द्वारा पेश हुए हैं। (उन्हें पक्षकार नं० 2 बनाया गया)।

3. ऐसोसिएशन आफ इंडियन माइन सर्वेयर्ज जो आवेदन-पत्र में उल्लिखित व्यक्तियों के माध्यम से पेश हो रहा है। (इसे पक्षकार नं० 3 बनाया गया)।

4. आल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (एटक), इंडियन माइन वर्कर्स फेडरेशन और यूनाइटेड कोल वर्कर्स यूनियन जो उनके लिखित आवेदन-पत्र में उल्लिखित व्यक्तियों के जरिए पेश हो रहे हैं। (उन्हें पक्षकार नं० 4 बनाया गया)।

5. दि यूनाइटेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस (लेनिन सारणी) और बिहार कोल माइनर्स यूनियन जो लिखित आवेदन-पत्र में नामित किए गए व्यक्तियों के माध्यम से पेश हो रहे हैं। (उन्हें पक्षकार नं० 5 बनाया गया)।

6. धनबादि जिले के जिला अधिकारी जिनका प्रतिनिधित्व श्री जे० बी० लाला, लोक अभियोजक ने किया (उन्हें पक्षकार नं० 6 बनाया गया)।

7. सेण्टर आफ ट्रेड यूनियन्स, मजदूर सभा आफ इंडिया और बिहार कोलियरी कामगार यूनियन, धनबाद लिखित आवेदन पत्र में उल्लिखित व्यक्तियों के माध्यम से संयुक्त रूप से पेश हुए (उन्हें पक्षकार नं० 7 बनाया गया)।

8. खान सुरक्षा महानिदेशालय—श्री एस० पी० गांगुली के माध्यम से (इसे पक्षकार नं० 8 बनाया गया)।

9. इंडियन नेशनल माइन्स ओवर मैन, सिरदारज एण्ड शाट फायरर्स ऐसोसिऐशन—अपने लिखित आवेदन पत्र में उल्लिखत व्यक्तियों के माध्यम से (उसे पक्षकार नं० 9 बनाया गया)।

10. कोल माइन्स आफिसर्ज ऐसोसिएशन—श्री पी० सेन के माध्यम से

(उसे पक्षकार नं० 10 बनाया गया)।

बाद में दो और पक्षकार पेश हुए, अर्थात् :--

1. चासनाला माइन मजदूर यूनियन।

2. कोयला इस्पात मजदूर पंचायत, झरिया, माइन मजदूर यूनियन, धनबाद, आल इंडिया खान मजदूर फैडरेशन और हिन्द मजदूर सभा जो संयुक्त रूप में पेश हुए।

5. इन दो पक्षों को क्रमशः पक्षकार नं० 11 और 12 बनाया गया। यथा समय सभी पक्षकारों ने (खान सुरक्षा महानिदेशालय, पक्षकार नं० 8 को छोड़कर) अपने बयान लिखित रूप में दायर किए और खान सुरक्षा महानिदेशालय की ओर से खान सुरक्षा निदेशक श्री एस० पी० गांगुली ने अपनी सांविधिक रिपोर्ट इस पक्षकार के लिखित बयान के रूप में दायर की।

6. कुछ पक्षकारों ने गवाहों की सूचियां दायर की और अन्ततः निम्नलिखित पक्षकारों ने न्यायालय में गवाह पेश किए और उनका परीक्षण किया।

पक्षकार नं० 1 (प्रबन्धक)	3	गवाह
पक्षकार नं० 8 (खान सुरक्षा महानिदेशालय)	5	गवाह
पक्षकार नं० 3 (सर्वेयर्ज ऐसोसिएशन)	3	गवाह

अदालती गवाहों के रूप में चार गवाहों का परीक्षण किया गया है। जिन गवाहों का बयान लिया गया, उनकी सूची अनुबन्ध-क के रूप में संलग्न है।

अनेक दस्तावेज और प्लान, प्रदर्शों के रूप में रिकार्ड पर लाए गए हैं और इन प्रदर्शों की सूची अनुबन्ध-ख के रूप में संलग्न है।

इस जांच न्यायालय की कार्रवाई का आर्डर शीट नियमित रूप में रखा गया है जिस से यह पता लगे कि जांच किस प्रकार चली है।

स्थानीय निरीक्षण :

7. यहां मैं यह उल्लेख कर देना चाहता हूं कि जब मुझे यह सूचना मिली कि एक जांच न्यायालय का गठन होने जा रहा है और वह जांच मुझे करनी है तो खान अधिनियम, 1952 की धारा 24(1) के अधीन-औपचारिक अधिसूचना के जारी किए जाने से पूर्व मैंने दो स्थानीय निरीक्षण किए थे। 27 दिसम्बर, 1975 को हुई दुर्घटना संबंधी जांच के सिलसिले में मैं धनबाद में 13 अप्रैल 1976 को मौजूद था और मैंने उस खदान के तल का स्थानीय निरीक्षण किया जहां से पानी तेजी से नीचे की ओर बह गया बताया गया था जिसके परिणामस्वरूप 5 अप्रैल, 1976 को दुर्घटना हुई। उस समय खदान का तल खुश्क था और मुझे यह स्पष्ट किया गया कि 5 अप्रैल, 1976 को या उससे तुरन्त पूर्व की स्थिति क्या थी और जमा पानी खदान के तल से नीचे कैसे बह गया था। दूसरा स्थानीय निरीक्षण 16 अप्रैल, 1976 को किया गया जब श्री जी० एस० मरवाह और करुणाकरण भी साथ थे। तब हमने उसी स्थान का दोबारा निरीक्षण किया। इस अवस्था पर विस्तृत निरीक्षण किए गए और हमें फिर बताया गया कि पानी खदान के तल में कैसे जमा हो गया था जहां से निकल कर वह इन्क्लाइन 4 में चल गया और परिणामस्वरूप प्रश्नगत दुर्घटना हुई।

स्वामित्व का विवरण :

8. चासनाला की गहरी खान में 27-12-1975 को हुई दुर्घटना के बारे में की गई जांच के संबंध में जांच न्यायालय की रिपोर्ट में चासनाला कोयला खान की स्थिति तथा कुछ सम्बद्ध तथ्य विस्तार से दिए गए हैं। इस जांच के प्रयोजन के लिए इस कोयला खान तथा इस की अवस्थिति का एक संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है। जहां तक इस भूसम्पत्ति के स्वामित्व का संबंध है, चासनाला कोयला खान मालिक इंडियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लि० है और इस संबंध में विस्तृत विवरण भी उस रिपोर्ट में दिया जा चुका है और इस से पहले की दुर्घटना के संबंध में पेश की गई है।

कोयला खान का विवरण तथा अवस्थिति :

9. चासनाला कोलियरी धनबाद जिले के सदर उप-प्रभाग में झरिया कोयला क्षेत्र के दक्षिण-पूर्वी छोर पर दमोदर नदी के उत्तरी किनारे पर स्थित है और सड़क के रास्ते से धनबाद-सिन्द्री सड़क पर वहां से धनबाद 20 किलोमीटर की दूरी पर है। इसका क्षेत्रफल 1.2 एकड़ अर्थात् लगभग 2706 बीघा है जो कोयले से भरा पड़ा है। कोयले की सीमों को काटती हुई लगभग 27 मीटर मोटी एक डाइक उत्तर से दक्षिण की ओर चलती है और इस मुख्य डाइक से निकली कई पतली-पतली शाखाएं मिलती है। इस डाइक के दोनों ओर अलग इन्क्लाइनों के सेटों से 13/14 सीमों का विकास/उत्खनन किया गया है।

10. इस क्षेत्र में परखी गई कार्य योग्य सीमों का ब्यौरा नीचे दिया गया है :--

क्रमांक सीमा संख्या	मोटाई (मीटर)	पार्टिंग (मीटर) निचली सीम से	टिप्पणियां
1. 17 बी	2.1	8-10	इस इन्क्लाइनों द्वारा डिप के साथ-साथ 45 मीटर की गहराई तक विकसित की गई। 1948 में छोड़ दी गई इस समय पानी से भरी पड़ी है।
2. 17 ए	2.1	70-80	पन्द्रह इन्क्लाइनों द्वारा डिप के साथ-साथ 75 मीटर की गहराई तक विकसित की गई। 1948 में छोड़ दी गई। इस समय पानी से भरी पड़ी है।
3. 17(विशेष)	2.3	80-100	विकसित की गई तथा भराई करके आंशिक रूप से पिल्लर हटाए गए। इस समय इन्क्लाइनों द्वारा विकसित की जा रही है तथा उत्खनन किया जा रहा है।
4. 16	1.82	40-50	अव्यवहृत
5. 15	2	2-3	झामा (अव्यवहृत)
6. 14 ए	2	40-50	झामा (अव्यवहृत)

1	2	3	4	5
7.	13/14	24	10-40	1, 2, 2ए, 3 (पुरानी) इन्कलाइनों द्वारा डाइक के पश्चिम में तथा 3, 4 एच० के० इन्कलाइनों द्वारा मुख्य डाइक के पूर्व में विकसित की गई। 1949 में यह खदानें छोड़ दी तथा कालान्तर में यहां पानी भर गया। एच० के० ? खदान के माध्यम से भी कार्य किया गया। इस समय भूमि के नीचे की खदानें, पिट 1 और 2 में से होकर I और II हारिजन में हैं।
8.	12	4.5	30-80	उभरी हुई परत वाली साइड पर एक छोटी सी खदान को छोड़ कर, यह सीमा अधिकांशतः अव्यवहृत है। नं० 1 और नं० 2 पिट से, जहां यह 13/14 सीवन के निकट ही पड़ती है, कुछ नई खदानें बनाई गई हैं।
9.	11/10	10-12	..	3 मीटर कोयला (शेष झामा)। एक छोटे से खण्ड में विकसित की गई और 1948 में छोड़ दी गई।

(हमारा संबंध 13/14 संयुक्त सीम की खदानों से है)

11. नीचे बताई गई 3 क्वारियां (खदानें) हैं:--

क्वारियां (खदानें)

ओपन कास्ट खदान का नाम	जिस सीम में उत्खनन किया गया, उसका नाम	किस सीमा तक उत्खनन किया गया
1	2	3
नं० 1 क्वारी	12, 13/14	स्ट्राइक के साथ-साथ 1500 फुट और डिप के साथ-साथ 200 फुट।
नं० 2 क्वारी	13/14	स्ट्राइक के साथ-साथ 1600 फुट और डिप के साथ साथ 200 फुट।
नं० 3 क्वारी	13/14	दुर्घटना के समय 200फुट × 200फुट।

12. क्वारी नं० 1 चसनाला मौजा में भूसम्पत्ति के पश्चिमी छोर पर स्थित है इसमें आउट-क्राप के साथ काम किया गया है। 'इसको' के नियंत्रण में आने से पहले इसे छोड़ दिया गया था परन्तु 1972 में इसे पुनः चालू किया गया और आग लगने के कारण अप्रैल, 1974 से इसमें फिर काम बन्द कर दिया गया।

13. क्वारी नं० 2 दोमोहनी जोर से सुफर फास्फेट रोड तक हेत केन्द्र मौजा में स्थित है। यह क्वारी मार्च, 1973 में चालू की गई थी। इस में अभी भी काम हो रहा है और इस समय इसकी सीमा डाइक के साथ-साथ लगभग 1600 फुट और डिप के साथ-साथ 200 फुट तक है।

14. क्वारी नं० 3 की योजना चसनाला मौजा में नं० 3/4 इन्कलाइन के बीच 13/14 संयुक्त सीम से कोयला निकालने के लिए बनाई गई है। (5 अप्रैल, 1976 को जो दुर्घटना हुई, वह क्वारी नं० 3 में कार्य करने के दौरान हुई)।

15. अब यहां 13/14 संयुक्त सीम की इन्कलाइनों के ब्यौरे दिए जा सकते हैं। बताया जाता है कि नं० 13/14 संयुक्त सीमा की मोटाई 86 फुट है और उसमें 1.5 में 1 ग्रैडियेंट है। इस संयुक्त सीम में डाइक की पश्चिमी साइड की चार इन्कलाइनों और डाइक की पूर्वी साइड की तीन इन्कलाइनों द्वारा उत्खनन कार्य किया गया है। डाइक की पश्चिमी साइड की चार इन्कलाइनें ये हैं:--

(1) नं० 1 इन्कलाइन;
(2) नं० 3 इन्कलाइन (पुरानी);
(3) नं० 2ए इन्कलाइन;
(4) नं० 2 इन्कलाइन;

डाइक की पूर्वी साइड इन्कलाइनें ये हैं:--

(1) नं० 3 इन्कलाइन;
(2) नं० 4 इन्कलाइन;
(3) नं० एच० के० इन्कलाइन।

डाइक की पश्चिमी साइड में 13/14 संयुक्त सीम की इन्कलाइन खदानें एल स्तर तक जाने वाले लेवलों में विकसित की गई हैं। सीम के पार लेवल-खदानों की अधिकतम चौड़ाई 170 फुट है और स्ट्राइक के साथ साथ अधिकतम लम्बाई 1400 फुट है।

लेवल और सब-लेवल बोर्ड और पिल्लर प्रणाली पर विकसित किए गए हैं।

डाइक की पूर्वी साइड की इन्कलाइन खदानों में के-स्तर तक उत्खनन कार्य हुआ है और इस साइड में भी खदानों का पेटर्न वही है जैसाकि डाइक की पश्चिमी साइड की खदानों का है। इन पुरानी खदानों में 20-4-1941 से काम बन्द कर दिया गया था। (इस अवस्था पर एक महत्वपूर्ण बात जो ध्यान देने योग्य है, यह है कि जो दुर्घटना 27 दिसम्बर, 1975 को हुई थी, वह भूमि के नीचे की गहरी खान में उस पानी द्वारा जलमग्न हो जाने के कारण हुई थी, जो उपर्युक्त डाइक की पूर्वी साइड की उन भूमि गत खदानों में (जिन्हें भूमि के नीचे इन्कलाइन की 3/4 खदानों के रूप में वर्णित किया गया है) भरने दिया गया था। इस जांच में हमारा संबंध इन्कलाइन नं० 3 और 4 की भूमि के नीचे वाली उन खदानों से है जो डाइक की पूर्वी साइड में हैं।)

16. प्रबन्ध द्वारा दिए उए विवरण के अनुसार--

"नं० 3 और 4 इन्कलाइनों और एच० के० इन्कलाइनों द्वारा विकसित 13/14 सीम की पुरानी खदानें 1949 से जलमग्न थी। 3/4 इन्कलाइनों में से पानी निकालने का काम लगभग 1963 के अन्त में शुरू हुआ। पानी निकालने की शुरू-शुरू की अवधि के दौरान 27-11-1963 को एच० के० इन्कलाइन के मुख्य पर तल के बह जाने की एक घटना घट गई। इससे एच० के० इन्कलाइन का मुख द्वार पूर्णतः ढक गया। बाद में एक 'बान्ध' का निर्माण किया गया ताकि एच० के० इन्कलाइन के द्वारा की भारी बाढ़ के पानी से रक्षा हो सके।"

17. बताया जाता है कि 3/4 इन्कलाइनों से पानी निकालने का काम 2-4-1966 तक जारी रहा। जब पानी का स्तर पुरानी खदानों के ई० और एफ० स्तर के बीच पहुंच गया तो नं० 3 और 4 इन्कलाइनों के बीच भूमि के धंसने की एक मुख्य घटना हुई। उसके परिणामस्वरूप 'ए' स्तर की छत ठीक तल तक ढह गई। फिर भी, पानी निकालने का काम 17-5-1967 तक जारी रखा गया जब 3/4 इन्कलाइनों के बीच का खदानों में आग देखी गई। तब 18-5-1967 को रानीडांगा की स्टोविंग शाफ्टों सहित 3/4 इन्कलाइनों का मुख सील कर दिया गया। 3 और 4 इन्कलाइनों में सील 26-9-1967 को तोड़ी गई और सीमित जल निकाल कार्य पुनः शुरू किया गया। तथापि, प्रबन्ध के कथनानुसार बाद में आग लग सकने की प्रवृत्ति के कारण पानी के स्तर को 'सी' लेवल की छत से कभी भी नीचे नहीं गिरने दिया गया।

19. किसी समय 1, 2, 2ए और 3 इन्कलाइनों के रास्ते से डाइक की पश्चिमी ओर की इन्कलाइन खदानों और नं० 3 और 4 इन्कलाइनों के रास्ते से डाइक की पूर्वी साइड की खदानों के बीच 'ए' स्तर पर एक कनेक्शन था, जिसे बाद में बन्द कर दिया गया।

क्वारी तल के साथ साथ प्राकृतिक जल निकास मार्ग :

19. भूमि की नीचे इन्कलाइन 3/4 की खदानों के संबंध में उस क्वारी-तल की, जहां 5-4-1976 की दुर्घटना से पहले पानी जमा हो गया था, स्थिति को पक्षकार नं० 8 द्वारा प्रदर्श बी के रूप में प्रदर्शित एक प्लान से समझा जा सकता है। ('बी प्लान' के साथ प्रदर्श बी का भाग इस रिपोर्ट के साथ अनुबन्ध 'ग' प्रकाशित नहीं किया) के रूप में संलग्न है। इस प्लान में एक स्थल का 'पंक्चर की पोजीशन' के रूप में उल्लेख किया गया है। 5-4-1976 को विकसित हुए इस पंक्चर के रास्ते से उक्त क्वारी के तल का जमा पानी बह कर पुरानी खदानों में चला गया था जिसके परिणामस्वरूप प्रश्नगत दुर्घटना घटित हुई। इस दुर्घटना से पूर्व भी इस क्वारी तल से कुदरती रास्ते से बह कर पानी 3/4 पुरानी खदानों में जाया करता था जैसा कि इंडियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लि० के एक सर्वेक्षक, श्री एस०एन० मिश्रा (जिन्होंने प्रबन्ध के गवाह नं० 1 के रूप में बयान दिया) और श्री दीपक सरकार (जिन्होंने प्रबन्ध के गवाह नं 2 के रूप में बयान दिया) ने भी वर्णन किया है। श्री मिश्रा ने बताया है कि क्वारी के तल से कुछ पानी भूमि के नीचे की पुरानी खदानों के बी० लेवल तक बह कर जाया करता और बाद में वह और भी नीचे की ओर बह जाता था। पानी का इस क्वारी तल से पुरानी खदानों में जाने का रास्ता श्री मिश्रा के अनुसार एक 'कुएं' से होकर था। (27-12-1975 के बाद पानी के इस रास्ते का तथा कुएं का क्या किया गया, इसका वर्णन बाद में किया जाएगा।)

20. इस क्वारी के तल के साथ साथ नीचे इन्कलाइन 3 और 4 की पुरानी खदानों की ओर जाने वाले प्राकृतिक जल निकास मार्ग का वर्णन श्री दीपक सरकार ने भी किया है जो दुर्घटना की तारीख को 3/4 इन्कलाइन के क्षेत्रीय प्रबन्धक और समस्त चसनाला कोयला खान के एजेन्ट थे। श्री सरकार से यह प्रश्न पूछा गया कि तल पर, क्वारी में तथा खनन क्षेत्र में जल-निकास प्रणाली क्या है। उनका उत्तर इस प्रकार था :—

> "3 और 4 इन्कलाइन क्वारी से पानी के तल की ओर आया करता था और उत्तरी ओर भी नाली का पानी इस क्वारी के तल पर आता था और यह सारा जल उत्तर-पश्चिमी साइड से पूर्व की तरफ बह जाता था और उस गढ़े में चला जाता जहां क्वारी से कुछ कोयला निकाला गया था"।

21. यह है वह पानी जो श्री एस० एन० मिश्रा द्वारा वर्णित "कुएं" जैसे रास्ते से होकर 3/4 इन्कलाइन खदानों में बहा करता था। प्रदर्श बी में प्रश्नगत क्वारी और उसके पूर्वी छोर की तरफ का गढ़ा दिखाया गया है और इसमें एक नदी का चित्र भी दिखाया गया है जो इस गढ़े के निम्नतम छोर की ओर बहा करती थी। इस प्रकार इस प्रदर्श के माध्यम से 5-4-1976 की दुर्घटना से पूर्व का स्थतन्त्र प्रवाह दिखाया गया है।

22. एक "सिल्ट ट्रैप" और दो पाइपों द्वारा जो 27-12-1975 को डीपखान में हुई प्रथम दुर्घटना के घटने के बाद बिछाई गई थी, पानी के पुरानी खदानों में बह जाने की व्यवस्था की गई।

27-12-1975 के बाद की गई कार्यवाही :

23. प्रबन्ध की ओर से प्रदर्श 1/8 और 1/9 के रूप में रिकार्ड पर लाए गए दो दस्तावेजों से यह पता चलता है कि प्रथम दुर्घटना के बाद एक तकनीकी समिति का गठन किया गया था और प्रदर्श 1/8 इस समिति द्वारा 8-1-1976 को किया गया निर्णय दर्शाता है। प्रदर्श 1/8 की पहली मद इस प्रकार है :—

> "नं० 3/4 इन्कलाइन—(क) यदि यह सीधा कन्क्शन है और इस तक पहुंचा जा सकता है तो एक सी०आई० प्लग अवरोध बनाना पड़ सकता है ताकि इन्कलाइन खदानों में वायु न जा सके जिसके परिणामस्वरूप गर्मी उत्पन्न हो सकती है।"

24. तारीख 8-1-1976 के ही प्रदर्श 1/9 में वे हिदायतें दी गई हैं जो खान सुरक्षा महानिदेशालय ने प्रबन्धकों को जारी की थीं। ये निदेश 3/4 इन्कलाइन भूमिगत खदानों में हवा के संचार को रोकने के लिए रोधकों के सम्बन्ध में भी थे। इस सम्बन्ध में अन्तिम निदेश निम्न प्रकार था :—

> "सं० 3 और 4 इन्कलाइनों के बीच के क्षेत्र में सतह के धंसे क्षेत्र दरारें, गढ़े तुरन्त भरे जाएंगे।"

25. उसके बाद प्रबन्धकों ने क्या कार्रवाई की थी, इस का वर्णन प्रबन्धकों के सर्वेक्षक, श्री एस० एन० मिश्र ने दिया है। श्री मिश्र से पूछा गया सम्बन्धित प्रश्न यह था :

> "अब श्री मिश्र कृपया यह स्पष्ट कीजिए, तकनीकी समिति के अनुसार, खदान के शीर्ष पर सिल्ट ट्रैप्स, एयर सील आदि सम्बन्ध में कौन से निर्माण कार्य किए गए थे।"

इस प्रश्न का उत्तर निम्न प्रकार था :—

> "बैठक के दौरान में और श्री आर० एन० बनर्जी, भूतपूर्व सर्वेक्षक उपस्थित थे जब ये स्टाम्पिप्स लगाने और सतह के गढ़ों को बन्द करने के कार्य हमें सौंपे गए थे। खदान की खुली जगहों की, 3, 4, और एच० के० सहित सभी क्वैरियों को पहले बन्द कर दिया गया और फिर रेत से ढक दिया गया 3/4 इन्कलाइन की खदान के समीप भूमि के ढह जाने से एक सुराख बन गया था जिसे शीर्ष से अलग करना आवश्यक था। मैंने माह जनवरी, 1976 के अन्त में इसके बिल्कुल नजदीक एक बन्द बनाया था, जो इसके उत्तर की ओर छिद्रित स्थान के बाहर उतराई की ओर था। तब दो पाइप लाइनों में एक सिल्ट ट्रैप बनाया गया। सिल्ट ट्रैप से बन्द के नीचे दो पाइप फ़िट किए गए थे। जनवरी, 1976 के अन्त के करीब लगभग 20 से 25 फ़ीट दूर एक सिल्ट ट्रैप भी बन्द गया था, जो इस बन्द के करीब उत्तर की ओर था। पानी सिल्ट ट्रैप में जमा होता था, फ़िर यह पाईप से छिद्रित स्थान की ओर जाता था। एक पाईप 2 इंच व्यास और दूसरा 3 इंच व्यास का था।"

26. सिल्ट ट्रैप के स्थापित किए जाने के बाद जलमार्ग से पानी 3/4 इन्कलाईन की पुरानी खदान में नीचे कैसे बहता था, इस बात का वर्णन श्री एस० एन० मिश्र ने निम्नलिखित शब्दों में किया है :—

> "मैंने पहले ही बताया है कि पानी खदान से इस पाइप द्वारा बी स्तर में जा रहा था, सीधे लेवल में तब बी स्तर से पानी सी स्तर गिरा और तब नं० 3 इन्कलाइन की ओर गया। साथ ही टपके हुए पानी की थोड़ी सी मात्रा सं० 4 इन्कलाइन की ओर जा रही थी। मैंने पानी को खदान से बी स्तर पर गिरने और फ़िर और नीचे आते, दायी ओर इन्कलाइन सं० 4 तक जाते और उस

इन्कलाइन से गिरते नहीं देखा। जहां से पानी 'बी' स्तर पर गिर रहा था, उस स्थान और पूर्व की ओर इन्कलाइन सं० 4 तक के बीच की दूरी लगभग 300' थी।"

27. साक्ष्य के इस भाग को प्लान, प्रदर्श 2/3 से समझा जा सकता है जो सिल्ट ट्रैप, पानी नीचे बहाने के लिए इससे जाने वाली पाईप, तथा पुरानी खदान में जिस स्थान पर पानी गिर रहा था, को दर्शाया है, जिससे इस की इन्कलाइन सं० 4 की पूर्व की ओर तक की दूरी का पता चलता है। प्रदर्श 2/3 का एक अंश अनुबन्ध ध (प्रकाशित नहीं किया) के रूप में संलग्न है। प्लान को स्केल 1 : 600पर छोटा करके दिखाया गया है।

अप्रैल, 1976 में पाइप का बन्द हो जाना:

28. 5 अप्रैल, 1975 की दुर्घटना से पहले किस प्रकार पानी का यह स्वछन्द बहाव बन्द हो गया और दुर्घटना से पहले खदान के तल में पानी की यह मात्रा कैसे जमा हो गई, यह बात अब बतायी जाएगी। प्रत्यक्षदर्शी (पक्षकार सं० 1) द्वारा लिखित रूप में दायर किए गए बयान में इस मामले को 23 से 29 पैराग्राफों तक निम्न प्रकार से उल्लिखित किया गया :

(23) यह कि बचाव अस्थायी वाह्र क्षेत्र बना कर कार्यों के दौरान खदान में एक एयर सील की व्यवस्था की गई थी जिससे जमा हुए पानी को पाइप से दरारों द्वारा पुरानी खदान में गिरने दिया गया और हवा स्वसन को रोकने के लिए जमीन को ढक दिया गया था।

(24) यह कि 3-4-1976 को जो वर्षा हुई उससे अर्ध ब्लैकेटिंग घुल गई और मिट्टी और सिल्ट जो कीचड़ वाले पानी के साथ बह गए, से सारे पाइप बन्द हो गए जिनसे जमा हुआ पानी पहले से धंसी हुई दरारों में नीचे जाता था।

(25) यह कि पानी, वाटर-सील व्यवस्थाओं से निकलना चालू हो गया और दरारों से सीधे भूमि के नीचे जा रहा था।

(26) चूंकि भूमि के नीचे आने वाले पानी की मात्रा दरारों से आने वाले पानी की मात्रा के बनिस्बत वाह क्षेत्र से अधिक थी, जल और क्षेत्र में कुछ ऊंचाई तक पानी जमा हो गया।

(27) दरारों के जरिए से पानी का रिसना 3-4-1976 और 4-4-1976 को जारी रहा और पानी का स्तर नीचे चला गया और 5-4-1976 को पानी की ऊंचाई सब गहरे स्थान पर 3 से 4 फी० हो गई।

(28) 5-4-1976 को लगभग 11 अपराह्न पर पानी का स्तर और कम हो गया और मुश्किल से 15,000 से 20,000 गैलन पानी वाह क्षेत्र में जमा रहा।

(29) यह कि दुर्घटना के दिन खदान सुरक्षा महानिदेशालय एक अधिकारी चसनाला कोलियरी के परिसर में मौजूद था और बताया गया है कि उस विशेष स्थान में 15,000 से 20,000 गैलन पानी के मौजूद होने की सूचना विभाग के समुचित अधिकारी ने दी थी।

29. पैराग्राफ (23) और (29) में आने वाले शब्दों "जमा पानी" का एक ही अर्थ नहीं हो सकता।

30. इस अवस्था में यह उल्लेख कर दिया जाए कि पैराग्राफ 23 में आने वाले शब्द "जमा पानी" बड़ी मात्रा में जमा उस पानी की ओर निर्दिष्ट नहीं करते जो 3-4-1976 से 5-4-1976 तक खदान के तल में जमा हो गया था, जो निर्दिष्ट किया गया है वह नाली के रास्ते जाने वाला पानी है जो खदान की तल में सामान्य बहाव से सुप्रवाह रूप से जाता था और वहां से 3/4 इन्कलाइन की पुरानी खदान में सामान्य रूप से जाता था।

31. पक्षकार सं० 8 की ओर से श्री दीपक सरकार से पूछा गया था कि खदान में पानी का प्राकृतिक स्राव क्या था और उन्होंने उत्तर दिया कि 5 अप्रैल, 1976 की दुर्घटना के बाद, खदान के अनाच्छादित तल में एक 'वी-नॉच' लगाया गया था और यह पाया गया कि प्राकृतिक स्राव खदान की गहराई के तल में लगभग 2000 से 2500 गैलन प्रति घन्टे की दर से बह रहा था। श्री सरकार ने आगे स्पष्ट किया कि पानी का यह प्राकृतिक स्राव खदान के तल से 27 दिसम्बर, 1975 की दुर्घटना के बाद लगाए गए पाइपों द्वारा जिनका उल्लेख कि पहले दिया गया है, अपना रास्ता बना रहा था।

32. इस अवस्था में यह भी नोट किया जाए कि पक्षकार सं० 1 के इस लिखित बयान से यह धारणा बनती है कि 3-4-1976 को हुई वर्षा के कारण कीचड़ वाले पानी में मिली मिट्टी और सिल्ट से निकासी पाइपों और सिल्ट ट्रैप जमा हो गए थे परन्तु इस समय यह प्रतीत हुआ कि इससे यह पूरा पता नहीं चलता कि पाइप जाम कैसे हो गए, जिसके परिणामस्वरूप खदान के तल में भारी मात्रा में पानी जमा हो गया।

33. श्री दीपक सरकार के अनुसार, 1975 के अन्त में कुछ महीनों तक खदान में और उसके आस-पास का कचरा अनेक ठेकेदारों द्वारा हटाया जा रहा था, जिसमें से कुछ बुलडोजरों और स्कैपरों का प्रयोग कर रहे थे। फरवरी, 1976 से यह कार्य ठेकेदारों की एक बड़ी फर्म द्वारा ले लिया गया जो बुलडोजरों, पेलोडरों, शावलों और ड्रेगलाइन इस्तेमाल कर रहे थे। श्री सरकार ने आगे बताया है कि खदान की पश्चिमी दिशा की ओर कोयला निकालने के लिए कुछ कचरा हटाया जा रहा था और उस प्रक्रिया में खदान के निचले तल में बालू, ढीली मिट्टी और कचरे का मिश्रण गिर पड़ा था जिससे प्रदर्श 2 में दर्शाए गए ढेर बन गए। उनके कहे अनुसार, कुछ जगहों में कचरा खदान की ढलान के आने से शीर्ष की ओर से भी गिरा होगा। इसलिए 27-12-1975 के बाद खदान के तल में सिल्ट ट्रैप के साथ जो पाइप लगाए गए थे, वे नर्म मिट्टी, बालू आदि के मिश्रण से जमा हो गए होंगे, जो कचरे को हटाने के समय तथा 3-4-1976 की शाम को हुई वर्षा के मिट्टी वाले पानी के साथ आई मिट्टी और सिल्ट से खदान के तल में आ पड़े। वर्षा के पानी से प्राकृतिक स्राव से खदान के नीचे जाने वाले पानी में वृद्धि हुई और इस प्रकार दुर्घटना होने से पूर्व 5-4-1976 को पानी की यह बड़ी मात्रा खदान में जमा हो सकी होगी।

अदालती गवाहों के अनुसार पानी के बहाव का जाम हो जाना और इसका विसर्जन :

34. जिस पाइप के द्वारा खदान के तल से नीचे 3/4 इन्कलाइन में पानी जाता था उसके जाम हो जाने के सम्बन्ध में तथा 5 अप्रैल, 1976 को हुई दुर्घटना से पूर्व खदान के तल में पानी के जमा हो जाने के सम्बन्ध में भी इस जांच में परीक्षित किए गए अदालती गवाहों द्वारा कुछ सम्बन्धित बयान दिए गए हैं। श्री सहादुल अन्सारी (अदालती गवाह सं० 1) ने बताया है कि बुलडोजरों के द्वारा कार्य किए जाने के परिणामस्वरूप कभी-कभी मिट्टी आदि गिर रही थी जिससे पाइप जाम हो जाते थे जिन्हें पानी के सुप्रवाह के लिए कई बार साफ करना पड़ता था। अगले अदालती गवाह श्री अकील खां द्वारा दिया गया साक्ष्य और महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया है कि माह जनवरी, 1976 में कुछ बैम्बू मैटिंग रखी गई थीं ताकि नीचे पुरानी खदान में रिसे हुए पानी को ले जाने वाला पाइप मिट्टी या किसी अन्य चीज से जाम न हो जाए। उन्होंने बताया है कि उनके द्वारा 3-4-1976 को दूसरी पारी में अपनी ड्यूटी शुरू करने के बाद, उन्होंने देखा कि खदान के तल में कुछ पानी जमा हो गया है वह कुछ श्रमिकों के साथ नीचे पाइप के मुंह के पास गए थे और उन्होंने पाइप को साफ करने की कोशिश की थी, जो जाम हो गया था तथा जिससे पानी जाम हो गया था पहले कुछ श्रमिकों ने छड़ को पाइप में डालकर अटकाव को हटाने का प्रयत्न किया, जब वे असफल हुए, इस गवाह ने स्वयं कोशिश की। छड़ उसके हाथ से फिसल गई थी और वह नीचे गिर गए जिससे उनकी बायीं हथेली में चोट

लग गई । यह 3 अप्रैल, 1976 की शाम को हुआ था । इस साक्ष्य से यह स्पष्ट है कि पानी का जमा होना उस वर्षा से शुरू नहीं हुआ था, जो कि उस तारीख की शाम को लगभग 7 बजे हुई थी, बल्कि उससे पहले जमा होना शुरू हो गया था । श्री वकील खां से पूछा गया कि क्या 3-4-1976 को वह डा० आर० एस० राय और श्री एस० बी० सिंह से खदान या उसके समीप मिले थे । उनका जवाब हां में था । इस गवाह के अनुसार, डा० आर० एस० राय और श्री एस० बी० सिंह खदान के किनारे शीर्ष पर थे और गवाह ने उस जाम पाइप को साफ करने के लिए किए गए असफल प्रयास और चोट लगने के बारे में बताया था । दुर्घटना के बाद श्री वकील खान अस्पताल गए थे और उनके अनुसार, वह अस्पताल से 3-4-1976 से फिर खदान पर आए थे और उस समय उन्होंने डा० आर० एस० राय, श्री सुखेन्दू बनर्जी और श्री चतीराज, मुख्य इंजीनियर को देखा था । जहां तक गवाह को याद है ये व्यक्ति जमा पानी के बारे में विचार-विमर्श कर रहे थे । श्री वकील खां के अनुसार, डा० राय , श्री सुखेन्दू बनर्जी, कोलियरी इंजीनियर को बता रहे थे कि जमा पानी को निकालने के लिए एक पम्प लगाया जाना चाहिए । श्री वकील खान 4-4-1976 को पहली पारी में ड्यूटी पर गए थे और उन्होंने देखा कि श्री प्रीतम सिंह (हैवी टिंडल) और उनका दल एक पम्प लाया था और यह खदान के एक किनारे पर रखा गया था । पम्प लगाने के लिए प्रयास किए जा रहे थे । 4-4-1976 को पम्प नहीं लगा और चालू नहीं किया जा सका । श्री वकील खान के अनुसार, 3-4-1976 को जो पानी जमा हो गया था खदान के तल में उसकी गहराई लगभग 1½ फीट थी परन्तु 4-4-1976 को इसकी ऊंचाई 2½ फीट हो गई थी । इस साक्ष्य से यह स्पष्ट हो जाता है कि 3-4-1976 की शाम से 4-4-1976 तक खदान के तल में पानी जमा हो रहा था और पानी का स्तर और भी ऊंचा होता जा रहा था । श्री वकील खान 5-4-1976 को पानी के जमा होने में वृद्धि के सम्बन्ध में बहुत स्पष्ट थे । उन्होंने बताया है कि 5-4-1976 की पहली पारी में उनके द्वारा ड्यूटी आरम्भ करने के बाद, उन्होंने देखा कि जो पानी पिछले दिन जमा हो गया था वह कम नहीं हुआ था और पम्प नहीं लगाया गया था । वास्तव में उन्होंने देखा कि 5-4-1976 को पानी का स्तर ऊपर हो गया था । दोपहर 1.30 बजे से कुछ पहले वह खदान की साइड पर ड्यूटी पर थे, जब श्री बैजनाथ गोप (आर्क-सैटिंग गैंग के) और कुछ अन्य व्यक्ति भूमिगत खदान से आए थे और इस गवाह को बताया कि नीचे जाने वाले पानी का बहाव बढ़ रहा है । यह गवाह खदान के तल की ओर गया और देखा कि वहां हैंगथाल से फूटवाल तक पानी जमा हो गया था और स्पष्टतः कुछ पानी नीचे चला गया था । इसे चारों तरफ लगे पानी के निशान से देख सकते थे जो लगभग 6 इंच पानी की कमी दिखा रहा था । वह खदान के कार्यस्थल की ओर गए थे और उसके कुछ मिनटों के बाद उन्होंने सूचित किया कि सारा जमा पानी नीचे पुरानी खदान में चला गया । वह खदान के तल की ओर गए और पाया कि उस जगह के पास, जहां उन्होंने मैटिंग लगायी थी, एक मोरी थी और स्पष्टतः सारा जमा पानी इस मोरी से नीचे गया था ।

35. 13/14 कम्बाइण्ड सीम की हैंगथाल और फूटवाल के सम्बन्ध में खदान के तल की स्थिति को जहां दुर्घटना से पहले पानी जमा हो गया था, ए-बी लाइन के साथ खदान के एक सेक्शन से समझा जा सकता है, जिसे प्रदर्श 2/4 के रूप में मार्क किया गया है । इसकी एक प्रति परिशिष्ट 'ई' (प्रकाशित नहीं किया) के रूप में संलग्न है । प्लान को छोड़कर के स्केल 1:600 पर दर्शाया गया है । लाइन ए–बी प्रदर्श 2/3 पर देखी जा सकती है ।

खदान के तल में जमा पानी की मात्रा :

36. पानी की जो मात्रा जमा हुई होगी इस बात पर विचार करने के लिए मैं पक्षकार सं० 1 द्वारा दायर किए गए लिखित बयान की ओर ध्यान दिलाता हूं जिसमें यह कहा गया है कि दुर्घटना से तुरन्त पहले 5-4-1976 को मुश्किल से 15,000 से 20,000 गैलन पानी खदान की तल में जमा हुआ होगा । खान सुरक्षा महानिदेशालय (पक्षकार सं० 8) की ओर से दायर किए गए लिखित विवरण के अध्याय 1 में यह उल्लेख किया गया है कि 5-4-1976 को खदान में जमा पानी का कुल मात्रा "लगभग 2,35,000 गैलन के करीब थी ।" दुर्घटना से पूर्व पानी की कितनी मात्रा जमा हो सकती थी, यह मामला दोनों पक्षों में गम्भीर मतभेद का प्रश्न बन गया था और इस सम्बन्ध में मौखिक और दस्तावेजी साक्ष्य प्रस्तुत किया गया है । पक्षकार सं० 1 के लिखित बयान में पानी की इस मात्रा का अनुमान कैसे लगाया गया था, इसका पता उनके बयान के पैराग्राफ 29 से चलेगा । पैराग्राफ 29 में उल्लिखित खान सुरक्षा महानिदेशालय के सन्दर्भ में, इस मामले के बारे में तत्कालीन उप खान सुरक्षा निदेशक श्री एस० एन० ठाकर (पक्षकार सं० 8 के गवाह सं० 1) से पक्षकार सं० 1 ने जिरह करते हुए पूछा और उन्होंने इस बात से इन्कार किया कि 5 अप्रैल, 1976 को शाम को उन्होंने श्री एस० एस० प्रसाद को प्रबन्धकों के प्रतिनिधि की उपस्थिति में बताया था कि खदान के तल में 15,000 से 20,000 गैलन पानी जमा हो गया है और यह कि इस पानी से दुर्घटना घटी है । प्रबन्धकों के मामले का यह भाग, जिसका उल्लेख इनके लिखित विवरण के पैराग्राफ 29 में किया गया है, (यह प्रश्न श्री एस० एन० ठाकर से पूछा गया था जो इस जांच में परीक्षित किए जाने वाले पहले गवाह थे), बिल्कुल अविश्वसनीय तथ्य पर आधारित है, जैसा कि इसे देखते ही तत्काल पता चलेगा । श्री दीपक सरकार ने जिरह के दौरान इस सम्बन्ध में बताया कि 5-4-1976 को बाह क्षेत्र में 15,000 से 20,000 गैलन पानी जमा पड़ा था, और यह कि उन्होंने यह सूचना दुर्घटना के तुरन्त बाद अपने अधिकारियों और कर्मचारियों से प्राप्त की थी तथा जांच न्यायालय द्वारा खदान की स्थानीय जांच के समय श्री एस० एस० प्रसाद ने भी इसकी पुष्टि की थी । श्री दीपक सरकार के अनुसार, श्री एस० एस० प्रसाद ने उस समय बताया था कि उन्हें श्री ठाकर द्वारा बताया गया था कि दुर्घटना की तारीख को 15,000 से 20,000 गैलन पानी नीचे गया था । श्री ठाकर से जो पूछा गया था वह यह था कि उन्होंने श्री एस० एस० प्रसाद को पानी की इस मात्रा के जमा हो जाने के बारे में बताया था तथा यह कि किसी और व्यक्ति ने भी बताया था कि खदान के तल में 15,000 से 20,000 गैलन पानी जमा हो गया है । प्रत्यक्षतः जिस प्रारम्भिक अवस्था में श्री ठाकर से पूछताछ की गई थी, उससे प्रबन्धकों के जिस मामले के बारे में पूछा गया वह सन्देहजनक था । श्री दीपक सरकार के बयान ने इस मामले को और साफ बना दिया परन्तु प्रबन्धकों की ओर से परीक्षित किए गए अगले गवाह, डा० आर० एस० राय ने कुछ बिल्कुल अलग ही बात कही है । श्री दीपक सरकार अनुसार के डा० आर० एस० राय, उन व्यक्तियों में से एक थे जिन्होंने उस खदान के तल में जमा पानी की मात्रा के बारे में बताया था । तथापि, डा० आर० एस० राय के अनुसार, जब जांच न्यायालय ने एक निर्धारक के साथ खदान का दौरा कर रहा था तो श्री एस० एस० प्रसाद ने किसी व्यक्ति से उस पानी की मात्रा के बारे में पूछा था जो दुर्घटना के दिन खदान की तल में जाम हो गई थी और श्री एस० पी० गांगुली, खान सुरक्षा निदेशक ने बताया कि यह मात्रा लगभग 1,00,000 गैलन थी । इस पर श्री एस० एस० प्रसाद ने बताया था कि दुर्घटना के तुरन्त बाद श्री एस० एन० ठाकर ने उन्हें फोन पर बताया था कि खदान के तल में 15,000 से 20,000 गैलन पानी जमा हो गया है । यह कथन उस कथन से भिन्न है जो कि खान सुरक्षा महानिदेशालय के अधिकारियों द्वारा श्री एस० एस० प्रसाद को बताया गया था । इसलिए मैं नहीं समझता कि दुर्घटना से पहले 5 अप्रैल, 1976 को खदान के तल में केवल 15,000 स 20,000 गैलन पानी के जमा हो जाने के सम्बन्ध में पक्षकार सं० 1 के लिखित विवरण के पैराग्राफ 29 में जो कुछ उल्लिखित किया गया उसमें कोई तथ्य है । श्री एस० पी० गांगुली की सांविधिक रिपोर्ट में पक्षकार सं० 4 की ओर से दिया गया अनुमान, (2,35,000 गैलन) सम्बन्धित समय में उप खान सुरक्षा निदेशक श्री टी० के० मजुमदार द्वारा किए गए अनुमान पर आधारित है । वे मूल रूप से खान सुरक्षा महानिदेशालय में अनुसंधान सहायक थे और बाद में

अगस्त, 1974 तक निदेशालय में सर्वेक्षण अधीक्षक थे । उन्होंने श्री ए० बी० सिंह, खान सुरक्षा के संयुक्त निदेशक के निदेश पर 6 अप्रैल, 1976 को खदान का निरीक्षण किया और उन्होंने खदान के तल पर पानी के निशानों को देखा और उसके आधार पर प्लान और रोक्शन बनाने के लिए 7-4-1976 से सर्वेक्षण किया । श्री मजुमदार के अनुसार 5 अप्रैल, 1976 को दुर्घटना से पहले पानी की जो मात्रा खदान में जमा हो सकती थी, उसका अनुमान, उनके निदेशों के अधीन श्री डी० के० सिन्हा, सर्वेक्षक द्वारा किया गया था और उसकी जांच श्री एच० एस० हाजरा और श्री एल० एन० राय सर्वेक्षकों द्वारा की गई थी और यह अनुमान लगाया गया था कि लगभग 2,35,000 गैलन पानी जमा हो गया था । श्री मजुमदार के अनुसार पानी की वास्तविक मात्रा इस अनुमानित मात्रा से 10% अधिक या 10% कम हो सकती है । श्री मजुमदार के साथ उसके सर्वेक्षण कार्य और उसके अनुमानों के सम्बन्ध में सविस्तार जिरह की गई परन्तु मैं यह नहीं समझा कि किसी महत्वपूर्ण बात का पता लगाया जा सका जिससे उसकी इस बात को ठीक न समझा जाए कि पानी की बड़ी मात्रा, अर्थात् 2 लाख गैलन से ज्यादा पानी की मात्रा 5-4-1976 को दुर्घटना होने से पहले खदान में तल में जमा हो गई थी । प्रबन्धकों के मामले को देखते हुए, जो कि उन्होंने अपने लिखित बयान के पैराग्राफ 29 में बनाया है, उस पक्षकार की ओर से श्री टी० के० मजुमदार से जिरह के दौरान जो पूछा गया था वह यह बात थी कि उसमें पानी की कितनी मात्रा जमा हो सकती थी, बड़े ताज्जुब की बात है कि उनके द्वारा देखे गए जल चिन्ह के आधार पर यह मात्रा 60,000 से 70,000 गैलन से ज्यादा नहीं हो सकती थी । पक्षकार सं० 1 की ओर से परीक्षित किए गए गवाहों का कुछ भी बाद हो, इस सम्बन्ध में पक्षकार सं० 1 की ओर से परीक्षित किए गए 'इस्को के एक सर्वेक्षक, श्री एस० एन० मिश्र द्वारा दिया गया है । उन्होंने भी सर्वेक्षण द्वारा उस पानी की मात्रा का अनुमान लगाया है जो 5-4-1976 से पहले खदान के क्षेत्र में जमा हुई होगी और उनके अनुसार पानी की अधिकतम मात्रा जो उसमें जमा हुई थी वह 1,32,852.72 गैलन थी । उनका अनुमान प्रदर्श 2/2 में दर्शाया गया है । श्री मिश्र का अनुमान भी खदान के तल में देखे गए जल चिन्ह पर आधारित था । इसलिए, श्री एस० एन० मिश्र का साक्ष्य भी यह दर्शाता है कि 5-4-1976 की दुर्घटना से पहले खदान के तल में पानी की जो मात्रा एकत्र हो गई थी वह बहुत बड़ी मात्रा थी, न कि पक्षकार सं० 1 के लिखित बयान में उल्लिखित केवल 15,000 से 20,000 गैलन पानी की मात्रा । कुछ अदालती गवाहों द्वारा दिए गए सीधे साक्ष्य से यह भी पता चलेगा कि 5-4-1976 को लगभग दोपहर के 1.30 बजे 3/4 इन्क्लाइन की पुरानी खादान में पानी की अत्यधिक मात्रा नीचे चली गई थी, जिससे वहां महान विध्वंस हो गया ।

37. मेरे सुविचारित विचार में प्रबन्धकों द्वारा अपने लिखित बयान में पैराग्राफ 28 और 19 में दिए गए दावे को स्वीकार करना कठिन है कि 5-4-1976 को 12,000 से 20,000 गैलन पानी नीचे पुरानी खदान में गया था । यह बर्बादी के स्वरूप से भी स्पष्ट है, जिस पर मैंने बाद में विचार किए हैं । 5-4-1976 की दुर्घटना से भारी मात्रा खदान में अवश्य ही जमा हो गई होगी ।

पानी के जमाव का ज्ञान

38. अब मैं इस नुक्ते पर विचार करूंगा कि क्या कवेरी के कार्यभारी अधिकारियों को 5 अप्रैल, 1976, जिस दिन कि दुर्घटना घटी है, से पहले यह मालूम था कि कवेरी बैड में यह विशाल जलराशि जमा है और इन्होंने इस सम्बन्ध में क्या कार्रवाई की । यहां यह उल्लेखनीय है कि अभिलेख में यह साक्ष्य मौजूद है कि 3 अप्रैल, 1976 की शाम को कुछ बारिश हुई थी, श्री दीपक सरकार, जो कि तब क्षेत्रीय प्रबन्धक थे, ने कहा है कि उन्होंने जल के स्तर और साथ ही कवेरी का भी निरीक्षण पहली या दो अप्रैल, 1976 को किया था और यह कि इस तारीख के बाद वे दुर्घटना होने के पश्चात् दिनांक 5 अप्रैल, 1976 को कवेरी में गये थे । श्री सरकार से यह कहा गया था कि वे डा० आर० एस० राय के साथ 4-4-1976 की सुबह कवेरी में गये थे और उस समय उन्हें यह बताया गया था कि कवेरी में पानी जमा हो गया है । श्री सरकार का उत्तर यह था कि 4 अप्रैल की सुबह को वे कवेरी के दक्षिणी भाग की ओर प्रस्तावित बांध के सम्बन्ध में गये थे और यह कि वे सुबह डा० आर० एस० राय से मिले थे, लेकिन उन्हें कवेरी में जमा हुये पानी के सम्बन्ध में कुछ नहीं बताया गया था । श्री सरकार के बयान का समर्थन डा० आर० एस० राय के बयान से नहीं होता । श्री सरकार ने आगे कहा है कि 4 अप्रैल, 1976 की सुबह को वे इन्क्लाइन कार्यालय में नहीं गये थे । श्री सरकार से यह कहा गया कि वे डा० आर० एस० राय और अन्य व्यक्तियों के साथ 3 अप्रैल की शाम को कवेरी में गये थे, जहां पम्प लगाने के प्रबन्ध के बारे में विचार-विमर्श हुआ था और इसका उत्तर भी नकारात्मक था । इस समय यह उल्लेखनीय है कि डा० राय को 3 अप्रैल, 1976 से 5 अप्रैल, 1976 तक क्या मालूम हुआ और जमा हुए पानी के सम्बन्ध में उन्होंने क्या किया । इन्होंने कहा है कि 3 अप्रैल, 1976 को लगभग 7 बजे शाम से 9 बजे शाम तक भारी वर्षा हुई थी । 4 अप्रैल, 1976 की सुबह उन्हें कवेरी बैड में जमा हुए पानी के सम्बन्ध में मालूम था लेकिन उनके अनुसार, उन्होंने यह पता लगाया कि शाम को पानी कम था । उन्होंने 5 अप्रैल, 1976 की सुबह भी कवेरी देखी थी, और वहां निचान में पानी का जमाव देखा था । 4 अप्रैल, 1976 की सुबह डा० राय ने कवेरी में एक पम्प लगाने का आदेश दिया था । अतएव इसमें सन्देह नहीं कि कवेरी बैड में पानी के जमाव का ज्ञान डा० राय को था जिनके लिए वे एक पम्प लगाने जा रहे थे । डा० राय पम्प लगाने के लिए 5 अप्रैल, 1976 को कवेरी में गये थे ।

39. क्या श्री दीपक सरकार को 4 अप्रैल, 1976 को कवेरी बैड में जमा हुए पानी के बारे में मालूम था अथवा नहीं, यह डा० आर० एस० राय के उस बयान से विदित होता है जो उन्होंने जिरह के दौरान दिया जब उनसे यह कहा गया कि 4 अप्रैल, 1976 की सुबह वे श्री दीपक सरकार के साथ 3/4 इन्क्लाइन कवेरी में आये थे और यह कि उस समय कवेरी का ओवर मैन श्री बी० के० सिंह ने उन्हें कवेरी में जमा हुए पानी के खतरे के बारे में बताया था । डा० राय का उत्तर यह था कि श्री बी० के० ने इस पानी से होने वाले खतरे के बारे में कुछ नहीं कहा था, लेकिन उन्होंने मिलकर कवेरी में पानी का जमाव देखा था । श्री दीपक सरकार के बारे में एक विशिष्ट प्रश्न पूछा गया था और उसका उत्तर स्पष्ट था कि श्री सरकार भी वहां थे । इसलिए श्री दीपक सरकार को भी 4 अप्रैल, 1976 की सुबह कवेरी बैड में जमा पानी के बारे में ज्ञान था । वास्तव में, डा० राय के अनुसार, उन्होंने पम्प लगाने सम्बन्धी मामले के बारे में श्री सरकार के साथ 4-4-1976 को विचार विमर्श किया था ।

5 अप्रैल, 1976 को भूमि के नीचे क्या हुआ :

40. अभिलेख के इस बारे में गवाही दर्ज की गई है कि उस दिन लगभग डेढ़ बजे 3/4 इन्क्लाइन में भूमि के नीचे क्या हुआ और जो घटना घटी उसका क्या परिणाम हुआ । जिन गवाहों की गवाहियों पर नीचे विचार किया जायेगा, उनमें से भारतीय खान सर्वेक्षकों के एसोसिएशन (पार्टी नं० 3) की ओर से दो चनमैनों से पूछताछ की गई है । ये चैनमैन हैं श्री केदार प्रसाद सिंह और श्री राज मंगल यादव । एक माइनिंग सरदार जिसका नाम वशिष्ट सिंह है, की पूछताछ न्यायालय के गवाही के रूप में की गई है । श्री केदार प्रसाद सिंह के अनुसार, 5 अप्रैल, की सुबह को 10 बजे सात व्यक्ति जिनमें कि वह भी शामिल था, भूमि के नीचे गये थे, अन्य छः व्यक्तियों के नाम थे :—

1. श्री एस० राय चौधरी, सर्वेक्षक

2 श्री आर० एन० बनर्जी, सर्वेक्षक

3. श्री सीताराम सिंह, सामान्य मजदूर जो चैनमैन के रूप में काम कर रहा था

4. श्री फरिक ओझा, चैनमैन

5. श्री बल्लभ मोदक, चैनमैन

6. श्री राज मंगल यादव, चैनमैन

(इसमें से, प्रथम पांच व्यक्ति उस दिन इस दुर्घटना में मर गये)

41. इस समय यह मालूम होगा कि एक दूसरा व्यक्ति, जिसका नाम श्री वशिष्ट सिंह माइनिंग सरदार था, भी उस समय भूमि के नीचे गया था। लगभग डेढ़ बजे दिन में क्या हुआ, इसका वर्णन श्री केदार प्रसाद सिंह ने इस प्रकार किया है :—

"उस समय, मैंने एक बड़ी आवाज सुनी, हमने आपस में विचार विमर्श किया कि यह आवाज कहां से आई है। श्री राय चौधरी ने कहा कि वह आवाज हवा की थी। उस समय हम स्तर और नं० 4 इन्क्लाइन के जंक्शन पर थे। मैं इन्क्लाइन से आते हुए पानी को देख रहा था। इसलिए हमने नं० 4 इन्क्लाइन से होकर ऊपर भागना शुरू किया। हम में से सातों साथ-साथ ऊपर की ओर भाग रहे थे। लगभग जो स्तर तक हम में से सातों साथ थे। उस समय, नं० 4 इन्क्लाइन में पानी की ऊंचाई बढ़ती जा रही थी। उस समय मैंने कहा कि अब हमें स्वयं अपनी मदद करनी चाहिए और भागकर अपनी जान बचा लेनी चाहिए। श्री राज मंगल यादव ने शीघ्रता से ऊपर भागना शुरू किया। मैं उसके साथ-साथ ही ऊपर की ओर भाग रहा था क्योंकि मेरा कैप लैम्प बुझ चुका था : अन्य पांच व्यक्ति हमारे पीछे थे। जब हम दो जी स्तर से ऊपर पहुंच गये तो मैंने देखा कि ऊपर से इन्क्लाइन में लोहे की पटरियां आ रही हैं। लकड़ी के टुकड़े और पाइप भी ऊपर से नीचे आते जा रहे थे। इन्क्लाइन नं० 4 में भरने वाले पानी की गहराई उस समय लगभग 18 इंच थी। मैंने श्री राज मंगल यादव से पूछा कि क्या कोई ऐसा स्थान है जहां हम अपनी सुरक्षा के लिए जा सकें। उसने कहा कि हां है और यह एफ तथा जी स्तर के बीच एक मैनहोल में शरण लेने चला गया। मैं भी श्री राज मंगल यादव के पीछे-पीछे चला और मैंने भी उसी मैनहोल में शरण ले ली। यह मैनहोल नं० 4 इन्क्लाइन की बाईं दिशा में ऊपर की तरफ था। लगभग आध घन्टा हम मैनहोल में रहे। इस दौरान, इन्क्लाइन धार में आने वाले पानी की ऊंचाई दो फीट तक पहुंच चुकी थी। आधे घन्टे के बाद पानी घटने लगा और जब सारा पानी नीचे चला गया तो हम मुख्य डिप में आ गये। हमने इन्क्लाइन में नीचे लैम्प दिखाया लेकिन हमें अन्य व्यक्तियों का जो हमारे पीछे आ रहे थे कुछ पता नहीं चला। तब हमने ऊपर जाना प्रारम्भ किया और हमें ऐसा करने में कुछ कठिनाई हुई। जब हमने एफ स्तर पार कर लिया तो रोशनी के साथ आते हुए कुछ आदमियों को देखा। वे तीन थे उन्होंने यह कहकर हमारी हिम्मत बढ़ाई कि अब डर की कोई बात नहीं है और हमें ऊपर भूमि पर जाने की कोशिश करनी चाहिए। इन लोगों ने हमारी इन्क्लाइन से बाहर आने में सहायता की।"

42. श्री राज मंगल यादव ने अपना अनुभव निम्न रूप से बताया :

"लगभग डेढ़ बजे दिन में ऊपर से पानी नीचे आना प्रारम्भ हुआ। मैं अन्दर गैलरी में कहीं था और पानी को नीचे आते हुए देख रहा था। केदार सिंह और श्री राम चौधरी ने मुझे बुलाया। गैलरी के अन्दर में पलम्ब-बोब लाइन पकड़े हुए खड़ा था। श्री राम चौधरी का यह कहते हुए सुनकर कि हमें भागना चाहिए, मैं मैन डिप में आ गया। उस स्थान से हम सबने इन्क्लाइन से भागना शुरू किया। उस समय नीचे आने वाला पानी लगभग एक फुट ऊंचा था। पटरियां, नल और लकड़ी के टुकड़े पानी के साथ बहकर इन्क्लाइन में आ रहे थे। ऊपर जाते हुए मैं एक मैन-होल के पास आया। मैंने उसमें शरण ली और केदार सिंह भी उसी वक्त उसी मैनहोल में आ गया। मैंने देखा कि श्री केदार सिंह मैनहोल के बाहर ही गिर पड़ा था। वास्तव में मैंने ही उसे मैनहोल में खींचा था। जब हम मैनहोल में थे, इन्क्लाइन में पानी की ऊंचाई बढ़ गई थी। हम मैनहोल में लगभग आध घन्टे तक रहे जब पानी की सतह इन्क्लाइन में नीचे आ गई तो हम दोनों मैनहोल से बाहर आये और हमने ऊपर जाना प्रारम्भ किया। जब हम दूर गये तो हमें माइनिंग सरदार और ओवर मैन मिले जिनका नाम हमें मालूम नहीं है। वे कह रहे थे कि वे माइनिंग सरदार और ओवर मैन हैं। उन्होंने हमें बताया कि वे वहां थे और उन्होंने हमें ऊपर इन्क्लाइन में जाने के लिए कहा। जब हम इन दो व्यक्तियों को मिले तो वे हमें इन्क्लाइन के ही रास्ते से नहीं बल्कि दूसरे रास्ते से ऊपर भूमि पर ले गये। जब हम इन दो व्यक्तियों को मिल चुके तो इन्क्लाइन से अभी भी पानी आ रहा था इन्क्लाइन में पानी की गहराई उस समय लगभग 6 इंच थी। उसके बाद हम इन्क्लाइन से बाहर आ गये।"

43. खनन सरदार और ओवर मैन, जिनके नाम को श्री राज मंगल यादव उस समय नहीं जानता था श्री वशिष्ट सिंह और श्री एस० डी० सिंह (दोनों की ही न्यायालय में गवाह के रूप में पूछताछ की गई) थे। श्री केदार प्रसाद सिंह और श्री राज मंगल यादव ने जो गवाहियां दी हैं उनकी भूमि के नीचे जो कुछ हुआ था, उसके सम्बन्ध में श्री वशिष्ट सिंह द्वारा पूर्णतः पुष्टि होती है। श्री वशिष्ट सिंह के अनुसार डा० आर० एस० राय ने उसे 4-4-76 को कहा था कि वह इन्क्लाइन में दूसरे दिन कार्य करें और इसलिए दुर्घटना की तारीख को वह लगभग साढ़े सात बजे सुबह काम करने के लिए गया था। श्री एस० डी० सिंह, ओवरमैन ने कहा था कि इन्क्लाइन में और जमीन के नीचे काम किया हुआ होगा और ओवरमैन ने श्री वशिष्ट सिंह और अन्य श्रमिकों को नीचे इन्क्लाइन नं० 4 में जाने के लिए उसकी ए स्तर पर प्रतीक्षा करने के लिए कहा। श्रमिक लगभग 8 बजे सुबह नीचे गये और 'ए' स्तर पर रुक गए। श्री एस० डी० सिंह आकर श्रमिकों से मिल चुके थे तथा वे और श्री वशिष्ट सिंह और नीचे चले गये थे। कुछ व्यक्ति सतह से पाइपों को लाने के लिए पीछे छोड़ दिये गये थे। इन पाइपों की आवश्यकता पम्पों के लिये थी। श्री वशिष्ट सिंह नीचे कहां गये और उसके बाद क्या हुआ, यह उन्हीं के शब्दों में निम्न प्रकार है—

"मैं नीचे 'जे' स्तर तक श्री रतन बोड़ी, लाइन मिस्त्री के साथ गया था क्योंकि हमें लाइन बनानी थी। श्री एस० डी० सिंह टिम्बर, मिस्त्री के साथ जिसका नाम श्री दुर्गाप्रसाद तिवारी था, मेहराबों को अवलम्ब देने के लिये और नीचे गया था। मैं 9 बजे सुबह 'जे' स्तर पर पहुंचा। लगभग 11 बजे सुबह मैंने दो व्यक्तियों को ऊपर से आते हुए देखा, जिनको मैं पहले से नहीं जानता था। एक ने चश्मा पहने हुए था और दूसरे ने पूरी पतलून पहनी हुई थी। जिस सज्जन ने चश्मे लगाये हुए थे वह और नीचे गया और जिस आदमी ने सफेद पेन्ट पहनी हुई थी उसे इन्क्लाइन में और नीचे जाने के लिए मुझे सहायता देनी पड़ी। मैंने इस सज्जन से यह पूछा था कि वे कौन हैं लेकिन उसने कोई उत्तर नहीं दिया। लाइन मिस्त्री ने मुझे सूचित किया था कि यह सज्जन सर्वेक्षक थे और उनका नाम बनर्जी बाबू था। उन्होंने मुझे बताया कि दूसरे सज्जन जिन्होंने चश्मा पहना हुआ था राय चौधरी बाबू हैं। कुछ अन्य व्यक्ति सर्वेक्षण कार्य के लिए साज-सामान लेकर आये थे और वे 'जे' स्तर से जहां पर मैं काम कर रहा था, बहुत नीचे चले गये। श्री एस० डी० सिंह 'जे' स्तर तक आ पहुंचे थे और उन्होंने मुझे यह कहा था कि हम में से एक व्यक्ति का नीचे जाना और सर्वेक्षकों की सहायता करना आवश्यक है तथा मुझे यह कहा गया कि मैं जाऊं और चाय पी के नीचे चला जाऊं ताकि मैं वहां जाकर सर्वेक्षकों को सहायता पहुंचा सकूं। वास्तव में हम में से कोई भी ऊपर नहीं गया और सच्चाई यह है कि हम 'जे' स्तर पर

श्री एस० डी० सिंह के साथ ठहर गये । सर्वेक्षकों के चेनमैन ने कहा था कि लट्ठों का फैंका जाना बन्द किया जाना चाहिए अन्यथा वे लुढ़क कर नीचे आ जायेंगे और नीचे के व्यक्तियों को चोट पहुंचायेंगे । इसलिए हमने 'जे' स्तर पर काम करना बन्द कर दिया था । हमने यह पूछताछ की कि सर्वेक्षक कितना समय लेंगे ताकि हम 'जे' स्तर पर अपना काम जारी रख सकें और हमें यह सूचित किया गया कि इस बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता । इसलिए श्री एस० डी० सिंह अन्य श्रमिकों के साथ बाहर आये जब कि मैं नीचे के स्तर पर सर्वेक्षकों और उनके आदमियों की मदद के लिए नीचे गया । जब कि सर्वेक्षक और उनके आदमी 'के' स्तर पर काम कर रहे थे, उनका चेनमैन 'जे' स्तर से थोड़ा नीचे केन्द्रीय लाइन को फिक्स कर रहा था । मैं मेहराब जो कि नं० 4 इन्क्लाइन और 'के' स्तर के संगम पर स्थापित की गई थी उससे थोड़ा ऊपर खड़ा था । एक बजे दिन के थोड़ी देर बाद यह चेनमैन 'जे' स्तर से थोड़ा नीचे था, चिल्लाया कि इन्क्लाइन में पानी बहकर आ रहा है मैंने उन लोगों को जो मेरे नीचे थे इस चेतावनी के बारे में सूचित किया और मैंने अपना सुरक्षा लेम्प लिया और इन्क्लाइन से होता हुआ ऊपर की ओर चल पड़ा । जब मैं इस चेनमैन से लगभग 20 फुट नीचे था तो मैंने देखा कि पानी के साथ शिलाखण्ड बहकर इन्क्लाइन में बहते आ रहे हैं और मैंने चेनमैन को चिल्लाकर कहा कि उसे भागकर ऊपर चला जाना चाहिए नीचे देखने पर मुझे ज्ञात हुआ कि एक आदमी मेहराब को पकड़े हुए ऊपर आने की कोशिश कर रहा था और कुछ अन्य व्यक्ति भी एक-दूसरे को पकड़ते हुए ऊपर आने का प्रयास कर रहे थे । यह मैं अपने कैप लेम्प की सहायता से देख सका था । मैंने 'जे' स्तर से भागना प्रारम्भ किया और जब मैं लगभग 'डी' स्तर तक आ पहुंचा तो पानी का बहाव और अधिक था और मैं पटरी पकड़ कर ऊपर आया क्योंकि पटरी इन्क्लाइन के फर्श से ऊपर थी । मैं सुरक्षा लेम्प दांतों से पकड़े हुए था और इस प्रकार मैं इन्क्लाइन नं० 4 में पटरी की सहायता से ऊपर जाने में सफल हुआ । जब मैं उस स्थान पर पहुंच गया जहां से पानी नीचे आ रहा था तो मुझे मालूम हुआ कि पटरियां भी बहकर इन्क्लाइन में आ गयी थीं । मैंने यह देखा कि पानी के बहाव ने इन्क्लाइन को भर दिया है और मैं बाहर आ गया तथा दफ्तर में चला गया ।"

44. कार्यालय में, वशिष्ट सिंह, श्री एस० डी० सिंह, सहायता प्रबन्धक को मिला, जिन्हें उसने सारी बात कह सुनाई कि नीचे क्या क्या गुजर चुका है और उनसे सहायता की मांग की । उसके तुरन्त बाद वह पुनः इन्क्लाइन में गया । उसके साथ श्री एस० डी० सिंह ओवर मैन भी था । उसके बाद क्या हुआ, यह श्री वशिष्ट सिंह ने स्वयं निम्न प्रकार से स्वयं बताया है :—

"जब पानी कम होने लगा तो मैं और श्री एस० डी० सिंह और नीचे 'सी' स्तर तक अथवा उससे भी नीचे गये । मैंने जलते हुए दो कैप लेम्प देखे और दो आदमियों को भी देखा । इनमें से एक खड़ा था और दूसरा नीचे गिर पड़ा था । मैं नीचे गया और मैंने उस आदमी को उठाया और ऊपर आने में उसे सहायता दी । बाद को मुझे मालूम हुआ कि उसका नाम श्री केवार सिंह था । दूसरा व्यक्ति जो पहले से खड़ा था स्वयं ऊपर आ गया । बाद को मुझे मालूम हुआ कि यह आदमी श्री राज मंगल यादव था । जब हम सब इन्क्लाइन के मुख पर आ गये तो मैंने वहां बहादुरी साहिब, सरकार साहिब और राय साहिब को देखा । सुरक्षा कार्य के लिए एक मोटी रस्सी नीचे लुढ़का दी गयी । इस समय तक बचाव दल भी आ पहुंचा था । मैं नीचे बचाव कार्य में सहायता देने के लिए 'के' स्तर तक गया था । मैंने खुले हुए लकड़ी के डण्डे आदि कई वस्तुएं 'के' स्तर पर और इन्क्लाइन में देखीं । 'के' स्तर से मैं बाहर गया और मुझे पुनः बहादुरी साहिब ने सहायता कार्य के लिए नीचे जाने को कहा । रस्सी के सहारे से मैं कुछ दूर तक नीचे गया लेकिन तब मुझे यह पता चला कि हमारे जीवन के लिए संकट है और इसलिये मैं और अन्य व्यक्ति 'सी' स्तर के साथ पूर्व दिशा की ओर दौड़े और हमने वहां अपने को छिपा लिया । लगभग 9 बजे शाम को हमें यह सूचित किया गया कि हम वापस आ सकते हैं और इसलिये उस समय मैं बाहर आया । इन्क्लाइन के मुख से हमें एक पुलिस की गाड़ी में ऑफिसर्स कालोनी में ले जाया गया । उस समय डा० राय भी हमारे साथ थे । मैं और श्री एस० डी० सिंह सारी रात ऑफिसर्स कालोनी में रहे ।"

45. श्री वशिष्ट सिंह की गवाही का समर्थन श्री एस० डी० सिंह, ओवर मैन द्वारा किया गया है कि वह 'ए' स्तर तक नीचे गया था और वहां उपस्थित अन्य श्रमिकों के साथ श्री वशिष्ट सिंह से मिला था । उसके बाद क्या हुआ वह श्री एस० डी० सिंह द्वारा निम्न प्रकार से वर्णित है :—

"मैंने उन श्रमिकों को जो पाइपों को नीचे ले जाने के लिए तैनात किये गये थे यह कहा कि वे पाइपों को नीचे के स्तर में ले जायें क्योंकि वहां पाइपों की बड़ी आवश्यकता थी । जी स्तर पर, मैंने कुछ श्रमिक छोड़ दिये थे ताकि वे कोंगिंग स्लीपरों को नीचे ले जा सकें । जे और के स्तर के बीच मैंने श्री वशिष्ट सिंह को कहा कि वे वहां लाइन विस्तार के कार्य की देखभाल करें । मैं नीचे के स्तर पर गया और लगभग 11 बजे सुबह वहां सर्वेक्षक आ पहुंचे थे । मैं एक सर्वेक्षक को जानता था जिनका नाम बनर्जी बाबू था । उन्होंने सर्वेक्षण कार्य के लिए अपने औजार ठीक जमा लिये थे । एक यंत्र जे स्तर पर मेन डिप के मध्य में लगाया गया था । दूसरा के स्तर पर मेन डिप के साथ उसके जंक्शन के पश्चिम की ओर लगाया गया था । जब हमारा अवलम्बन कार्य पूरा हो गया तो मैंने कुत्ता मिस्त्री (प्रोप मिस्त्री) को जे स्तर पर किसी और कार्य के लिये आने को कहा । मैंने सर्वेक्षकों से यह मालूम किया कि वे अपना कार्य कितनी देर में कर लेंगे तो उन्होंने मुझे बताया कि वे चार या पांच घंटे कार्य करेंगे और इसलिये मैं जे स्तर तक गया और श्री वशिष्ट सिंह से वहां मिला । मैंने श्री वशिष्ट सिंह को कहा कि चूंकि सर्वे कार्य चल रहा है, अतएव हम में से एक को पीछे रुकना है । मैंने सुझाव दिया कि या तो वह या मुझे सर्वेक्षकों के साथ भूमि के नीचे ठहरना चाहिए । श्री वशिष्ट सिंह ने सुझाव दिया कि वह ठहरेगा और यह कि मैं अन्य व्यक्तियों के साथ ऊपर जा सकता हूं । इसलिये श्री वशिष्ट सिंह पीछे रह गया और मैं और अन्य व्यक्ति ऊपर आ गये । मैंने श्री वशिष्ट सिंह को नीचे के स्तर तक भेजा था । मेरा श्री वशिष्ट सिंह से लगभग एक बजे दिन में बात हुई थी । जब मैं और अन्य व्यक्ति जी स्तर पर आये तो मैंने देखा कि पाइपों को उतारने वाला गेंग चार पाइपों के साथ नीचे आ रहा था । वे जी स्तर पर ठहरे हुए थे । मैंने इस गेंग को कहा कि दिन का एक बजा है और अभी तक उन्होंने के स्तर पर पाइप नहीं उतारे हैं । गेंग के कुछ व्यक्ति पाइपों के साथ तुरन्त नीचे जाने के लिए रजामंद थे और दूसरे इससे रजामंद नहीं थे और इसलिये हम कुछ मिनटों के लिये जी स्तर पर रुक गये । लगभग सवा बजे दिन में जब हम जी स्तर पर थे तो हमने पानी के नीचे आने की आवाज सुनी । मैंने देखा कि पानी इन्क्लाइन से ठीक जी स्तर तक नीचे आ रहा है । मैंने जी स्तर पर रुके गेंग को कहा कि पानी के साथ चट्टानें बड़े-बड़े पत्थर और अन्य चीजें बह कर नीचे आ सकती हैं और इसलिये उन्हें ऊपर जाकर डी स्तर पर जहां कहीं शरण मिल सके, शरण ले लेनी चाहिए । जहां तक मुझे मालूम है ये लोग सीधे जी स्तर से भाग कर ऊपर गये । जब मैं डी स्तर पर आया तो वहां मुझे टिम्बर मिस्त्री मिला । उसने कहा कि अन्य व्यक्ति ऊपर इन्क्लाइन में चले गये हैं, लेकिन चूंकि उसका लैंप काम नहीं कर रहा था । अतः वह नहीं जा सका । डी स्तर से मैंने तथा टिम्बर

मिस्त्री ने आड़े मार्ग से दूसरा रास्ता पकड़ा जो कि इन्क्लाइन नं० 4 से नहीं जाता था और जब हम ए स्तर तक आ पहुंचे तो मैं इन्क्लाइन में बहते हुए पानी को देख सकता था। पानी नीचे कुछ जोर से चल रहा था। वहां से मैं तथा टिम्बर मिस्त्री इन्क्लाइन के मुख से बाहर आये और क्वैरी कार्यालय के दफ्तर में चले गये।"

46. श्री एस० डी० सिंह ने भी श्री वशिष्ट सिंह के दूसरी बार नीचे जाने जब कि वह डाक्टर आर० एस० राय और एक अन्य श्रमिक को डी स्तर पर मिला था, की गवाही की सम्पुष्टी की है। श्री एस० डी० सिंह भी श्री दीपक सरकार को लगभग जी स्तर पर मिला था। जब कि श्री एस० डी० सिंह इस स्थान पर था तो डा० राय और अन्य श्रमिक जो कि उनके साथ थे नीचे से ऊपर आये थे और डा० राय ने कहा था कि तीन मृत शरीरों को नीचे देखा जा सकता है और यह कि उन तीनों का ठौर ठिकाना मालूम नहीं है। श्री एस० डी० सिंह को भी उस रात सुरक्षा के लिए ओफिसर कोलोनी में ले जाया गया और उस रात वे वहीं ठहरे।

47. श्री केदार प्रसाद सिंह, श्री राज मंगल यादव के साक्ष्य में ध्यान देने योग्य एक महत्वपूर्ण नुकता पानी के जोर के बारे में है जो दुर्घटना घटने के समय इन्क्लाइन संख्या 4 में अवश्य आया होगा। श्री केदार प्रसाद सिंह ने कहा था कि उसने ऊपर से इन्क्लाइन में बहती हुई लोहे की पटरियां देखी थीं और लकड़ी के टुकड़े वर्षा पाइप भी नीचे आ रहे थे। नं० 4 के बीच बहने वाले पानी की गहराई जी स्तर में लगभग 18 इंच थी। श्री राज मंगल यादव के अनुसार, जब वह भूमि के नीचे की खदान में गैलरी के अन्दर काम कर रहा था, उसने इन्क्लाइन से ऊपर भागना शुरू किया जब पानी नीचे आया और उस समय पानी की ऊंचाई लगभग एक फुट थी और पटरियां, बलन व लकड़ी के टुकड़े नीचे आ रहे थे, जब वह मैन-होल में था, इन्क्लाइन में पानी की ऊंचाई बढ़ गई थी और उसने तथा श्री केदार प्रसाद सिंह ने लगभग आधा घंटे के लिये मैन-होल में शरण ली। उसके बाद पानी का बहाव कम हो गया था। जब पानी नीचे इन्क्लाइन से होकर आ रहा था तो श्री वशिष्ठ सिंह उस मेहराब से कुछ ऊपर खड़ा था जो नं० 4 इन्क्लाइन व के स्तर के संगम पर स्थापित की गई थी। जब वह जे स्तर के निकट तक गया था तो उसने देखा कि पानी के साथ इन्क्लाइन में शिलाखंड बहकर आ रहे हैं। श्री वशिष्ठ सिंह ने जे स्तर से ऊपर भागना शुरू किया था और जब वह लगभग डी स्तर तक आ पहुंचा था तो पानी का बहाव बढ़ गया था और वह केवल पटरियां पकड़ कर ऊपर जा सका था जो कि इन्क्लाइन के फर्श से ऊपर थीं। जब वह उस स्थान तक पहुंच गया जहां से पानी नीचे इन्क्लाइन 4 में आ रहा था तो उसने देखा था कि पटरियां भी बहकर इन्क्लाइन में आ गई थीं। उसने देखा था कि सारी इन्क्लाइन में पानी भर गया था और उसने नीचे जाने वाले पानी की मात्रा को भी इंगित किया था।

48. उपर्युक्त साक्ष्य इस तथ्य का स्पष्ट संकेत है कि नं० 4 इन्क्लाइन में पानी की एक विशाल मात्रा बड़े वेग से लगभग डेढ़ बजे दिन में पहुंच चुकी थी और उसके साथ लकड़ी व लोहे की चीजें भी बह रही थीं। इस समय यहां यह उल्लेखनीय है कि जैसा कि श्री एस० एन० मिश्र ने बयान दिया है कि दुर्घटना घटने के समय जहां क्वैरी से बी स्तर पर पानी गिरा होगा। उस स्थान और इन्क्लाइन नं० 4 के स्तर के जंक्शन जो कि पूर्व की ओर है की दूरी लगभग 200 फीट थी। प्रदर्श 2/3 जो कि पैमाने पर है, से यह दूरी 300 फुट से कम मालूम नहीं पड़ेगी। इसलिये, क्वैरी से भूमि के नीचे की खदान पर गिरने वाली पानी की मात्रा ऐसी थी कि वह किसी अन्य दिशा में जाने के अतिरिक्त पूर्व की ओर लगभग 300 फीट तक गुजरकर इन्क्लाइन 4 में पहुंचा और नीचे इन्क्लाइन में इस प्रकार पहुंचा जैसा कि गवाह ने बयान किया है और उसमें जैसा ऊपर उल्लेख किया जा चुका है, विध्वंश हो गया।

49. पक्षकार नं० 8 की ओर से एक प्लान, जिसे प्रदर्श बी /1 अंकित किया गया है प्रस्तुत किया गया है और जिसका उल्लेख "पानी के घुसने से दिनांक 5-4-1976 को हुई दुर्घटना से हुए विध्वंश का नक्शा" के रूप में किया गया है। इसमें उस विध्वंश का चित्र खींचा गया है जो इन्क्लाइन संख्या 4 और उसके आस-पास के स्थान में जलप्लावित होने के कारण हुआ है। इस नक्शे से इस निष्कर्ष की पुष्टि हो जाती है कि जल की एक विशाल राशि बह कर नीचे आई होगी, अन्यथा इतना विध्वंश न हुआ होता जिसके परिणामस्वरूप 5 व्यक्तियों की अभाग्यवश मृत्यु हो गई।

पानी का भूमि के नीचे 5-4-76 को गिरने का प्रभाव :

50. दिनांक 5 अप्रैल, 1976 को नीचे गिरने वाले पानी की शक्ति का दूसरा पहलू निम्नलिखित से विदित होगा और इसके लिए मैं उन निर्देशों पर वापस जाता हूं जो खान सुरक्षा निदेशालय ने दिनांक 27 दिसम्बर, 1975 की पहली दुर्घटना के पश्चात् 3/4 इन्क्लाइन के भूमि के नीचे की खदान अलगाव के संबंध में एतिहात बरतने के लिए जारी किये थे। मैंने पहले ही इस संबंध में एक दस्तावेज प्र० जे, दिनांक 8-1-1976 का उल्लेख किया है जिसमें सतह पर उठाये जाने वाले कदमों से संबंधित सलाह दी गई थी। प्रदर्श जे का संबंधित भाग 3/4 इन्क्लाइन में होने वाले भूमि की नीचे की खान के संबंध में निम्न प्रकार है :—

> "इन्क्लाइनों को हवा पहुंचाने वाले एयर सर्कट से नं० 3 और 4 इन्क्लाइन के बीच की खदानों को अलग करने के लिये, यह सुझाव दिया जाता है कि निम्नलिखित काय किये जायेंगे। क (1) नं० बी तथा नं० 3 व नं० 4 इन्क्लाइन (क्रोस-कट) से सम्बद्ध अन्य क्रमिक स्तरों की खदानों को सैंड बैग स्टोपिंग्स/कोसगेटेड आयरन शीट स्टोपिंग्स द्वारा सील किया जायेगा। हवा के नमूनों को नियमित रूप से एकत्र करने के लिये स्टोपिंग्स में सैंपलिंग पाइप छोड़ दिये जायेंगे।"

51. इस सन्दर्भ में भी प्रबंधकों के सर्वेक्षक, श्री एस० एन० सक्सेना, से कुछ प्रश्न किये गये थे, जिनके संबंध में यहां उल्लेख किया जाये। इन्होंने कहा है कि 27-12-1975 को हुई दुर्घटना के बाद उन्होंने स्तरों पर नं० 3 और 4 इन्क्लाइनों के छिद्रों के विसंपर्कन के लिए भूमि के नीचे सैंड बैग स्टोपिंग्स और कोसगेटेड-शीट स्टोपिंग्स बनाए, जैसा कि तकनीकी समिति ने इच्छा प्रकट की थी। श्री मिश्रा को यह पूछा गया था कि उन्होंने भूमि के नीचे नं० 4 इन्क्लाइन के निकट, दिनांक 5-4-76 की दुर्घटना के पहले व बाद में ए स्तर के अपने निरीक्षणों पर क्या अन्तर नोट किया था। उनका उत्तर था कि नं० 4 इन्क्लाइन के निकट ए स्तर रेत से भरा था और पश्चिम से पूर्व को नं० 4 इन्क्लाइन में कोई गमन-मार्ग नहीं था। श्री मिश्रा के अनुसार, बी स्तर की स्थिति भी ऐसी ही थी। जहां तक सी स्तर का प्रश्न है, उन्होंने कहा कि कुछ गमन-मार्ग था जिनसे उन्होंने व उनकी पार्टी ने बन्द कर दिया था। उनके अनुसार, आगे नं० 4 इन्क्लाइन के पश्चिम में ए से लेकर के स्तरों में कुछ रोधक में और नं० 4 इन्क्लाइन से कुछ रोधक उन्होंने और उनकी पार्टी ने पूर्व से पश्चिम की हवा के संचरण को रोकने के लिए बनाए थे। दुर्घटना के बाद की स्थिति के बारे में श्री मिश्रा द्वारा दी गई गवाही, जिसका उल्लेख पहले किया जा चुका है, स्पष्ट रूप से यह बताती है कि जब क्वैटी वेड से दिनांक 5-4-1976 की दुर्घटना के समय पानी खाली हो गया था तो इसने उस स्थान जहां से बी या सी स्तर पर पानी गिराया था और नं० 4 इन्क्लाइन के जंक्शन के बीच के अवरोधों को हटा दिया गया था। इन दो स्थानों के बीच के साधारण ढंग के नहीं रहे होंगे और पूर्व की ओर बी या सी स्तर से होकर इन्क्लाइन 4 में लगने वाले पानी के जोर की कल्पना की जा सकती है। इस पर अवश्य ही विचार किया जाना चाहिए, विशेष रूप से जब कि तथाकथित 'कुंए' से अथवा 27-12-1975 के बाद स्थापित पाइपों से स्तर पर पड़ने वाले पानी का सामान्य प्रभाव पश्चिम की ओर था, अर्थात् कहा जा सकता है कि नं० 3 इन्क्लाइन की ओर था, पूर्व की ओर इन्क्लाइन चार की ओर नहीं। दुर्घटना के समय, 5-4-1976 को बनाए गए सुराख से पानी

एक अपरिमित मात्रा में अवश्य गिरा होगा जो पूर्व की ओर बहकर इन्क्लाइन 4 में गया होगा। इस पानी ने अवरोधों को हटा दिया होगा और यह अपने साथ पटरियां आदि बहा लाया होगा, जिसके बारे में कि गवाहों ने बयान दिए हैं। एकत्र हुए पानी ने 5-4-1976 को क्वेरी बैड में सतह पर जो कोटर बनाया था, उसका वर्णन श्री दीपक सरकार ने निम्न प्रकार किया है :—

"सूराख धंस गया और एक बड़ा कोयले का खण्ड जो कि पार्श्व में लटक रहा था, लुढ़क गया और एक बड़ा गड्ढा बन गया"

52. उनके अनुसार, आगे धंसाव के कारण शिखर का सरकाव नीचे की ओर लगभग 6-7 फुट था। श्री दीपक सरकार ने भी कहा है कि वे दुर्घटना के तुरन्त बाद इन्क्लाइन 4 से भूमि के नीचे गए थे और जब वे नीचे जा रहे थे तो उन्हें यह मालूम हुआ कि ठीक जो स्तर से ऊपर एक बहुत बड़ा कोयले का खंड फिसला। छुट्टी से लौटने के बाद 15 और 16 अप्रैल, 1976 या इसके आस-पास डा० आर० एस० राय भूमि के नीचे खदान में गये थे और उन्होंने ए स्तर पर पैकवालों को बिल्कुल बहा हुआ पाया था। विभिन्न लोगों से उन्हें जो पता चला उससे वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि दुर्घटना के समय ए स्तर पर एक बड़ी छत गिर पड़ी थी, जिसके कारण एअर ब्लास्ट हुआ था और हवा व पानी के दबाव में यकायक वृद्धि हुई थी।

भूमि के नीचे की खदानों में 5-4-1976 को 3/4 इन्क्लाइन का प्रबंधक कौन था ?

53. संबंधित अधिकारियों के दायित्वों को अभिनिश्चित करने से पहले, डा० आर० एस० राय की 5-4-1976 की स्थिति के संबंध में एक विवाद के संबंध में निर्णय लिया जाना है। विवादास्पद प्रश्न यह है कि क्या डा० आर० एस० राय दिनांक 5-4-1976 को 3/4 इन्क्लाइन की भूमि के नीचे की खदानों के मैनेजर थे या नहीं। मेरा ध्यान कोयला खान विनियम, 1957 के कुछ उपबन्धों पर दिलाया गया है और इस नुक्ते पर विस्तृत मौखिक साक्ष्य अभिलेख में आया है।

54. उपर्युक्त विनियम 8, 30-31 (4) और 31(7) हैं जो इस प्रकार हैं :—

विनियम 8, स्वामित्व और पत्तों आदि में परिवर्तन

(1) (क) जब किसी खान के स्वामित्व अथवा मालिक के पते में कोई परिवर्तन होता है तो एजेन्ट अथवा प्रबंधक परिवर्तन होने की तारीख से सात दिन के अन्दर मुख्य निरीक्षक और क्षेत्रीय निरीक्षक को प्रपत्र 1 में नोटिस देगा :

बशर्ते कि जहां खान का मालिक (XXX) कोई/फर्म या व्यक्तियों का कोई एसोसिएशन हो, तो कोई परिवर्तन जो

(1) किसी फर्म के मामले में किसी भागीदार;

(2) किसी एसोसिएशन के मामले में किसी सदस्य;

(3) प्राइवेट कम्पनी के मामले में किसी निदेशक; अथवा

(4) किसी प्राइवेट कम्पनी के मामले में किसी भागीदार के संबंध में हो, उसकी सूचना मुख्य खान निरीक्षक और क्षेत्रीय निरीक्षक के परिवर्तन की तारीख से सात दिन के अन्दर देनी होगी।

(ख) जब किसी खान के स्वामित्व का हस्तान्तरण होता है तो पिछला मालिक अथवा उसका एजेन्ट नए मालिक अथवा उसके एजेन्ट को, स्वामित्व के हस्तान्तरण से सात दिन के अन्दर अधिनियम व विनियमों तथा उनके अधीन जारी किए गए आदेशों के अनुसरण में रखे गए सभी प्लानों, सेक्शनों, रिपोर्टों, रजिस्टरों और अभिलेखों, तथा खान के कार्य से संबंधित समस्त पत्राचार सौंपेगा और जब इस खण्ड की अपेक्षाएं विधिवत रूप से पूरी हो जाएंगी तो पिछले एवं नए मालिक अथवा उनके अपने-अपने एजेन्ट लिखित रूप से तुरन्त मुख्य निरीक्षक तथा क्षेत्रीय निरीक्षकों को सूचित करेंगे।

(2) जब किसी एजेन्ट प्रबंधक, इंजीनियर सर्वेक्षक, संस्थापन अधिकारी, सुरक्षा अधिकारी, अवर प्रबंधक अथवा सहायक प्रबंधक की कोई नियुक्ति की जाती है, अथवा जब इनमें से किसी व्यक्ति की सेवा समाप्त की जाती है या ऐसा कोई व्यक्ति उक्त नौकरी को छोड़ देता है तो अथवा जब किसी एजेन्ट या प्रबंधक के पते में परिवर्तन होता है तो मालिक, एजेन्ट या प्रबंधक, ऐसी नियुक्ति, सेवा समाप्ति या परिवर्तन के संबंध में मुख्य खान निरीक्षक और क्षेत्रीय निरीक्षक को प्रपत्र 2 में नोटिस देगा।

विनियम 30 : परिभाषाएं इस अध्याय के प्रयोजन के लिए :

(क) भूमि के नीचे के कार्य की प्रत्येक प्रणाली जो इस तरह से आपस में संबंध हो कि उस प्रणाली के किसी भी एक भाग से किसी भी दूसरे भाग में भूमि के नीचे गैलरियों, रास्तों अथवा डिप्टों से संचार व्यावहारिक हो तो वह एक खान समझी जाएगी, यदि भूमि के नीचे के ऐसे कार्य-स्थलों की एक प्रणाली से ऐसी दूसरी प्रणाली में जाना व्यावहारिक न हो तो प्रत्येक एक प्रणाली एक अलग खान समझी जाएगी।

बशर्ते कि भूमि के नीचे के कार्य-स्थलों की दो या अधिक प्रणालियां जो एक ही मालिक की न हों, और किसी विशेष कारण से वे आपस में सम्बद्ध हों, तो प्रत्येक प्रणाली एक अलग खान समझी जाएगी :

आगे बशर्ते कि जहां विशेष स्थितियां विद्यमान हों, मुख्य निरीक्षक, लिखित रूप में आदेश देकर और ऐसी परिस्थितियों के अध्यधीन जो वहां निर्दिष्ट की जायें, ऐसी किसी एक प्रणाली को दो या अधिक अलग-अलग खानों में विभाजन की अनुमति दे सकता है या अपेक्षा कर सकता है।

(ख) "औसत उत्पादन" पदावली का अर्थ है विगत तिमाही के दौरान खान या खानों के कुल उत्पादन का औसत प्रतिमाह

विनियम प्रबंधकों की अर्हताएं और नियुक्ति

(4) न तो कोई व्यक्ति एक से अधिक खान के प्रबंधक का कार्य करेगा अथवा न उसे इसके लिए नियुक्त किया जा सकेगा सिवाय इसके कि ऐसा मुख्य निरीक्षक की लिखित रूप में पूर्व अनुमति और ऐसी स्थितियों में संभव होगा जो उसमें वर्णित हों। ऐसी किसी अनुमति का पुनर्नवीन किये बिना 12 महीने से अधिक की अवधि पर कोई प्रभाव नहीं होगा। यदि वे परिस्थितियां जिनके अधीन अनुमति स्वीकृत हुई थी, बदल गई हों अथवा मुख्य निरीक्षक को यह पता चलता है कि प्रबंधक अपने कार्य-भार के अधीन खानों का कारगर ढंग से पर्यवेक्षण नहीं कर सकता तो मुख्य खान निरीक्षक किसी भी समय लिखित आदेश द्वारा ऐसी अनुमति में परिवर्तन कर सकता है या उसे मंजूर कर सकता है।

7 (क) जहां अनुपस्थिति के कारण अथवा किसी अन्य कारण से, प्रबंधक दैनिक व्यक्ति पर्यवेक्षण करने में समर्थ न हो अथवा अधिनियम या इन विनियमों या उनके अधीन जारी किए गए आदेशों के अधीन अपने कर्तव्यों का पालन करने में असमर्थ हो तो मालिक एजेंट अथवा प्रबंधक लिखित रूप में किसी व्यक्ति को जिसे वह सक्षम समझता है, खान के प्रबंधक के रूप में कार्य करने के लिए प्राधिकृत कर सकता है।

बशर्ते कि—

(1) ऐसे व्यक्ति के पास मैनेजर का या ओवर मैन का प्रमाण-पत्र हो ;

(2) ऐसे किसी प्राधिकार का 30 दिन की अवधि के बाद प्रभाव नहीं होगा सिवाय मुख्य निरीक्षक की पिछली लिखित अनुमति के और ऐसी स्थितियों के अध्यधीन जो उसमें वर्णित हों ।

(3) मालिक, एजेन्ट या प्रबंधक, जैसी भी स्थिति हो, तुरन्त लिखित नोटिस रजिस्ट्री डाक से मुख्य निरीक्षक और क्षेत्रीय निरीक्षक

को भेजेगा जिसमें यह सूचित किया जाएगा कि ऐसा प्राधिकार दे दिया गया है और प्राधिकार का कारण, प्राधिकृत व्यक्ति की अर्हताएं और अनुभव एवं प्राधिकार के प्रारम्भ होने तथा समाप्त होने की तारीखें भी उल्लिखित की जायेंगी।

(4) मुख्य निरीक्षक अथवा क्षेत्रीय निरीक्षक, उप विनियम (2) में निर्दिष्ट अर्हताओं वाले व्यक्ति के मामले को छोड़कर ऐसे स्वीकृत प्राधिकार को लिखित आदेश द्वारा मन्सूख कर सकता है।

(ख) इस प्रकार प्राधिकृत व्यक्ति के ऐसे प्राधिकार के दौरान, वही दायित्व होंगे और उन्हीं कर्तव्यों का वह निर्वहन करेगा जो कि प्रबंधक के तथा उसकी वही दायिताएं होंगी जो कि प्रबंधक की होती हैं।

55. जांच न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत हमारा दृष्टिकोण यह है कि 3/4 इन्क्लाइन में भूमि के नीचे के कार्य-स्थल विनियम 30 के अधीन के अन्तर्गत एक अलग खान के रूप में थे और यह कि डा० आर० एस० राय को मुख्य निरीक्षक की पिछली लिखित अनुमति द्वारा इस खान का प्रबंधक नियुक्त नहीं किया गया था, जैसा कि विनियम 31(4) में अपेक्षित था तथा चूंकि संबंधित समय पर, वह 17 विशेष सीम इन्क्लाइन खान में सात-क्रास 5 कट प्रबंधक पहले ही रह चुका है, अतएव वह 3/4 भूमिगत खानों का प्रबंधक 5-4-1970 को नहीं रहा होगा।

56 अपनी मुख्य परीक्षा में, डा० आर० एस० राय (प्रबंधक 4 पक्षकार नं० 1 द्वारा परीक्षित) ने कहा है कि नवम्बर 1974 में उन्हें चसनाला इन्क्लाइन खान (17 विशेष सीम) में प्रबंधक के रूप में जीतपुर कोयलाए-खान, जहां वह प्रथम श्रेणी सहायक प्रबंधक (मुख्य रूप से सुरक्षा अधिकारी के रूप से कार्य कर रहे थे) थे, से स्थानान्तरित किया गया था और उन्होंने चासनाला इन्क्लाइन खान (17 विशेष सीम) में प्रबंधक के रूप में 16-4-1976 तक काम करना जारी रखा। तब वे फिर जीतपुर में विशेष ड्यूटी पर प्रबंधक के रूप में स्थानान्तरित किए गए और वहां वे उसी रूप में कार्य कर रहे थे। जब पक्षकार 10 (कोयला खान ओफीसर्स एसोसिएशन आफ इंडिया) डा० आर० एस० राय से जिरह की गई तो उनका ध्यान विनियम 41(4) की ओर दिलाया गया और उन्हें पूछा गया कि क्या उन्होंने अपने नीचे के सहायक प्रबंधकों, ओवरमैनों खनन सिरदारों तथा अन्य सक्षम व्यक्तियों को 3/4 इन्क्लाइन की भूमि के नीचे की खदानों के संबंध में प्राधिकार जारी किए थे तो अनका उत्तर नकारात्मक था। उन्होंने कहा कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि तब तक उन्होंने खान का कार्य-भार नहीं संभाला था।

57. इस नुक्ते पर तस्वीर के दूसरा पहलू के संबंध में उनकी डायरी प्र० सो/1, दूसरी डायरी जो श्री पी० एन० दास सहायक प्रबंधक द्वारा रखी गई तथा श्री दीपक सरकार द्वारा दिया गया मौखिक साक्ष्य है। श्री सरकार चसनाला कोयला खान, जिसमें 3/4 इन्क्लाइन के भूमि के नीचे के कार्यालय शामिल है, 29-3-1976 से क्षेत्रीय प्रबंधक थे।

58. श्री दीपक सरकार के ब्यान दिया है कि 29-3-1976 से डा० राय 1 तथा 2 पुरानी इन्क्लाइन और 3/4 इन्क्लाइन तथा एक के इन्क्लाइन क्वैरी के प्रबंधक थे। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि डा० राय केवल 17 विशेष सीम के ही प्रबंधक नहीं थे बल्कि वे 12, 13 और 14 सीम की पुरानी खदानों के भी प्रबंधक थे। श्री सरकार से पूछा गया कि क्या विनियम 30 के अधीन ये इन्क्लाइनें एवं क्वैरिया ता० 5-4-1976 को मिलकर एक खान बनाती थीं। उनका उत्तर था कि कम से कम दो खानें हैं लेकिन उसे समय सात-क्रास कट इन्क्लाइन, अर्थात् 17 विशेष सीम इन्क्लाईन में पम्पिंग के अलावा अन्य कोई कार्य नहीं हो रहा था। श्री सरकार को आगे यह पूछा गया कि क्या मुख्य निरीक्षक की पूर्व स्वीकृति डा० आर० एस० राय को 3/4 इन्क्लाइन की पुरानी खदानों के प्रबंधक के रूप में नियुक्त करने से पहले प्राप्त की गई थी। उत्तर यह था कि यह अनुमति प्राप्त की जानी चाहिए थी। उन्हें तब पूछा गया कि ऐसी अनुमति वास्तव में ली गई थी या नहीं, और उन्होंने कहा कि खान सुरक्षा महानिदेशक को एक नोटिस फार्म 1 में 29-3-1976 को दिया था जिसमें कहा गया था कि डा० राय दोनों ही खानों के संबंध में प्रबंधक हैं। श्री सरकार यह कहते हुए कार्य करते रहे कि उन्हें विनियम 31(4) के अधीन अनुमति प्राप्त करनी है, लेकिन ऐसी किसी अनुमति के लिए वास्तव में निवेदन नहीं दिया गया। जब डा० आर० एस० राय का श्री दीपक सरकार के बाद गवाह के रूप में परीक्षण किया गया तो उनसे पक्षकार नं० 8 की ओर से इस नुक्ते पर जिरह की गई। उन्होंने कहा कि वे 3/4 इन्क्लाइन के भूमिगत खानों के सांविधिक प्रबंधक नहीं थे और उनके पास अपने को 3/4 इन्क्लाइन तथा क्वैरियों का प्रबंधक कहलाने के लिए वे कोई कानूनी दस्तावेज नहीं है। उन्होंने कहा कि वे 5-4-1976 को केवल सेवन क्रोस कट के ही प्रबंधक थे।

59. विनियमन 30 और 31(4) को दृष्टि में रखकर ऐसा प्रतीत होता है कि 3/4 इन्क्लाइन खदानें अपने आप में एक अलग खान बनाती हैं और डा० आर० एस० राय का यह कहना ठीक है कि 5-4-1976 को वे 3/4 इन्क्लाइन भूमिगत खानों के सांविधिक प्रबंधक नहीं हो सकते थे। यह श्री दीपक सरकार की गवाही से भी स्पष्ट है कि मुख्य निरीक्षक की अनुमति विनियमन 31(4) के अधीन नहीं मांगी गई थी। फार्म 1 नोटिस (पक्षकार संख्या 8 के लिए प्रदर्श ई० के रूप में अंकित प्रति) स्पष्ट रूप से प्रकट करता है कि 17 विशेष सीम इन्क्लाइन (7 क्रास-कट) और 3/4 इन्क्लाइन भूमिगत खदानों को दो अलग खान समझा गया था। ऐसा कोई सबूत नहीं है जिससे यह प्रकट हो कि डा० राय को प्रदर्श ई० की एक प्रति दी गई थी।

60. पक्षकार एक की ओर से उठाया गया विवाद में कि खान सुरक्षा महानिदेशक को भेजे गए पत्र में, जो प्रदर्श ई० के रूप में अंकित है, डा० राय को 3/4 इन्क्लाइन खदानों के प्रबंधक के रूप में कार्य करने का अधिकार दिया गया था, कोई बल नहीं है। यह इंगित करने के लिए कि रिकार्ड में ऐसा कुछ नहीं है कि डा० राय को प्रबंधक के रूप में कार्य करने के लिए कोई प्राधिकार प्राप्त हुआ था। वास्तव में श्री दीपक सरकार से विनियमन 31(7) के अधीन की गई कार्रवाई के बारे में विशेष रूप से पूछा गया था। अनका उत्तर नकारात्मक था। मेरी राय में प्रदर्श ई० का प्रथम पृष्ठ, विनियमन 31(7) की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करता जिसके अनुसार डा० राय को 3/4 इन्क्लाइन भूमिगत खदानों के प्रबंधक की जिम्मेवारियां, ड्यूटियां और उत्तरदायित्व सौंपे गए।

61. 5-4-1976 तक 3/4 इन्क्लाइन भूमिगत खदानों में डा० राय कार्य करने कैसे आये थे, अब इसका वर्णन किया जाना चाहिए। पक्षकार 8 की ओर से की गई जिरह द्वारा उनसे यह मालूम हुआ कि 24-2-1976 को हुई बैठक के कार्यवृत्त के अनुसार उन्हें गहरी चसनाला खान को डूबने से बचाने के लिए बांध निर्माण और तटबंध निर्माण पर्यवेक्षण का कार्यभार सौंपा गया था। बांध निर्माण 3/4 इन्क्लाइन भूमिगत खदानों के अन्दर किया जाना था, ताकि 27-12-1975 की हुई दुर्घटना के पश्चात् इसे गहरी खान से अलग किया जा सके और तटबंध का निर्माण सतह पर किया जाना था। डा० राय ने बांध निर्माण के पर्यवेक्षण का कार्यभार मार्च के दूसरे सप्ताह में सम्भाला था। उनके अनुसार, वे इस कार्य का पर्यवेक्षण विशेष अधिकारी के रूप में कर रहे थे, क्योंकि यह खान का सामान्य कार्य नहीं था। नं० 4 इन्क्लाइन में बांध निर्माण संबंधी तात्कालिक कार्य इन्क्लाइन को सहारा देना था और बांध निर्माण के लिए सामग्री के आवागमन हेतु रास्ता बनाना था। तत्पश्चात्, यह प्रतीत होता है कि मार्च 1976 के अन्त में यह निर्णय लिया गया था कि डा० राय को 3/4 इन्क्लाइन भूमिगत खदानों के प्रबंधक के रूप

में भी नियुक्त किया जाना चाहिए। डा० राय ने बताया कि मुख्य कार्मिक प्रबंधक द्वारा एक परिपत्र तारीख 26-3-1976 जारी किया गया है जिसके मुताबिक उन्हें 3/4 इन्क्लाइन भूमिगत खदानों के प्रबंधक के रूप में नियुक्त किया जाना था। श्री दीपक सरकार की भी यही गवाही है। श्री सरकार के अनुसार, उन्होंने 29-3-1976 को अपेक्षित फार्म एक नोटिस (प्रदर्श ई०) खान सुरक्षा महानिदेशक को भेजा, जिसमें उस हैसियत में डा० राय की नियुक्ति का उल्लेख किया गया। श्री सरकार के अनुसार, उन्होंने एजेन्ट की हैसियत से डा० राय को प्रबंधक के रूप में नियुक्त किया था, और इस बात की सूचना खान सुरक्षा महानिदेशक को दी थी। उन्होंने इस मामले के संबंध में 29 मार्च, 1976 को डा० राय को मौखिक रूप से भी बताया था। इन परिस्थितियों के कारण यह विवाद उठ खड़ा हुआ है कि डा० राय 5-4-1976 को किस हैसियत पर कार्य कर रहे थे।

62. उपरोक्तानुसार, जो कुछ भी कहा जा सकता है वह यह है कि डा० राय को श्री दीपक सरकार से 29-3-1976 को पता चला था कि वह 3/4 इन्क्लाइन भूमिगत खदानों और क्वारीज के प्रबंधक थे। परन्तु, यह भी स्पष्ट है कि उस समय तक या इसके तत्पश्चात् भी विनियमनों की कानूनी अपेक्षाएं डा० राय की 3/4 इन्क्लाइन और क्वारीज के प्रबंधक के रूप में नियुक्ति के संबंध में पूरी नहीं की गई थीं और डा० राय को दोषी नहीं ठहराया जा सकता यदि उनका रवैया, जैसा कि उन्होंने अपनी जिरह में स्पष्ट किया है, यह था कि वह केवल खान के मालिक या एजेन्ट द्वारा दिये गये प्राधिकार पर और सभी कानूनी औपचारिकताओं का अनुपालन होने पर ही नियुक्ति को मंजूर कर सकते थे। उनकी डायरी (प्रदर्श सी० 11) से जो कुछ भी मालूम पड़ा वह यह था कि वे 3/4 इन्क्लाइन और क्वारीज के कुछ कार्य का 1-4-1976, 2-4-1976 और 3-4-1976 को पर्यवेक्षण कर रहे थे। श्री रामानुज भट्टाचार्य 29-3-1976 तक चले गए थे और इसलिए यदि डा० राय श्री भट्टाचार्य के स्थान पर कानूनी तरीके से न आते तो 3/4 इन्क्लाइन और क्वारीज का कोई प्रबंधक नहीं था। चूंकि डा० राय पहले से ही बांध निर्माण का पर्यवेक्षण कर रहे थे, उनकी डायरी प्रदर्श सी० 11 की प्रविष्टियां या श्री पी० एन० दास सहायक प्रबंधक की डायरी पर 1-4-1976 और 2-4-1976 को किए गए उनके हस्ताक्षर इस तथ्य को नहीं बदल सकते जिसके अन्तर्गत उन्हें 29-3-1976 से 3/4 इन्क्लाइन और क्वारीज के प्रबंधक के अधिकार, ड्यूटियां और जिम्मेदारियां सौंपी गई थीं।

सर्वेक्षण दल का 5-4-1976 तक का कार्य

63. स्वर्गीय एस० राय चौधरी और स्वर्गीय आर० एन० बनर्जी, सर्वेक्षकों का एक सर्वेक्षण दल 5-4-1976 को नं० 3/4 इन्क्लाइन भूमिगत खदानों में कैसे गया, इसका वर्णन किया जाता है :

श्री एस० पी० गांगुली की सांविधिक रिपोर्ट के अध्याय 2, पैराग्राफ 5.2 मामले को इस प्रकार निर्दिष्ट करते हैं—

"5.2 इन्क्लाइन की खदानों को पिटस की खदानों से अलग करने हेतु आधारी गैलरी में डैम निर्माण करने का प्रस्ताव था। स्पोर्ट बर्क और ट्रेक बिछाने का कार्य नं० 4 इन्क्लाइन में किया जा रहा था और इस इन्क्लाइन का प्रयोग डैम स्थल तक सामग्री के आवागमन के लिए करने का प्रस्ताव था। इसके अतिरिक्त सर्वेक्षण कार्य भी प्रगति पर था, जिसका उद्देश्य मुख्यतः 3/4 इन्क्लाइन की खदानों और नं० 1 होरिजन के खदानों के बीच बैरियर की पर्याप्तता का पता लगाना था जैसी कि इस निदेशालय द्वारा सलाह दी गई थी, क्योंकि प्रबंधक मानसून के प्रारम्भ होने से पहले प्रथम होरिजन पर कार्य पुनः शुरू करने का इच्छुक था।"

64. इस मामले का उल्लेख पक्षकार नं० 1 द्वारा दायर लिखित बयान के पैराग्राफ 30 में भी इस प्रकार किया गया है :—

"खान को सुरक्षित बनाने और इन्क्लाइन तथा प्रथम होरिजन के बीच पंक्चर पाईंट पर पानी के बांध के निर्माण के लिए यह समयोचित समझा गया था कि खान सुरक्षा के संयुक्त निदेशक, धनबाद क्षेत्र नं० 2 के निदेशानुसार सर्वेक्षण कार्य पूर्ण किया गया और सर्वेक्षक और चेनमैन सर्वेक्षण का कार्य करने के लिए लगाये गये।"

65. श्री दीपक सरकार के अनुसार, 3/4 इन्क्लाइन भूमिगत कार्यों के सर्वेक्षण हेतु खान सुरक्षा महानिदेशक के निर्देश लिखित पत्र में निर्दिष्ट थे। यह पत्र श्री ए० बी० सिंह, संयुक्त निदेशक, खान सुरक्षा द्वारा भेजा गया था और हमें सूचित किया गया था कि यह निर्देश 28-2-1976 को भेजा गया था। श्री सरकार से पूछा गया था कि खान सुरक्षा महानिदेशक से इस निर्देश के प्राप्त होने पर कौन-कौन सी कार्यवाहियां की थीं और उन्होंने बताया कि उन्होंने संबंधित प्रबंधक, श्री एस० एन० चौधरी और डा० आर० एस० राय को हिदायतें दी थीं कि वे सर्वेक्षण कार्य को पूरा करने के लिए दो खानों के सर्वेक्षकों को अनुदेश जारी करें। (श्री एस० एन० चौधरी श्री रामानुज भट्टाचार्य के स्थान पर 4-1-1976 से गहरी खान के प्रबंधक बन गये थे। श्री दीपक सरकार के अनुसार स्वर्गीय श्री एस० राय चौधरी गहरी खान के सर्वेक्षक थे और श्री आर० एन० बनर्जी इन्क्लाइन और क्वैरीज के सर्वेक्षक थे।

66 फरवरी में और फिर 5-4-1976 को सर्वेक्षकों के दल के कार्य के बारे में जिरह के दौरान डा० आर० एस० राय ने बयान दिए हैं उनसे यह प्रश्न पूछकर कि क्या सर्वेक्षकों का दल अपना कार्य करने के लिए नियमित रूप से नं० 4 इन्क्लाइन में जाता था या नहीं। यह निष्कर्ष निकाला गया कि सर्वेक्षक सर्वेक्षण कार्य के लिए फरवरी में नीचे गए थे और तत्पश्चात् वे फिर 5-4-1976 को गए थे। डा० राय से पूछा गया था कि क्या उनको जानकारी थी कि सर्वेक्षक दल 5-4-1976 को नं० 4 इन्क्लाइन की भूमिगत खदानों में गया था या नहीं और उनका उत्तर था कि उन्हें केवल दुर्घटना के बाद ही मालूम पड़ा कि इस दुर्घटना में सर्वेक्षण दल भी अन्तर्ग्रस्त था।

67. उपरोक्तानुसार, हमारे पास अब निम्नलिखित तथ्यों की सही तस्वीर है :—

(1) क्वैरी बैड की पूर्वी साइड की ओर निचान में पानी के सामान्य प्रवाह का 27-12-1975 के बाद और 5-4-1976 से पहले का स्वरूप।

(2) स्लिट ट्रेंच की सहायता से और पाइपों के जरिये पानी के इस प्रवाह का रास्ता बनाने के प्रयास ताकि पानी पाइपों के जरिये 3/4 इन्क्लाइन भूमिगत खदानों में गिर सके।

(3) 27-12-1975 के पश्चात् धंसाव दरारों और तथाकथित "कुएं" को भरने के प्रयास, जैसा कि श्री एस० एन० मिश्र, हस्को के सर्वेक्षक ने बयान दिया।

(4) 3, 4 और 5 अप्रैल, 1976 को क्वैरी बैड में पानी इकट्ठा होने की प्रक्रिया और इकट्ठे हुए पानी की मात्रा।

अधिकारियों का दायित्व

68. स्लिट ट्रेंच और पाइप-लाइनों को जनवरी, 1976 में लगाया गया था और उसी समय "कुएं" के उत्तर की ओर एक बांध बनाया गया था, जैसा कि श्री एस० एन० मिश्र ने बताया है। श्री दीपक सरकार 4-1-1976 से 3/4 इन्क्लाइन और क्वैरीज के एजेन्ट थे। उनको क्वैरी के धंसाने वाले भाग में पानी के प्रवाह के रास्ते और "कुएं" के भरने का पता था। प्रदर्श 1/9, द्वारा जारी किए गए निर्देशों के संबंध में, श्री दीपक सरकार से कई प्रश्न पूछे गए थे और निम्नलिखित प्रश्न और उत्तर प्रसंगीमित हैं :

प्रश्न : निर्देशानुसार निर्माण कार्य को समापन होने के पश्चात् क्या उसका निरीक्षण खान सुरक्षा महानिदेशालय के अधिकारियों द्वारा किया गया था ?

उत्तर : मैंने जनवरी के अन्त में उसी दिन अनुपालन रिपोर्ट श्री आर० वाई० सिंह को दी और जिस प्रकार यह किया गया था, वह उन्हें बताया।

69. श्री दीपक सरकार ने 'के' स्तर का निरीक्षण पहली और दूसरी अप्रैल, 1976 को निरीक्षण किया, जैसा कि उन्होंने बतलाया है और उन्होंने उसी दिन क्वारी का भी निरीक्षण किया था। उन्होंने क्वैरी बैड में 4-4-1976 की सुबह को पानी इकट्ठे होते हुए देखा था। इस तथ्य को देखते हुए, यह स्पष्ट हो जाता है कि श्री सरकार को तत्पश्चात् 3/4 इन्क्लाइन की भूमिगत खदानों में सभी कार्यों को तुरन्त रोक देना चाहिए था। यदि वह इस मामले में काफी सतर्क होते तो 5-4-1976 को हुई दुर्घटना की लपेट में कोई भी व्यक्ति न जाता, चाहे उस दिन पानी नीचे ही क्यों न चला गया होता।

70. जहां तक डा० राय का संबंध है, इस मामले का आधार दूसरा है। उनको 29-3-1976 या इसके पश्चात् कोई औपचारिक कार्यभार नहीं सौंपा गया था। उन्होंने बतलाया कि उनको इसकी जानकारी नहीं थी कि क्वैरी बैड पर पाइप, स्लिट ट्रैंप, आदि की व्यवस्था की गई थी ताकि पानी नं० 4 इन्क्लाइन खदानों में नीचे की ओर चला जाए। जिसका अर्थ है कि प्रदर्श 1/8 और 1/9 में निर्दिष्ट निर्देशों का कैसे अनुपालन किया गया था। इसलिए यदि डॉ० राय का मार्च, 1976 के द्वितीय सप्ताह से पहले इन्क्लाइन के भूमिगत खदानों और क्वैरी से कोई संबंध नहीं था, तो उन्हें इस बात का भी पता नहीं होगा कि पानी भूमिगत खदानों में "कुएं" के जरिए क्वैरी बैड के नीचे कैसे बहता था और इस पानी के चैनलाइजियन और "कुएं" एवं धंसाव दरारों को भरने का स्वरूप क्या था। अतः उन्होंने क्वैरी बैड में पानी के इकट्ठा होने के खतरे को केवल पानी की मात्रा को देखकर ही अनुभव नहीं किया होगा।

71. 5-4-1976 की सुबह को खान में क्या हुआ, इसका स्पष्ट उल्लेख रिकार्ड पर भी आ गया है। डा० राय ने कहा कि वह इन्क्लाइन कार्यालय में सुबह के लगभग 7 बजे गए थे और उन्होंने कार्यों के संबंध में 9 बजे पूर्वाह्न के लगभग श्री एस० आर० सिंह, सहायक प्रबंधक से विचार-विमर्श किया था। उन्होंने बताया कि जब व्यक्ति नीचे गए, तो वह होलेज रोप की व्यवस्था करने स्टोर में चले गए। उस रोप का प्रयोग उस दिन के लिए किया जाना था। उनका "व्यक्तियों" से तात्पर्य बांध निर्माण में लगे श्रमिकों से था। डा० राय के अनुसार, उन्होंने स्टोर से अध्यक्ष, श्री हिनेन माया, और मुख्य कार्यपाल (कोयला खान), को 3/4 इन्क्लाइन क्वैरी की साइड में आते हुए देखा और वह उसी समय से उनके साथ लगभग दोपहर के डेढ़ बजे तक रहे, जबकि उन्हें दुर्घटना के बारे में पता चला। श्री केदार प्रसाद सिंह, अध्यक्ष, जो कि सर्वेक्षकों के साथ भूमि के नीचे गए थे, के अनुसार इस दल में सम्मिलित स्वर्गीय श्री एस० राय चौधरी, स्वर्गीय श्री आर० एन० बनर्जी और अन्य तथा वह स्वयं 5-4-1976 को सुबह के दस बजे भूमि के नीचे गए थे। अतः यह साफ प्रकट होता है कि डा० राय को दुर्घटना वाली तारीख को 3/4 इन्क्लाइन भूमिगत खदानों में सर्वेक्षण दल के जाने के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। डा० राय के अनुसार 24-2-1976 को हुई बैठक के कार्यवृत्त में यह उल्लेख था कि उन्हें श्री दीपक सरकार को रिपोर्ट देनी थी और वह ऐसा कर रहे थे। इसलिए, यदि किसी अधिकारी पर 3/4 इन्क्लाइन के पुरानी खदान में भूमिगत कार्यों को रोकने की जिम्मेदारी डाली जा सकती है तो एजेन्ट तथा क्षेत्रीय मैनेजर के रूप में श्री दीपक सरकार, पर है (वह 29-3-1976 को 3/4 इन्क्लाइन और क्वैरीज के क्षेत्रीय प्रबंधक बने थे)।

72. मेरा अन्तिम निष्कर्ष यह है कि श्री दीपक सरकार की लापरवाहियों के कारण 3/4 इन्क्लाइन के भूमिगत खदानों में 5-4-1976 को जो दुर्घटना घटी वह डा० दीपक सरकार की लापरवाही के कारण घटी और इस दुर्घटना का कोई दोष आर० एस० राय के कन्धों पर नहीं डाला जाना चाहिए।

73. इस निष्कर्ष को देखते हुए कि दुर्घटना प्रबंधक के एक सदस्य की लापरवाही के कारण हुई थी, खर्चों की वसूली का आदेश खान नियम, 1955 के नियम 22 के अधीन जारी किया जाना चाहिए, जो निम्नानुसार है :

"खर्चों की वसूली—यदि जांच न्यायालय यह पाता है कि दुर्घटना प्रबंधक की लापरवाही या असावधानी के कारण हुई तो, न्यायालय ऐसे न्यायालय के खर्चों की वसूली के लिए आदेश दे सकता है, जिसमें जांच से संबंधित अन्य खर्चे भी शामिल हैं। यह खर्चे संबंधित खान के मालिक, एजेन्ट या प्रबंधक से ऐसे तरीकों से और निर्दिष्ट समय के भीतर, जो न्यायालय द्वारा निर्धारित किया जाय, वसूल किया जाना चाहिए।

(2) वह राशि जिसे उप नियम (1) के अधीन वसूल करने का निदेश दिया गया है, मुख्य निरीक्षक या निरीक्षक द्वारा उस मिजस्ट्रेट को आवेदन पत्र प्रस्तुत कर, जिसके क्षेत्राधिकार में वह खान स्थित है अथवा जहां फिलहाल ऐसा मालिक रहता है, वसूल की जा सकती है। उस राशि को मजिस्ट्रेट के क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत मालिक की जो चल सम्पत्ति है, उसकी कुर्की करा के या उसको बेच कर वसूल किया जा सकता है।

इस लिए जांच न्यायालय आदेश देता है कि जांच न्यायालय पर हुए खर्चे, जिसमें इस रिपोर्ट को तैयार करने के खर्चे भी शामिल हैं खान के मालिक अर्थात् इंडियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड से वसूल किए जाने चाहियें। इन मदों पर किए गए खर्च का हिसाब जांच न्यायालय के विचार के लिए खान सुरक्षा महानिदेशक द्वारा यथाशीघ्र परिगणित और प्रमाणित किया जाएगा। न्यायालय द्वारा खर्चों की राशि बताने के पश्चात् वह राशि इंडियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड द्वारा राशि निश्चित किए जाने के छः महीने के अन्दर, उपयुक्त शीर्ष के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार के नाम में सरकारी कोष धनबाद में अवश्य जमा की जानी चाहिए।

ह० (यू० एन० सिन्हा)
जांच न्यायालय,
5 अप्रैल, 1976 की चसनाला
कोयला खान दुर्घटना

निर्धारक

1. श्री सी० करुणाकरन,
सेवा निवृत्त महानिदेशक,
भारतीय भू विज्ञान सर्वेक्षण संस्था,
ह० जी० एस० मरवाह
ह० दामोदर पांडे
संसद सदस्य

2. श्री जी० एस० मरवाह,
निदेशक, भारतीय खान स्कूल।

चसनाला कोयला खान में 5-4-1976 को हुई दुर्घटना के संबंध में श्री यू० एन० सिन्हा, जांच न्यायालय, द्वारा खान अधिनियम, 1952 की धारा 24 के अधीन तैयार की गई रिपोर्ट।

मैंने श्री यू० एन० सिन्हा द्वारा तैयार की गई रिपोर्ट को पढ़ लिया है और मैं उनके निष्कर्षों से सहमत हूं। मुझे इस संबंध में और कुछ नहीं कहना है।

ह० सी० करुणाकरन
निर्धारक
4-1-1977

अनुबन्ध-क

पक्षकार (प्रबंधक) की ओर से परीक्षित गवाहों की सूची

1. श्री एस० एन० मिश्र
2. श्री दीपक सरकार
3. डा० आर० एस० राय

पक्षकार संख्या 8 (खान सुरक्षा महानिदेशालय)

1. श्री एस० एन० ठाकुर
2. श्री टी० के० मजुमदार
3. श्री ए० बी० सिंह
4. श्री एस० सी० बत्रा
5. श्री एस० पी० गांगुली

पक्षकार संख्या 3 (सर्वेयर्स एसोसिएशन)

1. श्री चिनमोय मुखर्जी, विश्वायक
2. श्री केदार प्रसाद सिंह
3. श्री राज मंगल यादव

न्यायालय गवाह

1. श्री महबूल अन्सारी
2. श्री वकील खां
3. श्री वशिष्ट सिंह
4. श्री एस० डी० सिंह।

अनुबन्ध ख

पक्षकार सं०/1 (प्रबंधक) की ओर से प्रदर्शों की सूची

क्रमांक	प्र०सं०	दस्तावेजों का विवरण
1.	1	लिखित बयान के साथ अनुबंध क की प्रति।
2.	1/1	लिखित बयान के साथ अनुबंध ख की प्रति।
3.	1/2	लिखित बयान के साथ अनुबन्ध ग की प्रति।
4.	1/3	लिखित बयान के साथ अनुबन्ध घ की प्रति।
5.	1/4	लिखित बयान के साथ अनुबन्ध ङ की प्रति।
6.	1/5	लिखित बयान के साथ अनुबन्ध च की प्रति।
7.	1/6	लिखित बयान के साथ अनुबन्ध छ की प्रति।
8.	1/7	लिखित बयान के साथ अनुबन्ध ज की प्रति।
9.	1/8	लिखित बयाम के साथ अनुबन्ध झ की प्रति।
10.	1/9	लिखित बयान के साथ अनुबन्ध ञ की प्रति।
11.	2	श्री एस० एन० मिश्र, सर्वेक्षक द्वारा बनाया गया काउंटर प्लान का नीला नक्शा।
12.	2(1)	प्र० 2 का मूल प्लान (ट्रेसिंग कागज पर)।
13.	2/1	सेक्शन को ग्रिड के साथ दर्शाने वाला प्लान।
14.	2/1(1)	प्र० 2/1 का मूल प्लान ट्रेसिंग कागज पर।
15.	2/2	जल की मात्रा का अनुमान लगाने के संबंध में संगणना शीटें (सात कागज)।
16.	2/3	ए, बी० सी० स्तर खानों का पार्ट कम्बाइंड प्लान (ट्रेसिंग कागज पर)
17.	2/4	ग्राफ कागज पर लाइन 'ए' 'बी' के साथ फैक्टरी के सामने सेक्शन बताने वाला प्लान।
18.	3	फ़ील्ड बुक
19.	3/1	फ़ील्ड बुक

पक्षकार सं० 3 की ओर से प्रदर्शों की सूची

(सर्वेक्षण एसोसिएशन)

1. एए	स्व० श्री एस० राय चौधरी तथा श्री एस० के० मण्डल के नोट दिनांक 28-2-1976 की सत्यापित प्रति।
2. बी बी	'के' स्तर के बारे में स्व० श्री एस० राय चौधरी को भेजे गये प्रबंधक चसनाला कोयला खान, के पत्र सं० 38 /372, दिनांक 20-8-1976 की सत्यापित प्रति।

पक्षकार 8 (खान सुरक्षा महानिदेशालय) की ओर से प्रदर्शों की सूची

1	2	3
क्रमांक	प्र० के० निशान	दस्तावेज का विवरण
1.	ए	श्री एस० एन० ठाकर द्वारा रिकार्ड किया हुआ श्री राज मंगल यादव का बयान।
2.	ए/1	श्री केदारप्रसाद सिंह द्वारा रिकार्ड किया हुआ श्री केदार प्रसाद सिंह का बयान।
3.	ए/2	दिनांक 14-4-1976 को श्री एस० सी० बत्रा द्वारा रिकार्ड किया हुआ श्री दीपक सरकार का बयान।
4.	ए/3	दिनांक 18-4-1976 को श्री एस० सी० बत्रा द्वारा रिकार्ड किया हुआ श्री दीपक सरकार का बयान।
5.	ए/4	श्री ए० बी० सिंह द्वारा रिकार्ड किया हुआ डा० आर० एस० राय का बयान।
6.	ए/5	श्री एस० सी० बत्रा द्वारा रिकार्ड किया हुआ श्री केदार प्रसाद सिंह का बयान।
7.	ए/6	श्री ए० बी० सिंह द्वारा रिकार्ड किया हुआ श्री एच० पुईसुन्डी का बयान।
8.	ए/7	श्री ए० बी० सिंह द्वारा रिकार्ड किया हुआ श्री एस० बनर्जी का बयान।
9.	ए/8	श्री ए० बी० सिंह द्वारा रिकार्ड किया हुआ श्री वशिष्ठ सिंह का बयान।
10.	ए/9	श्री ए० बी० सिंह द्वारा रिकार्ड किया हुआ श्री रतन रेवानी का बयान।
11.	ए/10	श्री एस० बी० सिंह द्वारा रिकार्ड किया हुआ श्री चौधरी सिंह का बयान।
12.	ए/11	श्री एस० सी० बत्रा द्वारा रिकार्ड किया हुआ श्री राजमंगल यादव का बयान।
13.	ए/12	श्री एस० सी० बत्रा द्वारा रिकार्ड किया हुआ श्री एस० डी० सिंह का बयान।

1	2	3
14.	ए/13	श्री एस० सी० बक्षा द्वारा रिकार्ड किया हुआ श्री बी० के० सिंह का बयान।
15.	ए/14	श्री एस० सी० बक्षा द्वारा रिकार्ड किया हुआ श्री वकील खां का बयान।
16.	ए/15	श्री एस० सी० बक्षा द्वारा रिकार्ड किया हुआ श्री माहबुल अन्सारी का बयान।
17.	ए/16	श्री एस० सी० बक्षा द्वारा रिकार्ड किया हुआ श्री एस० एन० चौधरी और 29 अन्यों का बयान।
18.	ए/1-1	प्र० के० ए/1 पर केदार प्रसाद सिंह के हस्ताक्षर (बिना तारीख के)।
19.	ए/5-1	प्र० के० ए/5 पर श्री केदार प्रसाद के हस्ताक्षर, दिनांक 6-4-1976।
20.	बी	दिनांक 5-4-1976 को दुर्घटना विस्तृत प्लान (प्लान नं० 1)
21.	बी/1	दिनांक 5-4-1976 को विध्वंशक दुर्घटना प्लान (प्लान नं० 1ए)
22.	बी/2	इन्कलाइन क्वैरी कंटोर प्लान नं० 3/4 का विस्तृत प्लान।
23.	सी	श्री दीपक सरकार की वैयक्तिक डायरी।
24.	सी/1	डा० आर० एस० राय की डायरी।
25.	डी	दिनांक 6-4-1976, 7-4-1976 और 14-4-1976 को श्री एस० सी० बक्षा द्वारा बनाये गये तीन जब्ती ज्ञापन। (संक्षेप में अंकित):
26.	ई	फार्म 1 के साथ 4 संलग्नकों सहित नोटिस।

[एन० 11015/8/77-एम० 1]

आर० पी० नरूला, अवर सचिव

MINISTRY OF LABOUR

New Delhi, the 9th November, 1977

S.O. 220.—In pursuance of section 27 of the Mines Act, 1952 (35 of 1952), the Central Government hereby publishes the report submitted to it under sub-section (4) of section 24 of the said Act by the Court of Inquiry appointed under that section by the notification of the Government of India in the Ministry of Labour No. S.O. 1561 dated the 20th April, 1976 to hold an inquiry into the causes of, and circumstances attending, the accident which occurred on 5th April, 1976 in the Chasnala Colliery in District Dhanbad, State of Bihar.

Report of the Court of Inquiry into the causes of and circumstances attending the accident which occurred at Chasnalla Colliery in District Dhanbad, State of Bihar on the 5th April, 1976.

REPORT

1. Preliminary.—By Notification dated 20th April, 1976, Government of India in the Ministry of Labour, were of the opinion that a formal inquiry into the causes and circumstances attending an accident which had occurred in the Chasnalla Colliery (District Dhanbad in the State of Bihar), on the 5th April 1976, causing loss of lives, ought to be held and I was appointed to hold such inquiry, under Section 24, sub-section (1) of the Mines Act, 1952 (35 of 1952). By the same notification appointing me to hold the inquiry, the following persons were appointed as Assessors in holding the inquiry, namely :—

1. Shri C. Karunakaran, Retired Director General of Geological Survey of India.
2. Shri G. S. Marwaha, Director, Indian School of Mines.
3. Shri Damodar Pandey, Member of Parliament.

2. What had happened on the 5th April, 1976 was that at about 1.30 P.M. on that day, a volume of water accumulated in a quarry bed, had rushed down into, what is described as old workings of 3/4 inclines, in 13/14 seam of Chasnalla Colliery, as a result of which five persons of a Survey team, doing survey work in the old underground workings, were killed. The names of the persons who had lost their lives in this accident and their occupations are mentioned below.—

S. No.	Name	Occupation
(1)	Shri S. Roy Choudhury	Surveyor.
(2)	Shri R. N. Banerjee	Surveyor.
(3)	Shri Fatick Ojha	Chairman.
(4)	Shri Ballabh Modak	Chairman.
(5)	Shri Sita Ram Singh	Chairman.

3. The dead bodies of the first three persons had been brought out from the underground old workings of 3/4 incline on the date of the accident namely, 5th April 1976. They were found just below J level, in Incline No. 4. The dead body of Shri Ballabh Modak was recovered on 8th April, 1976 from the same locality from where the other three dead bodies were recovered on the date of the accident. The dead body of Shri Sitaram Singh was found on 12-4-1976 inside the debris in the 1st horizon of the deep mine, below the "puncture point", as it is now being called. (The spots where the dead bodies had been recovered have been shown in a plan submitted by Party No. 8 marked as Ext. B/1). It may be mentioned, at this stage, that through the "puncture", as it is called, a very large volume of water which had accumulated in 3/4 incline underground workings, had rushed inside the deep mine on 27-12-1975, causing the first accident.

4. When I received a copy of the Notification dated 20-4-1976, I and the three Assessors, named-above, were in the midst of holding an inquiry into the causes of and circumstances attending the accident which had occurred on 27-12-1975, in the presence of a number of parties who had appeared in that inquiry. The constitution of the present Court of Inquiry, with the Assessors, was brought to the notice of all the parties who were appearing in the first inquiry and sufficient publicity was given, with respect to the constitution of this second inquiry. Typed notices to the prominent organisations in Dhanbad were issued and a notice of holding this inquiry was put up on the notice board in the premises of the President of the Central Coal Mines Rescue Stations Committee at Dhansar (Dhanbad District). By that notice, 17th May, 1976 was fixed for the preliminary sitting of this Court of Inquiry and, on 17th May, 1976, the following parties appeared :—

1. The management of the Chasnalla Colliery represented by the persons named in their written applications (made Party No. 1).
2. The Indian National Trade Union Congress (INTUC), Indian National Mine Workers' Federation and Rashtriya Colliery Mazdoor Sangh, who have jointly appeared by one petition (made Party No. 2).
3. Association of Indian Mine Surveyors appearing through the persons named in the application (made Party No. 3).
4. All India Trade Union Congres (AITUC), Indian Mine Workers' Federation and United Coal Workers' Union appearing through the persons named in the written application (made Party No. 4).
5. The United Trade Union Congress (Lenin Sarani) and Bihar Coal Miners' Union, appearing through the persons named in the written application (made

6. The District Authorities of Dhanbad represented by Shri J. B. Lala, Public Prosecutor, Dhanbad (made Party No. 6).

7. Centre of Indian Trade Unions, Colliery Mazdoor Sabha of India and Bihar Collery Kamgar Union, Dhanbad who appeared jointly through the persons named in the written application (made Party No. 7).

8. The Directorate-General of Mines Safety through Shri S. P. Ganguli (made Party No. 8).

9. Indian National Mines Overmen, Sirdars and Shotfirers' Association, through the persons named in their written application (made Party No. 9).

10. Coal Mines Officers' Association, through Shri P. Sen (made Party No. 10).

Later on, two more parties appeared, namely :—

1. Chasnalla Mine Mazdoor Union.

2. Koila Ispat Mazdoor Panchayat, Jharia, Mine Mazdoor Union, Dhanbad, All India Khan Mazdoor Federation and Hind Mazdoor Sabha, who appeared jointly.

5. These two parties were made Parties No. 11 and 12 respectively. In due course all the Parties (except the Directorate-General of Mines Safety, Party No. 8) filed their statements in writing, and, on behalf of Directorate-General of Mines Safety, Shri S. P. Ganguli, Director of Mines Safety, filed his statutory report as the statement in writing of this party.

6. Lists of witnesses were filed some of the parties, and ultimately witnesses were produced in Court by the following parties and examined—

Party No. 1 (Management)	....3 witnesses
Party No. 8 (DGMS)	....5 witnesses
Party No. 3 (Surveyors' Association)	....3 witnesses

Four witnesses have been examined as Court witnesses.

A list of the witnesses examined is appended as Annexure A.

A large number of documents and plans have been brought on the record as Exhibits, and a list of these Exhibits is appended as Annexure B.

An Order sheet of the proceedings of the Court of Inquiry has been regularly maintained to show how this Inquiry has proceeded.

7. Local Inspection.—I may mention that two local inspections had been made by me, prior to the issuance of the formal notification under Section 24(1) of the Mines Act, 1952, on having been informed that a Court of Inquiry was going to be appointed and I was to hold such inquiry. I was present in Dhanbad on the 13th April 1976 in connection with the inquiry regarding the accident which had occurred on 27th December 1975 and I made a local inspection of the quarry bed, from where water was said to have rushed down, causing the accident on the 5th April 1976. The bed of the quarry was then dry and I was explained as to what was the situation on or immediately before 5th April and how accumulated water had gone down from the quarry bed. The second local inspection was made on 16th April, 1976, with Shri G. S. Marwaha and Shri C. Karunakaran, and we inspected the site once again. Detailed inspections were made at this stage and we were again explained how water had accumulated in the quarry bed, from where it had escaped down incline No. 4, causing the accident.

8. History of Ownership.—In the report of the Court of Inquiry held in connection with an accident which had happened in Chasnalla Deep mine on 27-12-1975, the situation of Chasnalla Colliery and some of the connected facts have been given in detail. For the purpose of this inquiry a shorter description of the colliery and its situation is given below. So far as ownership of the property is concerned, Indian Iron & Steel Co. Ltd. is the owner of Chasnalla Colliery and the history in this connection has also given in detail in the report submitted in connection with the earlier accident in the deep mine.

9. Description and Situation of Colliery.—Chasnalla Colliery is situated on the north bank of river Damodar, at the south-eastern fringe of Jharia Coalfield in the Sadar Sub-division of District Dhanbad and is about km by road from Dhanbad on Dhanbad—Sindri road. It has an area of 902 acres or about 2706 bighas of coal bearing land. A major dyke, about 27 m thick, runs North-South cutting across the coal seams and several thin off shoots from the main dyke are met with Nos. 13/14 seams have been developed/extracted on either side of the dyke through separate sets of inclines.

10. Details of workable seams proved in the area are given below:—

Sl. No.	No. of Seam	Thickness (Metres)	Parting (Metres) from the lower seam)	Remarks
1.	17B	2.1	8–10	Developed through ten inclines upto a depth of 45 metres along dip. Abandoned in 1948. Water logged at present.
2.	17A	2.1	70–80	Developed through fifteen inclines upto 75 metres depth along dip. Abandoned in 1948. Water logged at present.
3.	17(Spl)	2.3	80–100	Developed and partially depillared by stowing. Being developed and extracted at present through inclines.
4.	16	1.8–2	40–50	Virgin.
5.	15	2	2–3	Jhama (Virgin).
6.	14A	2	40–50	Jhama (Virgin)
7.	13/14	24	10–40	Developed through Nos. 1, 2, 2A, 3 (old) Inclines of west of the dyke, and from Nos. 3, 4 and HK inclines on the east of the main dyke. Workings abandoned in 1949 and got waterlogged in due course. Also, worked through HK Quarries. Present underground workings through Nos. 1 and 2 Pits in I and II Horizons.
8.	12	4–5	30–80	Mostly virgin, except a small old quarry on the outcrop side. Some new workings have been made from Nos. 1 and 2 pits where it lies close to 13/14 seam.
9.	11/10	10–12	—	3 metres coal (rest jhama) Developed in a small patch and abandoned in 1948.

[We are concerned with the workings of 13/14 combiden seam].

11. There are three Quarries as indicated below:—

QUARRIES

Name of the opencast working	Name of the seam worked	Extent of working
No. 1 Quarry	12,13/14	1500 ft. along the strike and 200 ft. along dip.
No. 2 Quarry	13/14	1600 ft. along the strike and 200 ft. along dip.
No. 3 Quarry	13/14	200 ft. by 200 ft. at the time of the accident.

12. Quarry No. 1 is situated on the western edge of the property in Chasnalla mouza. It has been worked along the outcrop. It had been abandoned before IISCO took over but was restarted in the year 1972 and was discontinued due to outbreak of fire from April 1974.

13. Quarry No. 2 is situated, in Het Kandra Mouza, from Domohani Jore to Superphosphate Road. The quarry was started in March, 1973. It is in progress, the present extent being about 1600 feet along the strike and 200 feet along the dip.

14. Quarry No. 3 has been planned in Chasnalla mouza for extracting coal from 13/14 combined seam between 3/4 Inclines.

(The accident which had taken place on 5-4-1976 was in course of working in Quarry No. 3).

15. Now, details of the inclines into 13/14 combined seams may be given. No. 13/14 seam combined is said to be 86 feet in thickness and has a gradient of 1 in 1.5. This combined seam has been worked through four inclines on the Western side of the dyke and by three Inclines on the Eastern side of the dyke. The four Inclines on the Western side of the dyke are as follows :—

(1) No. 1 Incline

(2) No. 3 Incline (old)

(3) No. 2A Incline

(4) No. 2 Incline

The Inclines on the Eastern side of the dyke are as follows :—

(1) No. 3 Incline

(2) No. 4 Incline

(3) No. HK Incline

The incline workings in 13/14 combined seam on the Western side of the dyke have been developed in the pattern of levels and sub-levels extending upto L level. The maximum width of the level-workings across the seam is 170 feet and the maximum length along the strike is 1400 feet.

The levels and sub-levels have been worked on Board and Pillar system.

The incline workings on the Eastern side of the dyke have extended upto K level and the pattern of workings on this side also is the same as that of the Western side of the dyke. These old workings were discontinued on and from 20-4-1949. (It is of importance to note at this stage that the accident which had taken place on 27th December 1975, had occurred by inundation of the underground deep mine, from the water which had been allowed to accumulate in the underground workings on the Eastern side of the dyke mentioned above, which workings are described as the 3/4 incline underground workings. We are concerned in this Inquiry with Inclines No. 3 and 4, underground workings on the Eastern side of the dyke).

16. According to the history given by the management—

"The old workings of 13/14 seam developed through 3 and 4 Inclines and H. K. Inclines were under water since 1949. Dewatering started through 3/4 Inclines sometimes late in 1963. During the early period of dewatering, through No. 3/4 Inclines, a surface collapse took place at H. K. Incline mouth on 27-11-1963. This completely blocked the mouth of H. K. Incline. A 'Bund' was subsequently built around the opening of H.K. Incline to protect against high flood water."

17. It is said that dewatering continued from 3/4 Inclines till 2-4-1966. When the water level reached between E and F level of old workings, a major subsidence took place between No. 3 and 4 Inclines. This caused the roof of 'A' level to collapse right upto the surface. However, the dewatering operation was continued till 17-5-1967, when active fire was detected in the workings between 3/4 inclines. The mouth of 3/4 inclines, including the stowing shafts at Ranidanga, were then sealed off on 18-5-1967. The seal in 3 and 4 Inclines was broken on 26-9-1967 and restricted dewatering restarted. According to the management the level of water afterwards was however, never allowed to fall below 'C' level roof because of susceptibility to fire.

18. At one time there was a connection between the Incline workings on the west side of the dyke, through Nos. 1, 2, 2A and 3 inclines and the workings on the eastern side of the dyke through Nos. 3 and 4 inclines, at A level, which was later demmed off.

19. Natural Drainage along Quarry Bed.—The position of the quarry bed where water had accumulated before the accident of 5-4-1976, in relation to the underground workings in 3/4 inclines, may be understood from a plan exhibited on behalf of Party No. 8 as Exhibit B. [Part of Ext. B with the Key Plan, is attached herewith as Annexure C (not printed)]. A place on this plan has been described as the 'position of the puncture'. Through this puncture, which developed on 5-4-1976, a volume of water, accumulated in the quarry bed, had gone down the old underground workings, resulting in the accident under consideration. Even before this accident, a natural flow of water used to go down through the quarry bed into 3/4 old workings, as has been described by Shri S. N. Mishra, a Surveyor of Indian Iron & Steel Co. Ltd. (examined as Witness No. 1 for the management), and also by Shri Dipak Sarkar (examined as Witness No. 2 for the management). Shri Mishra has explained that some water from the quarry bed used to fall down to B level of the old underground workings (between 3 and 4 incline) and then go further down. The passage of water from the quarry bed down into the old workings was through, what has been described by Shri Mishra as a "well". [What had been done to this passage of water and the "well" after 27-12-1975 will be narrated subsequently.]

20. The natural drainage of water along the bed of this quarry, down into the old workings between 3 and 4 incline, has also been described by Shri Dipak Sarkar, who was the Area Manager of 3/4 Incline and Quarries and Agent of whole of Chasnalla Colliery on the date of the accident. The question put to Shri Sarkar was, what was the drainage system at the surface, at the quarry and the catchment. His answer was as follows :—

> "From the south side of 3 and 4 incline quarry, the water used to come to the quarry bed and from the north side also the drain water used to come to the quarry bed and all these together (sic) North-west side used to flow towards east and into the depression where some coal had been extracted from the quarry."

21. This is the water which used to flow down through, what was described by Shri S. N. Mishra as a "well" like

passage, into 3/4 incline workings. Ext. B shows the quarry in question and the depression towards its eastern end, and it also gives the picture of a stream of water which used to flow towards the lowest end of the depression, indicating this free flow of water before the accident of 5-4-1976.

22. This water was channelised to flow down into the old workings below, through a silt trap and two pipes laid out after the first accident in the deep mine which had taken place in 27-12-1975.

Action taken after 27-12-1975.

23. From two documents brought on the record on behalf of the management, marked as Exhibits 1/8 and 1/9, it appears that a technical committee had been formed after the first accident and Ext. 1/8 represents the decision of the Committee arrived at on 8-1-1976. The first item of Ext. 1/8 reads as follows :—

> "No. 3/4 Incline—(A) If there is a direct connection and if it is approachable, a C. I. sheet stopping may have to be constructed to prevent passage or air into the incline workings which may result in heating."

24. Ext. 1/9, also dated 8-1-1976, contained the directions issued to the management of the colliery from the Directorate of Mines Safety. These directions were also in relation to stoppings to prevent circulation of air in the 3/4 incline underground workings. The last direction in this context was to the following effect—

> "Surface subsided areas, cracks, pot holes etc. shall be filled up expeditiously in the area between No. 3 and 4 inclines."

25. What action had been taken by the management thereafter, has been described by Shri S. N. Mishra, the management's Surveyor. The relevant question put to Shri Mishra was :

> "Now Mr. Mishra, please explain, according to the technical Committee, at the top of the quarry what construction work was done regarding silt traps, air seal etc."

The answer to this question was as follows—

> "During the meeting myself and Mr. R. N. Banerjee, late Surveyor were present when this job of erecting these stoppings and closing the surface pot holes were given to us. Entire openings of all the quarries including 3, 4 and HK were barricaded first and then covered with sand. There was an opening due to collapse near the quarry of 3/4 inclines which was required to be isolated from top. I have raised a bund just near but alightly outside the puncture point towards its north at the end of the month of January, 1976. Then in the two pipelines a silt trap was made. Two pipes were fitted below the bund from the silt trap. A silt trap was also made about 20 to 25 feet away approximately towards the north of this bund at about the end of January 1976. The water used to collect within the silt trap first, then it followed through the pipe to the puncture point. One pipe was of 2 inch and the other of 3 inch in diameter."

26. How the channelised water used to flow down into the 3/4 incline old workings, after the silt trap had been set up, has been described by Shri S. N. Mishra in the following words :—

> "I have already explained that water was going to B level from the quarry through this pipe right on to the B level. Then through B level water fell to C level and then went towards No. 3 incline. Also a little quantity of percolated water was going towards No. 4 incline. I could observe no water falling from the quarry on to B level and coming down further, went right upto Incline No. 4 and falling down that incline. The distance between the place where water was falling on B level upto Incline No. 4 towards the east was about 300'."

27. This part of the evidence can be followed from plan, Ext. 2/3 which shows the silt trap, the pipe leading from it for the discharge of water down below and the place where the water was falling down into the old workings, in relation to its distance from Incline No. 4, towards its eastern side. Part of Exhibit 2/3 is attached as Annexure D (not printed). The plan has been reduced to Scale 1 : 600.

Checking of the pipe in April, 1976

28. How this free flow of water got choked and how a volume of water had accumulated in the quarry bed, before the accident of the 5th April, 1976 may now be narrated. In the statement in writing filed by the management (Party No. 1) this matter has been referred to in paragraphs 23 to 29 as follows :—

(23) That in the course of recovery operations an air seal was provided at the quarry by building a temporary catchment area allowing the accumulated water to pass through pipes down the cracks into the old workings and each blanketing had been done to prevent breathing of air.

(24) That due to rain which occurred on 3-4-1976 the earth blanketing got washed up and the earth and the silt that was carried by muddy water jammed all the pipes which used to discharge the accumulated water to the subsidence cracks existing earlier.

(25) That the water started over-flowing the water seal arrangements and was directly passing through the cracks to the underground.

(26) That as the inflow of water from the catchment area was more than the discharge of water to the underground through the cracks, the water accumulated to certain height in the catchment area.

(27) That the percolation of water through cracks continued on 3-4-1976 and 4-4-1976 and the water level went down and the height of water became 3 to 4 feet at the deep most point in the morning of 5-4-1976.

(28) That the water level further reduced by 11 a.m. or so on 5-4-1976 and there was hardly 15,000 to 20,000 gallons of water remained accumulated at the catchment area.

(29) That on the day of the accident an officer of the Directorate General of Mines Safety was present in the Chasnalla Colliery premises and the presence of 15,000 to 20,000 gallons of water at that particular spot said to have been reported by the appropriate authority of the Department.

29. The expression "accumulated water" occurring in paragraphs (23) and (24) can not have the same meaning.

30. It may be mentioned at this stage that the expression "accumulated water" appearing in paragraph 23 does not refer to the large volume of water that had accumulated in the quarry bed from 3-4-1976 to 5-4-1976; what is referred to is the channelised water that used to flow down freely in the quarry bed as normal flow and then go down into the 3/4 incline old workings, in the natural course of events.

31. Shri Dipak Sarkar was asked on behalf of Party No. 8 as to what was the natural seepage of water into the quarry and he said that, after the accident of 5th April 1976, a V-notch was installed at the exposed bed of the quarry and it was found that the natural seepage which was running at the floor of the quarry depression was about 2000 to 2500 gallons per hour. Shri Sarkar further explained that this natural seepage of water was finding its way through the quarry bed, by the pipes set up after the accident of the 27th December, 1975 to which reference has been made earlier.

32. It may also be noticed at this stage that the impression given in this written statement of Party No. 1 is that the discharge pipes and the silt trap had got jammed by the earth and silt carried by muddy water, on account of the rains which had fallen on 3-4-1976, but it will appear presently that this did not give the whole picture as to how the pipes had got jammed, with the result that a mass of water had accumulated in the quarry bed.

33. According to Shri Dipak Sarkar, at the end of 1975, for a few months, the overburden in and around the quarry was being removed by a number of contractors, some of whom were using bull-dozers and scrapers. From February 1976 this work was taken up by a large firm of contractors who were using bull-dozers, pay-loaders, shovels and a drag-line. Shri Sarkar has further stated that, towards the west side of the quarry, some overburden was being removed to expose coal and in that process mixture of sand, loose earth and debris had fallen in the lower quarry bed causing the heaps indicated in Exhibit 2. According to him, some of the debris might have also fallen from the top of the steep side of the quarry, at places. Therefore, the pipes which were put down in the quarry bed, along with the silt trap after 27-12-1975, must have got chocked from the combination of loose earth, sand etc. which have fallen in the quarry bed during the removal of the over-burden, as well as by the earth and silt carried by the muddy water on account of rain which had fallen in the evening of 3-4-1976. The rain water had added to the stream of water which was flowing down the quarry as natural seepage, and that is how a huge volume of water could accumulate in the quarry on 5-4-1976, before the accident had occurred.

Chocking of water flow and its release according to the court witnesses.

34. Some relevant statements have been made by the Court Witnesses examined in this enquiry, with respect to the jamming of the pipe which used to carry water from the quarry bed to the 3|4 incline quarry below, and also with respect to the accumulation of water in the quarry bed before the accident had occurred on the April 1976. Shri Sahadul Ansari (Court Witness No. 1) has stated that at times, soil etc. were falling as a result of the work of bull-dozers, used to jam the pipes and they had to be cleared at times for free flow of water. The evidence given by the next Court Witness, Shri Khan, is of more importance. He has deposed that in the month of January 1976 some bamboo matting had been placed so that the pipes carrying seepage water down into the old working did not get jammed by any soil or any other thing. He has stated that after he had joined his duty in the second shift on 3-4-1976, he had noticed that some water had accumulated in the quarry bed. He had gone down near the mouth of the pipe with some workers and they had tried to clear the pipe which had got jammed resulting in the accumulation of water. At first some of the workers tried to remove the obstacle by poking the pipe with a rod and when they failed, this witness tried himself. The rod had slipped from his hand and he had fallen down, injuring his left palm. This had happened in the evening of the 3rd April 1976. *It is clear from this evidence that the accumulation of water had not started with the rain which had falled at about 7 P.M. in the evening of that date,* but earlier, Shri Wakil Khan was asked whether he had met Dr. R. S. Rai and Shri S. B. Singh at or near the quarry on 3-4-1976 and his answer was in the affirmative. According to this witness, Dr. R. S. Rai and Shri S. B. Singh were on the bank of the quarry at the top and the witness had told them about the unsuccessful attempt to clear the jam and about getting hurt. Shri Wakil Khan had gone to the hospital after the accident and, according to him, he had come back to the quarry again on 3-4-1976 from the hospital and at that time he had seen Dr. R. S. Rai, Shri Sukhendu Banerjee and Shri Chattoraj, Chief Engineer. So far as the witness remembers, these persons were discussing about the accumulated water. Dr. Rai, according to Shri Wakil Khan was telling Shri Sukhendu Banerjee, Colliery Engineer, that a pump should be installed to pump out the accumulated water. Shri Wakil Khan had gone on duty on 4-4-1976, in the first shift and he had seen that a pump had been brought by Shri Pritam Singh (Heavy Tyndel) and his gang, and that it had been put on one side of the quarry. Attempts were being made to set up the pump. The pump could not be set up and put in commission on 4-4-1976. According to Shri Wakil Khan, water which had accumulated on 3-4-1976 was about 1-3/4 feet deep in the quarry bed and it had become 2-1/4 feet high on 4-4-1976. *This evidence makes it clear that water was continuing to accumulate in the quarry bed from the evening of* 3-4-1976 *to* 4-4-1976 *and the water-level was getting higher and higher.* Shri Wakil Khan is also very specific about the increase in the accumulation of water on 5-4-1976. *He has stated that, after he had joined duty* in the first shift of 5-4-1976, he had noticed that the water which had accumulated in the previous day had not decreased and the pump had not been installed by them. He had in fact noticed that the level of water had gone up on 5-4-1976. A little before 1-30 P.M., he was on duty on the quarry side, when Shri Baijnath Gope (of the arch-setting gang) and some others had come from the underground workings and informed this witness that the flow of water going down below was increasing. The witness went to the quarry bed-side and noticed that water had accumulated there from the hangwall to the foot-wall and that some water had apparently gone down. This he could notice from the water-mark alround, showing decrease of about 6 inches of water. He had gone to the quarry working side and a few minutes thereafter he was informed that the whole of the accumulated water had gone down into the old workings. He went to the quarry bed side and found that there was a hole near the place where they had put the matting, and apparently all the accumulated water had gone down through this hole.

35. Position of the quarry bed, where water had accumulated before the accident, in relation to the Hangwall and the Footwall of 13/14 combined seam can be well understood from a section across the quarry along line A-B, marked as Ext. 2/4. A copy of this section is appended as Annexure E (not printed). The plan has been reduced to Scale 1 : 600 Line A-B is to be seen in Ext. 2/3.

Quantum of water accumulated in the quarry bed.

36. To consider the quantum of water that could have accumulated, I will go back to the written statement filed by Party No. 1 where it is said that hardly 15,000 to 20,000 gallons of water could have accumulated in the quarry bed on 5-4-1976, just before the accident. In the written statement filed on behalf of the Directorate General of Mines Safety (Party No. 8) it is mentioned, in Chapter IV that a total accumulation of water in the quarry on 5-4-1976 "was estimated to be about 2,35,000 gallons". The question of the quantity of water which could have accumulated before the accident, was made a matter of serious controversy between these two parties, and oral and documentary evidence have been adduced in this connection. How this quantity was estimated in the written statement of Party No. 1 is to be found in paragraph 29 of their statement. With reference to the officer of the DGMS mentioned in paragraph 29, the matter was put to Shri S. N. Thaker, then a Deputy Director of Mines Safety (Witness No. 1 for Party No. 8) in cross-examination by Party No. 1, and he denied having told Shri S. S. Prasad in presence of the management's representative in the evening of 5th April, 1976 that 15,000 to 20,000 gallons of water had accumulated at the quarry bed and that this water had caused the accident. This part of the management's case, mentioned in paragraph 29 of its written statement (put to Shri S. N. Thaker, who was the first witness to be examined in this inquiry) is based on utterly unreliable matter as will appear immediately. Shri Dipak Sarkar stated in cross-examination in this context that 15,000 to 20,000 gallons of water had remained accumulated at the catchment area on 5-4-1976, and that he had obtained this information from his officers and staff soon after the accident and that Shri S. S. Prasad had also confirmed this at the time of the local inspection of the quarry by the Court of Inquiry. According to Shri Dipak Sarkar Shri S. S. Prasad had said at that time that he had been told by Shri Thaker that 15,000 to 20,000 gallons of water had gone down on the date of the accident. What had been put to Shri Thaker was that he had told Shri S. S. Prasad about this quantity of water having accumulated and that someone else had also told that 15,000 to 20,000 gallons of water had accumulated in the quarry bed. Obviously, at the early stage at which Shri Thaker was examined, the management's case put to him was of a fishing nature. Shri Dipak Sarkar's deposition has made the matter more crystallised but the next witness examined on behalf of the management, Dr. R. S. Rai, has said something quite different. According to Shri Dipak Sarkar, Dr. R. S. Rai was one of the persons who had told him about the quantity of water that had accumulated in the quarry bed. According to Dr. R. S. Rai however, when the Court of Inquiry was visiting the quarry, with a Assessor, Shri S. S. Prasad had asked somebody about the quantity of water that had accumulated in the quarry bed on the day of the accident and Shri S. P. Ganguli, Director of Mines Safety mentioned that it was about 1,00,000 gallons. On this Shri S. S. Prasad had said that Shri S. N. Thaker had told him on phone, just after the accident that 15,000 to 20,000 gallons of water had accumulated in the quarry bed. This

is a different version of what Shri S. S. Prasad had been told by the officers of the DGMS. Therefore, I do not think there is any substance in what has been mentioned in paragraph 29 of the written statement of Party No. 1, regarding only 15,000 to 20,000 gallons of water having accumulated in the quarry bed on 5th April, 1976 before the accident. The estimate given on behalf of Party No. 8 in Shri S. P. Ganguli's statutory report (2,35,000 gallons) is based on the calculation made by Shri T. K. Mazumdar, a Deputy Director of Mines Safety at the relevant time. He had originally been a Research Assistant in DGMS and then the Survey Superintendent in the Directorate till August 1974. He had visited the quarry on 6th April, 1976 on directions from Shri A. B. Singh, Joint Director of Mines Safety, and he had observed water marks in the quarry bed and, on that basis he had made a survey from 7-4-1976, for preparing plans and sections. According to Shri Mazumdar, the quantity of water that could have accumulated in the quarry before the accident on 5th April, 1976 had been calculated by Shri D. K. Sinha, Surveyor and checked by Shri H. S. Hazra and Shri L. N. Sao, Surveyors under his direction and it had been calculated that approximately 2,35,000 gallons of water had accumulated. According to Shri Mazumdar, the actual quantity could have been 10 per cent more or 10 per cent less than this calculated figure. Shri Mazumdar was crossexamined elaborately on his survey work and on the calculations, but I do not think that anything important has been elicited to disbelieve his testimony that a large volume of water, that is to say, more than 2 lakh gallons had accumulated in the quarry bed before the accident took place on 5-4-1976. Curiously enough, in view of the management's case made out in paragraph 29 of its written statement, what was put to Shri T. K. Mazumdar in cross-examination on behalf of that party was that the maximum amount of water that could have accumulated, on the basis of the water marks observed by him, would not have been more than 60,000 to 70,000 gallons. Whatever may be the case put to the witnesses examined on behalf of Party No. 8, the case of Party No. 1 in this context has been given by Shri S. N. Mishra, an IISCO Surveyor, examined on behalf if Party No. 1 itself. He had also calculated the quantity of water which could have collected in the quarry area prior to 5-4-1976 by survey and, according to him, his calculation indicated in Exhibit 2/2, that the maximum volume of water that could have accumulated was 1,32,852.72 gallons. Shri Mishra's calculation was also based on the water mark observed in the quarry bed. Therefore, even the evidence of Shri S. N. Mishra indicates that the volume of water which had accumulated in the quarry bed before the accident on 5-4-1976 was a much larger volume of water, and not only 15,000 to 20,000 gallons of water mentioned in the statement in writing of Party No. 1. From the direct evidence given by some of the Court Witnesses, it will also appear that an enormous volume of water had gone down into the 3/4 incline old workings at about 1.30 P.M. on 5-4-1976, causing great devastation there.

37. In my considered opinion the case made out by the management in paragraphs 28 and 29 of its written statement to the effect that on 5-4-1976 15,000 to 20,000 gallons of water had gone down into the old workings from the quarry bed, is difficult to accept. This is also clear from the nature of the devastation caused which I have discussed later. A huge volume of water must have accumulated in the quarry before the occurrence on 5-4-1976.

Knowledge About Accumulation of Water.

38. Now I will deal with the point as to whether the officers incharge of the quarry had known of this huge accumulation of water in the quarry bed, before the accident on 5-4-1976 and what action was taken by them. It may be mentioned here that evidence is on record to the effect that some rain had fallen in the evening of 3-4-1976. Shri Dipak Sarkar, who was then the Area Manager, has stated that he had inspected K Level and also the quarry on 1st or 2nd April 1976 and that after this date, he had gone to the quarry on the 5th April, 1976 after the accident. It was put to Shri Sarkar that he had visited the quarry in the morning of 4-4-1976, with Dr. R. S. Rai and that at that time he had been pointed out that water had accumulated in the quarry. Shri Sarkar's answer was that on 4th April he had gone towards the south of the quarry, in the morning, to see about the proposed embankment and he had met Dr. R. S. Rai in the morning, but he had not been told anything about any accumulation of water in the quarry. This statement of Shri Sarkar is not supported by Dr. R. S. Rai. Shri Sarkar has stated, further, that he had not gone to the Incline Office in the morning of 4th April, 1976. It was put to Shri Sarkar that he had gone to the quarry in the evening of 3rd April in the company of Dr. R. S. Rai and others, where arrangement for the installation of pump was discussed and the answer to this too was in the negative. What Dr. Rai knew from 3-4-1976 till 5-4-1976 and what he did about the accumulation of water may be mentioned at this stage. He has stated that there was heavy rainfall from about 7 P.M. to about 9 P.M. on 3-4-1976. He knew in the morning of 4-4-1976, about an accumulation of water in the quarry bed, but according to him he had found that the water was less in the evening. He had also seen the quarry in the morning of 5-4-1976 and he had seen water accumulated there in the depression. In the morning of 4-4-1976 Dr. Rai had ordered installation of pump in the quarry. So there is no doubt that Dr. R. S. Rai had knowledge of the accumulation of water in the quarry bed, for which pump was going to be installed. Dr. Rai had also visited the quarry site in the morning of 5-4-1976 for the pump installation.

39. Whether Shri Dipak Sarkar had known on 4-4-1976 about any accumulation of water in the quarry bed or not, has been deposed to by Dr. R. S. Rai in cross-examination when it was put to him that he had visited 3/4 incline quarry in the morning of 4-4-1976 along with Shri Dipak Sarkar and that at that time Shri B. K. Singh, Overman of the quarry, had pointed out to him about the danger from the accumulation of water in the quarry. Dr. Rai's answer was that Shri B. K. Singh had not said anything about danger from this water, but they had jointly seen some accumulation of water in the quarry. A specific question was asked about Shri Dipak Sarkar, and the answer was clear that Shri Sarkar was also there. So Shri Dipak Sarkar had also known about the accumulation of water in the quarry bed in the morning of 4-4-1976. As a matter of fact, according to Dr. Rai, he had discussed the pump installation matter with Shri Sarkar on 4-4-1976.

What happened underground on 5-4-1976.

40. Evidence has come on record as to what had happened in the 3/4 incline underground workings at about 1.30 P.M. on that day, and what was the result of the occurrence. Of the witnesses, whose evidence will be dealt with below, two Chainmen have been examined on behalf of Association of Indian Mine Surveyors (Party No. 3), they are Shri Kedar Prasad Singh and Shri Raj Mangal Yadav. A Mining Sirdar, named Shri Bashistha Singh has been examined as a Court Witness. According to Shri Kedar Prasad Singh, at 10 a.m. in the morning of 5th April, seven persons including him had gone underground. The other six persons were—

(1) Shri S. Roy Choudhury, Surveyor.

(2) Shri R. N. Banerjee, Survey.

(3) Shri Sitaram Singh, General Mazdoor, working as a Chainman.

(4) Shri Fatik Ojha, Chainman.

(5) Shri Ballabh Medak, Chainman.

(6) Shri Raj Mangal Yadav, Chainman.

(Of these, the first five persons died as a result of the occurrence on that day).

41. It will appear presently that another person, named, Shri Bashistha Singh, Mining Sirdar, had also gone underground at that time, what happened underground at about 1.30 P.M. has been described by Shri Kedar Prasad Singh thus—

"At that time, I could hear a loud sound. We discussed among ourselves as to what the sound was from. Shri Roy Choudhury said it was the sound of air. At that time we were at the junction of K level and No. 4 incline. I could see water coming down the incline. So, we started running upwards via No. 4 incline. All seven of us were running

up together. Upto about G level, all seven of us were together. At that time, the height of water in No. 4 Incline was increasing. At that stage, I remarked that we should now look after ourselves and ran for our lives. Shri Raj Mangal Yadav started running up quickly. I was following him nearby going up as my cap lamp had extinguished. The other five persons were behind us. When we two were above G level, I noticed iron rails coming down the incline from above. There were wooden pieces and pipes also coming down. The depth of water coming down Incline No. 4 was about 18 inches at that stage. I enquired from Shri Raj Mangal Yadav as to whether there was any place where we could go for our safety. He said yes, there was and he ran up to take shelter in a man-hole between levels F and G. I also ran up following Shri Raj Mangal Yadav and took shelter in the same man-hole. The man-hole was to the left of No. 4 Incline going upwards. We were in the man-hole for about half an hour. During this time, water that had come down in No. 4 Incline had risen upto two feet in height. After about half an hour, the water decreased and when all the water had gone down, we came out in the main dip. We showed the lamp down the incline but we could find no trace of the other persons who were following us. Then we started to go upwards and we had to do so with some difficulty. When we had crossed F level, we saw some persons coming down with light. They were three in number. They gave us courage by saying that there was no fear any more and we should try to go above ground. These persons helped us to come out of the Incline."

42. Shri Raj Mangal Yadav has narrated his experience as below :—

"At about 1.30 P.M. water started coming down from above. I was somewhere inside the gallery and seeing water lowering down, Kedar Singh and Shri Roy Choudhury called for me. Inside the gallery I was standing holding a plumb-bob line. Hearing Shri Roy Choudhury saying that we should run, I came to the main dip. From that place all of us started running up the incline. At that time water coming down was about 1 foot in height. Rails, pipes and wooden pieces were coming down the incline with the water. While going up I had come across a man-hole. I took shelter in it and when Kedar Singh also came in that man-hole. I had noticed that Shri Kedar Singh had fallen down just outside the man-hole. Actually I had pulled him in the man-hole. While we were in the man-hole, the height of water in the incline had increased. We were inside the man-hole for about half-an-hour. After the water level had come down in the incline the two of us came out of the man-hole and started going up. When we had walked up some distance, we met the Mining Sirdar and Overman, whose names I do not know. They were saying that they were Mining Sirdar and Overman. They told us that they were there and they asked us to go up the incline. After we had met these two persons, they took us above ground through another route and not through the incline itself. When we had met these two persons, water was still coming down the incline. The depth of water in the incline was about 6 inches at that time. Thereafter we came outside the incline."

43. The Mining Sirdar and Overman, whose names Shri Raj Mangal Yadav did not know at that time, were Shri Bashistha Singh and Shri S. D. Singh (both examined as Court Witnesses). The evidence given by Shri Kedar Prasad Singh and Shri Raj Mangal Yadav, has been fully corroborated by Shri Bashistha Singh, with respect to what had happened underground. According to Shri Bashistha Singh, Dr. R. S. Rai had asked him on 4-4-1976 to work in the incline on the next day and so on the date of the accident he had gone to work at about 7.30 a.m. Shri S. D. Singh, Overman, had said that there will be work done in the incline and underground, and the overman has asked Shri Bashistha Singh and the other workers to go down incline No. 4 and wait for him at A level. The workers went down at about 8 a.m. and stopped at A level. Shri S. D. Singh had come and met the workers, and he and Shri Bashistha Singh had gone further down. Some persons were left behind to bring pipes from the surface. These pipes were required for pumps. Where Shri Bashistha Singh had gone down and what had happened thereafter may be described in his words as follows :—

"I had gone down upto J level with Shri Ratan Bauri, line-mistry as we had to set up the line. Shri S. D. Singh went further down with the timber mistry, named Shri Durga Prasad Tiwari for supporting arches. I had reached J level at about 9 a.m. At about 11 a.m. I had noticed two persons coming from above, whom I had not known from before, one had spectacles on and the other dressed in full-pant. The gentleman who was wearing spectacles went further down and I had to assist the other gentleman who was dressed in white-pant to go further down the incline. I had enquired from this gentleman as to who he was but he had not said anything. The line-mistry had informed me that this gentleman was Banerjee Babu, Surveyer, He informed me that the other gentleman who had spectacles on was Roy Choudhury Babu. Some other persons had come with materials for survey work and they had gone further down from J level where I was working Shri S. D. Singh had come upto J level and had told me that it was necessary for one of us to go down and assist the Surveyors and I was asked to go and have some tea and then come down, so that I could go and help the Surveyors. Actually none of us went up and as a matter of fact we stayed at J level along with Shri S. D. Singh. The Chainmen of the Surveyors had asked that the throwing of logs should be stopped otherwise they may roll down and injure the persons down below and so we had stopped work at J level. We had enquired as to how much time the Surveyors would take, so that we could continue with our work at J level and we were informed that there was no certainty about this matter. So Shri S. D. Singh went out with the other workmen, while I went down to K level to assist the Surveyors and their men. While the Surveyors and their men were working at K level, their Chainman was a little below J level, fixing the centre line. I was standing a little above the arch set up near the junction of No. 4 incline and K level. Little after 1 P. M. this Chainman who was little below J level, shouted that water was coming down the incline. I informed those who were below me about this warning and I took up the safety lamp and proceeded upwards along the incline. When I was about 20 feet below this Chainman I had noticed boulders coming down with water, along the incline and I shouted to the Chainman that he should run upwards. Looking downwards I noticed that one person was trying to come up holding the arch and some others were trying to come up, holding each other. This I could notice with the help of the cap lamp. I started running up from J level and when I had come to about D level the flow of water was more and I went up by holding the rail because the rail was above the floor of the incline. I had taken the safety lamp by the teeth and that is how I could go up with the help of the rail in incline No. 4. After I had gone up to the point from where water was going down, I noticed that the rails were also washed down the incline. I had noticed that the flow of water had filled the dimension of the incline and I had come out and gone to the office."

44. In the office, Shri Bashistha Singh had met Shri S. B. Singh, Assistant Manager, to whom he narrated what had happened below and asked for assistance. Immediately thereafter he had gone down the incline again, accompanying by Shri S. D. Singh, Overman. What had happened thereafter has been stated by Shri Bashistha Singh as follows :—

"When water started decreasing, I and Shri S. D. Singh went further down to about C level or further down. I could notice two cap lamps burning and persons there, one was standing and another had fallen down. I went down and lifted this person up and helped him to come up. Later on I came to know that his name was Shri Kedar Singh. The other person who was standing before, came up by himself. I came to know later on that this person was Shri Raj Mangal Yadav. After we had all come up to the mouth of the incline. I had seen there Bhaduri Saheb, Sarkar Saheb and Rai Saheb. A thick rope was sent down the incline for rescue work. By this time, the rescue team had also arrived. I had gone down upto K level for rendering rescue work. I had noticed lot of loose timbers etc. in the incline and at K level. From K level I had gone outside and I was again asked by Bhaduri Saheb to go down for rendering assistance. With the help of the rope I had gone down to some extent but then I found that there was fear of our lives and so I and some others ran towards east along C level and concealed ourselves. At

about 9 P.M. in the evening we were informed that we could come out and so I came out at that time. From the mouth of the incline we were taken to the Officers' Colony in a Police Van and Dr. Rai was also with us at that time. I and Shri S. D. Singh remained in the Officers' Colony for the whole night."

45. Evidence of Shri Bashistha Singh has been supported by Shri S. D. Singh, Overman, as to having gone down upto A level and having met Shri Bashistha Singh with the other workmen present there. What happened thereafter has been described by Shri S. D. Singh as follows :—

"I asked the workers who were engaged in lowering pipes, to take the pipes down to K level, as pipes were very necessary there. At G level, I left some workmen, for lowering cogging sleepers. Between J and K level, I told Shri Bashistha Singh to supervise the line extension there. I went down to K level and at about 11 a.m. the Surveyors arrived there. I knew one of the Surveyors, Banerjee Babu. They set their instruments for the survey work. One was set at the centre of the main dip at J level. The other was set in K level to the West of its junction with the main dip. After our support work was completed, I asked the Khutta Mistry (Prop Mistry) to come up to J level, for other work. I had enquired from the Surveyors as to how long they would conduct their work and I was told that they would work for four or five hours more and so I went upto J level and met Shri Bashistha Singh there. I told Shri Bashistha Singh that as survey work was going on, one of us have to stay back. I suggested that either he or I should stay underground with the surveyors. Shri Bashistha Singh suggested that he would remain and I could go up with the other men. So Shri Bashistha Singh remained behind and I and the other wokers came up. I had sent Shri Bashistha Singh down to K level. My talk with Shri Bashistha Singh was at about 1 P.M. When I and the other workers came up to G level I saw the pipe lowering gang was coming down with four pipes. They were standing at G level I told this gang that it was 1 P.M. and they had not yet lowered the pipes to K level. Some of the gang were willing to go down immediately with the pipes and some were not so willing and hence we remained at G level for a few minutes. At about 1.15 P.M. we were at G level, we could hear sound of water coming down. I could see water coming down the incline right upto G level. I told the gang present at G level that along with water, materials like rocks and boulders may come down and so they should go up and take shelter somewhere in D level. So far as I know, these people ran up, straightaway from G level. When I had come up to D level, I met the Timber Mistry there. He said that others had gone up the incline, but he could not go as his lamp was not functioning. From D level I and the Timber Mistry took another route by the cross-cut and not through Incline No. 4 and when we came upto A level, I could see water flowing down the incline. Water was going down at some force. From there, I and the Timber Mistry came out from the incline mouth and went to the quarry office."

46. Shri S. D. Singh has also corroborated Shri Bashistha Singh about his going down on the second occasion, when he had met Dr. R. S. Rai along with one workman, below D level. Shri S. D. Singh had also met Shri Dipak Sarkar near about G level. While Shri S. D. Singh was at this place, Dr. Rai and other workmen accompanying him had come up from below and Dr. Rai had stated that three dead bodies could be seen down below and the whereabouts of the others were not known. Shri S. D. Singh had also been taken into the Officers' Colony that night for safety and security and he had stayed there for the whole night.

47. An important point to be noticed from the evidence of Shri Kedar Prasad Singh, Shri Raj Mangal Yadav, is about the force of water that must have come down incline No. 4 at the time of the occurrence. Shri Kedar Prasad Singh had stated that he had seen iron rails coming down the incline from above and wooden pieces and pipes were also coming down. The depth of water coming down between No. 4 was about 18 inches in the vicinity of G level. According to Shri Raj Mangal Yadav, when he was in the underground working, inside the gallery, he had started running up the incline when water came down and at that time the water was about one foot in height and rails, pipes and wooden pieces were coming down when he was in the man-hole, the height of water in the incline had increased, and he and Shri Kedar Prasad Singh took shelter in the man-hole for about half an hour. Thereafter, the flow of water had decreased. Shri Bashistha Singh was standing a little above the arch set up near the junction of No. 4 incline and K level, when water came down the incline. When he had gone up to near J level, he had noticed boulders coming down with water along the incline. Shri Bashistha Singh had started running up from J level and when he had come up to about D level, the flow of water had increased and he could go up only by holding the rail, which was above the floor of the incline. When he had gone up to the point from where water was going down No. 4 incline, he had noticed that rails had also been washed down the incline. He had noticed that the flow of water had filled the whole incline, indicating the volume of water that was going down.

48. The above evidence is a clear indication of the fact that large volume of water had gone No. 4 incline at about 1.30 P.M. with great force, taking down with it wooden and iron materials. It may be mentioned at this stage that the distance between the place where water must have fallen, at the time of occurrence from the Quarry on to B level and the junction of the level with Incline No. 4, towards the east was about 300 feet, as deposed by Shri S. N. Mishra. From Ext. 2/3 which is on scale, this distance would appear to be not less than 300 feet. Therefore, the volume of water falling down into the underground working from the quarry was such that, apart from travelling in any other direction, water had travelled about 300 feet towards the east, to Incline No. 4 and had gone down the Incline in the manner described by the witness and causing the devastation mentioned above.

49. A plan marked as Exhibit B/1, submitted on behalf of Party No. 8 has been described as "Devastation Plan of Accident on 5-4-1976 due to Inrush of Water". This gives a picture of the devastation which had been caused by the inrush of water in No. 4 Incline and in its neighbourhood. This plan also confirms the conclusion that a huge volume of water must have gone down, otherwise such devastation could not have been caused, leading to the unfortunate death of five human beings.

Effect of Accumulated Water Falling Underground on 5-4-76

50. Another aspect of the force of water falling down on 5-4-1976 may be understood from the following and for this I go back to the instructions issued by the Directorate of Mines Safety soon after the first accident of 27-12-1975, regarding the isolation of the workings in the 3/4 incline underground workings, as a measure of precaution. I have already referred to a document in this connection, Ext. J dated 8-1-1976, with respect to the steps that were advised to be taken on the surface. The relevant portion of Ext. J with respect to underground workings of 3/4 incline reads as follows :—

> "In order to isolate the working between No. 3 and 4 Inclines from the air circuit ventilating the Inclines, it is suggested that following works shall be undertaken. A(i) Workings in number D and other successive lower levels connected with No. 3 Incline and No. 4 Inclines (cross-cut) shall be sealed by sand bag stoppings/corrugated iron sheet stoppings. Similarly, connections on east of No. 4 Incline (cross-cut) in different levels except dip most level shall be sealed. Sampling pipes shall be left in the stoppings for regular collection of air samples."

51. In this context also, some questions had been put to Shri S. N. Mishra, management's Surveyor, to which reference may now be made. He has stated that after the accident which had occured on 27-12-1975, he had made sand-bag stoppings and corrugated-sheet stoppings underground, to isolate the openings of No. 3 and 4 inclines, in

levels as was desired by the Technical Committee. Shri Mishra was asked what different he had noticed underground, near No. 4 Incline, on his inspections of A level before the accident and after the accident of 5-4-1976. His answer was that A level near No. 4 incline was packed with sand and there was no approach from the west to east into No. 4 incline. According to Shri Mishra, similar was the position of B level. So far as 'C' level was concerned, he said that there was some access which he and his party had stopped. According to him, further, to the west of No. 4 Incline, there were stoppings from A to K levels and some stoppings from No. 4 incline were made by him and his party, to prevent air circulation from east to west. The evidence given by Shri Mishra, mentioned earlier about the situation after the accident, clearly shows that when water had emptied out from the quarry bed, at the time of the accident on 5-4-1976, it had removed the obstacles between the spot where water had fallen, on B or C level and the junction of No. 4 Incline. The stopping between these points could not have been of a flimsy nature, and the force of the water moving east-wards along B or C level, to No. 4 incline, can be imagined. This must be taken into consideration, specially when the normal flow of water falling at the level through the so-called 'well' or through the pipes set up after 27-12-1975, was towards the west, i.e. to say, towards No. 3 Incline and not towards No. 4 Incline, to the east. An enormous quantity of water must have falled at the time of accurrence through the aperture made on 5-4-1976, to move towards the east, to No. 4 Incline, removing the barriers and bringing down the rails etc., about which the witnesses have deposed. The aperture that the accumulated water had made at the surface in the quarry bed, on 5-4-1976 has been described by Shri Dipak Sarkar as follows :—

> "The puncture point subsided and a big piece of coal block which was hanging by the side toppled and a big crater was formed."

52. According to him, further, the vertical displacement due to subsidence was about 6 to 7 feet downwards. Shri Dipak Sarkar has also stated that he had gone underground through Incline No. 4 immediately after the occurrence and, while going down he had found that from just above 'G level, a very big block of coal had slided. Dr. R. S. Rai had gone down to the underground workings for the second time, after returning from leave, on or about the 15th and 16th of April 1976 and he had found the packwalls in A level completely washed off. From what he had learnt from different people, he would conclude that there was some big roof fall in A level, at the time of the accident, which had caused an air-blast and sudden rise of pressure of air and water.

Who was the Manager of 3/4 Incline Underground Workings on 5-4-1976

53. Before the responsibilities of the officers concerned can be ascertained, a controversy with respect to the position held by Dr. R. S. Rai on 5-4-1976 has to be decided. The question in controversy is whether Dr. R. S. Rai was the manager of 3/4 incline underground workings on 5-4-1976 or not. My attention had been drawn to some provisions of the Coal Mines Regulations, 1957 and elaborate oral evidence has come on the record on the point.

54. The regulations mentioned above are Regulations 8,30,31 (4) and 31 (7) which read as follows :—

Regulation 8, Change in ownership and addresses etc.

(1) (a) When a change occurs in the name of ownership of a mine or in the address of the owner, agent or manager, shall within seven days from the date of the change give to the Chief Inspector and the Regional Inspector a notice in Form I :

Provided that where the owner of a mine is (***) a firm or other association of individuals, a change—

(i) of any partner in the case of a firm ;

(ii) any member in the case of an association :

(iii) of the director in the case of a private company ; or

(iv) of any shareholder in the case of a private company shall also be intimated to the Chief Inspector and the regional inspector, within seven days from the date of the change.

(b) When the ownership of a mine is transferred, the provious owner or his agent shall make over to the new owner or his agent, within a period of seven days of the transfer of ownership, all plans, sections, reports, registers and other records maintained in pursuance of the Act and the regulations, or orders made thereunder all correspondence relating to the working of the mine relevant thereto ; and when the requirements of this clause have been duly complied with, both the previous and the new owners or their respective agents shall forthwith inform the Chief Inspector and the regional inspector in writing.

(2) When any appointment is made of an agent, manager, engineer, surveyor, ventilation officer, safety officer, under manager of assistant manager or when the employment of any such persons is terminated or any such person leaves the said employment, or when any change occurs in the address of any agent or manager, the owner, agent or manager, shall, within seven days from the date of such appointment, termination or change, give to the Chief Inspector of Mines and the Regional Inspector a notice in Form II.

Regulation 30 Definitions—For the purpose of this Chapter :

(a) Every system of workings belowground interconnected in such a manner that communication is practicable from any one part of the system to any other part by means of galleries, channels or drifts belowground shall be deemed to constitute one mine. If access from one system of such workings belowground to another such system is not practicable each system shall be deemed to constitute a separate mine :

Provided that where two or more systems of workings belowground not belonging to the same owner, for any special reason, are inter-connected, each such system shall be deemed to constitute a separte mine :

Provided further that where special conditions exist, the Chief Inspector may, by an order in writing and subject to such conditions as he may specify therein permit or require the effect for a period exceeding 12 months' unless renewed. The division of any one such system into two or more separate mine.

(b) The expression 'average output' means the average per month of the total output of the mine or mines during the preceding quarter.

Regulation 31. Qualifications and appointment of managers.

(4) No person shall act, or be appointed, as manager of more than one mine except with the previous permission in writing of the Chief Inspector and subject to such conditions as he may specify therein. No such permission shall have effect for a period exceeding 12 months, unless renewed. The Chief Inspector may at any time, by an order in writing, vary or revoke any such permission if the circumstances under which the permission was granted have altered or the Chief Inspector finds that the manager has not been able to exercise effective supervision in the mines under his charge.

7(a) Where by reason of absence or for any other reason, the manager is unable to exercise daily personal supervision or is unable to perform his duties under the Act or these regulations, or orders made thereunder, the onwer, agent or manager shall authorise in writing a person whom he considers competent to act as manager of the mine :

Provided that—

(i) such person holds a Manager's or Overman's Certificate ;

(ii) no such authorisation shall have effect for a period in excess of 30 days except with the previous consent

in writing of the Chief Inspector and subject to such conditions as he may specify therein ;

(iii) the owner, agent or manager, as the case may be, shall forthwith send by registered post to the Chief Inspector and the regional inspector a written notice intimating that such an authorisation has been made, and, stating the reason for the authorisation, the qualifications and experience of the person authorised, and the date of the commencement and ending of the authorisation ; and

(iv) the Chief Inspector or the regional inspector may, except in the case of a person possessing the qualification specified in sub-regulation (2), by an order in writing, revoke any authority so granted.

(b) The person so authorised shall, during the period of such authorisation, have the same responsibilities, discharge the same duties and be subject to the same liabilities as the manager.

55. One viewpoint presented before this Court of Inquiry is that 3/4 incline underground workings was a separate mine within the definition under Regulation 30 and that Dr. R. S. Rai had not been appointed as manager of this mine with the previous permission in writing of the Chief Inspector, as required under Regulation 31(4) and as at the relevant time, he has already a manager of Seven Cross-cut in 17 Special Seam Incline mine, he could not have been the manager of 3/4 incline underground workings also on 5-4-1976.

56. In this examination-in-chief, Dr. R. S. Rai (examined for the management, Party No. 1) stated that in November 1974 he was transferred to Chasnalla incline mine (17 special seam) as manager, from Jeetpur Colliery, where he was First Class Assistant Manager (working mainly as Safety Officer), and he continued as manager in Chasnalla Incline mine (17 special seam) upto 16-4-1976. Then he was transferred to Jeetpur again as Manager on Special Duty where he was still continuing as such. When Dr. R. S. Rai was cross-examined on behalf of Party No. 10 (Coal Mines Officers' Association of India), his attention was drawn to Regulation 41 (4) and he was asked whether he had issued authorisations to Assistant Managers, Overmen, Mining Sirdars and other competent persons under him in 3/4 incline underground workings, and his answer was in the negative. He said that this was because he had not taken charge of the mine as yet.

57. The other side of the picture, on this point, is represented by his Diary, Ext. C/1, another diary kept by Shri P. N. Das, Assistant Manager, and the oral evidence given by Shri Dipak Sarkar, who was the Area Manager of Chasnalla Colliery, including 3/4 incline undeground workings from 29-3-1976.

58. Shri Dipak Sarkar has deposed that from 29-3-1976 Dr Rai was the manager of 1 and 2 old incline, 3/4 incline and HK Incline Quarry. He made it clear that Dr. Rai was the manager not only of 17 Special seam, but he was manager of 12,13 and 14 seam old workings also. Shri Sarkar was asked whether, under Regulation 30, these inclines and quarries constituted one mine on 5-4-1976. The answer was that these were at least two mines, but at that time in Seven Cross-cut incline, i.e. 17 special seam incline, no work was going on except for pumping. Shri Sarkar was further asked whether prior permission of the Chief Inspector was obtained before appointing Dr. R. S. Rai as manager of 3/4 incline old workings. The answer was, that this permission should have been obtained. He was then asked as to whether such permission was in fact obtained or not, and he stated that he had given a notice to DGMS, in Form I, on 29-3-1976, stating therein that Dr. Rai was manager in respect of both the mines. Shri Sarkar continued by saying that he was to seek permission under Regulation 31 (4), but no such permission had actually been asked for. When Dr. R. S. Rai was examined as witness following Shri Dipak Sarkar, he was cross-examined on this point on behalf of Party No. 8. He stated that he was not the statutory manager of 3/4 incline old workings and he had no legal document in his possession to claim himself as manager of 3/4 incline and quarries. He stated that he was manager only of Seven Cross-cut on 5-4-1976.

59. In view of Regulations 30 and 31(4), it seems that 3/4 incline workings formed a separate mine, by themselves, and Dr. S. R. Rai was correct in saying that on 5-4-1976 he could not have been statutory manager of 3/4 incline underground workings. This is also clear from the evidence of Shri Dipak Sarkar to the effect that the premission of the Chief Inspector under Regulation 3(4) had not even been asked for. Form I notice (copy marked as Ext. E for Party No. 8) gives a clear impression that 17 Special seam incline (Seven Cross-cut) and 3/4 incline underground working were considered to be two separate mines. There is also no evidence which will indicate that Dr. Rai had been given a copy of Ext. E.

60. The contention raised on behalf of Party No. 1, that the communication sent to the DGMS, marked as Ext. E had amounted to an authorisation of Dr. Rai to act as a manager of 3/4 incline workings, is not of any force. There is nothing on record to indicate that Dr. Rai had received any authorisation in writing, to act as manager. As a matter of fact, Shri Dipak Sarkar was specifically asked about any action having been taken under Regulation 31 (7). His answer was in the negative. The first page of Ext. E does not, in my opinion, fulfil the requirements of Regulation 31 (7), to invest Dr. Rai with the responsibilities, duties and liabilities of the Manager of 3/4 incline underground workings.

61. How Dr. had come to work in 3/4 incline underground workings upto 5-4-1'76 may now be narrated. It was obtained from him by cross-examination on behalf of Party No. 8, that, by minutes of the meeting held on 24-2-1976, he was assigned the duty of supervising the dam construction and embankment construction for salvaging the deep Chasnalla mine. The dam construction was to be inside the 3/4 incline underground workings, to isolate it from the deep mine after the accident of 27-12-1975 and the embankment construction was to be on the surface. Dr. Rai had taken charge of supervising the dam construction sometime in the second week of March. According to him, he was supervising this work as a Special Officer, as this was not a normal operation of the mine. The immediate work for the dam construction in No. 4 incline was to support the incline and to lay tracks for transport of materials for constructing the dam. Thereafter, it appears, that towards the end of March, 1976, it was decided that Dr. Rai should also be appointed as manager of 3/4 incline underground workings. Dr. Rai has stated that there was a circular issued by the Chief Personnel Manager dated 26-3-1976 by which he was to be appointed manager of 3/4 incline underground workings. This is also the evidence of Shri Dipak Sarkar. According to Shri Sarkar, on 29-3-1976 he had sent the required Form I notice (Ext. E) to DGMS. indicating the appointment of Dr. Rai in that capacity. According to Shri Sarkar he had appointed Dr. Rai as manager in the capacity of Agent and had informed the DGMS. He had also informed Dr. Rai orally on the 29th March 1976 about this matter. It is from these circumstances that this controversy has arisen as to the capacity in which Dr. Rai was working on 5-4-1976.

62. From the above, all that can be said is, that Dr. Rai had come to know on 29-3-1976 from Shri Dipak Sarkar that he was the manager of 3/4 incline underground workings and quarries. But, it is also clear that by that time or even thereafter, the legal requirements of the Regulations were not complied with in respect of the appointment of Dr. Rai as manager of 3/4 incline and quarries and Dr. Rai cannot be blamed if his attitude was, as he has clarified in his cross-examination, that he could accept the appointment only on authorisation by the owner or agent of the mine and on all legal formalities having been complied with. All that can be said from his diary (Ext. C/1) is that he was supervising some work of 3/4 incline and quarries on 1-4-1976, 2-4-1976 and 3-4-1976. Shri Ramanuj Bhattacharyya had gone away by 29-3-1976, and so there was no manager of 3/4 inclines and quarries if Dr. Rai had not legally stopped into the place of Shri Bhattacharyya. As Dr. Rai was supervising the dam construction even earlier, the entries in his diary Ext. C/1 or his signing the diary of Shri P.N. Das Assistant Manager on 1-4-1976 and 2-4-1976 could not have altered the picture, investing him with the rights, duties and responsibilities of the manager of 3/4 incline and quarries from 29-3-1976.

Works of the Survey Team upto 5-4-1978.

63. How the Survey team of the late Shri S. Roy Choudhury and late Shri R. N. Banerjee, Surveyors, had gone to work in No. 3/4 incline underground workings on 5-4-1976 may now be narrated :—

Chapter II, paragraph 5.2 of Shri S. P. Ganguli's statutory report mentions the matter thus—

> "5.2 : It was proposed to construct a dam in the offending gallery in order to isolate the working of the incline from those of the pits. Support work and track laying was being done in No. 4 incline and this incline was proposed to be used for the transport of material upto the dam site. Besides this, survey work was also in progress mainly to ascertain the adequacy of barrier between the workings of 3/4 incline and those of No. 1 horizon as advised by this directorate because the management was keen to resume work in 1st horizon before the onset of the monsoon".

64. This matter has also been mentioned in paragraph 30 of the Written Statement filed by Part No. 1 thus :

> "That to make the mine safe and to construct the water dam at the puncture point between the incline and the 1st horizon it was considered expedient to complete survey work as per the directives of the Joint Director of Mines Safety, Dhanbad Region No. II, the Surveyors and the Chairmen were engaged in carrying on surveying."

65. According to Shri Dipak Sarkar, the directive of the Director General of Mines Safety to get the 3/4 incline underground works surveyed was contained in a written communication sent by Shri A. B. Singh, Joint Director of Mines Safety and we were informed that this directive was sent on 28-2-1976. Shri Sarkar was asked as to what steps had been taken on receipt of this direction from the DGMS and he stated that he had instructed the respective managers, Shri S. N. Choudhury and Dr. R. S. Rai, to instruct the Surveyors of the two mines to complete the survey work (Shri S. N. Choudhury had become the manager of the deep mine from 4-1-1976, in place of Shri Ramanuj Bhattacharyya). According to Shri Dipak Sarkar, late Shri S. Roy Choudhury was a Surveyor for the deep mine and Shri R. N. Banerjee was the Surveyor for the inclines and quarries.

66. The work of the Surveyors' team in February and again on 5-4-1976 have also been deposed to by Dr. R. S. Rai in cross-examination. It was elicited from him, on a question as to whether the team of surveyors were going down No. 4 incline for doing their job regularly or not, that the Surveyors had gone down sometime in February for survey work and after that they went again on 5-4-1976. Dr. Rai was asked as to whether he knew that the survey party had gone in the underground works of No. 4 incline on 5-4-1976 or not and his answer was that only after the accident he had come to know that the survey team was involved in the accident.

67. From what has been dealt with above, we have a clear picture now of the following factors :

(1) The nature of the normal flow of water in the depression towards the eastern side of the quarry bed, after 27-12-1975 and before 5-4-1976.

(2) The attempts made to channelise this flow of water with the help of silt trap and through pipes, so that the water could fall into 3/4 incline underground workings through the pipes.

(3) The attempts made to cover the subsidence cracks and the so called "well", after 27-12-1975, as deposed by Shri S. N. Mishra, Surveyor of HSCO.

(4) The process of accumulation of water in the quarry bed on 3rd, 4th and 5th April, 1976 and the volume of accumulation.

Responsibilities of Officers.

68. The silt trap and the pipe-lines were installed in January 1976 and a bund had also been made towards the north of the "well" at the sametime as stated by Shri S. N. Mishra. Shri Dipak Sarkar was the Agent of 3/4 incline and quarries from 4-1-1976. He was aware of the channelisation of the flow of water in the subsided portion of the quarry and about the covering up of the 'well'. In connection with the directives issued by Ext. 1/9, Shri Dipak Sarkar was asked several questions and the following question and answer are relevant :

> Question : After completion of the construction work as per the directive, if the same were inspected by the officers of the DGMS ?
>
> Answer : The compliance report, I gave it to Mr. R. Y. Singh on the same day at the end of January and he was shown the manner it had been done.

69. Shri Dipak Sarkar had inspected K level, as he says, on 1st or 2nd April, 1976 and he has also made an inspection of the quarry on that day. He had seen the accumulation of water in the quarry bed in the morning of 4-4-1976. On this conclusion, it is clear that Shri Sarkar should have stopped all work in the 3/4 incline underground workings immediately thereafter. If he had been careful enough in this respect, the accident which had happened on 5-4-1976, would not have involved any human life, even if the water had gone down on that day.

70. So far as Dr. Rai is concerned the matter stands on a different footing. No formal charge was given to him, as manager, on 29-3-1976 or thereafter. He has stated that he had no knowledge that the pipes, silt traps etc. were provided at the quarry bed to permit water to go down No. 4 incline workings, meaning thereby, how the directions contained in Exts. 1/8 and 1/9 had been complied with. So, if Dr. Rai had no connection with 3/4 incline underground workings and the quarry before the second week of March 1976, he may not have known how water used to flow down the quarry bed through the "well", into the underground workings and what was the nature of the channelisation of this water and of the covering of the "well" and the subsidence cracks and therefore he may not have realised the danger from the accumulation of water in the quarry bed, merely from the volume of it.

71. A clear picture has also come on the record as to what had happened in the morning of 5-4-1976. Dr. Rai has stated that he had gone to the incline office at about 7 A.M. and had discussed about the works with Shri S. R. Singh, Assistant Manager, at about 9 A.M. He has stated that when the persons had gone down, he had gone to the Store for arranging haulage rope which was to be used for splicing on that day. By "persons" he must have meant the workers engaged for the dam construction. According to Dr. Rai, from the Store he had seen the Chairman, Shri Hiten Bhaya, and the Chief Executive (Collieries), coming towards 3/4 incline quarry side and he had joined them and from that time he was with this party upto about 1.30 P.M., when he had learnt about the accident. According to Shri Kedar Prasad Singh, Chairman, who had gone underground with the Surveyors, the party consisting of late Shri S. Roy Choudhury, late Shri R. N. Banerjee and others and himself had gone underground at 10 A.M. on 5-4-1976. It is therefore clear that Dr. Rai had no idea about the survey team going to the 3/4 incline underground workings on the date of the accident. According to Dr. Rai it was mentioned in the minutes of the meeting of 24-2-1976 that he was to report to Shri Dipak Sarkar and he was doing so. Therefore, if any responsibility lay on any officer for stopping the works underground, in 3/4 incline old workings, it lay on Shri Dipak Sarkar, as the Agent and Area Manager. [He had become Area Manager of 3/4 Incline and Quarries on 29-3-1976].

72. My final conclusion is that the accident which had happened on 5-4-1976, in the 3/4 incline underground workings, was due to the carelessness on the part of Shri Dipak Sarkar and that no blame for this accident should be placed on the shoulder of Dr. R. S. Rai.

73. In view of the conclusion, that the accident was due to carelessness of a member of the management, an order regarding recovery of expenses must be made under Rule 22 of the Mines Rules, 1955, which reads as follows :—

"Recovery of expenses—If a Court of Inquiry finds that the accident was due to any carelessness or negligence on the part of the management, the court may direct the recovery of expenses of such court, including any other expenses connected with the inquiry, from the owner, agent or manager of the mine concerned, in such manner and within such time as the court may specify.

(2) The amount directed to be recovered under sub-rule (1) may, on application by the Chief Inspector or Inspector to a Magistrate having jurisdiction at the place where the mine is situated or where such owner is for the time being resident, be recovered by attachment and sale of any movable property within the limits of the Magistrate's jurisdiction belonging to such owner".

The Court of Inquiry therefore directs that the expenses incurred for the Court of Inquiry, including the expenses for the preparation of this report must be recovered from the owner of the mine, namely, the Indian Iron & Steel Company Limited. The expenditure incurred on these accounts will be calculated and certified by the Director General of Mines Safety, as soon as possible for the consideration of the Court of Inquiry. After the expenses are quantified by the Court, the same must be deposited by the Indian Iron & Steel Co. Ltd. in the Government Treasury, Dhanbad in favour of the Central Government, under the appropriate head, within six months of the quantification.

Sd/-

U. N. SINHA,
Court of Inquiry
Chasnalla Colliery Accident of 5-4-1976.

Assessors.

1. Shri C. Karunakaran,
Retired Director-General
Geological Survey of India.

2. Shri G. S. Marwaha,
Director, Indian School of Mines.

Sd/- G. S. MARWAHA

Sd/- DAMODAR PANDEY,
Member of Parliament.

Re : REPORT UNDER SECTION 24 OF THE MINES ACT, 1952 PREPARED BY THE COURT OF INQUIRY. SHRI U. N. SINHA ON AN ACCIDENT WHICH HAD HAPPENED IN CHASNALLA COLLIERY ON 5-4-1976.

I have gone through the Report prepared by Shri U. N. Sinha and I agree to the conclusions arrived at by him. I have nothing more to add.

Sd/- C. KARUNAKARAN
Assessor
4-1-1977.

ANNEXURE-A

LIST OF WITNESSES EXAMINED ON BEHALF OF

Party No. 1 (Management)

1. Shri S. N. Mishra.
2. Shri Dipak Sarkar.
3. Dr. R. S. Rai.

Party No. 8 (DGMS)

1. Shri S. N. Thakar.
2. Shri T. K. Mazumdar.
3. Shri A. B. Singh.
4. Shri S. C. Batra.
5. Shri S. P. Ganguli.

Party No. 3 (Surveyors' Association)

1. Shri Chinmoy Mukherjee, M.L.A.
2. Shri Kedar Prasad Singh.
3. Shri Raj Mangal Yadav.

Court Witnesses

1. Shri Sahadul Ansari.
2. Shri Wakil Khan.
3. Shri Bashistha Singh.
4. Shri S. D. Singh.

ANNEXURE-B

List of Exhibits on behalf of Party No. 1 (Management)

Sl. No.	Ext. No.	Description of Documents
1.	1	Copy of Annexure A to the Written Statement.
2.	1/1	Copy of Annexure B to the Written Statement.
3.	1/2	Copy of Annexure C to the Written Statement.
4.	1/3	Copy of Annexure D to the Written Statement.
5.	1/4	Copy of Annexure E to the Written Statement.
6.	1/5	Copy of Annexure F to the Written Statement
7.	1/6	Copy of Annexure G to the Written Statement.
8.	1/7	Copy of Annexure H to the Written Statement.
9.	1/8	Copy of Annexure I to the Written Statement.
10.	1/9	Copy of Annexure J to the Written Statement.
11.	2	Blue Print of Contour Plan prepared by Shri S.N. Mishra, Surveyor.
12.	2(1)	Original Plan of Ext. 2 (on tracing paper).
13.	2/1	Plan showing the section along the grid.
14.	2/1(1)	Original Plan of Ext. 2/1 on tracing paper.
15.	2/2	Calculation Sheets (seven pages) for estimating the quantity of water.
16.	2/3	Part Combined Plan of A, B, C level workings (on tracing paper).
17.	2/4	Plan showing the section across the quarry along the line 'A', 'B' on graph paper.
18.	3	Field Book.
19.	3/1	Field Book.

LIST OF EXHIBITS ON BEHALF OF PARTY NO. 3
(Surveyors' Association)

Sl. No.	Ext. No.	Description of Documents
1.	AA	Attested copy of the note of late Shri S. Roy Choudhury and Shri S.K. Mondal dated 28-2-1976.
2.	BB	Attested copy of letter No. 38/372, dated 20-8-1976 from Manager, Chasnalla Colliery to Late Shri S. Roy Choudhury regarding survey of 'K' level.

LIST OF EXHIBITS ON BEHALF OF PARTY NO. 8 (DGMS)

Sl. No.	Ext. Mark	Description of Document
1	2	3
1.	A	Statement of Shri Rajmangal Yadav recorded by Shri S.N. Thakar.
2.	A/1	Statement of Shri Kedar Prasad Singh recorded by Shri S.N. Thakar.
3.	A/2	Statement of Shri Dipak Sarkar recorded by Shri S.C. Batra, on 14-4-1976.
4.	A/3	Statement of Shri Dipak Sarkar recorded by Shri S.C. Batra, on 18-4-1976.
5.	A/4	Statement of Dr. R.S. Rai recorded by Shri A.B. Singh.
6.	A/5	Statement of Shri Kedar Prasad Singh recorded by Shri S.C. Batra.
7.	A/6	Statement of Shri H. Puitundi recorded by Shri A.B. Singh.
8	A/7	Statement of Shri S. Banerjee recorded by Shri A.B. Singh.
9.	A/8	Statement of Shri Bashistha Singh recorded by Shri A.B. Singh.
10.	A/9	Statement of Shri Ratan Rewani recorded by Shri A.B. Singh.
11.	A/10	Statement of Shri Chandhi Singh recorded by Shri A.B. Singh.
12.	A/11	Statement of Shri Rajmangal Yadav recorded by Shri S.C. Batra.
13.	A/12	Statement of Shri S.D. Singh recorded by Shri S.C. Batra.
14.	A/13	Statement of Shri B.K. Singh recorded by Shri S.C. Batra.
15.	A/14	Statement of Shri Wakil Khan recorded by Shri S.C. Batra.
16.	A/15	Statement of Shri Sahadul Ansari recorded by Shri S.C. Batra.
17.	A/16	Statements of Shri S.N. Choudhury and 29 others recorded by Shri S.C. Batra.
18.	A/1–1	Signature of Kedar Prasad Singh (undated) on Ext. A/1.
19.	A/5–1	Signature of Shri Kedar Prasad Singh dated 6-4-1976 on Ext. A/5.
20.	B	Detail Plan of accident on 5-4-1976 (Plan No. 1).
21.	B/1	Devastation Plan of accident on 5-4-1976 (Plan No. 1A).
22.	B/2	Detailed Plan of No. 3/4 Incline Quarry-Contour Plan.
23.	C	Personal Diary of Shri Dipak Sarkar.
24.	C/1	Diary of Dr. R.S. Rai.
25.	D	Three Seizure Memos prepared by Shri S.C. Batra on 6-4-1976, 7-4-1976 and 14-4-1976 (marked compendiously).
26.	E	Notice in Form I along with 4 enclosures.

[No.N.11015/8/77-MJ]

R. P. NARULA, Under Secy.

विधि न्याय और कम्पनी मंत्रालय

(कम्पनी कार्य विभाग)

नई दिल्ली, 16 जनवरी, 1978

का. आ. 221.—केन्द्रीय सरकार, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट्स विनियम, 1964 की अनुसूची ख के पैरा 1 के अनुसरण में, भारत सरकार के भूतपूर्व वित्त मंत्रालय, कम्पनी कार्य और बीमा विभाग की अधिसूचना संख्या का. आ. 1009 तारीख 25 फरवरी, 1965 में निम्नलिखित और संशोधन करती है, अर्थात् :—

उक्त अधिसूचना में क्रम सं. 24 और उससे सम्बन्धित प्रविष्टि के पश्चात् निम्नलिखित क्रम संख्या और प्रविष्टियां रखी जाएंगी, अर्थात् :—

"25. भारत में किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड तथा विश्वविद्यालय द्वारा संचालित प्री यूनिवर्सिटी परीक्षा ।

26. भारत में किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड या विश्वविद्यालय द्वारा संचालित हायर सेकेन्डरी परीक्षा (11 वर्ष) ।"

[फा. सं. 2/10/77-सी. एल. 5]

का. म. शर्मा, अवर सचिव

MINISTRY OF LAW, JUSTICE & COMPANY AFFAIRS

(Department of Company Affairs)

New Delhi, the 16th January, 1978

S.O. 221.—In pursuance of paragraph 1 of Schedule B to the Chartered Accountants Regulations, 1964, the Central Government hereby makes the following further amendment in the notification of the Government of India in the late Ministry of Finance, Department of Company Affairs and Insurance No. S.O. 1009 dated the 25th March, 1965, namely :—

In the said notification, after serial number 24 and the entry relating thereto, the following serial numbers and entries shall be inserted, namely :—

"25. Pre-University Examination conducted by any recognised Board or University in India.

26. Higher Secondary Examination (11 years) conducted by any recognised Board or University in India".

[File No. 2/10/77-CL. V]

K. M. SHARMA, Under Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVT. OF INDIA PRESS, RING ROAD, NEW DELHI-110064
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI-110054, 1978